रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ऊर्ध्वगत				५१-४-६.		म. १०-३.
अरुचि—	चि. ८-६०, ६१.					
अरोचक—	चि. २६-१२४.	उ. ५७-१.	नि. ५-२८.	१४-१.	पू. ७-२७.	म. १५-१.
वातज	,, २६-१२४. ८-६१.	,, ५७-६.	,, ५-२८. चि. ५-५०.	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-११.
पित्तज	,, २६-१२५. ,, ८-६१.	,, ५७-४.	नि. ५-२८. चि. ५-५१.	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-३.
कफज	,, २६-१२५. ,, ८ ६१	उ. ५७-५.	नि. ५-२८. चि. ५-६१	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-२.
सन्निपातज	,, २६-१२६ ८-५१.	उ. ५७-५.	नि. ५-२८.	१४-३,४.	,, ७-२८.	,, १५-३.
द्वेषज	,, २६-१२६. ,, ८-६.	,, ५७-६.				
चित्तविपर्ययज	,, ८-६०.	,, ५७-६.	नि. ५-२८.		,, ७-२८.	,, १५-३.
अर्बुद—	,, १२-८७,	नि. ११-१३. चि. १८-३०	उ. २९-१४, १५	३८-१८,१९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८, १९.
वातज		नि. ११-१४.	,, २९-१४,१५.	३८-१८,१९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८,१९.
पित्तज		,, ११-१४.	,, २९-१४,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
कफज		,, ११-१४.	,, २९-१४,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
रक्तज		,, ११-१५,१६	,, २९-१६,१७.	३८-२०,२१.	,, ७-६९.	,, ४४-२०,२१.
मांसज		,, ११-१७,१८.	,, २९-१४,१५.	३८-२२,२३.	,, ७-६९.	,, ४४-२२.
मेदोज		,, ११-१४. चि. १८-४१.	,, २९-१२,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
शर्करार्बुद		नि. १३-२५,२८.	,, २९-१७,१८.	५५-२४.	,, ८-९१.	म. ४४-६१ ९८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अध्यर्बुद		नि. ११-२०.		३८-२५.		म. ४३-२४.
द्विरर्बुद		,, ११-२०.		३८-२५.		,, ४३-२४.
अर्शस्-	चि. १४-७.	नि. २-४. चिं. ६	चि. ८. नि. ७-२.	५-१,२.	पू. ७-१२.	,, ५.
शुष्क			,, ७-९.		,, ७-१३.	
आर्द्र			,, ७-९.		,, ७-१३.	
वातज	,, १४-११-१३.	नि. २-१०.	,, ७-२८-३४.	५-३,४.	,, ७-१२.	,, ५-१२-१७.
पित्तज	,, १४-१४-१६.	,, २-११.	,, ७-३४-३७.	५-५,६.	,, ७-१२.	,, ५-१८-२०.
कफज	,, १४-१७,१८.	,, २-१२.	,, ७-३७-४१.	५-७,८.	,, ७-१२.	,, ५-२८-३२.
रक्तज		,, २-१३.	,, ७-४३-४५.	५-२४-२६.	,, ७-१२.	,, ५-२१-२७.
सन्निपातज	,, १४-२०.	,, २-१४.	,, ७-४२.	५-९.	,, ७-१२.	,, ५-३४.
सहज	,, १४-८.	,, २-१५.	,, ७-३.		,, ७-१३.	,, ५-३५.
उत्तरकालज	,, १४-९.		,, ७-३.		,, ७-१३.	
द्वन्द्वज	,, १४-३०.		,, ७-४२.	५-९.	,, ७-१२.	,, ५-३३.
अलसक-	वि. २-१२.	उ. ५६-७,८.		६-१९,२०.	,, ७-१०.	,, ६-२८,२९.
अर्म-		,, ४-३.	सू. ८-६-१०.	५९-६५,६६.		
अलर्क- (जलत्रास)		क. ७-४३.		६९-५७-६३.		
अश्मरी-	चि. २६-३६·३८.	नि. ३-३४. चि. ७	नि. ९-६,७.	३२-१,२.	,, ७-५९.	,, ३६.
वातज	,, २६.	नि. ३-१०.	,, ९-११,१२.	३२-६-८.	,, ७-५९.	,, ३६-६,७.
पित्तज		,, ३-९.	,, ९-१३.	३२-८,९.	,, ७-५९.	,, ३६-२१.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
कफज		नि. ३–८.	नि. ९–१४.	३२–९,१०.	पू. १७–५.	म. ३६–२९.
शुक्राश्मरी		,, ३–११,१२.	,, ३–१६–१८.	३२–११–१४.	,, ७–५९.	,, ३६–३८.
शर्करा	चि. २६–३९.	,, ३–१३,१४.	,, ९–१८,१९.	३२–१४,१५.	,, ७–५९.	,, ३६–४०.
असृग्दर–(रक्तप्रदर)	,, ३०–२०४–२२३.	शा. २–१८-२०.	उ. ३३–५३.	६१–१,२.	,, ७–१७६.	,, ६८–३.
वातिक				६१–४.	,, ७–१७६.	
पैत्तिक				६१–३.	,, ७–१७६.	
कफज				६१–३.	,, ७–१७६.	
सान्निपातिक				६१–४.	,, ७–१७६.	
आमदोष–	वि. २–१०.	सू. ४६–५०२.	सू. ८–४–६.	६–२२.	,, ७–१०.	
आमकफ						,, १–५४.
आमपित्त	,, २२–१५.					,, १–५२.
आमवात					,, ७–४१.	,, २५–२–९. ४९,५०.
आढ्यवात	,, २८–६६. ,, २९–११.		,, १५–४.	२४–५.		,, २८.
आर्तवदोष—	चि. ३०–२०४–२१०.	शा. २–५.			,, ७–१७५.	,, ६८–३.
वातज	,, ३०–२१२, २१३.	,, २–५.	शा. १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–६.
पित्तज	,, ३०–२१४–२१६.	,, २–५.	,, १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–५.
कफज	,, ३०–२१६–२१८.	,, २–५.	,, १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–४.

रोगाणां नामानि–	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तकफज		,, २-५.			,, ७-१७५.	
रक्तज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
कफवातज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
वातपित्तज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
सन्निपातज		शा. २-५.	,, १-१२.		पू. ७-१७५.	
आनाह (आध्मान)–	चि. २८-२९.	उ. ५६-२ २१.	नि ११-६०.	२७-१७.	,, ७-४९.	म. ३०-१९.
प्रत्यानाह—					,, ७-४९.	
उदररोग–	,, १३-९·१५.	नि. ७-१-६ चि. १४-१.	,, १२-१.	३५-१,२.	,, ७-५१.	,, ४०-१-३.
वातज	,, १३-२३-२५.	नि. ७-८,९. चि. १४-५.	,, १२-१४, १५.	३५-५-८.	,, ७-५१.	,, ४०-५-८.
पित्तज	,, १३-२६-२८.	नि. ७-९,१०. चि. १४-६.	,, १२-१६, १७.	३५-९,१०.	,, ७-५१.	,, ४०-९,१०.
कफज	,, १३-२९-३१.	नि. ७-१०. चि. १४-७.	,, १२-१८, १९.	३५-११,१२.	,, ७-५१.	,, ४०-९,१०.
सन्निपातज	,, १३-३२-३४.	नि. ७-११,१४. चि. १४-८.	,, १२-२०, २१.	३५-१३-१५.	,, ७-५१.	,, ४०-१२-१५.
प्लीहोदर यकृद्दाल्युदर	,, १३-३५-३८.	नि. ७-१४,१६. चि. १४-१३.	,, १२-२३-२७.	३५-१९,२०.	,, ७-५२.	,, ४१-१७,१८.
बद्धगुदोदर	,, १३-३९-४१.	नि. ७-१७,१८. चि. १४-१७.	,, १२-२८-३२.	३५-१९,२०.	,, ७-५२.	,, ४१-१९,२०.
छिद्रोदर	,, १३-४२-४४.	नि. ७-१९-२१. चि. १४-१७.	,, १२-३२-३६.	३५-२१,२२.	,, ७-५२.	,, ४१-२१,२२.
जलोदर	,, १३-४५-४८.	नि. ७-२१-२३. चि. १४-१८.	,, १२-३६-४०.	३५-२२-२४.	,, ७-५२.	,, ४१-२३,२४.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	खं. अ. श्लो.	खं. अ. श्लो.
अग्रातोदक	चि. १३–५५–५८.		नि. १२-४३,४४.	३५–२५.	पू. ७–५२.	म. ४१–२५
उदावर्त–	,, २६–६·१०.	उ. ५५–१.	सू. ४.	२७–१.	,, ७–४५.	,, ३०.
वातनिग्रहज	,, २६–७.	,, ५५–७.	,, ४–२.	२७–२.	,, ७–४८.	,, ३०–३.
मूत्राभिघातज		,, ५५–९,१०.	,, ४–४,५.	२७–४.	,, ७–४८.	,, ३०–५.
पुरीषाभिघातज		,, ५५–८,९.	,, ४–३,४.	२७–३.	,, ७–४८.	,, ३०–४.
शुक्राभिघातज		,, ५५–१५.	,, ४–१९,२०.	२७–१०.	,, ७–४७.	,, ३०–११.
छर्दिनिग्रहज		,, ५५–१४.	,, ४–१७.	२७–९.	,, ७–४६.	,, ३०–१०.
क्षवथुनिग्रहज		,, ५५–१३.	,, ४–९.	२७–७.	,, ७–४६.	,, ३०–८.
जृम्भानिग्रहज		,, ५५–११.	,, ४–१५.	२७–५.	,, ७–४७.	,, ३०–६.
अश्रुनिग्रहज		,, ५५–१२.	,, ४–१२.	२७–६.	,, ७–४७.	,, ३०–६.
उद्गारनिग्रहज		,, ५५–१४.	,, ४–७,८.	२७–८.	,, ७–४७.	,, ३०–९.
क्षुन्निरोधज		,, ५५–१६.	,, ४–११,१२.	२७–११.	,, ९–४५.	,, ३०–१२.
तृष्णानिरोधज		,, ५५–१६.	,, ४–१०,११.	२७–११.	,, ७–४५.	,, ३०–१३.
श्वासनिरोधज		,, ५५–१७.	,, ४–१४.	२७–१२.	,, ७–४६.	,, ३०–१४.
निद्रारोधज		,, ५५–१७.	,, ४–१२,	२७–१२.	,, ७–४६.	,, ३०–१५.
कासावरोधज			,, ४–१३,१४.			
उन्माद–	नि. ७–४. चि. ९–३,४.	,, ६२–३.	उ. ६–१.	२०–१.	,, ७–३७.	,, २१–६.
वातज	नि. ७–७ | १ चि. ९–१०.	,, ६२–८.	,, ६–६–१०.	२०–७, ८.	,, ७–३७.	,, २१–८.
पित्तज	नि. ७–७ | २ चि. ९–११,१२.	,, ६२–९.	,, ६–१०,११.	२०–९, १०.	,, ७–३७.	,, २१–१०.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
कफज	नि. ७-९ | चि. ९-१३,१४.	३. उ. ६२-१०.	उ. ६-१२, १३.	२०-११, १२.	पू. ७-३७.	म. २१-१२.
सन्निपातज	नि. ७-७. चि. ९-१५.	,, ६२-११.	,, ६-१४.	२०-१३.	,, ७-३७.	,, २१-१३.
आगन्तुज	नि. ७-१०. चि. ९-१६.	,, ६०-७.	,, ६-१५- १७.	२०-१४, १५.	,, ७-३७.	,, २१-१५, १६.
शोकादिज,विषज			,, ६-१५-१७.	२०-१५.	,, ७-३७.	
देवोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-८.		२०-१८.	,, ७-३८.	,, २१-१९.
देवग्रहोन्माद		,, ६०-९.		२०-१९.	,, ७-३८.	,, २१-२०.
गन्धर्वोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१०.		२०-२०.	,, ७-३८.	,, २१-२१.
यक्षोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-११.		२०-२१.	,, ७-३८.	,, २१-२२.
पित्रुन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१२.		२०-२२.	,, ७-३८.	,, २१-२३.
भुजगोन्माद		,, ६०-१३.		२०-२३.	,, ७-३९.	,, २१-२४.
राक्षसोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१४.		२०-२४.	,, ७-३९,४०.	,, २१-२५.
पिशाचोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१५.		२०-२५.	,, ७-३९.	,, २१-२७.
वार्धकोन्माद		,, ६०-१६.			,, ७-३८.	
किन्नरोन्माद					,, ७-३८.	
गुरुशापोन्माद	,, ९-२०.				,, ७-३९.	
प्रेतोन्माद					,, ७-३९.	
सिद्धोन्माद	,, ९-२०.				,, ७-३९.	
अद्भुतोन्माद					,, ७-३९.	
जलाधिदेवतोन्माद					,, ७-३९.	

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ब्रह्मराक्षसोन्माद	चि. ९-२०.				पू. ७-३९.	म. २१-२६.
कूष्माण्डोन्माद					,, ७-४०,	
कृत्योन्माद					,, ७-४०.	
वेतालोन्माद					,, ७-४०.	
गुह्यकोन्माद					,, ७-४०.	
भूतोन्माद	चि. ९-१७.			२०-१७.	,, ७-३८.	
उपदंश—		नि. १२-७.	उ. ३३-५.	४७.	,, ७-८२.	,, ५०.
वातज		,, १२-९.	,, ३३-५,६.	४७-२.	,, ७-८२	,, ५०-२.
पित्तज		,, १२-९.	,, ३३-६.	४७-२.	,, ७-८२.	,, ५०-२.
कफज		,, १२-९.	,, ३३-७.	४७-३.	,, ७-८२.	५०-३.
सन्निपातज		,, १२-९.	,, ३३-८.	४७-४.	,, ७-८३.	,, ५०-३.
रक्तज		,, १२-९.	,, ३३-७.		,, ७-८३.	,, ५०-३.
उपजिह्विका-	सू. १८-१९, चि. १२-७७.	,, १६-३९.	,, २१-३५.	५६-३२.	,, ७-१३५.	,, ६५-९१.
ऊरुस्तम्भ-	,, २७.	चि. ५-३१,३२.		२४-१.	,, ७-१०५.	,, २४.
कफरोग-	सू. २०-१७.				,, ७-१२२-१२५.	,, २७-२-५.
कर्णरोग-	चि. २६-१२७, १२८.	उ. २०.	,, १७-१.	५७.	,, ७-१४२-१४४.	,, २-६३.
वातज	,, २६-१२७, १२८.		,, १७-१-३.	५७-१४.	,, ७-१४२.	,, ६३-२०.
पित्तज	,, २६-१२७,१२८.		,, १७-४,५.	५७-१४.	,, ७-१४२.	,, ६३-२१.
कफज	,, २६-१२७, १२८.		,, १७-५,६.	५७-१५.	,, ७-१४२.	,, ६३-२२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	आत्मप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
सन्निपातज	चि. २६-१२७, १२८.		उ. १७-७,८.	५७-१५.	पू. ७-१४२.	म. ६३-२३.
रक्तज			,, १७-६,७.			
कर्णकण्डू	,, २६-१२८.	उ. २०-११.	,, १७-१२.	५७-६.		,, ६३-११.
कर्णक्ष्वेड	,, २६-१२८.	,, २०-९.	,, १७-१२.	५७-४.	,, ७-१४३.	,, ६३-९.
कर्णगूथक		,, २०-११.		५७-६.		,, ६३-१२.
कर्णनाद	,, २६-१२८.	,, २०-७.	,, १७-९.	५७-२.	,, ७-१४४.	,, ६३-६.
कर्णपाक		,, २०-२५.		५७-१२.		
कर्णप्रतिनाह		,, २०-१२.	,, १७-११.	५७-७.	,, ७-१४४.	,, ६३-१३.
कर्णविद्रधि		,, २०-१४.	,, १७-१४,१५.	५७-११.	,, ७-१४३.	,, ६३-१६.
कर्णशोथ	,, २६-१२७, १२८.	,, २०-१६.	,, १७-१२.	५७-१३.	,, ७-१४३.	,, ६३-१९.
कर्णस्राव	,, २६-१२७.	,, २०-१०.		५७-५.	,, ७-१४३.	,, ६३-१०.
कर्णार्बुद		,, २०-१७.	,, १७-१५.	५७-१३.	,, ७-१४३.	,, ६३-१९.
कर्णार्शस्		,, २०-१६.	,, १७-३५.	५७-१३.	,, ७-१४३.	,, ६३-१९.
कृमिकर्णक		,, २०-१३.	,, १७-१३,१४.	५७-७.	,, ७-१४२.	,, ६३-१४.
पूतिकर्ण	,, २६-१२७.	,, २०-१५.	,, १७-१३.	५७-१३.	,, ७-१४२.	,, ६३-१८.
बाधिर्य	,, २६-१२७.	,, २०-८.	,, १७-१०.	५७-३.	,, ७-१४२.	,, ६३-७.
कर्णशूल—	चि. २६-१२७.	,, २०-६.	,, १७-१२,१३.		,, ७-१४१.	,, ६३-१८.
कर्णपालिरोग-		चिं. २५.			,, ७-१४३.	,, ६३-२४.
उत्पात		,, २५-६,७.	उ. १७-२१, २२.	५७-१७, १८.	,, ७-१४५.	,, ६३-२[illegible]

रोगाणां नामानि–	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
उन्मथक		चि. २५–८.	उ. १७–२२, २३.	५७–१८–२०.	पू. ७–१४५.	म. ६३–२६.
पिप्पली			,, १७-१६,१७.		,, ७–१४५.	,, ६३–१६.
दुःखवर्धन		,, २५–९.	,, १७-२३,२४.	५७–२०.	,, ७–१४५.	,, ६३–२७.
परिपोटक		,, २५–५.	,, १७–२०,२१.	५७–२०.	,, ७–१४५.	,, ६३–२४.
परिलेही		,, २५–१०, ११.	,, १७–२४, २५.	५७–२१,२२.	,, ७–१४५.	,, ६३–२८.
पालिशोष			,, १७–१९.		,, ७–१४५.	,, ६३–५०.
विदारी					,, ७–१४५.	
कास—	चि. १८.	उ. ५२.	नि. ३–२२.	११.	,, ७–२१.	,, ११.
वातज	,, १८–१०–१३.	,, ५२–८.	,, ३–२२-२४.	११–५.	,, ७–२१.	,, ११–५.
पित्तज	,, १८–१४-१६.	,, ५२–९.	,, ३–२४,२५.	११–६.	,, ७–२१.	,, ११–६.
कफज	,, १८–१७–१९.	,, ५२–१०.	,, ३–२६,२७.	११–७.	,, ७–२१.	,, ११–७.
क्षतज	,, १८–२०–२३.	,, ५२–११.	,, ३–२७-३२.	११–८–११.	,, ७–२२.	,, ११–८–११.
क्षयज	,, १८–२४–३०.	,, ५२–१२.	,, ३–३२-३५.	११–१२,१३.	,, ७–२२.	,, ११-१२-१४.
कामला—	चि. १६–३४-३६. सू. १९–४ | ७.	,, ४४–१०.	नि. १३–१५.	८–१६–१८.	,, ७–१९.	,, ८–२०.
कोष्ठाश्रित	,, १९–४ | ७. चि १६–३६		नि. १३–१६.	९–१८.		,, ८–२०.
कुम्भकामला	,, १६–३७.	,, ४४–११.	नि. १३–१८.	८–१९.	,, ७–२०.	,, ८–२१.
शाखाश्रित	चि. १६–३४, ३६. सू. १९–४ | ७.		,, १३–१६.	८–१८.		,, ८–२१.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
अलस		उ. ४४-१२.	चि. १३-१९.			
पानकी		,, ४४-६.		८-२३.		
लाघरक		,, ४४-१२.				
लोदर			नि. १३-१९.			
किलास-	चि. ७-१७३.	नि. ५-१७.	नि. १४-३७.	४९-२६.		म. ५३-४५.
क्रिक्रिस-	शा. ८-३२.		शा. १-५८.			
कुष्ठ-	नि. ५-६. चि. ७-१३.	नि. ५.	नि. १४.	४९-१-६.		,, ५३.
कपाल	नि. ५-८. चि. ७-१४.	,, ५-८.	,, १४-१३, १४.	४९-१०, ११.	पू. ७-८७.	,, ५३-१८.
उदुम्बर	नि. ५-८. चि. ७-१५.	,, ५-८.	,, १५-१६.	४९-११, १२.	,, ७-८७.	,, ५३-१९.
मण्डल	नि. ५-८. चि. ७-१६.	,, ५-८	,, १५-१६, १७.	४९-१२, १३.	,, ७-८७.	,, ५३-२०.
ऋष्यजिह्वक	नि. ५-८. चि. ७-१८.	,, ५-८.	,, १५-१८, १९.	४९-१३, १४.	,, ७-८८.	,, ५३-२४.
पुण्डरीक	नि. ५-८. चि. ७-१८.	,, ५-८.	,, १५-२६, २७.	४९-१४, १५.	,, ७-८९.	,, ५३-२३.
सिध्म	नि. ५-८. चि. ७-१९.	,, ५-१२.	,, १५-२१, २२.	४९-१५, १६.	,, ७-८८.	,, ५३-२१.
काकणक	नि. ५-८. चि. ७-२०.	,, ५-८.	,, १५-२९, ३०.	४९-१६, १७.	,, ७-९०.	,, ५३-२२.
एककुष्ठ	,, ७-२१.	,, ५-१०.	,, १५-२०.	४९-१७, १८.	,, ७-८८.	,, ५३-२५.
चर्म	,, ७-२१.	,, ५-१०.	,, १५-२०.	४९-१८.	,, ७-८९.	,, ५३-२५.
किटिभ	,, ७-२२.	,, ५-१४.	,, १५-२०.	४९-१८.	,, ७-८८.	,, ५३-२३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
विपादिका	चि. ७–२३.	नि. ५–२३.	नि. १५–२३.	४९–१९.	पू. ७–८८.	म. ५३–२८.
अलसक	,, ७–२३.	,, ५.	,, १५–२२, २३.	४९–१९.	,, ७–८८.	,, ५३–३४.
दद्रु	,, ७–२३.	,, ५–८.	,, १५–२४.	४९–२०.	,, ७–८९.	,, ५३–३१.
चर्मदल	,, ७–२४.	,, ५–१०.	,, १५–२९.	४९–२०.	,, ७–८९.	,, ५३–२६.
पामा (कच्छू)	,, ७–२५.	,, ५–१४.	,, १५–२८.	४९–२१.	,, ७–८९.	,, ५३–२९, ३०.
विस्फोटक	,, ७–२५.		,, १५–१७.	४९–२२.	,, ७–८९.	,, ५३–३२.
शतारु	,, ७–२६.		,, १५–२५.	४९–२२.	,, ७–८९.	,, ५३–३५.
विचर्चिका	,, ७–२६.	,, ५–१३.	,, १४–१८.	४९–२३.	,, ७–८७.	,, ५३–२७.
स्थूलारुष्क	,, ७–२७.	,, ५–९.	,, १४–१९.			
महाकुष्ठ	,, ७–२७.	,, ५–९.				
श्वित्र	,, ७–१७३.		,, १४–३७.	४९–३६.	,, ७–९०.	,, ५३.
रकसा		,, ५–१५.	,, १४–३८.			
क्लैब्य—	,, ३०.					,, ७१–२.
बीजोपघातज	,, ३०–१५८–१६२.					,, ७१–७.
ध्वजभङ्गज	,, ३०–१६३–१७५.					,, ७१–३.
जराजन्य	,, ३०–१७६–१८०.					
शुक्रक्षयज	,, ३०–१८२–१८५.					,, ७१–५.
पैत्रिक						,, ७१–६.

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
शिराछेदजन्य						म. ७१-६.
सहज						,, ७१-८.
क्लीब-						
ईर्ष्यक	शा. २-२०.	शा. २-४०.	शा. १-७२.		पू. ७-१७१.	
आसेक्य		,, २-३८.	,, १-७२.		,, ७-१७१.	
कुम्भीक		,, २-४०.			,, ७-१७१.	
सुगन्धिन्		,, २-३९.			,, ७-१७१.	
षण्ड		,, २-४०.			,, ७-१७१.	
तृणपुत्रिक	शा. ४-३१. चि. २-१८९.					
वार्ता	शा. ४-३०.					
कृमि—	सू. १९-९.					,, ७.
बाह्यज-						
यूका	,, १९-९.		नि. १४-४४.	७-३.	,, ७-१४.	,, ७-३.
लिक्षा	,, १९-९.		,, १४-४४.	७-३.	,, ७-१५.	,, ७-३.
पिपीलिका	सू. १९-९. वि. ७-१०.	उ. ५४-१२.				
रक्तज- केशाद	सू. १९-९. वि. ७-११.	,, ५४-१५.	,, १४-५२.	७-१७.	,, ७-१७.	,, ७-१४.
लोमाद	सू. १९-९. वि. ७-११.	,, ५४-१५.	,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
लोमविध्वंस	सू. १९-९.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
लोमद्वीप	वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	
सौरस	सू. १९-१९. वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
औदुम्बर	सू. १९-९. वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
जन्तुमातृ	सू. १९-९. वि. ७-१२.		नि. १४-५२.	७-१२.	पू. ७-१६.	म. ७-१४.
कफज- (अन्त्राद)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
उदराद- (उदरावेष्ट)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
हृदयाद- (हृदयोदक)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
चुरु (कुरु)	सू. १९-९. वि. ७-१२	उ. ५४-६.	,, १४-४९.	७-१०.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
दर्भपुष्प	सू. १९-९. वि. ७-१२.	,, ५४-१२.	,, १४-४९	७-१०.	,, ७-१६.	,, ७-१०.
सौगन्धिक	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-४९.	,, ७-१६.	,, ७-१०.
महागुद- (महाकुह)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
पुरीषज- (ककेरुक)	सू. १९-९. वि. ७-१३.	,, ५४-८.	,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
मकेरुक	सू. १९-९. वि. ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०
[illegible] लिह	सू. १९-९. वि. ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
सशूलक- (सुसुनाख्य)	सू. १९-९. वि. ७-१३.	,, ५४-१२.	,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
[illegible]	सू. १९-९. [illegible] ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
आजव		उ. ५४-८.				
विजव		,, ५४-८.				
किप्य		,, ५४-८.				
चिप्य		,, ५४-८.				
गण्डूपद		,, ५४-८.				
चूरु		,, ५४-८.				
द्विमुख		,, ५४-८.				
महापुष्प		,, ५४-१२.				
प्रलून		,, ५४-१२.				
चिपिट		,, ५४-१२.				
पिपीलिका		,, ५४-१२				
दारुण		,, ५४-८.				
शोणितज-						
केशाद		,, ५४-१५.	नि. १४-५२.	७-१२.	पू. ७-१७.	
रोमाद		,, ५४-१५.				
नखाद		,, ५४-१५.				
दन्ताद		,, ५४-१५.				
किक्किश		,, ५४-१५.				
कुष्ठज		,, ५४-१५.				
परीसर्प		,, ५४-१५.			,, ७-१८.	
स्नायुक	चि. २९-११.					
खुड-			नि. १६-४.			

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
गण्डमाला—	चि. १२–७९.	नि. ११–१०, १२.	उ. २९–२५.	३८–८,९.	पू. ७–६७.	म. ४४–८.
गर्भिणीरोग—						
उपविष्टक	शा. ८–२६.		शा. २–१५.		,, ७–१८१.	
नागोदर	,, ८–२६.	शा. १०–५७	शा. २–१६,		,, ७–१८१.	
लीनगर्भ		,, १०–५७.	,, २–१८.		,, ७–१८१.	
मृतगर्भ	,, ८–३०.	नि. ८–१२, १३.	,, २–२३.			म. ७०–११७.
मूढगर्भ		,, ८–४,५.	,, २–२९, ३०.	६४–४–६.	,, ७–१८१.	,, ७०–११३.
विष्कम्भ			,, २–२९,३०.		,, ७–१८१.	
किक्किस	शा. ८–३२.		,, १–५८.			
गलगण्ड—	सू. १८–२१. चि. १२–७९.	नि. ११–२२.	उ. २१–५३.	३८–१,२.	,, ७–१३९.	,, ४४–१.
गुल्म—	नि. ३–७. चि. ५–४८.	उ. ४२–४.	नि. ११–३३–३८.	२८–१–३.	,, ७–५२.	,, ३२–१.
वातज	नि. ३–७. चि. ५–८–११.	,, ४२–१०.	,, ११–४१–४४.	२८–१–८.	,, ७–५२.	,, ३२–१०.
पित्तज	नि. ३–९. चि. ५–१२,१३	,, ४२–११.	,, ११–४४, ४५.	२८–९,१०.	,, ७–५२.	,, ३२–१२.
कफज	नि. ३–११. चि. ५–१५	,, ४२–१२.	,, ११–४६, ४७.	२८–११,१२	,, ७–५२.	,, ४–१४.
रक्तज	नि. ३–१३. चि. ५–१८.	,, ४२–१३–१५.	,, ११–४९–५५.	२८–१५,१६.	,, ७–५३.	,, ४–१७,१८.
सन्निपातज	नि. ३–१२. चि. ५–१७.	,, ४२–१३.	,, ११–४८.	२८–१४.	,, ७–५३.	,, ४–१४.
द्वन्द्वज	,, ५–६.		,, ११–४८.	२८–१३.	,, ७–५३.	,, ४–१५.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ग्रहणीदोष–	चि. १५–५१–५७.	उ. ४०–१६६–१७२.	नि. ८–१५.	४–१–३.	पू. ७–८.	म. ४–१.
वातज	,, १५–५९–६४.	,, ४०–१७५.	,, ८–२२,२४.	४–५–१०.	,, ७–८.	,, ४–७–१२.
पित्तज	,, १५–६५,६६.	,, ४०–१७६.	,, ८–२५,२६.	४–११,१२.	,, ७–८.	,, ४–१३,१४.
कफज	,, १५–६७–७०.	,, ४०–१७६.	,, ८–२६–२९.	४–१३–१६.	,, ७–८.	,, ४–१५–१८.
आमज					,, ७–८.	
सन्निपातज	,, १५–७१,७२.	,, ४०–१७६.	,, ८–२९.	४–१७.	,, ७–८.	,, ४–१९.
संग्रहग्रहणी				४–१७ | ३.		,, ४–२०–२२.
घटीयन्त्रा				४–१७ | ४.		,, ४–२४.
ग्रन्थि–	,, १२–८१,८२.	नि. ११–३.	,, २९–१.	३८–११.	,, ७–६८.	,, ४४–११.
वातज		,, ११–४.	,, २९–२,३.	३९–१२.	,, ७–६८.	,, ४४–१२.
पित्तज		,, ११–५.	,, २९–४.	३८–१३.	,, ७–६८.	,, ४४–१३.
कफज		,, ११–६.	,, २९–४,५.	३८–१४.	,, ७–६८.	,, ४४–१४.
मेदोज		,, ११–७.	,, २९–७–९.	३८–१५.	,, ७–६८.	,, ४४–१५.
सिराज		,, ११–८.	,, २९–१०,११.	३८–१६,१७.	,, ७–६८.	,, ४४–१६.
रक्तज		,, ११–८,९.	,, २९–५,६.		,, ७–६८.	
अस्थिज			,, २९–८.		,, ७–६९.	
मांसज			,, २९–६,७.		,, ७–६९.	
व्रणज		,, २९–१३.	,, २९–१२,१३.		,, ७–६८.	
जनपदोद्ध्वंसनीयविकार–	वि. ३–४.	सू. ६–१५–१७.				
जाठराग्निविकार–	वि. ६–१२.	सू. ३५–२४.		६.		,, ६.
मन्दाग्नि	,, ६–१२.	,, ३५–२४.	सू. १–८.	६–३.	,, ७–२७.	,, [illegible]

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
विषमाग्नि	वि. ६-१२.	सू. ३५-२४.	सू. १-८.	६-३,४.	पू. ७-२७.	म. ६-२.
तीक्ष्णाग्नि	,, ६-१२.	,, ३५-२४.	,, १-८.	६-४.	,, ७-२६.	,, ६-३.
अत्यग्नि (भस्मक)	,, १५-२२१.				,, ७-२७.	,, ६-९.
ज्वर—	नि. १-२०. चि. ३.	उ. ३९-१३.	नि. २-१, २.	२-३.	,, ७-२.	,, १-९.
वातज	नि. १-२१.	,, ३९-२९, ३०.	,, २-१०- १८.	२-८, ९.	,, ७-२	,, १-२९२- २९५.
पित्तज	,, १-२४.	,, ३९-३१, ३२.	,, २-१८- २०.	२-१०, ११.	,, ७-२.	,, १-३३८- ३४०.
कफज	,, १-२७.	,, ३९-३३, ३४.	,, २-२१, २२.	२-१२, १३.	,, ७-२.	,, १-३७१, ३७२.
वातकफज	,, १-२९. चि. ३-८७.	,, ३९-४७- ४९.	,, २-२५.	२-१५, १६.	,, ७-२.	,, १-४०१.
वातपित्तज	नि. १-२९. चि. ३-८६.	,, ३९-४७,४८.	,, २-२४.	२-१४, १५.	,, ७-२.	,, १-३९१.
पित्तकफज	नि. १-२९. चि. ३-८८.	,, ३९-५०.	,, २-२६.	२-१७.	,, ७-२.	,, १-४२७.
सन्निपातज	नि. १-२९. चि. ३-८९- १०२.	,, ३९-३५- ३८.	,, २-२७-३३.	२-१८- २३.	,, ७-३.	,, १-४४०- ४४४.
आगन्तुज	नि. १-३०. चि. ३-१११.	,, ३९-७६- ,, ८०.	,, २-३८- ४५.	२-२६- ३१.	,, ७-५.	,, १-८९५.
विषमज्वर—	,, ३-५३- ७३.	,, ३९-२९- ७०.	,, २-६४- ६१.	२-३१, ३२.	,, ७-३.	,, १-७१९.
सन्तत	,, ३-५३- ६०.	,, ३९-६७.	,, २-५८, ५९.	२-३४.	,, ७-४.	,, १-७२४.
सतत	,, ३-६१.	,, ३९-७०.	,, २-६९.	२-३५.	,, ७-४.	,, १-७२५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अन्येद्युष्क	चि. ३-६२.	सू. ३९-७०.	सू. २-७०.	२-३५.	पू. ७-४.	म. १-७२६.
तृतीयक	,, ३-६४.	,, ३९-७१.	,, २-७०, ७१.	२-३६.	,, ७-४.	,, १-७२७.
चतुर्थक	,, ३-६४-६७.	,, ३९-७१.	,, २-७२, ७३.	२-३६.	,, ७-४.	,, १-७२९.
चतुर्थकविपर्यय	,, ३-७३.		,, २-७३, ७४.	२-३९.		,, १-७३६-७३९.
सन्निपातज-						
कुम्भीपाक						,, १-५१०.
पौर्णनाव						,, १-५११.
प्रलापी						,, १-५१२.
अन्तर्दाह						,, १-५१३.
दण्डपात						,, १-५१४.
अन्तक						,, १-५१५.
एणीदाह						,, १-५१६.
हारिद्र						,, १-५१७.
अजघोष						,, १-५१८.
भूतहास						,, १-५१९.
यन्त्रपीडा						,, १-५२०.
संन्यास						,, १-५२१.
संशोषी						,, १-५२२.
शीताङ्ग						,, १-४९३.
तन्द्रिक						,, १-४९४.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
प्रलापक						म. १–४९५.
रक्तजीवी						,, १–४९६.
अभिन्यास						,, १--४९८.
जिह्वक						,, १–४९९.
सन्धिग						,, १–५००
अन्तक						,, १–५०१.
रुग्दाह						,, १–५०२.
चित्तविभ्रम						,, १–५०३.
कर्णिक						,, १–५०४.
कण्ठकुब्ज						,, १–५०५.
भुग्ननेत्र						,, १–५०७.
सप्तधातुगत ज्वर—						
रसजन्य	चि. ३–७६.	उ. ३९–८३.	नि. २–५८,५९.	२–४८.		,, १–८०१
रक्तजन्य	, ३–७७.	,, ३९–८४.	,, २–६९.	२–४९.		,, १–८०३.
मांसजन्य	,, ३–७८.	,, ३९–८५.	,, २–७०.	२–५०.		,, १–८०५.
मेदोजन्य	,, ३–७९,	,, ३९–८६.	,, २–७०,७१.	२–५१.		,, १–८०७.
अस्थिजन्य	,, ३–८०.	,, ३९–८७.	,. २–७२,७३.	२–५२.		,, १–८०९.
मज्जाजन्य	,, ३–८१.	,, ३९–८८.	,, २–७२,७३.	२–५३.		,, १–८११.
शुक्रजन्य	,, ३–८२.	,, ३९-८८,८९.		२–५४.		,, १–८१२.
आगन्तु—		,, ३९–१४.		२–२६.	पू. ७–५.	,, १–३९५.
अभिघातज	,, ३-११२,११३.	,, ३९–२०.	,, २–३८.	२–२६.	,, ७–६.	

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
श्रमजन्य			नि. २-३८,३९.		पू. ७-६.	
छेदजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	म. १-६९६.
क्षतजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	,, १-६९६.
दाहजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	,, १-६९६.
अभिचारज—	चि. ३-११८.	उ. ३९-२१. ,, ३९-७९	,, २-४३,४४.	२-२६.	,, ७-५.	,, १-७०५.
अभिशापजन्य			,, २-४३.	२-२६.	,, ७-५.	
अभिषङ्गजन्य	,, ३-११४.	,, ३९-८०.	,, २-४०.	२-२६.	,, ७-७.	,, १-७०४.
ग्रहावेशजन्य		,, ३९-२१.	,, २-४०.		,, ७-५.	
कामज	,, ३-१२२.	उ. ३९-२१-७८.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-६९९.
भयज	,, ३-११५.	,, ३९-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
शोकज	,, ३-१२३.	,, ३९-२१-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
क्रोधज	,, ३-१२३.	,, ३९-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
विषज	,, ३-१२४.	,, ३९-२०-७६.	,, २-४१.		,, ७-६.	,, १-६९८.
औषधिगन्धज	,, ३-१२७.	,, ३९-२१-७७.	,, २-४१.		,, ७-६.	,, १-६९९.
जलत्रास— (जलसंत्रास)		क. ७-४८.	उ. ३८-१६.	६९-५७-६३.		
छर्दि—	चि. २०-४,५.	उ. ४९-३-६.	नि. ५-३०.	१५-१-४.	,, ७-२८.	,, १७-६.
वातजा	,, २०-७-९.	,, ४९-९.	,, ५-३१-३३.	१५-६.	,, ७-२८.	,, १७-६,७.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
पित्तजा	चि. २०-१०, ११.	उ. ४९-१०,	नि. ५-३३, ३४.	१५-७.	पू. ७-२८.	म. १७-८.
कफजा	,, २०-१२, १३.	,, ४९-११.	,, ५-३४, ३५.	१५-८.	,, ७-२८.	,, १७-९.
सन्निपातजा	,, २०-१४, १५.	,, ४९-१२.	,, ५-३६.	१५-९.	,, ७-२८.	,, १७-१०.
द्विष्टार्थजा संयोगजा			,, ५-३६, ३७.		,, ७-२९.	,, १७-११.
बीभत्सजा	,, २०-१८.	,, ४९-१२.	,, ५-३६,	१५-१२.		,, १७-११.
दौहृदजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२.	,, ७-२९.	,, १७-११.
आमजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२.		,, १७-११.
असात्म्यजा		,, ४९-१२.		१५-१२.		,, १७-११.
कृमिजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२, १३.	,, ७-२८.	,, १७-१२.
तृष्णा—	चि. २२-५-७.	,, ४८-३-५.	,, ५-४५-५७.	१६-१२.	,, ७-३०.	,, १८.
वातजा	,, २२-११, १२.	,, ४८-८.	,, ५-५०, ५१.	१६-३.	,, ७-३०.	,, १८-४.
पित्तजा	,, २२-१३, १४.	,, ४८-९.	,, ५-५१.	१६-४.	,, ७-३०.	,, १८-५.
आमजा	,, २२-१५.	,, ४८-१४.	,, ५-५४.	१६-८.		,, १८-९.
क्षयजा	,, २२-१६.	,, ४८-१३, १४.	,, ५-५७.	१६-६, ७.	,, ७-३१.	,, १८-८.
औपसर्गिकी	,, २२-१९.		,, ५-५७.	१६-९.	,, ७-३१.	,, १८-११.
क्षतजा		,, ४८-१२.		१६-६.		,, १८-७.

रोगाणां नामानि	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
कफजा		उ. ४८-११.	नि. ५-५२,	१६-५.	पू. ७-३०.	म. १८-६.
भक्तजा		,, ४८-१५.	,, ५-५४.	१६-८.		,, १८-१०.
त्रिदोषजा		,, ४८-१५.			,, ७-३१.	
दग्ध—		सू. १२-१६.			,, ७-७९.	
प्लुष्ट (तुच्छ. वा.)		,, १२-१६.	सू. ३०-४७.		,, ७-७९.	
अतिदग्ध		,, १२-१६.	,, ३०-४८.		,, ७-७९.	
दुर्दग्ध		,, १२-१६.	,, ३०-४८.		,, ७-७९.	
सम्यग्दग्ध		,, १२-१६.	,, ३०-४५.		,, ७-७९.	
स्नेहदग्ध			,, ३०-५२.			
दाह—	सू. २०-१४.			१९-१.	,, ७-३५.	
नाडीव्रण—	चि. २५-५६.	नि. १०-९, १०.	उ. २९-२६-२८.	४५-१,२.	,, ७-७९.	म. ४८-१.
वातजन्य		,, १०-११.	,, २९-२९.	४५-३.	,, ७-७९.	,, ४८-३.
पित्तजन्य		,, १०-११.	,, २९-२९, ३०.	४५-३.	,, ७-७९.	,, ४८-४.
कफजन्य		,, १०-१२.	,, २९-३०,३१.	४५-४.	,, ७-७९.	,, ४८-५.
द्वन्द्वज		,, १०-१२.				
सन्निपातजन्य		,, १०-१३.	,, २९-३१.	४५-४,५.	,, ७-७९.	,, ४८-६.
शल्यनिमित्तज		,, १०-१४.	,, २९-३१.	४५-५,६.	,, ७-७९.	,, ४८-७.
नाडीकल्पन-व्यापत्	शा. ८-४५.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
आयाम-उत्तुण्डिता	शा. ८-४५.					
व्यायाम-उत्तुण्डिता	,, ८-४५.					
पिण्डलिका	,, ८-४५.					
विनामिका	,, ८-४५.					
निर्गुण्डिका	,, ८-४५.					
तुण्डी		शा. १०-४३.				
नासारोग—	चि. २६-१०५.	उ. २२.	उ. १९.	५८-१.	पू. ७-१४६.	म. ६४-२.
प्रतिश्याय-(शीनस)	,, २६-१०५.	,, २४-१-४.	,, १९-१-७.	५८-१३.	,, ७-१४७.	,, ६४-४.
दुष्टप्रतिश्याय	,, २६-११०.	,, २४-१४-१६.	,, १९-९-१२.	५८-२५,२६.	,, ७-१४७.	,, ६४-२४, २५.
वातज	,, २६-१०५.	,, २४-६,७.	,, १९-३-५.	५८-२६,२७.	,, ७-१४९.	,, ६४-१९.
पित्तज	,, २६-१०६.	,, २४-७,८.	,, १९-५,६.	५८-१८,१९.	,, ७-१४९.	,, ६४-२०.
कफज	,, २६-१०६.	,, २४-९,१०.	,, १९-६,७.	५८-१९,२०.	,, ७-१४९.	,, ६४-२१, २२.
सन्निपातज	,, २६-१०६.	,, २४-१०, ११.	,, १९-७.	५८-२०,२१.	,, ७-१४९.	,, ६४-२३.
रक्तज		,, २४-१२-१४.	,, १९-८,९.	५८-२३,२४.	,, ७-१४९.	,, ६४-२६, २७.
क्षवथु-	चि. २६-१११.	,, २२-११, १२.	,, १९-१४, १५.	५८-५,६.	,, ७-१४८.	,, ६४-९, १०.
नासाशोष-	,, २६-१११.	,, २२-१७, १८.	,, १९-१६, १७.	५८-१०.	,, ७-१४९.	,, ६४-१५.
प्रतीनाह-	,, २६-११२.	,, २२-१५, १६.	,, १९-१७, १८.	५८-९.	,, ७-१४८.	,, ६४-१३.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
नासास्राव-	चि. २६-११२.	उ. २२-१६,१७.	उ. १९-१९.	५८-९.	पू. ७-१४९.	म. ६४-१४.
अपीनस-	,, २६-११४.	,, २२-६.	,, १९-२०,२१.	५८-१.	,, ७-१४८.	
घ्राणपाक—	,, २६-११५	,, २२-८,९.	,, १९-१८,१९.	५८-३.	,, ७-१४८.	,, ६४-७.
नासाश्वयथु—	,, २६-११५.	,, २२-१९, २०.	,, १९-२०.	५८-२८.		,, ६४-६१.
नासार्बुद—	,, २६-११६.	,, २१-२०.	,, १९-२६.	५८-२८.	,, ७-१४८.	,, ६४-३१.
पूयरक्त—	,, २६-११६.	,, २२-१०.	,, १९-२४.	५८-४.	,, ७-१४९.	,, ६४-८.
पूतिनासा—	,, २६-११३.	,, २२-७,८.	,, १९-१३.	५८-२.	,, ७-१४८.	,, ६४-६.
अरूंषिका—	,, २६-११७.	,, २२-८,९.		५८-३.		
दीप्त—	,, २६-११७.	,, २२-१४, १५.		५८-८.	,, ७-१४९.	,, ६४-१२.
भ्रंशथु—		,, २२-१३,१४.		५८-७.	,, ७-१४८.	,, ६४-३१.
नासागतरक्त-पित्त—	चि. ४-१७, १८.	,, २२-९.		५८-२८.		,, ६४-३१.
नासार्शस्—	,, १४-६	,, २२-२१.	,, १९-२६.	५८-२८.	,, ७-१४८.	,, ६४-३१.
पुटक—			,, १९-२५.			
पीनस(आमपक्व)—			,, १९-१३.			
अतिस्थूल-(मेदोदोष)	सू. २१-४.	सू. १५-३२.	,, १४-२०.	३४-१-८.	,, ७-६५.	,, ३८.
अतिकृश—	,, २१-१०-१२.	,, १५-३३.				,, ३९.
निश्चारक—						,, २-१०९.
निस्तानिका—						,, २-१०९.
नेत्ररोग—	चि. २६.	उ. १-२८.	उ. ८-१६.	५९. १-३.		,, ६२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वातज	चि. २६-१२९.	उ. १-२९-३१.	उ. ८-१६.			
पित्तज	„ २६-१२९.	„ १-३१-३३.				
कफज	„ २६-१३०.	„ १-३२-३५.				
सन्निपातज	„ २६-१३०.	„ १-३९-४२.				
रक्तज		„ १-३७,३८.				
सन्धिगतरोग-						
पूयालस		„ २-४.	„ १०-७.	५१-७०.	पू. ७-१५९.	म. ६२-१०४.
उपनाह		„ २-४.	„ १०-३,४	५१-७०.	„ ७-१५८.	„ ६२-१०५.
पूयास्राव-(सन्निपातज)		„ २-६.	„ १० ६.	५१-७२.	„ ७-१५८.	„ ६२-१०५.
श्लेष्मस्राव		„ २-६.	„ १०-२.	५१-७२.	„ ७-१५८.	„ ६२-१०८.
रक्तास्राव		„ २-७.	„ १०-४.	५१-७३.	„ ७-१५८.	„ ६२-११०.
पित्तास्राव		„ २-७.	„ १०-४.	५१-७३.	„ ७-१५८.	„ ६२-१०७.
जलस्राव			„ १०-१,२.		„ ७-१५८.	
पर्वणिका		„ २-८.	„ १५-५.	५१-७४.	„ ७-१५८.	„ ६२-१११.
अलजी		„ २-८.	„ १०-८.	५१-७४.	„ ७-१५८.	„ ६२-१११.
कृमिग्रन्थि		„ २-९.	„ १०-८,९.	५१-७५.	„ ७-१५८.	„ ६२-११२.
वर्त्मरोग—						
उत्सङ्गिनी		„ ३-९,१०.	„ ८-१२.	५१-७६.	„ ७-१५५.	„ ६३-७७.
कुम्भीका		„ ३-१०,११.	„ ८-६.	५१-७७.	„ ७-१५६.	„ ६३-७८.
पोथकी		„ ३-११.	„ ८-९,१०.	५१-७८.	„ ७-१५५.	„ ६३-७९.
वर्त्मशर्करा		„ ३-१२.	„ ८-१८.	५१-७९.	„ ७-१५६.	„ ६३-८०.
अर्शोवर्त्म		„ ३-१३.	„ ८-१३.	५१-८०.	„ ७-१५५.	„ ६३-८१.

रोगाणां नामानि	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शुष्कार्शस्-(लोहित)		उ. ३-१४.		५९-८१.	पू. ७-१५४.	म. ६२-८२.
अञ्जननामिका		,, ३-१५.	उ. ८-१४.	५९-८२.	,, ७-१५६.	,, ६२-८३.
बहलवर्त्म		,, ३-१६.		५९-८३.	,, ७-१५५.	,, ६२-८४.
विबन्धकवर्त्म		,, ३-१७.		५९-८४.	,, ७-१५५.	,, ६२-८५.
वर्त्मकर्दम		,, ३-१९.	,, ८-१८.	५९-८६.	,, ७-१५६.	,, ६२-८७.
क्लिष्टवर्त्म		,, ३-१८.	,, ८-१२.	५९-८५.	,, ७-१५५.	,, ६२-८६.
श्याववर्त्म		,, ३-२०.	,, ८-१७.	५९-८७.	,, ७-१५६.	,, ६२-८८.
प्रक्लिन्नवर्त्म-(कफोत्क्लिष्ट)		,, ३-२१.	,, ८-१०.	५९-८८.	,, ७-१५४.	,, ६२-८९.
अपरिक्लिन्न-(क्लिष्टवर्त्म)		,, ३-२२.	,, ८-१६.	५९-८९.	,, ७-१५५.	,, ६२-९०.
वातहत-(उत्क्लिष्टवर्त्म)		,, ३-२३.	,, ८-६.	५९-९०.	,, ७-१५७.	,, ६२-९१.
अर्बुद		,, ३-२४.	,, ८-२४.	५९-९१.	,, ७-१५५.	,, ६२-९२.
निमिष		,, ३-२५.	,, ८-५.	५९-९२.	,, ७-१५४.	,, ६२-९३.
शोणितार्शस्-(रक्तोत्क्लिष्ट)		,, ३-२६.		५९-९३.	,, ७-१५४.	,, ६२-९४.
लगण		,, ३-२७.	,, ८-११.	५९-९४.	,, ७-१५६.	,, ६२-९५.
बिशवर्त्म		,, ३-२८.	,, ८-१५.	५९-९५.	,, ७-१५६.	,, ६२-९६.
कुंचन				५९-९६.	,, ७-१५४.	,, ६२-९७.
पक्ष्मरोग-						
पक्ष्मप्रकोप		,, ३-२९,३०.	,, ८-२१,२२.	५९-९७,९८.	,, ७-१५५.	,, ६२-९९,१००.
पक्ष्मशात			,, ८-८,९.	५९-९९.	,, ७-१५४.	,, ६२-१०१.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शुक्लगतरोग—						
प्रस्तार्यर्म		उ. ४–४.	उ. १०–१७, १८.	५९–६५.	पू. ७–१६०.	म. ६२–६५.
शुक्लार्म		,, ४–५.	,, १०–१२.	५९–६५.	,, ७–१६०.	,, ६२–६६.
लोहितार्म		,, ४–५.	,, १०–१६.	५९–६६.	,, ७–१६१.	,, ६२–६७.
अधिमांसजार्म		,, ४–६.	,, १०–१८,१९.	५९–६६.	,, ७–१६०.	,, ६२–६८.
स्नाय्वर्म		,, ४–६.	,, १०–१८.	५९–६६.	,, ७–१६१.	,, ६२–६९.
शुक्ति		,, ४–७.	,, १०–१०,११.	५९–६७.	,, ७–१६०.	,, ६२–७०.
अर्जुन		,, ४–७.	,, १०–१७.	५९–६७.	,, ७–१६१.	,, ६२–७१.
पिष्टक		,, ४–८.	,, १०–१३.	५९–६८.	,, ७–१६०.	,, ६२–७२.
सिराजाल		,, ४–८.	,, १०–१६.	५९–६९.	,, ७–१६०.	,, ६२–७३.
सिराजपिडका		,, ४–९.	,, १०–१६.	५९–६९.	,, ७–१६१.	,, ६२–७४.
बलासक		,, ४–९.	,, १०–१२,१३.	५९–६९.	,, ७–१६१.	,, ६२–७५.
कृष्णगतरोग—						
सव्रणशुक्र		,, ५–४.	,, १०–२३.	५९–२२.	,, ७–१६२.	,, ६२–५६.
अव्रणशुक्र		,, ५–८.	,, १०–२५.	५९–२४.	,, ७–१६२.	,, ६२–५८.
पाकात्यय–(शिरासङ्ग)		,, ५–९,१०.	,, १०–२८.	५९–२७.	,, ७–१६२–१७०.	,, ६२–६२.
अजका		,, ५–१०.	,, १०–२६.	५९–२८.	,, ७–१६२.	,, ६२–६३.
सर्वाश्रयरोग—						
वाताभिष्यन्द		,, ६–६.	,, १५–१–३.	५९–५.	,, ७–१६९.	,, ६२–११६.
पित्ताभिष्यन्द		,, ६–७.	,, १५–८,९.	५९–६.	,, ७–१६९.	,, ६२–११८.
कफाभिष्यन्द		,, ६–८.	,, १५–१०,११.	५९–७.	,, ७–१६९.	,, ६२–११९.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
रक्ताभिष्यन्द		उ. ६–८.	उ. १५–१२,१३.	५९–८.	पू. ७–१६९	म. ६२–१२०.
वातज अधिमन्थ		,, ६–१२,१३.	,, १५–३,४.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२, १२३.
पित्तज ,,		,, ६–१४,१५.	,, १५–९,१०.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२, १२३.
कफज ,,		,, ६–१६,१७.	,, १५–११,१२.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२.
रक्तज		,, ६–१८,१९.	,, १५–१३,१४.	५९–९,१०	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२. १२३.
शोफपाक		,, ६–२१, २२.	,, १५–१७–१९.	५९–१४.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२४.
अशोफपाक		,, ६–२३.	,, १५–१९.	५९–१४.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२४.
हताधिमन्थ		,, ६–२३.	,, १५–५.	५९–१५.	,, ७–१७१.	,, ६२–१२५.
वातपर्याय		,, ६–२५.	,, १५–७.	५९–१६.	,, ७–१७१.	,, ६२–१२६.
शुष्काक्षिपाक		,, ६–२६	,, १५–१६, १७.	५९–१७.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२७
अन्यतोवात		,, ६–२७.	,, १५–६, ७.	५९–१८.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२८.
अम्लाध्युषित		,, ६–२८.	,, १५–२१–२३.	५९–१९.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२९.
सिरोत्पात		,, ६–२९.	,, १०–१४.	५९–२०.	,, ७–१६०.	,, ६२–१३०.
सिराप्रहर्ष		,, ६–३०.	,, १०–१५.	५९–२१.	,, ७–१६०.	,, ६२–१३१.

दृष्टिगतरोग—

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
वातिक–लिङ्गनाश		,, ७–१८, १९.	,, १२–८–१२.	५९–४१, ४२.	,, ७–१६५.	,, ६२–२९.
पैत्तिक ,,		,, ७–१९, २०.	,, १२–१३, १४.	५९–४२, ४३.	,, ७–१६५.	,, ६२–३०.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
श्लैष्मिक–लिङ्गनाश		उ. ७–२०–२२.	उ. १२–१६–२०.	५९–४३, ४४.	पू. ७–१६५.	म. ६२–३१, ३२.
रक्तज ,,		,, ७–२२, २३.	,, १२–२०, २१.	५९–४४, ४५.	,, ७–१६६.	,, ६२–३४.
सान्निपातिक ,,		,, ७–२३, २४.	,, १२–२२.	५९–४५, ४६.	,, ७–१६६.	,, ६२–३३.
परिम्लायि ,,		,, ७–२५, २६.	,, १२–१५, १६.	५९–४७, ४८.	,, ७–१६६.	,, ६२–३५.
दिवान्ध्य		,, ७–३५, ३६.	,, १२–२५–२८.	५९–५५, ५६.	,, ७–१६७.	,, ६२–४५.
रात्र्यान्ध्य		,, ७–३७, ३८.	,, १२–२४, २५.	५९–५७, ५८.	,, ७–१६७.	,, ६२–४७.
धूमदर्शी		,, ७–३९.	,, १२–२९, ३०.	५९–५९.	,, ७–१६७.	,, ६२–४८.
ह्रस्वजाड्य		,, ७–४०.	,, १२–१५.	५९–६०.	,, ७–१६७.	,, ६२–४९.
नकुलान्ध्य		,, ७–४०, ४१.	,, १२–२३, २४.	५९–६०, ६१.	,, ७–१६७.	,, ६२–५०.
गम्भीरिका		,, ७–४१, ४२.	,, १२–१२.	५९–६१, ६२.	,, ७–१६८.	,, ६२–५१.
निमित्तजन्य		,, ७–४२.	,, १२–३०, ३१.	५९–६३.		,, ६२–५२.
अनिमित्तजन्य		,, ७–४३, ४४.		५९–६३, ६		,, ६२–५३.
पाण्डुरोग—	चि. १६–७–११.	,, ४४–३.	,, १३–१–४.	८–१, २.	,, ७–१९.	,, ८.
वातज	,, १६–१७, १८.	,, ४४–७.	,, १३–९, १०.	८–४.	,, ७–१९.	,, ८–४.
पित्तज	,, १६–१९–२२.	,, ४४–८.	,, १३–१०, ११.	८–५.	,, ७–१९.	,, ८–५.
कफज	,, १६–३–५.	,, ४४–९.	,, १३–११–१२.	८–८.	,, ७–१९.	,, ८–६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
सन्निपातज	चि. १६–२६	उ. ४४–१०.	नि. १३–१२.	८–७.	पू. ७–१९.	म. ८–७.
मृद्भक्षणजन्य	,, १६–२७–३०.		,, १३–१३–१५.	८–८–१०.	,, ७–१९.	,, ८–११, १२.
अपानकी		,, ४४–६.				
नानात्मज-						
पित्तविकार				६–११–१७.	,, ७–११५–१२१.	,, २६–२९.
अक्षिपाक	सू. २०–१४.					
अङ्गगन्ध	,, २०–१४.					
अङ्गावदारण	,, २०–१४.				,, ७–११८.	
अतिस्वेद	,, २०–१४.				,, ७–११७.	
अतृप्ति	,, २०–१४.				,, ७–११७.	
अन्तर्दाह	,, २०–१४.					
अम्लक	,, २०–१४.					
अंसदाह	,, २०–१४.					
आस्यविपाक	,, २०–१४.					
ऊष्माधिक्य	,, २०–१४.					,, २६–२.
ओष	,, २०–१४.					
कक्षा	,, २०–१४. चि. १२–९१.	चि. २०–७.				
कामला	सू. २०–१४. चि. १६–३२.	उ. ४४–१०, ११.	नि. १३–१५–१७.	८–१६–१८.	,, ७–१९.	
गलपाक	सू. २०–१४.					

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
गुदपाक	सू. २०-१४.					
चर्मदलन	,, २०-१४.					
जीवादान	,, २०-१४.					
तमःप्रवेश	,, २०-१४.					
तिक्तास्यता	,, २०-१४.					
तृष्णाधिक्य	,, २०-१४.		सू. ११-७.			
त्वगवदरण	,, २०-१४.					
त्वग्दाह	,, २०-१४.					म. २६-६.
दवथु	,, २०-१४.					
दाह	,, २०-१४.		सू. ११-७.	१९-२.	पू. ७-१२९.	,, २६-६.
धूमक(धूमोद्गार)	,, २०-१४.				,, ७-११६.	,, २६-५.
अकालपलित						,, २६-२.
पूतिमुखता	,, २०-१४.					
प्लोष	,, २०-१४.					
मांसक्लेद	,, २०-१४,					
मांसदाह	,, २०-१४,					
मेढ्रपाक	,, २०-१४.					
रक्तकोठ	,, २०-१४.					
रक्तविस्फोट	,, २०-१४.					
रक्तपित्त	,, २०-१४.	उ. ४५-१-१०.				,, १९-१-७.
रक्तमण्डल	,, २०-१४.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
लोहितगन्धास्यता	सू. २०-१४.				पू. ७-११८.	
विदाह	,, २०-१४.				,, ७-११६.	म. ६-७.
शोणितक्लेद	,, २०-१४.					
हरित-हारित-नेत्रमूत्रवर्चस्त्व	,, २०-१४.					
हरितत्व	,, २०-१४.					
हारिद्रत्व	,, २०-१४.					
पिडका-	,, १७-८२.	नि. ६-१४.	नि. १०-२५,२६.	३३-२७,२८.	,, ७-६३.	,, ३७.
शराविका	,, १७-८४.	,, ६-१५.	,, १०-२७.	३३-२९.	,, ७-६४.	,, ३७-३१.
कच्छपिका	,, १७-८५.	,, ६-१६.	,, १०-२८.	३३-३०.	,, ७-६४.	,, ३८-३२.
जालिनी	,, १७-८६.	,, ६-१६.	,, १०-२९.	३३-३०.	,, ७-६४.	,, ३८-३२.
विनता	,, १७-८९.	,, ६-१७.	,, १०-३०.	३३-३१.	,, ७-६४.	,, ३८-३३.
अलजी	,, १७-८८.	,, ६-१८.	,, १०-३१.	३३-३३.	,, ७-६४.	,, ३८-३५.
सर्षपिका	,, १७-८७.	,, ६-१५.	,, १०-३३.	३३-२९.	,, ७-६४.	,, ३८-३१.
विद्रधिका (विद्रधि)	,, १७-९०.	,, ६-१९.	,, १०-३४-३२.	३३-३४.	,, ७-६५.	,, ३८-३६.
पुत्रिणी		,, ६-१७.	,, १०-३३.	३३-३२.	,, ७-६४.	,, ३८-३४.
मसूरिका		,, ६-१८.	,, १०-३२.	३३-३२.	,, ७-६४.	,, ३८-३४.
विदारिका		,, ६-१९.	,, १०-३४.	३३-३४.	,, ७-६४.	,, ३८-३५.
प्रदर—	चि. ३०-२०४.	शा. २-१८-२०.		६१-१.		,, ६७-३.
वातज	,, ३०-२१३.			६१-२.		,, ६७-६.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
पित्तज	चि. ३०–२१४-२१६.			६१–३.		म. ६७-५.
कफज	,, ३०–२१७, २१८.			६१–३.		,, ६७–४.
सान्निपातिक	,, ३०–२२०.			६१–४.		,, ६७–७.
प्रमेह—	नि. ४–८.	नि. ६–४.	,, १०.	३३–६.	पू. ७–६०.	,, ३७.
उदकमेह	,, ४–१३.	,, ६–१०.	,, १०–८.	३३–७,८.	,, ७–६०.	,, ३७–८.
इक्षुवालिका	,, ४–१४.	,, ६–१०.	,, १०–९.	३३–८.	,, ७–६०.	,, ३७–९.
सान्द्रमेह	,, ४–१५.	,, ६–१०.	,, १०–१०.	३३–९.	,, ७–६०.	,, ३७–९.
सान्द्रप्रसादमेह	,, ४–१६.					
शुक्लमेह	,, ४–१७.					
शुक्रमेह	,, ४–१८.	,, ६–१०.	,, १०–११.	३३–१०.	,, ७–६०.	,, ३७–११.
शीतमेह	,, ४–२१.		,, १०–१२.	३३–११.	,, ७–६१.	,, ३७–१२.
शनैर्मेह	,, ४–२१.	,, ६–१०.	,, १०–१३.	३३–१२.	,, ७–६१.	,, ३७–१२.
सिकतामेह	,, ४–२०.	,, ६–१०.	,, १०–१२.	३३–११.	,, ७–६१.	,, ३७–११.
लालामेह	,, ४–२२.		,, १०–१३.	३३–१२.	,, ७–६०.	,, ३७–१२.
क्षारमेह	,, ४–२९.	,, ६–११.	,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६२.	,, ३७–१३.
कालमेह(कृष्णमेह)	,, ४–३०.		,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६२.	,, ३७–१४.
नीलमेह	,, ४–३१.	,, ६–११.	,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६१.	,, ३७–१४.
लोहितमेह	,, ४–३२.	,, ६–११.	,, १०–१६.	३३–१५.	,, ७–६१.	,, ३७–१५.
माञ्जिष्ठमेह	,, ४–३३.	,, ६–११.	,, १०–१५.	३३–१४.	,, ७–६१.	,, ३७–१५.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
हारिद्रमेह	नि. ४–३४.	नि. ६–११.	नि. १०–१५.	३३–१४.	पू. ७–६१.	म. ३७–१४.
वसामेह	,, ४–४१.	,, ६–१२.	,, १०–१६.	३३–१५.	,, ७–६२.	,, ३७–१६.
मज्जमेह	,, ४–४२.		,, १०–१७.	३३–१६.	,, ७–६२.	,, ३७–१६.
हस्तिमेह	,, ४–४३.	,, ६–१२.	,, १०–१७, १८.	३३–१७.	,, ७–६२.	,, ३७–१७.
मधुमेह (क्षौद्रमेह)	,, ४–४४.	,, ६–१२.	,, १०–१८.	३३–१६.	,, ७–६२.	,, ३७–१७.
सुरामेह		,, ६–१०.	,, १०–१०.	३३–९.	,, ७–६०.	,, ३७–१०.
लवणमेह		,, ६–१०.				
पिष्टमेह		,, ६–१०.	,, १०–१०.	३३–१०.	,, ७–६०.	,, ३७–१०.
फेनमेह		,, ६–१०.				
अम्लमेह		,, ६–११.				
सर्पिर्मेह		,, ६–१२.				
प्लीहरोग—	सू. १९–४. ,, १८–२८.					,, ३३.
वातज	,, १९–४ | ४.					,, ३३–७.
पित्तज	,, १९–४ | ४.					,, ३३–५.
कफज	,, १९–४ | ४.					,, ३३–६.
सन्निपातज	,, १९–४ | ४.					,, ३३–८.
रक्तज	,, १९–४ | ४.					,, ३३–४.
फिरङ्गरोग—				२–१–९. (परि०)		,, ५८–१.
बालरोगाः—				६८.		
कुकूणक		उ. १९,९.	उ. ८–१९,२०.	६८–८,९.	,, ७–१८८.	,, ७०–१२७.

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पारिगर्भिक				६८-१०,११.	पू. ७-१८७.	म. ७०-१३३, १३४.
तालुकण्टक			उ. २-६३,६५.	६८-१२,१३.	,, ७-१८७.	,, ७०-१२४, १२५.
महापद्म				६८-१४,१५.	,, ७-१८७.	,, ७०-१२६.
उपशीर्षक			,, २३-२१.			
गुदपाक					,, ७-१८७.	,, ७०-१२९.
शय्यामूत्र					,, ७-१८८.	
स्कन्दग्रह		उ. २८.	,, ३-६,९.	६८-२०,२२.	,, ७-१८९.	,, ७०-२५.
स्कन्दापस्मार		,, २९.	,, ३-९,११.	६८-२२.	,, ७-१८९.	,, ७०-२९.
शकुनीग्रह		,, ३०.	,, ३-१८,२०.	६८-२३.	,, ७-१९०.	,, ७०-२७.
रेवतीग्रह		,, ३१.	,, ३-२७,२८.	६८-२४.	,, ७-१९१.	,, ७०-२८.
पूतनाग्रह		,, ३२.	,, ३-२०,२१.	६८-२५.	,, ७-१९०.	,, ७०-२९.
अन्धपूतनाग्रह		,, ३३.	,, ३-२३,२५.	६८-२६.	,, ७-१९०.	,, ७०-३०.
शीतपूतनाग्रह		,, ३४.	,, ३-२२,२३.	६८-२७.	,, ७-१९०.	,, ७०-३१.
मुखमण्डिकाग्रह		,, ३५.	,, ३-२६,२७.	६८-२८.	,, ७-१९०.	,, ७०-३२.
नैगमेय(ष)		,, ३६.	,, ३-१२,१४.	६८-२९.	,, ७-१९०.	,, ७०-३३.
दन्तोद्गम			,, २-२६,२७.		,, ७-१८६.	,, ७०-१३५.
भगन्दर—	चि. १२-९६,९७.	नि. ४.	,, २८.	४६-१.	,, ७-८०.	,, ४९-३.
शतपोनक		,, ४-५.	,, २८-११-१३.	४६-२,३.	,, ७-८०.	,, ४९-४.
उष्ट्रग्रीव		,, ४-६.	,, २८-१३.	४६-३,४.	,, ७-८०.	,, ४९-५.
परिस्रावी		,, ४-७.	,, २८-१३.	४६-५.	,, ७-८१.	,, ४९-६.
शम्बूकावर्त		,, ४-८.	,, २८-१७,१८.	४६-६.	,, ७-८२.	,, ४९-७.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
उन्मार्गगामी		नि. ४-९.	उ. २८-१८,२०.	४६-७.	पू. ७-८२.	म. ४९-८.
शल्यजन्य(क्षतज)			,, २८-२०.			,, ४९-८.
भग्न-	चि. २५-६८,७१.	,, १५-३.	,, २७.	४४-१.	,, ७-७८.	,, ४७.
उत्पिष्ट		,, १५-५,७.		४४-२,३.	,, ७-७७.	,, ४७-२.
विश्लिष्ट		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-२.
विवर्तित		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-२.
तिर्यक्क्षिप्त		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-३.
अतिक्षिप्त(क्षिप्त)		,, १५-५,७.		४४-४,५.		,, ४७-३.
अवक्षिप्त		,, १५-५,७.		४४-४.		,, ४७-३.
कर्कटक		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
अश्वकर्ण		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
चूर्णित		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
पिच्चित		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
अस्थिच्छल्लित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
अतिपातित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
मज्जानुगत		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
स्फुटित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
वक्र		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
छिन्नस्य द्वौ भेदौ						
अणुविदीर्ण		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
बहुविदीर्ण		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
पाटित		,, १५-१०.				

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
काण्डभग्न		नि. १५-१०.		४४-६.		म. ४७-१.
मद—	सू. २४-२७.		नि. ६-२६.		पू. ७-३३.	
वातज	,, २४-३०.		,, ६-२६,२७.		,, ७-३३.	
पित्तज	,, २४-३१.		,, ६-२७.		,, ७-३३.	
कफज	,, २४-३२.		,, ६-२८.		,, ७-३३.	
सन्निपातज	,, २४-३३.		,, ६-२८.		,, ७-३३.	
रक्तज	,, २४-३४.		,, ६-२८,२९		,, ७-३३.	
मद्यज	,, २४-३३.		,, ६-२९.		,, ७-३३.	,, १९-२२-२६.
विषज	,, २४-३४.		,, ६-२९.		,, ७-३३.	
मधुमेह	नि. ४-४४.	,, ६-२४.	,, १०-१८.	३३-२३-२६.	,, ७-६२.	
मदात्यय-(पानात्यय)	चि. २४.	उ. ४७.	,, ६-१४.	१८-१.	,, ७-३४.	,, १९-३७-४२.
वातज	,, २४-९०, ९१.	,, ४७-१८.	,, ६-१८.	१८-१६.	,, ७-३४.	,, १९-४५.
पित्तज	,, २४-९२-९४.	,, ४७-१८.	,, ६-१९.	१८-१७.	,, ७-३४.	,, १९-४७.
कफज	,, २४-९५-९७.	,, ४७-१९.	,, ६-२०.	१८-१८.	,, ७-३४.	,, १९-५०.
सन्निपातज	,, २४-१००.	,, ४७-१९.	,, ६-२०.	१८-१८.		,, १९-५१
ध्वंसक	,, २४-१९९-२०१.		,, ६-२२.			
विक्षेपक						
विक्षय	,, २४-२०२.		,, ४७-२२-२३.			

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
परमद		उ. ४७-१९, २०.		१८-१९.	पू. ७-३४.	म. १९-५२.
पानाजीर्ण		,, ४७-२०, २१.		१८-२०.	,, ७-३५.	,, १९-५३.
पानविभ्रम		,, ४७-२१, २२.		१८-२०,२१.	,, ७-३५.	,, १९-५४.
पानहत		,, ४७-२३.				
मसूरिका	चि. १२-९३.	नि. १३-३८.	उ. ३१-८.	५४-१,४.	,, ७-९७.	,, ५९.
वातज				५४-४,६.	,, ७-९८.	,, ५९-४.
पित्तज				५४-६,८.	,, ७-९८.	,, ५९-५,६.
कफज				५४-९,१०.	,, ७-९८.	,, ५९-९,१०.
त्रिदोषज				५४-११.	,, ७-९८.	,, ५९-११.
रक्तज				५४-८.		,, ५९-७.
सप्तधातुगत						,, ५९-१२.
मरक–		सू. ६-१७.				
महागद–	,, १०-५६.					
मुखरोग—	,, २६.	नि. १६.	,, २१.			,, ६५.
वातज	,, २६-११९.					
पित्तज	,, २६-१२०.					
कफज	,, २६-१२१.					
सन्निपातज	,, २६-१२२.					
ओष्ठप्रकोप(वातज)		नि. १६-५.	,, २१-४.	५६-२.	,, ७-१२८.	,, ६५-६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ओष्ठप्रकोप (पित्तज)		नि. १६-६.	उ. २१-५.	५६-३.	पू. ७-१२८.	म. ६५-७.
„ (कफज)		„ १६-७.	„ २१-५,६.	५६-४.	„ ७-१२८.	„ ६५-८.
„ (सन्निपातज)		„ १६-८.	„ २१-६,७.	५६-५.	„ ७-१२८.	„ ६५-९.
„ (रक्तज)		„ १६-९.	„ २१-७,८.	५६-६.	„ ७-१२८.	„ ६५-१०.
„ (मांसज)		„ १६-१०.	„ २१-८.	५५-७.	„ ७-१२९.	„ ६५-११.
„ (मेदोज)		„ १६-११.	„ २१-९.	५६-८.	„ ७-१२९.	„ ६५-१२.
„ (अभिघातज)		„ १६-१२.	„ २१-१०.	५६-९.	„ ७-१२९.	„ ६५-१३.
खण्डौष्ठ			„ २१-३.	५६.	„ ७-१२९.	
दन्तमूलगतरोगाः:-						
शीताद		„ १६-१४, १५.	„ २१-२०, २१.	५६-१०, ११.	„ ७-१३२.	„ ६५-२४.
दन्तपुप्पुटक		„ १६-१६.	„ २१-२३, २४.	५३-१२.	„ ७-१३२.	„ ६५-२६.
दन्तवेष्टक		„ १६-१७.		५६-१३.	„ ७-१३२.	„ ६५-२७.
शौषिर		„ १६-१८.	„ २१-२५, २६.	५६-१४.	„ ७-१३२.	„ ६५-२८.
महाशौषिर		„ १६-१९, २०.	„ २१-२६, २७.	५६-१५.	„ ७-१३२.	„ ६५-२९.
परिदर		„ १६-२१.		५६-१६.		„ ६५-३०.
उपकुश	चि. १२-७८.	„ १६-२३.	„ २१-२१.	५६-१७.	„ ७-१३२.	„ ६५-३१.
दन्तवैदर्भ		„ १६-२४.	„ २१-२८,२९.	५६-१८.		„ ६५-३३.
वर्धन (खलि)		„ १६-२५.	„ २१-१५.	५६-१९.		„ ६५-३४.
अधिमांस		„ १६-२६.	„ २१-२७.	५६-२१.	„ ७-१३२.	„ ६५-३५.
कराल			„ २१-१४.	५६-२०.	„ ७-१३०.	„ ६५-७२.

रोगाणां नामानि–	चरक–संहिता	सुश्रुत–संहिता	अ. हृदयम्	माधव–निदानम्	शार्ङ्गधर–संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
दन्तनाडी—						
वातज		नि. १६–२६.	उ. २१–२९,३१.	५६–२१.	पू. ७–१३३.	म. ६५–३६.
पित्तज		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
कफज		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
सान्निपातिक		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
शल्यनिमित्तज–(रक्तनाडी–आगन्तुनिमित्ता)		,, १६–२६.	,, २१–२९, ३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
दन्तगतरोगाः—						
दालन (कराल)		,, १६–२८.	,, २१–११,१२.	५६–२२.	,, ७–१३०.	,, ६५–६५.
कृमिदन्तक		,, १६–२९.	,, २१–१९, २०.	५६–२३.	,, ७–१३०.	,, ६५–६६.
दन्तहर्ष		,, १६–३०.	,, २१–१२,१३.	५६–२५.	,, ७–१३१.	,, ६५–६८.
भञ्जनक(दन्तभेद)		,, १६–३१.	,, २१–१३.	५६–२४.	,, ७–१३१.	,, ६५–६७.
अधिदन्त			,, २१–१५.		,, ७–१३१.	
दन्तशर्करा		,, १६–३२.	,, २१–१६.	५६–२६.	,, ७–१३०.	,, ६५–६९.
कपालिका		,, १६–३३.	,, २१–१६,१७.	५६–२७.	,, ७–१३१.	,, ६५–७०.
श्यावदन्तक		,, १६–३४.	,, २१–१७.	५६–२८.	,, ७–१३१.	,, ६५–७१.
हनुमोक्ष–(दन्तचाल)		,, १६–३५.	,, २१–१४.		,, ७–१३०.	
दन्तविद्रधि	चि. १२–७८.		,, २१–२४,२५.	५६–२९.	,, ७–१३२.	,, ६५–३७.
जिह्वागतरोगाः–						
वातज		,, १६–३७.	,, २१–३१.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८७.
पित्तज		,, १६–३७.	,, २१–३२.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८८.
कफज		,, १६–३७.	,, २१–३२.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८९.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
अलास		नि. १६-३८.	उ. २१-३३.	५६-३१.	पू. ७-१३४.	म. ६५-९०.
उपजिह्विका	चि. १२-७७. सू. १८-१९.	,, १६-३९.	,, २१-३५.	५६-३२.	,, ७-१३५.	,, ६५-९१.
अधिजिह्वा	चि. १२-७७.	,, १६-५२.	,, २१-३४,३५.		,, ७-१३५.	,, ६५-१२३.
तालुगतरोगाः-						
गलशुण्डिका-(कण्ठशुण्डी)	सू. १८-२०.	,, १६-४१.	,, २१-३७,३८.	५६-३३.	,, ७-१२६.	,, ६५-९९.
गलग्रह	,, १८-२२.					
तुण्डिकेरी		,, १६-४२.	,, २१-४७.	५६-३४.	,, ७-१३८.	,, ६५-१००.
अध्रुष		,, १६-४२.	,, २१-४७.	५६-३४.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०१.
कच्छप(पी)		,, १६-४३.	,, २१-३९.	५६-३५.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०२.
अर्बुद		,, १६-४३.	,, २१-३९.	५६-३५.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०३.
मांससंघात-(तालुसंहति)		,, १६-४४.	,, २१-३८.	५६-३६.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०४.
तालुपुप्पुट		,, १६-४४.	,, २१-४०.	५६-३६.		,, ६५-१०५.
तालुशोष		,, १६-४५.	,, २१-४१.	५६-३७.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०६.
तालुपाक (तालुशोथ)		,, १६-४५.	,, २१-४०.	५६-३७.	,, ७-१३५.	,, ६५-१०६.
तालुपिडका			,, २१-३६.			,, ६५-११५.
कण्ठगतरोगाः-						
रोहिणी	,, १८-३४-३६.	,, १६-४६.	,, २१-४२.	५६-३८.	,, ७-१३७.	,, ६५-११६.
वातज ,,		,, १६-४८.	,, २१-४२.	५६-३९.	,, ७-१३७.	
पित्तज ,,		,, १६-४९.	,, २१-४३.	५६-४०.	,, ७-१३७.	,, ६५-११७.
कफज ,,		,, १६-४९.	,, २१-४४.	५६-४०.	,, ७-१३७.	,, ६५-११८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सन्निपातज-रोहिणी		नि. १६-५०.	उ. २१-४५.	५६-४१.	पू. ७-१३७.	म. ६५-११९.
रक्तज „		„ १६-५०.	„ २१-४४.	५६-४१.	„ ७-१३७.	„ ६५-१२०.
मेदोज „					„ ७-१३८.	
कण्ठशालूक-(तुण्डिकेरी)		„ १६-५१.	„ २१-४५, ४६.	५६-४२.	„ ७-१३८.	„ ६५-१२२.
अधिजिह्वा		„ १६-५२.	„ २१-५२.	५६-४३.		„ ६५-१२३.
वलय		„ १६-५३.	„ २१-४९.	५६-४४.	„ ७-१३९.	„ ६५-१२४.
बलास		„ १६-५४.		५६-४५.		„ ६५-१२५.
एकवृन्द		„ १६-५५.	„ २१-४६.	५६-४६.		„ ६५-१२६.
वृन्द		„ १६-५६.	„ २१-४६.	५६-४७.	„ ७-१३८.	„ ६५-१२७.
शतघ्नी		„ १६-५७.	„ २१-५०, ५१.	५६-४८.	„ ७-१३८.	„ ६५-१२८.
गिलायु		„ १६-५८.	„ २१-४९, ५०.	५६-४९.	„ ७-१३९.	„ ६५-१२९.
गलविद्रधि		„ १६-५९.	„ २१-५१, ५२.	५६-५०.	„ ७-१३८.	„ ६५-१३०.
गलौघ		„ १६-६०.	„ २१-४८.	५६-५१.	„ ७-१३८.	„ ६५-१३१.
स्वरघ्न		„ १६-६१.	„ २१-५७.	५६-५२.	„ ७-१३८.	„ ६५-१३२.
मांसतान-(अर्बुद)		„ १६-६२.	„ २१-५२, ५३.	५६-५३.	„ ७-१३८.	„ ६५-१३३.
विदारी		„ १६-६३.		५६-५४.		„ ६५-१३४.
सर्वसरमुखरोग-						
वातज		„ १६-६५.	„ २१-५८, ५९.	५६-५५.	„ ७-१४०.	„ ६५-१४८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तज		नि. १६-६५.	उ. २१-६१.	५६-५५.	पू. ७-१४०.	म. ६५-१४९.
कफज		,, १६-६६.	,, २१-६२.	५६-५५.	,, ७-१४०.	,, ६५-१५०.
रक्तज (मुखपाक)		,, १६-६६.	,, २१-६१.		,, ७-१४१.	
सन्निपातज			,, २१-६२.		,, ७-१४१.	
पूत्यास्य					,, ७-१४१.	
ऊर्ध्वगु(ग)द					,, ७-१४१.	
अर्बुद			,, २१-६२, ६३.		,, ७-१४१.	
कृच्छ्रश्वास			,, २१-६९.			
मूत्ररोग—						
मूत्रकृच्छ्र—	चि. २६-३२.	उ. ५९-४.	नि. ९.	३०-१.	,, ७-५७.	,, ३४-३.
वातज	,, २६-३४.		,, ९-४.	३०-३.	,, ७-५७.	
पित्तज	,, २६-३४.	,, ५९-५.	,, ९-४.	३०-३.	,, ७-५७.	,, ३४-४.
कफज	,, २६-३५.	,, ५९-६.	,, ९-५.	३०-४.	,, ७-५७.	,, ३४-५.
सन्निपातज	,, २६-३५.	,, ५९-७.	,, ९-५.	३०-४.	,, ७-५८.	,, ३४-६.
अश्मरीज	,, २६-४०.	,, ५९-११-१४.	,, ९-६.			,, ३४-१०.
पुरीषरोधज		,, ५९-९.		३०-६.	,, ७-५८.	,, ३४-८.
शर्कराज	,, २६-३९.	,, ५९-११-१५.	,, ९-१९.	३०-९.		,, ३४-११.
शोणितज	,, २६-४३.			३०-५.		
शल्यज		,, ५९-९.			,, ७-५८.	,, ३४-७.
शुक्रजन्य	,, २६-४१.		,, ९-१७.	३०-८.		,, ३४-९.

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मूत्रघात—						
मूत्रौकसाद	सि. ९-२८.	उ. ५८-२४, २६.	नि. ९-३९.	३१-१७,१९.	पू. ७-५६.	म. ३५-१७, १८.
मूत्रजठर	,, ९-३०.	,, ५८-१३, १४.	,, ९-२७,२८	३१-८,९.	,, ७-५५.	,, ३५-८,९.
मूत्रोत्सङ्ग	,, ९-३४.	,, ५८-१५, १६.	,, ९-२९,३०	३१-१०,११.	,, ७-५५.	,, ३५-१०, ११.
मूत्रक्षय	,, ९-३४.	,, ५८-१७.	,, ९-३७.	३१-१२.	,, ७-५५.	,, ३५-१२.
मूत्रातीत	,, ९-३५.	,, ५८-११, १२.	,, ९-२६,२७	३१-७.	,, ७-५४.	,, ३५-७.
वाताष्ठीला	,, ९-३६.	,, ५८-७,८.	,, ९-२३.२४	३१-४.	,, ७-५४.	,, ३५-४.
वातबस्ति	सि. ९-३७.	,, ५८-९,१०.	नि.९-२०-२३.	३१-५,६.	,, ७-५४.	,, ३५-५.
उष्णवात	,, ९-३८.	,, ५८-२२, २३.	,, ९-३५, ३६.	३१-१५,१६.	,, ७-५६.	,, ३५-१५, १६.
वातकुण्डलिका	,, ९-४०.	,, ५८-५,६.	,, ९-२५, २६.	३१-२,३.	,, ७-५६.	,, ३५-२,३.
मूत्रग्रन्थि	,, ९-४१.	,, ५८-१८, १९.	,, ९-३१.	३१-१३.	,, ७-५५.	,, ३५-१३.
मूत्रशुक्र		,, ५८-२०, २१.	,, ९-३२,३३.	३१-१४.	,, ७-५६.	,, ३५-१४.
विड्विघात	,, ९-४३.		,, ९-३३,३४.	३१-१९,२०.	,, ७-५६.	,, ३५-१९, २०.
बस्तिकुण्डल	४६.			३१-२१,२४.	,, ७-५६.	,, ३५-२१, २४.
मूढगर्भ—		नि. ८-३.		६४-३.	,, ७-१८१.	,, ६९-११४.
कील		,, ८-४.		६४-६.		
प्रतिखुर		,, ८-४.		६४-६.		,, ६९-११४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
परिघ		नि. ८-४.		६४-६.		म. ६९-११४.
बीजक		,, ८-४.		६४-६.		,, ६९-११४.
मूर्च्छा—		उ. ४६-१.	नि. ६-३०.	१७-१,५.	पू. ७-३१.	,, १८.
वातज	सू. २४-३५,३६.	,, ४६-८.	,, ६-३०,३१.	१७-७,८.	,, ७-३१.	,, १८-८.
पित्तज	,, २४-३७,३८.	,, ४६-८.	,, ६-३२,३३.	१७-९,१०	,, ७-३१.	,, १८-९,१०.
कफज	,, २४-३९,४०.	,, ४६-८.	,, ६-३३,३४.	१७-११,१२.	,, ७-३१.	,, १०-११,१२.
सन्निपातज	,, २४-४१.		,, ६-३५.	१७-१३.	,, ७-३२.	,, १८-१३.
रक्तज		,, ४६-८.		१७-१४,१५.		,, १८-१५.
मद्यज		,, ४६-८.		१७-१६,१७.		,, १८-१७.
विषज	,, २४-३४.	,, ४६-१८.		१७-१८.		,, १८-१८.
ग्लानिज					,, ७-३२.	
योनिरोग—	चि. ३०-१.	,, ३८.	उ. ३३.	६२-१.	,, ७-१७७.	,, ६९.
वातज	,, ३०-९-११.	,, ३८-६,७.	,, ३३-२८,३१.	६२-४.	,, ७-१७७.	,, ६९-२-७.
पित्तज	,, ३०-११,१२.	,, ३८-७.	,, ३३-४२,४३.	६२-७.	,, ७-१७७.	,, ६९-३-१०.
कफज	,, ३०-१३,१४.	,, ३८-८.	,, ३३-४४,४५.	६२-१०.	,, ७-१७७.	,, ६९-४-१३.
सन्निपातज	,, ३०-१४.	,, ३८-९.	,, ३३-५१.	६२-१२.	,, ७-१७७.	,, ६९-५-१६.
अचरणा	,, ३०-१८.	,, ३८-१६.		६२-९.	,, ७-१७९.	,, ६९-१२.
अत्यानन्दा		,, ३८-१५.		६२-८.	,, ७-१७९.	,, ६९-११.
अतिचरणा	,, ३०-१९.	,, ३८-१६.	,, ३३-३१.	६२-९.	,, ७-१७९.	,, ६९-१२.

रोगाणां नामानि–	चरक–संहिता	सुश्रुत–संहिता	अ. हृदयम्	माधव–निदानम्	शार्ङ्गधर–संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अन्तर्मुखी	चि. ३०–२९–३१.	उ. ३८–१६.	उ. ३३–३५, ३६.		पू. ७–१७८.	
अरजस्का	,, ३०–१७.			६२–११.	,, ७–१७८.	
असृग्दर	,, ३०–२०८.	शा. २–१८.		६२–१–५.	,, ७–१७६.	
उदावर्तिनी	,, ३०–२५, २६.	उ. ३८–९.	,, ३३–३३.	६२–२.	,, ७–१७९.	म. ६९–६.
उपप्लुता (अप्लुता)	,, ३०–२१, २२.	,, ३८–१०.	,, ३३–४८, ४९.	६२–३.	,, ७–१७९.	
जातघ्नी			,, ३३–३४.			,, ६९–९.
लोहितक्षया			,, ३३–४५.		,, ७–१७७.	,, ६९–८.
विप्लुता		,, ३८–६.	,, ३३–४९.		,, ७–१७८.	,, ७०–९.
आनन्दचरणा						,, ७०–१२.
कर्णिनी	,, ३०–२७, २८.	,, ३८–१५.	,, ३३–५०, ५१.	६२–८.	,, ७–१७९.	,, ७०–११.
परिप्लुता	,, ३०–२३, २४.	,, ३८–६.	,, ३३–४६–४८.	६२–३.	,, ७–१७८.	,, ७०–७.
पुत्रघ्नी	,, ३०–२८, २९.	,, ३८–१३.		६२–६.	,, ७–१७८.	,, ७०–९.
प्रदर	,, ३०–२०४.	,, ३८–१३.				,, ६६.
प्रस्रंसिनी(रक्तजा)		,, ३८–१३.		६२–६.	,, ७–१७७.	,, ६६–८.
प्राक्चरणा	,, ३०–२०.	,, ३८–१९.	,, ३३–३३.		,, ७–१७९.	
फलिनी		,, ३८–१८.		६२–११.	,, ७–१७८.	,, ६९–१४.
महायोनि(विवृता)	,, ३०–३५–३७.	,, ३८–१९.	,, ३३–४०, ४१.	६२–१२.	,, ७–१७९.	,, ६९–१५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
योनिकन्द				६२-१,४.		म. ६९-१९.
खण्डिता					पू. ७-१७८.	
अण्डली				६२-११.		
रक्तयोनि-(लोहितक्षया)	चि. ३०-१६.	उ. ३८-१२.	उ. ३३-४३	६२-५.	„ ७-१७७.	„ ६९-८.
वामिनी.	„ ३०-३२, ३४.	„ ३८-१२.	„ ३३-३८, ३९.	६२-५.	„ ७-१७८.	„ ६९-९.
शुष्का	„ ३०-३३.		„ ३३-३७,३८.		„ ७-१७८.	
वन्ध्या		„ ३८-६.		६२-२.		„ ६९-६.
षण्ढयोनि	„ ३०-३४, ३५.	„ ३८-१८.	„ ३३-३९, ४०.	६२-११.		„ ६९-१४.
सूचीमुखी	„ ३०-३१, ३२.	„ ३८-१९.	„ ३३-३६, ३७.	६२-१२.	„ ७-१७८.	„ ६९-१५.
सोमरोग				३-१,६. परि०	„ ७-६३.	„ ६९.
रक्तपित्त—	चि. ४. नि. २.	„ ४५-१.	नि. ३.	९-१,२.	„ ७-२०.	„ ९.
ऊर्ध्वभागज	नि. २-८. चि. ४-१५.	„ ४५-५.	„ ३-७.	९-३.	„ ७-२०.	„ ९-३.
अधोभागज	नि. २-८. चि. ४-१६.	„ ४५-५.	„ ३-७.	९-३.	„ ७-२०.	„ ९-३.
उभयभागज	नि. २-८.	„ ४५-६.	„ ३-१३.	९-७.	„ ७-२०.	„ ९-७.
वातज	चि. ४-११.		„ ३-११.	९-५.	„ ७-२०.	„ ९-५.
पित्तज	„ ४-११.			९-६.		„ ९-६.
कफज	„ ४-११.		„ ३-८.	९-५.	„ ७-२०.	„ ९-५.

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सान्निपातिक	,, ४-१३.			९-७.		
राजयक्ष्मा—	नि. ६. चि. ८.	उ. ४१-१.	नि. ५.	१०.	पू. ७-२२.	म. ११.
साहसज	,, ८-१४-१९. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१		,, ११-१.
वेगरोधज	चि.८-२०-२३. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१.		,, ११-१.
विषमाशनज	चि. ८-२८-३२. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१.		,, ११-१.
क्षयज	चि.८-२४-२७. नि. ६-३.	,, ४१-१०.	,, ५-४.	१०-१.	,, ७-२३.	,, ११-१,
व्यवायजन्य		,, ४१-१७.		१०-१.	,, ७-२३.	,, ११-२०.
शोषजन्य						,, ११-२०,२१.
शोकजन्य		,, ४१-१८.		१०-१५.	,, ७-२३.	,, ११-२१.
वार्धक्यजन्य		,, ४१-१९, २०.		१०-१६-१८.	,, ७-२४.	,, ११-२२, २३.
व्यायामजन्य	चि. ११-४-८.	,, ४१-२२.		१०-१९.	,, ७-२४.	,, ११-२५.
अध्वजन्य		,, ४१-२१.		१०-१८, १९.	,, ७-२४.	,, ११-२४.
व्रणजन्य		,, ४१-२३.		१०-२०.	,, ७-२३.	२६.
उरःक्षतजन्य	चि. ११-९-११.	,, ४१-२४-२६.	. . .	१०-२१-२९.	,, ७-२३.	,, ११-३१-३३.
रेतोदोष—	,, ३०.				,, ७-१७२.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
तनु-रेतस्	चि. ३०-१३९, १४०.					
शुष्क ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
फेनिल ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
अश्वेत ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
पूति ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
अतिपिच्छिल ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
अन्यधातूपहित ,,	,, ३०-१३९, १४०.					
अवसादि- ,, (ग्रथित)	,, ३०-१३९, १४०.		शा. १-११.			
वातदुष्ट ,,	,, ३०-१४०.	शा. २-४.	,, १-१०.		पू. ७-१७२.	
पित्तदुष्ट ,,	,, ३०-१४२.	,, २-४.	,, १-१०.		,, ७-१७२.	
कफदुष्ट ,,	,, ३०-१४२.	,, २-४.	,, १-१०.		,, ७-१७२.	
रक्तान्वित ,,	,, ३०-१४३.	,, २-४.	,, १-११.		,, ७-१७२.	
वातपित्तदुष्ट ,,		,, २-४.	,, १-११.		,, ७-१७३.	
वातकफदुष्ट ,,		,, २-४.	,, १-११.		,, ७-१७३	
पित्तकफदुष्ट ,,		,, २-४.			,, ७-१७३.	
रक्तपित्तदुष्ट ,,			शा. १-११.		,, ७-१७३.	
सन्निपातदुष्ट ,,		,, २-४.			,, ७-१७४	

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मूत्रप्रस – रेतस्			नि. १–१२.			
विट्प्रभ ,,			,, १–१२.			
रोमान्तिका—	चि. १२–९२.			५४–१३.		म. ५९–२२.
वातबलास-	,, २९–११.		,, १६–४.			
वातविकार- (नानात्मज)	सू. २०–१०.					,, २३–४–१६.
अतिप्रलाप	,, २०–११.			२२–६.	पू. ७–११२.	
अनवस्थितचित्तत्व	,, २०–११.				,, ७–११३.	
अङ्गमर्द						,, २३–२१८.
अङ्गशुष्कता						,, २३–२१८.
अङ्गविभ्रंश						,, २३–२१८.
अर्दित	सू. २०–११.	नि. १–६८–७२.		२२–४५, ४७.	,, ७–१०६.	,, २३–६०–६३.
अरसज्ञता	,, २०–११.					,, २३–५३.
अशब्दश्रवण	,, २०–११.				,, ७–११५.	
अस्वप्न	,, २०–११.				,, ७–११२.	
अक्षिभेद	,, २०–११.					
अक्षिव्युदास	,, २०–११.			२२–८.	,, ७–११५.	
अक्षिशूल	,, २०–११.					
आटोप	चि. २८–२८.			२२–६८.		,, २३–२१६.
आमवात				२५–५.	,, ७–४१.	,, २३–६७.
आक्षेपक	सू. २०–११.	नि. १–५०, ५१.	नि. १५–१७.	२२–२७, २८.	,, ७–१०५.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
उच्चैःश्रुति	सू. २०-११.					
उदरावेष्ट	,, २०-११.					
उदावर्त	,, २०-११.					
ऊरुस्तम्भ	,, २०-११.			२४-१,१०.	पू. ७-१०५.	म. २४-१०४.
ऊरुसाद	,, २०-११.					
एकाङ्गरोग	,, २०-११.			२२-४०,४१.		
ओष्ठभेद	,, २०-११.					
कण्ठोद्ध्वंस	,, २०-११.					
कर्णशूल	,, २०-११.	नि. १-८४.				
कम्प	,, २४-१५.		सू. ११-६.	२२-७४.	,, ७-११२.	,, २३-२१७.
कषायास्यता	,, २०-११.				,, ७-११४.	
क्लम	,, २४-१४.					
कार्ष्ण्य			सू. ११-६.			,, २३-२१७.
कुब्जत्व	,, २०-११.		नि. १५-१४.			,, २३-१८८.
कार्श्य						,, २३-२१७.
केशभूमिस्फुटन	,, २०-११.					
खञ्जत्व	,, २०-११.			२२-५९, ६०.		,, २४-१५१.
गर्भनाश	चि. २८-२२.			२२-७.		,, २४-२१९.
ग्रीवास्तम्भ-(ग्रीवाहुण्डन)	सू. २०-११.			२२-८.		
गुदभ्रंश	,, २०-११.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
गुदार्ति	सू. २०-११.					
गुल्फग्रह	,, २०-११.					
गृध्रसी	,, २०-११.			२२-५४,५६.	पू. ७-१०८.	म. २३-१२९, १३०.
घ्राणनाश-(नासाहुण्डन)	,, २०-११.		नि. १५-९.	२२-८.	,, ७-११५.	
जानुभेद	,, २०-११.					
जानुविश्लेष	,, २०-११.					
जृम्भा	,, २०-११.				,, ७-१११.	,, २३-२०.
तमस्	,, २०-११.					
तिमिर	,, २०-११.					
त्वक्शून्यता						,, २३-५८.
तोद						,, २३-२१८.
दण्डक	,, २०-११.					
दन्तभेद	,, २०-११.					
दन्तशैथिल्य	,, २०-११.					
नखभेद	,, २०-११.					
निद्रानाश	चि. २८-२१.				,, ७-११२.	,, २३-२१९.
निरामवात			नि. १६-३०.			
पक्षवध(पक्षघात)	सू. २०-११.	नि. १-६०-६२.		२२-४०, ४१.		

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पाङ्गुल्य	सू. २०-११.	नि. १-७७.		२२-५९,६०	पू. ७-१०७.	म. २३-१५२.
पादभ्रंश	,, २०-११.					
पादशूल	,, २०-११.					
पादसुप्तता	,, २०-११					
पारुष्य	,, २०-११					
पार्श्वविमर्द	,, २०-११					,, २३-२१६.
पिण्डिकोद्वेष्टनम्	,, २०-११.					
पुरीषातिगाढत्व					,, ७-११०.	,, २३-२१६.
पृष्ठग्रह	,, २०-११.		नि. १५-७.			
प्रलापक			सू. ११-६.		,, ७-११२.	,, २३-५१.
बाधिर्य	,, २०-११.	उ नि. १-८३.				
बाहुशोष	,, २०-११.					,, २३-७९.
बलहानि						,, २३-२१९.
भेद						,, २३-२१८.
भीरुता					,, ७-११४.	,, २३-२१९.
मलाप्रवृत्ति						,, २३-२१७.
मूकत्व	,, २०-११.	,, १-८५.		२२-६५,६६.	,, ७-१११.	,, २३-४५.
मोह						,, २३-२१८.
भ्रम	,, २०-११.		सू. ११-६.			
भ्रूव्युदास	,, २०-११.					
मन्याहस्तम्भ	,, २०-११.	,, १-६७.		२२-५१.	,, ७-१०७.	,, २३-६५.

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मुखशोष	सू. २०-११.					
मूत्रनिग्रह						म. २३-१२२.
रजोनाश	चि. २८-२२.			२२-७.		,, २३-२१८.
रौक्ष्य	सू. २०-११.					,, २३-२१७.
लोमहर्ष						,, २३-२१७.
ललाटभेद	,, २०-११.					
त्रिकग्रह	,, २०-११.				पू. ७-१०६.	,, २३-११५.
वर्त्मस्तम्भ	,, २०-२१.					
वर्त्मसंकोच	,, २०-११.					
वक्षउद्घर्ष	,, २०-११.					
वक्षउपरोध	,, २०-११.					
वक्षस्तोद	,, २०-११.					
वाक्सङ्ग	,, २०-११.				,, ७-१०६.	
वाचालता						,, २३-२१६.
वातखुड्डता- (वातकण्टक)	,, २०-११.	नि. १-७९. ,, १-७९.	नि. १६-४.	२२-६१,६२.		,, २३-१६०.
वामनत्व	,, २०-११.				,, ७-१०९.	
विड्भेद	,, २०-११.		सू. ११-६.			
विपादिका	,, २०-११.			४९-१९.		
विषाद (दीनता)	,, २०-११.		,, ११-६.			
वृषणाक्षेप	,, २०-११.					

रोगाणां नामानि–	चरक– संहिता	सुश्रुत– संहिता	अ. हृदयम्	माधव– निदानम्	शार्ङ्गधर– संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
वेपथु	सू. २०–११.					
वङ्क्षणानाह	,, २०–११.					
व्यथा						म. २३–२१७.
शिरास्फूर्ति						,, २३–२१८.
शिरोरुक्	,, २०–११.					
शुक्रक्षय	चि. २८–३४.		नि. ५–१३.		पू. ७–११३.	,, २३–२१९.
शङ्खभेद	सू. २०–११.					
शेफस्तम्भ	,, २०–११.					
शैत्य						,, २३–२१७.
श्यावारुणास्यता	,, २०–११.					
श्रोणिभेद	,, २०–११.		,, १५–७.			
सङ्कोच						,, २३–२१८.
स्वेदनाश						,, २३–२१९.
श्रम						,, २३–२१९.
सर्वाङ्गरोग	सू. २०–११.					
	चि. २८–२९.					
स्तम्भ	चि. २८–२०.					,, २३–२१७.
हनुभेद	सू. २०–११.		,, १५–२९, ३०.			
हिक्का	,, २०–११.	उ. ५०–१,२.		१२–१,२		
हृद्द्रव	,, २०–११.					
हृन्मोह	,, २०–११.					

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
ह्रस्वकेश						म. २३–२१६.
वातव्याधि— (सामान्यज)	चि. २८.					
अन्तरायाम	,, २८–४३, ४४.	नि. १–५५, ५६.	नि. १५–२२–२४.	२२–३६.	पू. ७–१०६.	,, २३–१८१.
अपतन्त्रक	सि. ९–१२, १४.	,, १–६४–६६.	,, १५–१७–१९.	२२–३०.	,, ७–१०८.	,, २३–१९१, १९२.
अपतानक	,, ९–१५.	,, १–५२	,, १५–२०.	२२–३१,३२.	,, ७–१०८.	,, २३–१९८.
अर्दित	चि. २८–४१, ४२.	,, १–६९–७२.	,, १५–३२–३७.	२२–४४–४६.	,, ७–१०६.	,, २३–६०–६३.
अस्थिप्रभेद	,, २८–२०.			२२–१८.		
अस्थिशोष						
वाताष्ठीला	सि. ९–७,८.	,, १–९०.	,, ९–२३,२४	२२–७०,७१.	,, ७–१०९.	,, २३–१०८.
अवबाहुक		,, १–८२.	,, १५–४३.	२२–६४.	,, ७–१०८.	,, २३–८१.
आढ्यवात			,, १५–४७–५९.			
ऊरुस्तम्भ			,, १५–४७–५९.			
अंसशोष		,, १–८२.		२२–६४.		
आक्षेपक	चि. २८–५०.	,, १–५०–५८.	,, १५–१७.	२२–३७.	,, ७–१०५.	,, २३–१६७.
आध्मान		,, १–८८.	,, ११–६०.	२२–६९.	,, ५–११४.	,, २३–९३.
बहिरायाम– (बाह्यायाम)	,, २८–४३, ४४.	,, १–५५, ५६.		२२–३६.	,, ७–१०६.	
ऊर्ध्ववात		उ. ३९–१३१.				,, २३–९०.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
एकाङ्गवात	चि. २८-५३-५५.		नि. १५-३७-४०.	२२-४१.		
कलापखञ्ज		नि. १-७८.	,, १५-५६.	२२-६०,६१.	पू. ७-१०७.	म. २३-१५३.
क्रोष्टुकशीर्ष		,, १-७६.	,, १५-५२.	२२-५८,५९.	,, ७-१०७.	,, २३-१५५.
खञ्ज		,, १-७७.	,, १५-४५.	२२-५९,६०.	,, ७-१०७.	,, २३-१५१.
खल्ली	,, २८-५७.	,, १-७५.	,, १५-५५.	२२-७४.	,, ७-१०६.	,, २३-१५८.
गृध्रसी	,, २८-५६.	,, १-७४.	,, १५-५४.	२२-५४-५६.	,, ७-१०८.	,, २३-१२९, १३०.
जिह्वास्तम्भ			,, १५-३१.	२२-५२.	,, ७-१०६.	,, २३-४३.
तूनी		,, १-८६.	,, ११-६२.	२२-६६,६७.	,, ७-१०६.	,, २३-११२.
दण्डक	चि. २८-५१, ५२.		,, १५-४२.			
दण्डापतानक		,, १-५३.	,, १५-४२.	२२-३२,३३.	,, ७-१०६.	,, २३-१७०.
धनुःस्तम्भ	,, २८-४५, ४८.	,, १-५४.	,, १५-२४, २६.	२२-३३.	,, ७-१०६.	,, २३-१८७.
पक्षाघात		,, १-६०,६१.	,, १५-३८, ४०.	२२-४०,४१.	,, ७-१०७.	,, २३-२०४.
पाददाह		,, १-८०	,, १५-५६, ५६½.	२२-६२,६३.		,, २३-१६२.
पादहर्ष		,, १-८१.	,, १५-५५, ५६.	२२-६३,६४.	,, ७-१०८.	,, २३-१६५.
प्रतितूनी		,, १-८७.	,, ११-६२.	२२-६७,६८.	,, ७-१०७.	,, २३-११३.
प्रत्यष्ठीला		,, १-९१.	,, ११-६१.	२२-७२.	,, ७-१०९.	,, २३-१०९.
प्रत्याध्मान		,, १-८९.		२२-६९,७०.	,, ७-११४.	,, २३-१०५.
व्रणायाम			,, १५-२७,२८.			

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पङ्गु			नि. १५-४५.			
बहिरायाम	चि. २८-४५-४८.	नि. १-५७.	,, १५-२४-२६.	२२-३६.	पू. ७-१०६.	म. २३-१८४, १८५.
मिन्मिन		,, १-८५.		२२-६५,६६.	,, ७-१०९.	,, २३-४५.
मन्यास्तम्भ	,, २८-४५.	,, १-६७.		२२-५१.	,, ७-१०७.	,, २३-७५.
मूक		,, १-८५.		२२-६५,६६.	,, ७-१११.	,, २३-४५,
वातकण्टक		,, १-७९.	,, १५-५३.	२२-६१,६२.	,, ७-१०८.	,, २३-१६०.
विश्वाची		,, १-७५.	,, १५-४४.	२२-५७,५८.	,, ७-१०८.	,, २३-८६.
वेपथु	सू. २०-११.			२२-७४.	,, ७-११२.	
शिरोग्रह						,, २३-१८.
सर्वाङ्गवात	,, २०-११. चि. २८-५५.		,, १५-४०.	२२-४१.		,, २३-२११.
सिराग्रह			,, १५-३७, ३८.	२२-५३.		
हनुग्रह	,, २८-५०.	,, १-५२.	,, १५-२९, ३०.	२२-४९,५०.	,, ७-१०५.	,, २३-२४, २५.
वातरक्त—	,, २९.	,, १-४२, ४४.	,, १६.	२३.	,, ७-१०४.	,, २८-९, १०.
उत्तान	,, २९-१९, २०.		,, १६-९.			
गम्भीर	,, २९-२१-२३.		,, १६-१०,११.			
दोषज	,, २९-२४-२९.	,, १-४५, ४६.	,, १६-१२-१६.	२३-९-१२.	,, ७-१०४.	,, २८-९-१३.
विसूचिका-		उ. ५६.	सू. ८-७,८.	६-१६,१७.	,, ७-११.	,, ६-२४-२६.
विसर्प-	चि. २१.	नि. १०-३.		५२.	,, ७-१००.	,, ५५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वातज	चि. २१-२९, ३०.	नि. १०-४.	नि. १३-४७, ४८.	५२-५.	पू. ७-१००.	म. ५५-५.
पित्तज	,, २१-३१, ३२.	,, १०-५.	,, १३-४८.	५२-६.	,, ७-१००.	,, ५५-६.
कफज	,, २१-३३, ३४.	,, १०-६.	,, १३-४९.	५२-७.	,, ७-१००.	,, ५५-७.
सन्निपातज	,, २१-४१, ४२.	,, १०-६.	,, १३-६५.	५२-७.	,, ७-१०१.	,, ५५-२२.
अग्निदाहज-(विसर्प)					,, ७-१०१.	
बाह्याश्रय			,, १३-४५,४६.			
अन्तराश्रय			,, १३-४६.			
उभयाश्रय			,, १३-४३.			
क्षतज		,, १०-७.	,, १३-६५,६६.	५२-२२-२४.	,, ७-१०१.	,, ५५-२३.
कर्दम-(पित्तकफज)	,, २१-३७, ३८.		,, १३-६०- ,, ६४.	५२-१७-२२.	,, ७-१०१.	,, ५५-१७-२१.
अग्नि-(वातपित्तज)	,, २१-३५, ३६.		,, १३-५०-५५.	५२-८-१३.	,, ७-१०१.	,, ५५-९-१३.
ग्रन्थि-(वातकफज)	,, २१-३९.		,, १३-५६-५९.	५२-१४-१७.	,, ७-१०१.	,, ५५-१४, १५.
विस्फोट—	,, १२-९०.	नि. १३-१८.	उ. ३१-९.	५३-१-३.	,, ७-९६.	,, ५७-३.
वातज				५३-४.	,, ७-९७.	,, ५७-४.
पित्तज				५३-५.	,, ७-९७.	,, ५७-५.
कफज				५३-६.	,, ७-९७.	,, ५७-६.
रक्तज				५३-१०.	,, ७-९७.	,, ५७-११.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
द्वन्द्वज				५३-७,८.	पू. ७-९७.	म. ५७-७-९.
सन्निपातज				५३-८,९.	„ ७-९७.	„ ५७-१०.
विद्रधि-	सू. १७-९०-१०३.	नि. ९.	नि. ११-१,२१.	४०-८,९.	„ ७-७०.	„ ४५.
बाह्यविद्रधि	„ १७-९०.			४०-१,३.	„ ७-७०.	„ ४५.
अन्तर्विद्रधि				४०-११-१६.		„ ४५-१४.
वातज	„ १७-९६.	„ ९-७.	„ ११-६,७.	४०-४.	„ ७-७०.	„ ४५-४.
पित्तज	„ १७-९६.	„ ९-८.	„ ११-७,८.	४०-५.	„ ७-७०.	„ ४५-५.
कफज	„ १७-९७.	„ ९-९.	„ ११-८,९.	४०-६.	„ ७-७०.	„ ४५-६.
सन्निपातज	„ १७-९७.	„ ९-१०.	„ ११-९.	४०-७,८.	„ ७-७१.	, ४५-७.
रक्तज		„ ९-१३.	„ ११-१०.	४०-१०,११.	„ ७-७१.	„ ४५-१०.
क्षतज(आगन्तु)			„ ११-११,१३.	४०-८,१०.	„ ७-७१.	„ ४५-८.
गुदज				४०-१४.		„ ४५-१३.
बस्तिज				४०-१४.		„ ४५-१३.
नाभिज				४०-१५.		„ ४५-१३.
कुक्षिज				४०-१५.		„ ४५-१३.
वङ्क्षणज				४०-१५.		„ ४५-१४.
वृक्कज				४०-१६.		„ ४५-१४.
प्लीहज				४०-१६.		„ ४५-१४.
हृज्ज				४०-१६.		„ ४५-१४.
यकृज्ज				४०-१६.		„ ४५-१४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
क्लोमज				४०-१६.		म. ४५-१४.
विष—						
जङ्गम	चि. २३-९, १०.	क. ३-५.	उ. ३५-५.	६९-२.	पू. ७-१९६.	,, ६६-१, ३,२३.
स्थावर	,, २३-११-१३.	,, २-५.	,, ३५-४.	६९-३.	,, ७-१९६.	,, ६६-२.
गरविष	,, २३-१४.		,, ३५-६.	६९-३५,३७.	,, ७-२००.	,, ६६-४८.
कृत्रिमविष		,, २-२४.	,, ३५-६.		,, ७-१९९, २००.	,, ६६-४७.
दूषीविष	,, २३-३१.	,, २-२५,२६.	,, ३५-३३.	६९-२५,२६.	,, ७-२००.	,, ६६-३७.
पत्र-विष.						,, ६६-५.
फल ,,						,, ६६-६.
पुष्प ,,						,, ६६-७.
त्वक् ,,						,, ६६-८.
सार ,,						,, ६६-८.
निर्यास ,,						,, ६६-८.
क्षीर ,,						,, ६६-९.
धातु ,,						,, ६६-१०.
कन्द ,,						,, ६६-११.
व्रण—	चि. २५.	सू. २१-२८.		४२-१.	,, ७-७१.	
वातजन्य		,, २१-२८.	उ. २५-५-७.	४२-२.	,, ७-७२.	
पित्तजन्य		,, २१-२८.	,, २५-७,८.	४२-३.	,, ७-७२.	

रोगाणां नामानि–	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
श्लेष्मजन्य		सू. २१–२८.	उ. २५–९.	४२–४.	पू. ७–७२.	
रक्तजन्य		,, २१–२८.	,, २५–१०.		,, ७–७२.	
वातपित्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.		,, ७–७३.	
वातकफज		,, २१–२८.	,, २५–११.		,, ७–७३.	
पित्तकफज		,, २१–२८.	,, २५–११.		,, ७–७३.	
वातरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.		,, ७–७४.	
पित्तरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७४.	
कफरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७४.	
वातपित्तरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७४.	
वातकफरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७५.	
पित्तकफरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७५.	
वातपित्तकफज		,, २१–२८.	,, २५–११.	४२–५.	,, ७–७३.	
वातपित्तकफरक्तज		,, २१–२८.	,, २५–११.		,, ७–७५.	
व्रणायाम			नि. १५–२७, २८.			
दुष्टव्रण	चि. २५–२०.	,, २२–७.	उ. २५–२–४.	४२–७,८.	,, ७–७२.	
सद्योव्रण		चि. २–९,१०.	,, २६–२.	४३–१,२.	,, ७–७६.	
नाडीव्रण	,, २५–५६.	नि. १०–९,१०.		४५–१,२.	,, ७–७९.	
शुद्धव्रण	,, २५–८६.	सू. २३–१८. चि. १–७.	,, २५–११, १२.	४५–८,९.	,, ७–७२.	
रुह्यमाणव्रण		सू. २३–१९.	,, २५–२२, २३.	४५–९,१०.		
सशल्यव्रण		,, २६–१३.		४३–१५.		

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सम्यग्रूढव्रण		सू. २३-२०.		४२-१०,११.		
निज	चि. २५-९, १०.	चि. १-३.	उ. २५-१.	४२-१.	पू. ७-७१.	
आगन्तुज	,, २५-७.	,, १-३.	,, २५-१.	४२-१.	,, ७-७१.	
वृद्धि (ब्रध्न)	,, १२-९४.	नि. १२-३.	नि. ११-२१, २२.	३७.	,, ७-६६.	म. ४२.
वातज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२४.	३७-३.	,, ७-६६.	,, ४२-३.
पित्तज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२४.	३७-४.	,, ७-६६.	,, ४२-४.
कफज	,, १२-९५.	,, १२-६.	,, ११-२५.	३७-४.	,, ७-६६.	,, ४२-५.
रक्तज		,, १२-६.	,, ११-२५.	३७-५.	,, ७-६७.	,, ४२-६.
मेदोज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२६, २७.	३७-५.	,, ७-६७.	,, ४२-७.
मूत्रज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२६.	३७-६.	,, ७-६७.	,, ४२-८.
अन्त्रवृद्धि	,, १२-९४, ९५.	,, १२-६.	,, ११-२९-३१.	३७-७-११.	,, ७-६७.	,, ४२-९.
अण्डवृद्धि					,, ७-६७.	
शीतपित्त—				५०-१-४.	,, ७-१०२.	,, ५४.
उदर्द	सू. २०-१७.			५०-१५.	,, ७-१०२.	,, ५४-४.
कोठ	,, २४-१६.		उ. ३१-३२.	५०-६.	,, ७-९४.	,, ५४-६.
शीतला—				१-१०. परि०		,, ५९-५९.
शूल—		,, ४२.		२६-१.	,, ७-४२.	,, २९.
वातज		,, ४२-८२, ८३.		२६-२-५.	,, ७-४२.	,, २९-२-५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तज		उ. ४२–८४, ८५.		२६–६–८.	पू. ७–४२.	म. २९–६–८.
कफज		,, ४२–८५, ८६.		२६–९–१०.	,, ७–४२.	,, २९–९–१०.
सान्निपातिक		,, ४२–८७.		२६–११.	,, ७–४३.	,, २९–१२.
आमशूल		,, ४२–१२३–१२५.		२६–१२.	,, ७–४३.	,, २९–१३.
कुक्षिशूल						,, २९–१४.
द्वन्द्वजशूल				२६–१३, १४.	,, ७–४२.	,, २९–११–१५.
अम्लपित्तजशूल					,, ७–४४.	
परिणामशूल				२६–१५–१७.	,, ७–४३.	,, २९–२३.
अन्नद्रवशूल				२६–२१, २२.	,, ७–४४.	,, २९–२९.
बस्तिशूल		,, ४२–१३३, १३४.				,, २९–१४,
नाभिशूल						,, २९–१४.
हृदयशूल		,, ४२–१३१–१३२.				,, २९–१६,
पार्श्वशूल		,, ४२–११७–११९.			,, ७–१०६.	,, २९–१८.
त्रिकशूल					,, ७–१०६.	
मूत्रशूल		,, ४२–१३५.				
पुरीषशूल		,, ४२–१३६–१३९.				
अन्नदोषजशूल		,, ४२–१४२–१४४.				

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शोष—	नि. ६.					
(राजयक्ष्मन्)	,, ६.	उ. ४१.	नि. ५–१६–२२.	१०–१४.	पू. ७–२३.	म. ११.
शोथ—	,, १२–१.	सू. १७–३.	,, १३–२१.	३६–१.	,, ७–६५.	,, ४१–४.
शोणितजन्यरोग–	सू. २४–१.	,, १४–३४.				
अक्षिरोग	,, २४–११.			५९.	,, ७–१५३.	,, ६३.
अग्निसाद	,, २४–१३.					
अतिदौर्बल्य	,, २४–१३.					
अन्नपानविदाह	,, २४–१४.					
अरुचि	,, २४–१३.			१४.		
उपकुश	,, २४–१२.	नि. १६–२१–२३.	उ. २१–२१–२३.	५६–१७.	,, ७–१३२.	,, ६५–३१.
कण्डू	,, २४–१६.					
कम्प	,, २४–१५.		सू. ११–६.		,, ७–११२.	,, २३–२१७.
कुष्ठ	,, २४–१६.	,, ५.	नि. १४.	४९–१–६.	,, ७–८७.	,, ५३.
कोठ	,, २४–१६.		उ. ३१–३३.	५०–६.	,, ७–९४.	,, ५४–६.
क्रोधप्रचुरता	,, २४–१४.				,, ७–१२०.	
क्लम	,, २४–१४.					,, १८–२१.
गुरुगात्रता	,, २४–१३.				,, ७–१२२.	
गुल्म	,, २४–१२.	उ. ४२–४.	नि. ११–३३–३८.	२८–१,२.	,, ७–५२.	,, ३१.
चर्मदल	,, २४–१६.	नि. ५–१०.	नि. १४–२९.	४९–१८.	,, ७–८९.	,, ५३–२६.
तन्द्रातियोग	,, २४–१५.				,, ७–१२२.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
तमोऽतिदर्शन	सू. २४-१५.				पू. ७-१२१.	
तिक्ताम्लोद्गिरण	,, २४-१४.					
निद्रा	,, २४-१५.					म. १८-२२.
पिडका	,, २४-१६.	नि. ६-१४.		३३-२७,२८.	,, ७-१२६.	,, ३७.
पिपासा	,, २४-१३.					,, १७.
पूत्यास्यता	,, २४-११.				,, ७-१४१.	
पूतिगन्धता	,, २४-११.				,, ७-१२७.	
पूतिघ्राणता	,, २४-११.	उ. २२-८.			,, ७-१४८.	
प्रदर	,, २४-१२.			६१-१.	,, ७-१७६.	,, ६७.
प्रमीलक	,, २४-१२.		उ. २३-१४.			
बुद्धिसंमोह	,, २४-१४.					
मद	,, २४-११.		नि. ६-२६, २७.	१८-७-११.	,, ७-२०३.	,, १९.
मुखपाक	,, २४-११.	नि. १६-६५, ६६.	उ. २१-५८, ५९.	५६-५५.	,, ७-१४०.	,, ६५-१४८.
रक्तपित्त	,, २४-१२.	उ. ४५-३,४.	नि. ३-१.	९.	,, ७-२०.	,, ९-१४८.
रक्तमेह	,, २४-१२.	नि. ६-११.	,, १०-१६.	३३-१५.	,, ७-६१.	,, ३७-१५.
लवणास्यता	,, २४-१४.					
वातरक्त	,, २४-१२.	,, १-४२-४४.	,, १६.	२३-१-१८.	,, ७-१०३.	,, २८.
विद्रधि	,, २४-१२.	,, ९-७.	,, ११.	४०-१-२०.	,, ७-७०.	,, ४५.
विवर्णता	,, २४-१३.					
विसर्प	,, २४-१२.	,, १०-३.	,, १३.	५२-१-२५.	,, ७-१००.	,, [illegible]
स्वरक्षय	,, २४-१५.	,, १६-६१.	उ. २१-५७.	५६-५२.	,, ७-२९.	,, ६१-१३२.

रोगाणां नामानि–	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शरीरदौर्गन्ध्य	सू. २४–१५.				पू. ७–११८.	म. २६–८.
स्वेदाधिक्य	,, २४–१५.				,, ७–११७.	
शिरोरुक्	,, २४–१३.	उ. २५–३.				
सन्ताप	,, २५–१३.				,, ७–१२७.	
शूकरोग—		नि. १४.	उ. ३३.	४८.	,, ७–८३.	,, ५२.
अवमन्थ		,, १४–८,९.	,, ३३–१२,१३.	४८–६.	,, ७–८४.	,, ५२–९.
अलजी		,, १४–७.	,, ३३–१४.	४८–४.	,, ७–८५.	,, ५२–६.
अष्ठीलिका		,, १४–५.	,, ३३–१६.	४८–३.	,, ७–८४.	,, ५२–३.
अवपाटिका			,, ३३–१९.		,, ७–८४.	
उत्तमा		,, १४–११.	,, ३३–१४.	४८–८,९.	,, ७–८५.	,, ५२–१२.
कुम्भिका		,, १४–६.	,, ३३–१३.	४८–३.	,, ७–८६.	,, ५२–५.
ग्रथित		,, १४–६.	,, ३३–२१.	४८–३.	,, ७–८३.	,, ५२–४.
निरुद्धमणि			,, ३३–१९, २०.		,, ७–८५.	
तिलकालक		,, १४–१६,१७.	,, २३–२५, २६.	४८–१४,१५.	,, ७–८६.	,, ५२–१९.
त्वक्पाक		,, १४–१२.	,, ३३–२३.	४८–१०.	,, ७–८४.	,, ५२–१४.
पुष्करिका		,, १४–९,१०.	,, ३३–१४, १५.	४८–७.	,, ७–८५.	,, ५२–१०.
मांसपाक		,, १४–१५,	,, ३३–२३.	४८–१२,१३.	,, ७–८५.	,, ५२–१७.
मांसार्बुद		,, १४–१३.	,, ३३–२५.	४८–१२.	,, ७–८५.	,, ५२–१६.
मृदित		,, १४–७.	,, ३३–१६.	४८–५.	,, ७–८४.	,, ५२–७.
विद्रधि		,, १४–१५.	,, ३३–२५.	४८–१३.	,, ७–८६.	,, ५२–१८.
शतपोनक		,, १४–१२.	,, ३३–२२.	४८–९,१०.	,, ७–८४.	,, ५२–१३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
शोणितार्बुद		नि. १४-१३.	उ. ३३-२४.	४८-११.	पू. ७-८६.	म. ५२-१५.
सर्षपिका		,, १४-४.	,, ३३-११,१२.	४८-२.	,, ७-८४.	,, ५२-२.
संमूढपिडका		,, १४-८.	,, ३३-१५.	४८-५.	,, ७-८५.	,, ५२-८.
स्पर्शहानि		,, १४-१०.	,, ३३-२१.	४८-८.	,, ७-८५.	,, ५२-११.
निवृत्त			,, ३३-१७,१८.			
शिरोरोग—	,, १७.			६०.	,, ७-१४९.	
वातजन्य	,, १७-१६-२१.	उ. २५-५.	,, २३-३-७.	६०-२.	,, ७-१४९.	,, ६१-३.
पित्तजन्य	,, १७-२२, २३.	,, २५-६.	,, २३-९.	६०-३.	,, ७-१५०.	,, ६१-४.
कफजन्य	,, १७-२४, २५.	,, २५-७.	,, २३-१०, ११.	६०-४.	,, ७-१५०.	,, ६१-५.
सन्निपातजन्य	,, १७-२६.	,, २५-८.	,, २३-११.	६०-५.	,, ७-१५०.	,, ६१-६.
रक्तज		,, २५-८.	,, २३-११.	६०-५.	,, ७-१५०.	,, ६१-७.
कृमिजन्य	,, १७-२७-२९.	,, २५-१०, ११.	,, २३-१२-१५.	६०-७.	,, ७-१५१.	,, ६१-१०.
अनन्तवात	सि. ९-८४, ८५.	,, २५-१३-१५.		६०-९,१०.		,, ६१-१३, १४.
अर्धावभेदक	,, ९-७४-७८.	,, २५-१५, १६,	,, २३-७,८.	६०-११-१३.	,, ७-१४९.	,, ६१-१७-१९.
सूर्यावर्त	,, ९-७९-८३.	,, २५-११-१३.	,, २३-१८-२०.	६०-८.	,, ७-१५१.	,, ६१-११, १२.
शङ्खक	,, ९-७०-७३.	,, २५-१६-१८.	,, २३-१६, १७.	६०-१४,१५.	,, ७-१५१.	,, ६१-१५, १६.
शिरःकम्प			,, २३-१५.		,, ७-१५१.	

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
क्षयजशिरोरोग				६०-६.		म. ६१-९.
उपशीर्षक			उ. २३-२१.		पू. ७-१५१.	
श्वयथु—		चि. २३.		३६.	,, ७-६५.	म. ४२.
वातज	चि. १२-१२.	,, २३-५.	नि. १३-३०-३२.	३६-७.	,, ७-६५.	,, ४२-५.
पित्तज	,, १२-१३.	,, २३-५.	,, १३-३३-३७.	३६-८.	,, ७-६५.	,, ४२-६.
कफज	,, १२-१४.	,, २३-५.	,, १३-३५-३७.	३६-९.	,, ७-६५.	,, ४२-७.
अभिघातज		सू. १७-४.	,, १३-३८,३९.	३६-११,१२.	,, ७-६६.	
विषज		चि. २३-५.	,, १३-४०-४२.	३६-१३-१५.	,, ७-६६.	
द्वन्द्वज			,, १३-३७.	३६-१०.	,, ७-६६.	
सन्निपातज		,, २३-५.	,, १३-३७.		,, ७-६६.	
उपजिह्विका	सू. १८-१९.	नि. १६-३९. चि. २२-४८.	उ. २१-३५.	५६-३२.	,, ७-१३५.	,, ६६-९१.
गलशुण्डी	,, १८-२०.	नि. १६-४१.	,, २१-३७,३८.	५६-३३.	,, ७-१३६.	,, ६६-९९.
गलगण्ड	,, १८-२१.	,, ११-२२.	,, २१-५३.	३८-१,२.	,, ७-१३९.	,, ४४.
गलग्रह	,, १८-२२.					
विसर्प	,, १८-२३.	,, १०-३.	सू. ८.	५२-१-४.	,, ७-१००.	,, ५६.
पिडका	,, १८-२४.	,, ६-१४.	नि. १०.	३३-२७,२८.	,, ७-६३.	,, ३८.
तिलक	,, १८-२५.	नि. १४-१६, १७.	उ. ३३-२५, २६.	५५-३७.	,, ७-९२.	,, ५३-१९.
शङ्खक	,, १८-२६.	उ. २५-१६-१८.	,, २३-१६, १७.	६०-१४,१५.	,, ७-१५१.	

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
कर्णमूलशोथ	सू. १८–२७; चि. ३–२८७.			२–२५.	पू. ७–१४६.	म. १–५०४.
प्लीहवृद्धि	,, १८–२८.	नि. ७–१५.		१–१७.		,, ३३.
उदररोग	,, १८–३१.	,, ७.	नि. १२.	३५–१,२.	,, ७–५१.	,, ४१.
आनाह	,, १८–३२.	उ. ५६–२०, २१.	,, ११–६०.	२७–१७–१९.	,, ७–४९.	,, ३१–१९.
अधिमांस	,, १८–३३.	नि. १६–२५, २६.	उ. २१–२७.	५६–२१.		,, ६६–३५.
चर्मकील	चि. १४–१.	,, २–१८–२०.	सू. ७–५७.	५–४३.	,, ७–१३.	,, ५–४५.
रोहिणी	सू. १८–३४–३६.	,, १६–४१–४९.	उ. २१–४२.	५६–३९–४१.	,, ७–१३७.	,, ६६.
शालूक	चि. १२–७५.	,, १६–५१.	,, २१–४५, ४६.	५६–४२.	,, ७–१३८.	,, ६६–१२२.
शिरःशोथ			,, २३–३–१५.			
सर्वसर				३६–१६.		
बिडालिका	,, १२–७६.					
तालुविद्रधि	,, १२–७७.				,, ७–१३८.	
तालुपाक	,, १२–७७	,, १६–४५.	,, २१–४०.	५६–३७.	,, ७–१३६.	,, ६६–१०७.
अधिजिह्विका	चि. १२–७७.	,, १६–५२.	,, २१–३४, ३५.	५६–४३.	,, ७–१३४.	,, ६६–१२३.
उपकुश	,, १२–७८.	,, १६–२१–२३.	,, २१–२१–२३.	५६–१७.	,, ७–१३२.	,, ६६–३१.
दन्तविद्रधि	,, १२–७८.		,, २१–२४, २५.	५६–२९.	,, ७–१३२.	,, ६६–३७.
गण्डमाला	,, १२–७९.	,, १९–१०–१२.	,, २९–२५.	३८–८,९.	,, ७–६७.	,, ४४–८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
ग्रन्थि	चि. १२-८७.	नि. ११-३.	उ. २९-१.	३८-११.	पू. ७-६८.	म. ४४-११.
अर्बुद	,, १२-८७. सू. १८-३३.	,, ११-१४, १५.	,, २९-१४, १५.	३८-१८, १९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८, १९.
अलजी	चि. १२-८८.	,, १४-७.	,, ३३-१४.	३३-२७. ५९-७४. ४८-४.	,, ७-६४.	,, ५३-६.
अक्षत			,, ३१-२२-२४.			
विदारिका	,, १२-८९.	,, १३-२४, २५.	,, ३१-१६.	५५-२१.	,, ७-६४.	,, ६६-१३४.
विस्फोट	,, १२-९०.	,, १३-१८.	,, ३१-९.	५३-१-३.	,, ७-९६.	,, ५८.
स्फोट	,, १२-९०.					
कक्षा	,, १२-९१.	,, १३-१६.	,, ३१-११.	५५-१४.	,, ७-९५.	,, ६१-६३.
रोमान्तिका	,, १२-९२.			५४-१३.		,, ६०-२२.
मसूरिका	,, १२-९३.	,, १३-३८.	,, ३१-८.	५४-१-४.		,, ६०-४६.
ब्रध्न	,, १२-९४.					
भगन्दर	,, १२-९६.	,, ४-३. चि. ८.	,, २८.	४६-१.	,, ७-८०.	,, ५०-३.
जालकगर्दभ	,, १२-९९.	नि. १३-१४.	,, ३१-१३, १४.		,, ७-९३.	,, ६१-१५१.
अभिघातजशोथ	,, १२-७.	सू. १७-४.	नि. १३-३८.	३६-११,१२.	,, ७-६६.	,, ४२-१०.
व्रणजशोथ	,, १२-७.	,, १७-३.		३६-१३,१४.		,, ४७-२.
विषजन्यशोथ	,, १२-७.	सू. १७-४. चि. २३-५.	नि. १३-४०-४२.	३६-१३, १४.	,, ७-६६.	,, ४२-१२.
अपची		नि. ११-१०-१२.	उ. २९-२५.	३८-९,१०.	,, ७-६८.	,, ४४-९.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
वृद्धि	सू. १८-३०.	नि. १२-४.	नि. ११-२१,२२.	३७-१२.	पू. ७-६६.	म. ४३.
श्लीपद—	चि. १२-९८.	„ १२-१०.	उ. २९.	३९-१.	„ ७-७०.	„ ४५.
वातज		„ १२-११.	„ २९-२०.	३९-२.	„ ७-७०.	„ ४५-३.
पित्तज		„ १२-११.	„ २९-२०.	३९-३.	„ ७-७०.	„ ४५-४.
कफज		„ १२-११.	„ २९-२०.	३९-३.	„ ७-७०.	„ ४५-४.
श्वास—		उ. ५३.	नि. ४.	१२.	„ ७-२४.	
महाश्वास	चि. १७-४६-४८	„ ५१-१२.	„ ४-१३-१५.	१२-१८-२०.	„ ७-२५.	„ १४-५,७.
ऊर्ध्वश्वास	„ १७-४९-५१.	„ ५१-१३.	„ ४-१६, १७.	१२-२१-२३.	„ ७-२५.	„ १४-८,१०.
छिन्नश्वास	„ १७-५२-५४.	„ ५३-११.	„ १४-११-१३.	१२-२४-२९.	„ ७-२५.	„ १४-११. १३.
तमकश्वास-(प्रतमकश्वास)	„ १७-५५-६४.	„ ५१-८-१०.	„ ८-६-१०.	१२-२७-३४.	„ ७-२४.	„ १४-१४-२२.
क्षुद्रश्वास	„ १७-६५.	„ ५१-७.	„ ४-५.	१२-३७-४०.	„ ७-२४.	„ १४-२४-२६.
श्लेष्मविकार—(नानात्मज)				७-१८-२०३.	परि० „ ७-११२.	
अतिस्थौल्य	सू. २०-१७.	सू. १५-३२.	सू. ११-८.			
अपक्ति	„ २०-१७.					
आलस्य	„ २०-१७.		„ ११-७.	७-२०.	„ ७-१२४.	„ २८-३.
उदर्द	„ २०-१७.			५०-३,४.	„ ७-१,२.	
कटुकांक्ष						„ २८-३.
उष्णकामिता						„ २८-३.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो
बुद्धिमान्द्य						म. २८-३.
अचैतन्य						,, २८-३.
मूत्राधिक्य						,, २८-३.
शुक्राधिक्य						,, २८-३.
शैत्य						,, २८-४.
कण्ठोपलेप (मुखलेप)	सू. २०-१७.			५०-१८.	पू. ७-१२२.	,, २८-२.
गलगण्ड	,, २०-१७.	नि. ११-२२.	उ. २१-५३.	३८-१.	,, ७-१३९.	
गुरुगात्रता	,, २०-१७.		सू. ११-७.	३८-१८.	,, ७-१२२.	,, २८-४.
तन्द्रा	,, २०-१७.			३८-१८.	,, ७-१२२.	
तृप्ति	,, २०-१७.			३८-२०.	,, ७-१२४,	,, २८-३.
धमनीप्रतिचय	,, २०-१७.					
निद्राधिक्य	,, २०-१७.		,, ११-८.	३८-१८.	,, ७-१२२.	,, २८-२.
बलासक	,, २०-१७.	नि. १६-५४.				
मलाधिक्य	,, २०-१७.			३८-२०.	,, ७-१२४.	,, २८-३.
मुखमाधुर्य	,, २०-१७.			३८-१८.	,, ७-१२२.	,, २८-२.
मुखस्राव (प्रसेक)	,, २०-१७.		,, ११-७.	१२-१८.	,, ७-१२२.	,, २८-२.
शीताग्निता (अग्निमान्द्य)	,, २०-१७.					,, २८-३.
श्लेष्मोद्गिरण	,, २०-१७.					
श्वेतमूत्रनेत्रवर्चस्त्व	,, २०-१७.			१२-१९.	,, ७-१२३.	,, २८-३.
श्वेतावभासता	,, २०-१७.		,, ११-७.	१२-१९.	,, ७-१२३.	

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सामकफ						म. १–५४.
स्तैमित्य	सू. २०–१७.					,, २८–४.
हृदयोपलेप	,, २०–१७.					
घर्घरवाक्यता				७–२०. परि०	पू. ७–१२४.	,, २८–३.
सद्योव्रण—				४३–१,२.	,, ७–७६.	
अविकृलस			उ. २६–३.		,, ७–७६.	
विलम्बी			,, २६–४.		,, ७–७६.	
छिन्न		चि. २–१०, ११.	,, २६–३.	४३–३.	,, ७–७६.	
विद्ध		,, २–१९, २०.	,, २६–४.	४३–११.	,, ७–७६.	
पिच्चित (प्रचलित, विदलित)		,, २–२१, २२.	,, २६–५.	४३–१३.	,, ७–७६.	
घृष्ट		, २–२२, २३.	,, २६–२,३.	४३–१४.	,, ७–७६.	
भिन्न		,, २–११, १२.	,, २६–५.	४३–४.	,, ७–७६.	
क्षत (निपातित)		,, २–२०, २१.	,, २६–४.	४३–१२.	,, ७–७६.	
संन्यास–		उ. ४३–२०, २१.	नि. ३६–६–३९.	१७–२२, २३.	,, ७–३२.	,, १९–२३.
स्त्रीरोग—					,, ७–१७४.	
अपरापात	शा. १०–११.	शा. २–३९.			,, ७–१८२.	,, ७०–१३६, १३७.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
असृग्दर	चि. ३०–२०४–२०८.	शा. २–१८–२०.		६१.	पू. ७–१७६.	म. ६८.
आर्तवदोष		शा. २–५.		६१.	,, ७–१७५.	,, ७०.
गर्भस्राव		,, २–५. नि. ८–१०.		६४–२.	,, ७–१८२.	,, ७०–७२.
गर्भपात		,, ८–९,१०.		६४–२.	,, ७–१८२.	,, ७०–७२.
प्रदर	चि. ३०–२०४–२०९.	शा. २–१८–२०.		६१.	,, ७–१७६.	,, ६८.
योनिरोग	,, ३०–१.	उ. ३२.	उ. ३३.	६२.	,, ७–१७७.	,, ६०.
सोमरोग				३–१–१०. परि०	,, ७–६३.	,, ६९.
मूढगर्भ		नि. ८–४,५.	शा. २–२९,३०.	६४–१०.	,, ७–१८१.	,, ७०–११३.
मक्कल		शा. १०–२२.	शा. १–९२.	६४–१०. (१)	,, ७–१८१.	,, ७०–१४८.
सूतिकारोग		शा. १०–१९.		६५–१०.	,, ७–१८४.	,, ७०–१४५.
योनिकन्द				६३–१०.	,, ७–१८०.	,, ६६–१९.
मृतगर्भ	शा. ८–३०.	,, ८–१२,१३.	शा. २–२२–२४.	६४–८.		,, ७०–११७.
स्रोतोरोग–	वि. ५.	शा. ९–१२.				
प्राणवाहि-स्रोतोदुष्टि	,, ५–८.	,, ९–१२.				
अम्बुवाहि- ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
अन्नवाहि- ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
रसवाहि- ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
रक्तवाहि- ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
मांसवाहि-स्रोतोदुष्टि	वि. ५-८.	शा. ९-१२.				
मेदोवाहि- ,,	,, ५-८.					
अस्थिवाहि-,,	,, ५-८.					
मज्जवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
शुक्रवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
आर्तववाहि-,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
मूत्रवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
वर्चोवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
स्वेदवाहि- ,,	,, ५-८.					
स्नायुक—				१-१-५. परि०	पू. ७-१८.	म. ५७-१.
स्वरभेद—	चि. ८.			१३-१.	,, ७-२९.	,, १५.
वातज	,, ८-५३.	उ. ५३-४.	नि. ५-२४,२५.	१३-२.	,, ७-२९.	,, १५-२.
पित्तज	,, ८-५४.	,, ५३-४.	,, ५-२५.	१३-२.	,, ७-२९.	,, १५-३.
कफज	चि. ८-५४.	उ. ५३-५.	,, ५-२६.	१३-३.	,, ७-२९.	,, १५-४.
सन्निपातज		,, ५३-५.	,, ५-२६.	१३-३.	,, ७-३०.	,, १५-५.
क्षयज	,, ८-५६.	,, ५३-६.	,, ५-२६.	१३-४.	,, ७-३०.	,, १५-६.
मेदोज		,, ५३-६,७.	,, ५-२७.	१३-४.	,, ७-३०.	,, १५-७.
रक्तजन्य	,, ८-५५.					
कासजन्य	,, ८-५५.					
पीनसजन्य	,, ८-५५.					
हिक्का—			,, ४-१८.	१२-३.	,, ७-[illegible].	

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
महती	चि. १७-२१-२६.	उ. ५०-१४.	नि. ४-२५-२७.	१२-१०.	पू. ८-२६.	म. १२-१०.
गम्भीरा	,, १७-२७-३०.	,, ५०-१२, १३.	,, ४-२८, २९.	१२-९.	,, ७-२६.	,, १२-९.
व्यपेता (यमला)	,, १७-३१-३३.	,, ५०-१०, ११.	,, ४-२३, २४.	१२-७.	,, ७-२६.	,, १२-७.
क्षुद्रा	,, १७-३४.	,, ५०-११, १२.	,, ४-२१, २२.	१२-८.	,, ७-२५.	,, १२-८.
अन्नजा	,, १७-३८-४१.	,, ५०-९,१०.	,, ४-१९, २०.	१२-६.	,, ७-२५.	,, १२-६.
हृद्रोग—	सू. १७.	,, ४३.	,, ५-३८.	२९-१.	,, ७-५०.	,, ३४-१.
वातज	,, १७-३०, ३१.	,, ४३-६.	,, ५-३९-४१.	२९-३.	,, ७-५०.	,, ३४-३.
पित्तज	,, १७-३२, ३३.	,, ४३-७.	,, ५-४१, ४२.	२९-४.	,, ७-५०.	,, ३४-४.
कफज	,, १७-३४, ३५.	,, ४३-८.	,, ५-४२, ४३.	२९-५.	,, ७-५०.	,, ३४-५.
सन्निपातज	,, १७-३५, ३६.	,, ४३-९.	,, ५-४३.	२९-६.	,, ७-५०.	,, ३४-६.
कृमिजन्य	,, १७-३७-४०.	,, ४३-९,१०.	,, ५-४३, ४४.	२९-६.	,, ७-५१.	,, ३४-९.
हलीमक—	चि. १६-१३२, १३३.	,, ४४-१२.	,, १३-१८, १९.	८-२२, २३.	,, ७-२०.	,, ८-२५, २६.
क्षय—			सू. ११.			
धातुक्षय		सू. १५-९.	,, ११-२४, २५.			

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो	ख. अ श्लो.
मलक्षय		,, १५-११.	,, ११-२४, २५.			
दोषक्षय		,, १५-७.	,, ११-२४ २५.			
ओजःक्षय		,, १५-२४.	,, ११-३९-४१.			
ओजोदोष—						
व्यापत्		,, १५-२७.				
विस्रंस		,, १५-२५, २६.				
क्षय		,, १५-२७, २८.				
क्षारदग्ध—		,, ११-२०.			,, ८-११६.	
हीनदग्ध		,, ११-२५.	सू. ३०-३४, ३५.			
अतिदग्ध		,, ११-२६.	,, ३०-३५.			
क्षीरदोष-				६७.		म. ७१.
वैवर्ण्य	चि. ३०-२२७.					
वैगन्ध्य	,, ३०-२३७.					
वैरस्य	,, ३०-२३७.					
पैच्छिल्य	,, ३०-२३७.					
फेनसंघात	,, ३०-२३७.					
रौक्ष्य	चि. ३०-२३७.					
गौरव	,, ३०-२३७.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
स्नेह	चि. ३०–२३७.					
वातज	,, ३०–२४०–२४२.	नि. १०–२३.	उ. २–२,३.	६७–२.		म. ७१–११८.
पित्तज	,, ३०–२४३–२४५.	,, १०–२४.	,, २–३.	६७–२.		,, ७१–११९.
कफज	,, ३०–२४६–२५०.	,, १०–२४.	,, २–४.	६७–३.		,, ७१–१२०.
सन्निपातज		,, १०–२४.	,, २–४.	६७–३.	पू. ७–१८२.	,, ७१–१२१.
स्तनदोष-		,, १०–१७.		६६–१,२.		,, ७०–१७१.
क्षुद्ररोग—					,, ७–९१.	,, ६१.
अग्निरोहिणी		,, १३–१९, २०.	,, ३१–१४, १५.	५५–१६,१७.	,, ७–९३.	,, ५१–६६.
अजगल्लिका		,, १३–४.	,, ३१–१.	५५–१.		,, ६१–१४३.
अनुशयी		,, १३–२३.			,, ७–१४.	,, ६१–११६.
अन्धालजी		,, १३–६.		५५–३.	,, ७–९१.	,, ६१–१४६.
अहिपूतनक		,, १३–५७,५८.		५५–५०,५१.		,, ६१–१०३.
अवपाटिका		,, १३–५०, ५२.	,, ३१–१९.	५५–४५.	,, ७–८४.	,, ६१–८५, ८६.
अलस		,, १३–३२.	,, ३१–२५.	५५–२७.	,, ७–९४.	,, ६१–११८.
अरुंषिका		,, १३–३६.	,, ३१–२२.	५५–३१.	,, ७–१५२.	,, ६१–१९.
इन्द्रविद्धा		,, १३–११.		५५–८.	,, ७–९१.	,, ६१–१४१.
इन्द्रलुप्त		,, १३–३३, ३४.	,, ३१–२४, २५.	५५–२८,२९.	,, ७–१५२.	,, ६१–६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
उत्कोठ			उ. ३१-३२.			
कोठ			,, ३१-३३.			
इरिवेल्लिका		नि. १३-१५.	,, ३१-१६.	५५-१३.	पू. ७-९३.	म. ६१-२२.
कक्षा	चि. १२-९०, ९१.	,, १३-१६.	,, ३१-११.	५५-१४.	,, ७-९५.	,, ६१-६३.
कच्छपिका	सू. १७-८४.	,, १३-८.	,, ३१-३.	५५-५.	,, ७-९२.	,, ६१-१५३.
कदर		,, १३-३०, ३१.	,, ३१-२१.	५५-२६.	,, ७-९३.	,, ६१-१२७.
कुनख		,, १३-२२, २३.	,, ३१-२४.	५५-१९.	,, ७-९४.	,, ६१-७२.
खालित्य		,, १३-३४.	,, ३१-२६.	५५-२८,२९.	,, ७-१५२.	
गन्धनामा		,, १३-१७.	,, ३१-१२.	५५-१५.	,, ७-१५२.	,, ६१-६२.
गर्दभिका		,, १३-११.	,, ३१-१०.	५५-९.	,, ७-९२.	,, ६१-१५०.
गुदभ्रंश		,, १३-६१.		५५-५४.	,, ७-९३.	,, ६१-१०५.
चर्मकील		,, १३-४५.	नि. ७-५७. उ. ३१-२६.		,, ७-१३.	,, ६१-४२.
चिप्य		,, १३-२१.	,, ३१-२३.	५५-१८,१९.	,, ८-९४.	,, ६१-७१.
जतुमणि		,, १३-४१.	,, ३१-२७.	५५-३५.	,, ८-९३.	,, ६१-१३२.
जालगर्दभ		,, १३-१४.	,, ३१-१३,१४.	५५-१२.	,, ७-९३.	,, ६१-१५१.
तिलक	चि. १८-२५.	,, १३-४३.	,, ३१-२५.	५५-३७.	,, ७-९२.	,, ६१-१२९.
दारुण	,, १८-२६.	,, १३-३५.	,, ३१-२३.	५५-३०.	,, ७-१५२.	,, ६१-[illegible].
न्यच्छ		,, १३-४४.	,, ३१-२९.	५५-३८.		,, ६१-१३२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
निरुद्धप्रकश		नि. १३-५२-५४.	उ. ३१-१९, २०.	५५-४५-४७.	पू. ७-८६.	म. ६१-८९, ९०.
नीलिका		,, १३-४६.	,, ३१-२८.	५५-४०.	,, ७-९३.	,, ६१-३८.
पनसिका		,, १३-१२.	,, ३१-३.	५५-११.	,, ७-९१.	,, ६१-२४.
प्रसुप्ति			,, ३१-३०,३१.			
पद्मनीकण्टक		,, १३-४०.	,, ३१-६.	५५-३४.	,, ७-९४.	,, ६१-१३८.
पलित		,, १३-३७.	,, ३१-२९.	५५-३२.	,, ७-१५२.	,, ६१-१.
परिवर्तिका		,, १३-४७, ४८.	,, ३१-१७, १८.	५५-४१-४३.	,, ७-८६.	,, ६१-७९,८०.
पामा		,, १३-२८.		४९-२१.	,, ७-८९.	
पाददारी		,, १३-२९.		४९-२५.		,, ६१-१२२.
पाषाणगर्दभ		,, १३-१३.	,, ३१-४.	४९-१०.	,, ७-९९.	,, ६१-२७.
मषक		,, १३-४२.	,, ३१-२६.	५५-३६.	,, ७-९३.	
यवप्रख्या		,, १३-५.	,, ३१-२.	५५-२.	,, ७-९२.	,, ६१-१४५.
युवानपिडका (मुखदूषिका)		,, १३-३९.	,, ३१-५.	५५-३३.	,, ७-९४.	,, ६१-३१.
राजिका			,, ३१-१२,१३.			
लाञ्छन			उ. ३१-२७.			
रकसा		नि. १३-२८.	,, ३१-५.		पू. ७-९२.	
रुह्या (इन्द्रलुप्त)		,, १३-३४.	,, ३१-२४, २५.	५५-२९.	,, ७-१५२.	
वराहदंष्ट्रा				५५-५१.	,, ७-९२.	

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वल्मीक		नि. १३-९, १०.	उ. ३१-१९, २०.		पू. ७-९२.	म. ६१-५२, ५३.
व्यङ्ग		,, १३-४६.	,, ३१-२८.	५५-३९,४०.	,, ७-९५.	,, ६१-३७.
विचर्चिका		,, १३-२८.		४९-२३.	,, ७-८७.	
विदारिका		,, १३-२४, २५.	,, ३१-१६.	५५-२१.	,, ७-९२.	,, ६१-६९.
विवृता		,, १३-७.	,, ३१-७.	५५-४.	,, ७-९१.	,, ६१-१४८.
विद्धा			,, ३१-१०.			
विस्फोटक—		,, १३-१८.	,, ३१-९.	५३-३.	,, ७-९६.	
वातज				५३-४.	,, ७-९७.	
पित्तज				५३-५.	,, ७-९७.	
कफज				५३-६.	,, ७-९७.	
सन्निपातज				५३-८,९.	,, ७-९७.	
रक्तज				५३-१०.	,, ७-९७.	
द्वन्द्वज				६३-७,८.	,, ७-९७.	
वृषणकच्छू-		,, १३-५९, ६०.		५५-५१,५३.	,, ७-९५.	,, ६१-९८.
शर्करा		,, ३-१३,१४.		५५-२२,२३.		
शर्करार्बुद		,, १३-२५-२८.	,, ३१-१७-१९.	५५-२४.	,, ७-९१.	,, ६१-१५७.
शूकरदंष्ट्रा (वराहदंष्ट्रा)				५५-५५.	,, ७-९२.	,, ६१-११३.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सन्निरुद्धगुद		,, १३-५५, ५६.	,, ३१-२२, २३.	५५-४८,४९.	पू. ७-९४.	म. ६१-९५.
श्यावपिण्डिका						,, ६१-१३१.
आलस्य						,, ६१-१६०.
उत्क्लेश						,, ६१-१६१.
ग्लानि						,, ६१-१६२.

चरकसंहिताऽध्यायनामानि

१ सूत्रस्थान

१ दीर्घञ्जीवितीय
२ अपामार्गतण्डुलीय
३ आरग्वधीय
४ षड्विरेचनशतीय
५ मात्राशितीय
६ तस्याशितीय
७ नवेगान्धारणीय
८ इन्द्रियोपक्रमणीय
९ खुड्डाकचतुष्पाद्
१० महाचतुष्पाद्
११ तिस्रैषणीय
१२ वातकलाकलीय
१३ स्नेह
१४ स्वेद
१५ उपकल्पनीय
१६ चिकित्साप्राभृतीय
१७ कियन्तःशिरसीय
१८ त्रिशोथीय
१९ अष्टोदरीय
२० महारोग
२१ अष्टौनिन्दितीय
२२ लङ्घनबृंहणीय
२३ संतर्पणीय
२४ विधिशोणितीय
२५ यज्जःपुरुषीय
२६ आत्रेयभद्रकाप्यीय
२७ अन्नपानविध
२८ विविधाशितपीतीय
२९ दशप्राणायतनीय
३० अर्थेदशमहामूलीय

२ निदानस्थान

१ ज्वर
२ रक्तपित्त
३ गुल्म
४ प्रमेह
५ कुष्ठ
६ शोष
७ उन्माद
८ अपस्मार

३ विमानस्थान

१ रस
२ त्रिविधकुक्षीय
३ जनपदोद्ध्वंसनीय
४ त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीय
५ स्रोत
६ रोगानीक
७ व्याधितरूपीय
८ रोगभिषग्जितीय

४ शारीरस्थान

१ कतिधापुरुषीय
२ अतुल्यगोत्रीय
३ खुड्डिकागर्भावक्रान्ति
४ महतीगर्भावक्रान्ति
५ पुरुषविचय
६ शरीरविचय
७ शरीरसंख्या
८ जातिसूत्रीय

५ इन्द्रियस्थान

१ वर्णस्वरीय
२ पुष्पितक
३ परिमर्शनीय
४ इन्द्रियानीक
५ पूर्वरूपीय
६ कतमानिशरीरीय
७ पन्नरूपीय
८ अवाक्शिरसीय

९ यस्यश्यावनिमित्तीय
१० सद्योमरणीय
११ अणुज्यीतीय
१२ गोमयचूर्णीय

६ चिकित्सास्थान

१ रसायन
१ अभयामलकीय
२ प्राणकामीय
३ करप्रचितीय
४ आयुर्वेदसमुत्थानीय
२ वाजीकरण
१ संप्रयोगशरमूलीय
२ आसिक्तक्षीरीय
३ माषपर्णभृतीय
४ पुमाञ्जातबलादिक
३ ज्वर
४ रक्तपित्त
५ गुल्म
६ प्रमेह
७ कुष्ठ
८ राजयक्ष्म
९ उन्माद
१० अपस्मार
११ क्षतक्षीण
१२ श्वयथु
१३ उदर
१४ अर्श
१५ ग्रहणी
१६ पाण्डुरोग
१७ हिक्काश्वास
१८ कास
१९ अतिसार
२० छर्दि
२१ विसर्प
२२ तृष्णारोग
२३ विष
२४ मदात्यय
२५ द्विव्रणीय
२६ त्रिमर्मीय
२७ उरुस्तम्भ
२८ वातव्याधि
२९ वातशोणित
३० योनिव्यापत्

७ कल्पस्थान

१ मदन
२ जीमूतक
३ इक्ष्वाकु
४ धामार्गव
५ वत्सक
६ कृतवेधन
७ श्यामात्रिवृत्
८ चतुरङ्गुल
९ तिल्वक
१० सुधा
११ सप्तलाशङ्खिनी
१२ दन्तीद्रवन्ती

८ सिद्धिस्थान

१ कल्पना
२ पञ्चकर्मीय
३ बस्तिसूत्रीया
४ स्नेहव्यापदिकी
५ नेत्रबस्तिव्यापदिकी
६ वमनविरेचनव्यापत्
७ बस्तियापत्
८ प्रासृतयोगिका
९ त्रिमर्मीया
१० बस्ति
११ फलमात्रा
१२ उत्तरबस्ति

चरकसंहितागतयोगानां स्थानाध्याय-श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि ।

Names of the Recipes in the Caraka Samhita along with reference to the Section, Chapter and Verse.

अगस्त्यहरीतकीलेह-चि. १८-५७-६२.
अगुर्वाद्यतैल-चि. ३-२६७.
अतिविषादिचूर्ण-चि. १४-१८७.
अनुवासनप्रयोग-चि. ३-१७२$\frac{१}{२}$.
अपत्यकरघृत-चि. २-४ | २८, ४ | २९.
अपत्यकररस-चि. २-२ | १४-२ | १७.
अपत्यकरीषष्टिकादिगुटिका-चि. २-२|३-२|९.
अपामार्गादिवर्ति-चि. ९-६६$\frac{१}{२}$.
अभयादिक्काथ-चि. १५-१०३,१०४.
अभयारिष्ट-चि. १४-१३८-१४३.
अमृतप्राशघृत-चि. ११-३५-४३.
अमृताद्यतैल-चि. २८-१५७-१६४.
अमृताद्यतैल-चि. २९-१०३-१०९.
अमृताह्वादिवर्ति-चि. २६-२४३-२४५.
अर्कक्षीरादिप्रलेप-चि. १४-५७,५८.
अश्वगन्धादिक्षार-चि. १७-११७.
अष्टकट्वरतैल-चि. २७-४७.
अष्टशतारिष्ट-चि. १२-३२,३३.
आचाररसायन-चि. १-४ | ३०-४ | ३५.
आटरूषकक्काथ-चि. ४-६५.
आमलकघृत-चि. १-२ | ४-३ | ६.
आमलकचूर्ण-चि. १-२ | ८.
आमलकरसायन-चि. १-१ | ७५.
आमलकाद्यघृत-चि. ५-१२२.
आमलकायसब्राह्मरसायन-चि. १-३|३-३|६.
आमलकावलेह-चि. १-२ | ७.
आमलकावलेह (अपर)-चि. १-२ | १०.
इङ्गुदित्वगादिधूमवर्ति-चि. १८-७५.
इन्द्रोक्तरसायन-चि. १-४ | ६.
इन्द्रोक्तरसायन (अपर)-चि. १-४ | १३-४ | २६.
उदुम्बरादितैल-चि. ३०-७३-७७.
उदुम्बरादिप्रदेह-चि. २१-७२.
उदुम्बरादिलेह-चि. २६-९८,९९.
एडगजादिलेप-चि. ७-१२६.
एडगजाद्युद्वर्तनयोग-चि. ७-१२७.
एर्वारुबीजादियोग-चि. २६-५२,५३.
एरण्डतैल-चि. १३-१७२$\frac{१}{२}$.
एरण्डतैलप्रयोग-चि. ५-९२,९३.
ऐन्द्ररसायन-चि. १-३ | २४-३ | २९.
कंसहरीतकी-चि. १२-५०-५२.
कट्भ्यादितैल-चि. १०-३३.
कटुकादिक्काथ-चि. २६-२०१, २०२.
कटुकाद्यघृत-चि. १६-४७-४९.
कट्फलादिकाथ-चि. १८-११२, ११३.
कनकक्षीरीतैल-चि. ७-१११-११६.
कनकारिष्ट-चि. १४-१५८-१६८.

करीरादिप्रयोग-चि. ३०-८२, ८३¹⁄₂.
कलिङ्गादिचूर्ण-चि. १५-१०१.
कल्कयोग-चि. १७-११०.
कल्याणकघृत-चि. ९-३५-४१.
कशेरुकादिघृत-चि. २६-९४, ९५.
कालकचूर्ण-चि. २६-१९४.¹⁄₂, १९५.
कालियादिप्रदेह-चि. २१-७४.
कासमर्दादिघृत-चि. १८-१६३, १६४.
किराततिक्तादिकषाय-चि. २१-५५, ५६.
किराततिक्तादिकाथ-चि. ३०-२६७, २६८.
किराताद्यचूर्ण-चि. १५-१३७-१४०.
कुटजफलादिघृत-चि. १४-१९७.
कुटजादिरसक्रिया-चि. १४-१८८-१९०.
कुलत्थादिघृत-चि. १८-१२९.
कुष्ठादितैल-चि. २७-४३, ४४.
कुष्ठादिलेप-चि. ७-११७, ११८.
केवलामलकरसायन-चि. १-३ | ९-३ | १४.
कोलादिघृत-चि. ११-३४.
कण्टकारीघृत-चि. १८-१२५-१२८.
कण्टकारीघृत-चि. १८-३५.
कम्पिल्लादितैल-चि. २५-९०, ९१.
क्षारगुटिका-चि. १२-४३-४६.
क्षारगुटिका-चि. १५-१८३-१८५.
क्षारघृत-चि. १५-१७१, १७२.
क्षारतैल-चि. २६-२२६-२३०.
क्षारतैल-चि. १३-१६९-१७१.
क्षारयूष-चि. १७-९७, ९८.
क्षारागद-चि. २३-१०१-१०४.
क्षीरयोग-चि. २९-७१.
क्षीरयोग (प्रथम)-चि. २-३ | ६-३ | ७.
क्षीरयोग (द्वितीय)-चि. २-३ | ८-३ | १०.
क्षीरयोग (तृतीय)-चि. २-३ | ११.
क्षीरषट्पलकघृत-चि. ५-१४७, १४८.
खदिरादिगुटिका-चि. २६-२०६-२१४.
खदिरादितैल-चि. २६-२०६-२१४.
खुड्डाकपद्मकतैल-चि. २९-११४¹⁄₂.
गण्डीराद्यरिष्ट-चि. १२-२९-३१.
गन्धहस्तिनामाऽगद-चि. २३-७०-७६.
गुडार्द्रकप्रयोग-चि. १२-४७, ४८.
गुडूच्यादिघृत-चि. १८-१६१, १६२.
गृहधूमादियोग-चि. २३-१९८.
गोक्षीरवाजीकरण-चि. २-३ | ३-३ | ५.
गौडारिष्ट-चि. १६-१०५.
घृतयोग-चि. २९-७१.
चन्दनादिकाथ-चि. १४-१८६.
चन्दनादिघृत-चि. १५-१२५-१२८.
चन्दनादितैल-चि. ३-२५८.
चन्दनादियोग-चि. २५-८८.
चन्दनादियोग-चि. २३-१९१, १९२.
चव्यादिघृत-चि. १४-१०५, १०६.
चव्यादिघृत (अपर)-चि. १४-१०७-१०९.
चव्यादिघृत-चि. १९-४४.
चाङ्गेरीघृत-चि. २९-४३.
चित्रकघृत-चि. १३-११६.
चित्रकादिघृत-चि. १२-५५-५९.
चित्रकादिलेप-चि. ७-८५, ८६.
चित्रकादिलेह-चि. १८-५३-५६.
चूर्णाञ्जन-चि. २६-२४७-२४९.
च्यवनप्राशावलेह-चि. १-१ | ६२-१ | ७४.
जम्ब्वादिचूर्ण-चि. ८-१२७.
जीवनीयघृत-चि. २९-६१, ७०.
जीवनीययमक-चि. १०-२८.

जीवन्त्यादिघृत-चि. ८-१११-११३.
जीवन्त्यादिलेह-चि. १८-१७६-१७९.
तक्रारिष्ट-चि. १४-७१-७५.
तालीशाद्यगुटिका-चि. ८-१४५-१४८.
तालीशाद्यचूर्ण-चि. ८-१४५-१४८.
तिक्तषट्पलकघृत-चि. ७-१४०-१४३.
तिक्तेक्ष्वाक्वादितैल-चि. ७-१०८, ११०.
तुम्बुर्वादिधूपन-चि. १४-५०, ५१.
तेजोवत्यादिघृत-चि. १७-१४१-१४४.
तैलपञ्चक-चि. ५-९६.
त्रप्वादिलेप-चि. ७-८८.
त्रायमाणादिघृत-चि. ५-११८-१२१.
त्रिफलादिक्वाथ-चि. ३-२०८, २०९.
त्रिफलादिक्षार-चि. १५-१८८-१९३.
त्रिफलादिचूर्ण-चि. ७-६८, ६९.
त्रिफलाद्यरिष्ट-चि. १२-३९, ४०.
त्रिफलायोग-चि. ७-१३६-१३९.
त्रिफलारसायन (प्रथम)-चि. १-३ | ४१, ३ | ४२.
त्रिफलारसायन (द्वितीय)-चि. १-३ | ४३, ३ | ४४.
त्रिफलारसायन (तृतीय)-चि. १-३ | ४५.
त्रिफलारसायन (चतुर्थ)-चि. १-३।४६, ३ | ४७.
त्रिकण्टकाद्यियमक-चि. ६-३८, ३९.
त्रुट्यादिचूर्ण-चि. २६-६४, ६५.
त्र्यूषणादिघृत-चि. ५-६५.
त्र्यूषणादिघृत-चि. २६-८७, ८८.
त्र्यूषणादिचूर्ण-चि. १४-६२-६४.
त्र्यूषणाद्यघृत-चि. १५-८७.
त्र्यूषणाद्यघृत-चि. १८-३९-४२.
त्वगादिलेह-चि. १८-९२, ९३.
दन्तीघृत-चि. १६-५१.
दन्तीहरीतकी-चि. ५-१५४-१६०.
दन्त्यरिष्ट-चि. १४-१४४-१४७.
दन्त्यादिक्षीर-चि. १२-२४.
दशमूलादिघृत-चि. १७-१४०.
दशमूलादिघृत-चि. ८-९७, ९८.
दशमूलादिघृत-चि. १८-१२३, १२४.
दशमूलादियवागू-चि. १७-१०२, १०३.
दशमूलाद्यघृत-चि. १५-८२-८६.
दाडिमाद्यघृत-चि. १६-४४-४६.
दार्व्यादिक्वाथ-चि. १४-१८६.
दार्व्यादिघृत-चि. १४-१९६.
दुग्धप्रयोग-चि. २४-१९५-१९८.
दुरालभादिक्षार-चि. १५-१७९, १८०.
दुरालभादिघृत-चि. ८-१०६-११०.
दुरालभादिलेह-चि. १८-५०.
दुरालभासव-चि. १५-१५२-१५५.
दुःस्पर्शादिलेह-चि. १८-५१.
दृष्टिप्रदावर्ति-चि. २६-२५४, २५५½.
देवदार्वादितैल-चि. २६-२२३½.
द्राक्षाघृत-चि. १६-५२.
द्राक्षादिघृत-चि. २६-९३.
द्राक्षादिशीतकषाय-चि. २१-५८.
द्राक्षाद्यघृत-चि. ५-१२३.
द्रोणीप्रवेशिकारसायन-चि. १-४ | ७.
द्विक्षारादिचूर्ण-चि. १८-४८, ४९.
द्विपञ्चमूलादिघृत-चि. १८-१५८-१६०.
द्विरुत्तरहिङ्ग्वादिचूर्ण-चि. २६-२०.
धातक्यादितैल-चि. ३०-७८-८१½.
धात्र्यरिष्ट-चि. १६-१११-११३.
धात्र्यवलेह-चि. १६-१००, १०१.
नलदादिप्रलेप-चि. २१-७७.

नवायसचूर्ण-चि. १६-७०, ७१.
नागबलादियोग-चि. ११-९१, ९२.
नागबलारसायन-चि. १-२ | ११.
नागरघृत-चि. १३-११५½.
नागरादिघृत-चि. १४-११०-११२.
नागरादियोग-चि. ५-९१½.
नागरादियोग-चि. १८-११५.
नागाराद्यचूर्ण-चि. १५-१२९-१३१.
नारायणचूर्ण-चि. १३-१२५-१३२½.
निदिग्धिकादियूष-चि. १७-९४, ९५.
निरूहबस्तिप्रयोग-चि. ३-१६९, १७०½.
नीलिन्याद्यघृत-५-१०५-१०९.
नीलिन्याद्यचूर्ण-चि. १३-१३७½.
नृकेशादिधूपन-चि. १४-४९.
न्यग्रोधपादादिप्रदेह-चि. २१-७३.
पञ्चकोलघृत-चि. १३-११२-११४.
पञ्चकोलादिलेप-चि. ३०-२६४, २६५.
पञ्चगव्यघृत-चि. १०-१७.
पञ्चमूलाद्यघृत-चि. १५-८८-९३.
पञ्चशिरीष-अगद-चि. २३-२१८.
पञ्चाम्लकयोग-चि. २४-१५१.
पटोलमूलादिकाथ-चि. ७-६२-६४.
पटोलमूलादिकाथ-चि. १२-५३, ५४.
पटोलादिकाथ-चि. २१-६०.
पटोलादिकाथ-चि. २१-६१.
पटोलादिशीतकषाय-चि. २१-५९.
पटोलाद्यचूर्ण-चि. १३-११९-१२४.
पथ्याघृत-चि. १६-५०.
पथ्यादिचूर्ण-चि. १५-१०२.
पद्मकादिलेह-चि. १८-१७४, १७५.
पयःप्रयोग-चि. ३-१६७½.
पलाण्डुप्रयोग-चि. १४-२०४.
पलाशादिपानीय-चि. १५-१४२, १४३.
पलङ्कषादितैल-चि. १०-३४-३६.
पाठादिचूर्ण-चि. १४-१९५.
पाठादियोग-चि. १८-११४.
पाठादियोग-चि. ३०-२६५, २६६½.
पारूषकघृत-चि. २९-५८-६०.
पाषाणभेदादिघृत-चि. २६-६०, ६१.
पाषाणभेदादिचूर्ण-चि. २६-६०, ६१.
पिण्डतैल-चि. २९-१२१-१२३.
पिण्डासव-चि. १५-१६०-१६२.
पिप्पलीरसायन-चि. १-३ | ३२-३ | ३५.
पिप्पलीवर्धमानरसायन-चि. १-३ | ३६-३ | ४०.
पिप्पल्यादिघृत-चि.-३-२१९-२२१.
पिप्पल्यादिघृत-चि. १४-११३-११८.
पिप्पल्यादिघृत-चि. १४-१०३, १०४.
पिप्पल्यादिघृत-चि. १८-३६-३८,
पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १३-५९½.
पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १५-१०६, १०७.
पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १५-१६८, १६९.
पिप्पल्यादिप्रलेप-चि. १४-५४.
पिप्पल्यादिलेह-चि. १८-९४.
पिप्पल्यादिलेह-चि. १८-१३५-१३७.
पिप्पल्याद्यघृत-चि. ५-७४, ७५.
पीतकचूर्ण-चि. २६-१९६-१९७.
पुनर्नवादितैल-चि. २६-८२.
पुनर्नवादियोग-चि. २६-६३.
पुनर्नवाद्यरिष्ट-चि. १२-३४-३८.
पुनर्नवामण्डूर-चि. १६-९३-९६.
पुराणघृत-चि. ९-५९-६२½.

पुष्करमूलादिकल्क-चि. २६-८४.
पुष्करमूलादिक्वाथ-चि. २६-८५, ८६.
पुष्यानुगचूर्ण-चि. ३०-९०-९६.
प्रथमनचूर्ण-चि. २६-१५.
प्रपौण्डरीकादिक्वाथ-चि. २१-५७.
प्रपौण्डरीकादितैल-चि. २५-८९.
प्रपौण्डरीकादितैल-(अपर)-चि. २५-९२.
प्रपौण्डरीकादिधूमवर्ति-चि. १८-७१-७२.
फलत्रिकादिक्वाथ-चि. ६-४०.
फलारिष्ट-चि. १४-१४८-१५२.
फलारिष्ट (द्वितीय)-चि. १४-१५३-१५७.
बलातैल-चि. २८-१४८-१५६१/२.
बलातैल-चि. २९-११९,१२०.
बलादिघृत-चि. ३-२२४-२२६.
बलारसायन-चि. १-२ | १२.
बीजकारिष्ट-चि. १६-१०६-११०.
बृहत्यादिगण-चि. ३-२१३, २१४.
बृहत्यादियोग-चि. ३-२१०.
बृंहणीगुटिका-चि. २-१ | २४. १ | ३३.
ब्राह्मरसायन (प्रथम)-चि. १-१ | ४८. १-५७.
ब्राह्मरसायन (द्वितीय)-चि. १-१ | ५८. १ | ६१.
भल्लातकक्षीर-चि. १-२ | १३.
भल्लातकक्षौद्र-चि. १-२ | १४.
भल्लातकघृत-चि. ५-१४३-१४६.
भल्लातकतैल-चि. १-२ | १५.
भल्लातकादिक्षार-चि. १५-१७७,१७८.
भूनिम्बादिक्षार-चि. १५-१८१.
भूनिम्बाद्यचूर्ण-चि. १५-१३२, १३३.
मण्डूरवटक-चि. १६-१०२-१०४.
मधुकतैल (शतपाक)-चि. २९-११५-११८.
मधुकादिघृत-चि. ११-४८,४९.
मधुकादियोग-चि. १७-११५.
मधुपर्ण्यादितैल-चि. २९-९०-९५.
मधूकपुष्पासव-चि. १५-१५०,१५१.
मधूकादिहिम-चि. ३-२०६१/२.
मधूकासव-चि. १५-१४६-१४९.
मध्वरिष्ट-चि. १५-१६३-१६७.
मनःशिलादिधूम-चि. १८-६९,७०.
मनःशिलादिधूमवर्ति-चि. १८-७४.
मनःशीलादिघृत-चि. १७-१४५,१४६.
मन्थयोग-चि. २३-६१.
मरिचयोग-चि. ९-६८१/२.
मरिचाद्यचूर्ण-चि. १५-१०८-११०.
महाकल्याणकघृत-चि. ९-४२-४४.
महाखदिरघृत-चि. ७-१५१-१५६.
महागन्धहस्तिनामाऽगद-चि. २३-७७-९४.
महातिक्तकघृत-चि. ७-१४४-१५०.
महानीलतैल-चि. २६-२६८, २७११/२.
महापञ्चगव्यघृत-चि. १०-१८-२४.
महापद्मकतैल-चि. २९-११०-११३.
महापैशाचिकघृत-चि. ९-४५-४८.
महामायूरघृत-चि. २६-१६६-१७४.
मायूरघृत-चि. २६-१६३-१६५.
मांसरसप्रयोग-चि. ३-१६६१/२.
मांस्यादियोग-चि. २३-१९०१/२.
मांस्यादिलेप-चि. ७-८७.
मुक्ताद्यचूर्ण-चि. १७-१२५-१२८.
मुस्तादिचूर्ण-चि. ७-६५-६७.
मुस्तादिवर्ति-चि. १०-४८, ४९.
मूर्वादियोग-चि. २७-३५१/२.
मूलकतैल-चि. २८-१७२-१७५१/२.
मूलकाद्यतैल-चि. २८-१६७-१६९.

मूलासव-चि. १५-१५६-१५९.
मृतसंजीवन-अगद-चि. २३-५४-६०.
मृद्वीकादिलेह-चि. १८-९१.
मृद्वीकादिचूर्ण-चि. २६-१९८½.
मेध्यरसायन-चि. १-३ | ३०, ३१.
मञ्जिष्ठादियोग-चि. २३-१९६½.
यवानीषाडवचूर्ण-चि. ८-१४१-१४४.
यवागूप्रयोग-चि. ३-१४९, १५०.
यवादिघृत-चि. १३-११७½.
यष्टिमधुकादियोग-चि. ३०-२७१, २७२.
यष्ट्याह्वादिघृत-चि. ११-३३.
योगराज-चि. १६-८०-८६.
रास्नाघृत-चि. १८-४३-४६.
रास्नातैल-चि. २८-१६५, १६६.
रास्नादितैल-चि. २६-१६०.
रास्नादियूष-चि. १७-९६.
रोहिण्यादिघृत-चि. ५-११५-११७.
रोहितकघृत-चि. १३-८३-८६.
लवणयोग-चि. २६-२४, २५.
लशुनक्षीरप्रयोग-चि. ५-९४, ९५.
लशुनाद्यघृत-चि. ९-४९-५१.
लशुनाद्यघृत (अपर)-चि. ९-५२-५६.
लोध्रासव-चि. ७-४१-४३.
लोहचूर्णप्रयोग-चि. ३०-८४, ८५½.
लौहादिरसायन-चि. १-३ | १५-३ | २३.
वचादिघृत-चि. १०-२७.
वचादिचूर्ण-चि. १५-१३४-१३६.
वचादिचूर्ण-चि. २६-२१.
वचादियोग-चि. ३०-२५२½.
वत्सकादिकषाय-चि. ३-२०४, २०५.
वत्सकादिप्रलेप-चि. २७-५४, ५५.
वत्सकादियोग-चि. १५-१८६, १८७.
वाजीकरणघृत-चि. २-१ | ३३-१ | ३७½.
वाजीकरणपिण्डरसाः-चि. २-१ | ३८-१ | ४२.
वाट्ययोग-चि. ५-९८.
वार्ताकयूष-चि. १७-१००.
वासाघृत-चि. ४-८८.
वासाघृत-चि. ५-१२६, १२७.
वासादिघृत-चि. ३-२२२, २२३.
विडङ्गादिक्षार-चि. १३-८०½.
विडङ्गादिचूर्ण-चि. १८-४७½.
विडङ्गादिलेह-चि. १८-५२.
विडङ्गावलेह-चि. १-२ | ९.
विपादिकाहरघृततैल-चि. ७-१२०, १२१.
विरेचन-चि. ३-१६८.
विशालादिफाण्ट-चि. १६-६०-६२½.
विषाणिकादियोग-चि. ३०-२७३.
वृषमूलादितैल-चि. २८-१७०, १७१.
वृष्य-अण्डरस-चि. २-१ | ४९.
वृष्यकुक्कुटमांसप्रयोग-चि. २-१ | ४८.
वृष्यक्षीर-चि. २-२ | १८-२ | २०.
वृष्यगुटिका-चि. २-४ | ३०-४ | ३२.
वृष्यघृत-चि. २-२ | २१-२ | २३.
वृष्यघृतभृष्टमत्स्यमांस-चि. २-४ | १७,४ | १८.
वृष्यदधिसरप्रयोग-२-२ | २४-२ | २६.
वृष्यपायसयोग-चि. २-३ | १४.
वृष्यपिप्पलीयोग-चि. २-३ | १२, ३ | १३.
वृष्यपूपलिका-चि. २-२ | २८, २ | २९.
वृष्यपूपलिका-चि. २-३ | १५-३ | १७.
वृष्यपूपलिकादियोग-चि. २-२ | १०-२ | २३.
वृष्यपूपलिकायोगौ-चि. २-४ | १९-४ | २२.
वृष्यबस्ति-चि. २-४ | १०.

वृष्यमधुकयोग-चि. २-३ | १९.
वृष्यमाषयोग-चि. २-१ | ४७.
वृष्यमाहिषरस-चि. २-१ | ४२, १ | ४३.
वृष्यमाहिषरस-चि. २-४ | १५, ४ | १६.
वृष्यमांस-चि. २-१ | ४६.
वृष्ययोग-चि. २-४ | २५, ४ | २७.
वृष्यरसाः (अन्ये)-चि. २-१ | ४४, १ | ४५.
वृष्यशतावरीघृत-चि. २-३ | १८.
वृष्यषष्टिकौदनप्रयोग-चि. २-२ | २७.
वृष्या माषादिपूपलिका-चि. २-४ | २३, ४ | २४.
वृष्या मांसगुटिका-चि. ३-४ | ११-४ | १४.
वृष्योत्कारिका-चि. २-४ | ३३, ४ | ३५.
व्योषादि-अञ्जन-चि. ९-६५.
व्योषादिघृत-चि. १६-११८-१२०.
व्योषादिचूर्ण-चि. २६-५५.
व्योषादिनस्य-चि. ९-६५.
व्योषादियोग-चि. २३-१९७$\frac{१}{२}$.
शकृद्रसप्रयोग-चि. १७-११६.
शट्यादिगण-चि. ३-२११, २१२.
शट्यादिचूर्ण-चि. १७-१२३, १२४.
शट्यादिचूर्ण-चि. ५-८५-८७.
शतावर्यादिकाथ-चि. २६-५०.
शतावर्यादिघृत-चि. ४-९५, ९६.
शरादिपञ्चमूलक्षीर-चि. १८-१००.
शर्कराद्यवलेह-चि. २६-६६-६८.
शर्करादिलेह-चि. १८-९०.
शाद्वलादिप्रलेप-चि. २१-७५.
शार्ङ्गेष्टादियोग-चि. २७-३३, ३४$\frac{१}{२}$.
शिरीषादि-अञ्जन-चि. ९-६४$\frac{१}{२}$.
शिरीषादिनस्य-चि. ९-६४$\frac{१}{२}$.
शिरोविरेचनप्रयोग-चि. ३-१७३$\frac{१}{२}$.
शिलाजतुप्रयोग-चि. १२-४९.
शिलाजतुप्रयोग-चि. ५-९७.
शिलाजतुरसायन-चि. १-३ | ४८, ३ | ६५.
शैलेयादितैल-चि. १२-६५, ६६.
शैलेयादिप्रदेह-चि. १२-६५, ६६.
शङ्खादिवर्ति-चि. २६-२४६.
श्यामादिवर्ति-चि. २६-१२.
श्योनाकादिपरिषेक-चि. २७-५६, ५७.
श्वदंष्ट्रादिघृत-चि. ११-४४-४७.
श्वदंष्ट्रादियोग-चि. २६-६३.
श्वपित्ताञ्जन-चि. १०-५०.
श्वपित्तधूपन-चि. १०-५०.
श्वेतकरवीरपल्लवाद्यतैल-चि. ७-१०६, १०७.
श्वेतकरवीराद्यतैल-चि. ७-१०५.
षडङ्गपानीय-चि. ३-१४५.
षाडव-चि. ११-८८-९०.
सप्तच्छदादिकाथ-चि. २६-५७.
सप्तच्छदादियवागू-चि. २६-५७.
सारिवादिप्रलेप-चि. २१-७६.
सितोपलादिचूर्ण-चि. ८-१०३, १०४.
सिद्धार्थकादि-अगद-चि. ९-६९-७२.
सिन्धुवारादियोग-चि. २३-१९५$\frac{१}{२}$.
सुकुमारकतैल-चि. २९-९६-१०२.
सुखावती वर्ति-चि. २६-२५२, २५३.
सुनिषण्णकचाङ्गेरीघृत-चि. १४-२३४-२४२.
सैन्धवादिचूर्ण-चि. ११-८५-८७.
सैन्धवादितैल-चि. २७-४५, ४६.
सौवर्चलादिचूर्ण-चि. १७-१०९.
सौवीराञ्जनादिवर्ति-चि. २६-२५०, २५१.
स्थिरादिक्षीर-चि. १८-१०१, १०२.

स्थिरादिघृत-चि. २६-२३.
स्थिरादिघृत-चि. २९-७६-७८.
स्थिरादितैल-चि. २९-७६-७८.
स्वर्णक्षीर्यादियोग-चि. २७-३६, ३७.
हपुषादिघृत-चि. ५-७१-७३.
हपुषादिचूर्ण-चि. १३-१३३-१३६.
हरिद्रादिक्षार-चि. १५-१८२.
हरिद्रादिघृत-चि. १६-५३.
हरीतकीयोग-चि. १-१ | ७६.
हरीतकीयोग-चि. १-१ | ७७.
हरीतकीयोग-चि. १४-११९, १२०.
हरीतकीलेह-चि. १८-१६८, १६९.
हरीतक्यादिघृत-चि. २६-८३.
हरीतक्यादियोग-चि. १२-२२.
हिङ्ग्वादितैल-चि. २६-२२२½.
हिङ्ग्वादिचूर्ण-चि. २६-२२.
हिङ्ग्वादिचूर्ण-चि. १७-१०८.
हिङ्ग्वादियवागू-चि. १७-१०२, १०३.
हिङ्ग्वादिघृत-चि. ९-३४.
हिङ्ग्वादिगुटिका-चि. ५-८४.
हिङ्ग्वादिचूर्ण-चि. ५-७९-८३.
हिङ्गुसौवर्चलाद्यघृत-चि. ५-६९, ७०.
ह्रीबेरादिघृत-चि. १४-२३०-२३३.
ह्रीबेरादिजल-चि. ४-३१.

चरकसंहितागतपारिभाषिकशब्दानां स्थानाध्याय-श्लोकोल्लेखयुता व्याख्या* ।

Explanation of the Technical Terms in the Caraka Saṃhita, along with reference to the Section, Chapter and Verse.

अङ्गमर्दप्रशमनः-सू. ४-८. अङ्गमर्दं प्रशमयति इति ।

अचेतनम्-सू. १-४८. निरिन्द्रियम् ।

अञ्जनम्-चि. २६-२३६. अञ्जनं क्रियते येन तद्द्रव्यं चाञ्जनं स्मृतम् (अ. हृ. को.) । तेन द्रव्येण म्रक्षणम् ।

अतिकृशः-सू. २१-१५. अतितनुः ।

अतियोगः-चि. ६-३१. संशोध्यातिरिक्तप्रवर्तनम् ।

अतिस्थूलः-सू. २१-३. अतिपीनः ।

अध्यवसानम्-वि. ४-५. " अयमेवं रोगः " इत्येवंभूतो निश्चयः ।

अध्यशनम्-चि. १५-२३६. भुक्तं पूर्वान्नशेषे तु पुनरध्यशनं मतम्; अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते । (सु. सू. ४६-५०९.)

अध्युषितम्-चि. २७-५३. पर्युषितम् ।

अनभिष्यन्दि-सू. २१-५०. अस्निग्धम् ।

अनशनम्-सू. २५-४०. उपवासः (श. क.)

अनागतावेक्षणम्-वि. १२-४४. अनागतं विधिं प्रमाणीकृत्यार्थसाधनम् ।

अनात्मकः-चि. ९-११. अविधेयमनाः ।

अनाप्लुतः-इ. २-१२. अस्नातः ।

अनिर्वेदः-सू. २५-४०. अखिन्नता ।

अनुपानम्-सू. २७-३२३. औषधाङ्गपेयविशेषः । (श. क.). तच्च औषधपानानन्तरं विलम्ब्य प्रयोज्यम् (वै.श.)

अनुबन्धः-वि. ६-११. अस्वहेतुप्रकुपितोऽव्यक्तलिङ्गः परचिकित्साप्रशमनीयश्च ।

अनुबन्ध्यः-वि. ६-११. स्वतन्त्रो व्यक्तलिङ्गो यथोक्तसमुत्थानप्रशमश्च ।

अनुमानम्-सू. ११-२१. युक्त्यपेक्षस्तर्कः ।

अनुरसः-सू. २६-२८. शुष्कस्य वाऽऽर्द्रस्य वा प्रथमजिह्वासंबन्धे वाऽऽस्वादान्ते वा यो मधुरोऽयमम्लोऽयमित्यादिना विकल्पेन न गृह्यते किं तर्ह्यव्यपदेश्यतया छायामात्रेण कार्यदर्शनेन वा मीयते सोऽनुरसः ।

अनुलोमनम्-सू. २७-२८४. कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्त्वा बन्धमधो नयेत् । तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी । (शा. सं. प्र. ख. ४-३१.)

अनुलोमसंभाषा-वि. ८-१७. सन्धाय संभाषा ।

---

* अत्र प्रमाणत्वेन गृहीतानां ग्रन्थटीकाकाराणां संक्षिप्तसंज्ञानां विवरणम् ।

अ. हृ.- **अष्टाङ्गहृदयम्** ।
अ. हृ. को.-अष्टाङ्गहृदयकोषः ।
च.-चरकसंहिता ।
चक्रः-चक्रपाणिदत्तः ।
डल्हणः-डल्हणाचार्यः ।
द्र. सं.-द्रव्यगुणसंग्रहः ।
मा. नि.-माधवनिदानम् ।
रा. नि.-राजनिघण्टुः ।
व. द.-वनौषधिदर्पणः ।
वै. श.-वैद्यकशब्दसिन्धुः ।
श. क.-शब्दकल्पद्रुमः ।
शा. सं.-शार्ङ्गधरसंहिता ।
सु.-सुश्रुतसंहिता ।

अनुवर्तमानाः-वि. ६-८. चिरकालमवतिष्ठमाना बलमभिवर्धयन्तो वा ।

अनुवासनम्-सू. २-१४. स्नेहबस्तिः ।

अनुवासनस्कन्धौ-सि. ९-७. स्थावरात्मको जङ्गमात्मकश्च स्नेहः ।

अनुवासनोपगः-सू. ४-८. षड्विंशो महाकषायः । अस्य द्रव्याणि अनुवासनद्रव्याणां सहायत्वेनोपगच्छन्तीति ।

अनुशस्त्राणि-सू. २५-४०. त्वक्सारस्फटिककाचकुरुविन्दजलौकोग्निक्षारनखगोजीशेफालिकाशाकपत्रकरीरबालाङ्गुल्य इति । (सु. सू. ८-१५.) हीनशस्त्राणि, शस्त्रसदृशानि वा (डल्हणः)

अनुशीलनम्-वि. ४-८. संततशीलनम् ।

अनुषङ्गी-सू. २५-४०. पुनर्भावी ।

अनुषङ्गी-चि. २१-३४. चिरकालस्थायी ।

अनूकम्-शा. २-२७. प्राक्तनाऽव्यवहिता देहजातिः ।

अनूपः-सू. २५-४०. जलप्रायः । (श. क.)

अनैकान्तः (नैकान्तः)-सि. १२-४३. अन्यतरपक्षानवधारणम् ।

अन्तःपरिमार्जनम्-सू. ११-५५. यदन्तःशरीरमनुप्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन् प्रमार्ष्टि ।

अन्तरग्निः-सू. २७-३. जठराग्निः ।

अन्तर्वेगो ज्वरः-चि. ३-३३. गम्भीराख्यो ज्वरः । (सु. उ. ३९-९२३.)

अन्तराधिः-शा. ७-५. मध्यम् ।

अन्नद्वेषः-नि. १-२४. अन्नारुचिः ।

अन्नरसखेदः-नि. १-२१. अन्नरसे खेदोऽवसादोऽन्नरसखेदः सर्वरसेष्वनिच्छेत्यर्थः ।

अन्नवहस्रोतः-वि. ५-८. यया भुक्तमन्नमुदरं नीयते सा गलनाडी ।

अन्नविदाहः-चि. ४-६. अन्नस्य पक्वापक्वता ।

अन्नानुपानम्-सू. २७-३१९. यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते । अन्नानुपानं धातूनां दृष्टं यन्न विरोधि च ॥

अन्येद्युष्कः ज्वरः-चि. ३-३४,६७. यः ज्वरः प्रतिदिनं प्रत्येति सोऽन्येद्युष्कः; अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्तते । (मा. नि.)

अपचयः-सू. ७-३७. क्षयः । (श. क.)

अपचारः-सू. २८-७. अहिताहारोपयोगः ।

अपचितः-वि. ८-९८. क्षीणः । (श. क.)

अपतर्पणम्-सू. २३-२६. लङ्घनम् । (श. क.)

अपत्यमार्गः-सि. ९-६६. योनिः ।

अपथ्यम्-वि. १५-२३५. अहितम् । (श. क.)

अपदेशः-वि. १२-४२. प्रतिज्ञातार्थसाधनाय हेतुवचनम् ।

अपरा-शा. ६-२३. गर्भस्य नाभिनाडीप्रतिबद्धा 'अमरा' इति लोके ख्याता ।

अपस्मारः-नि. ८-६. चि. १०-३. स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः । तमःप्रवेशं बीभत्सचेष्टं धीसत्त्वसंप्लवात् ॥

अभिघातः-चि. ३०-१६६. अभिहननं (श. क.)

अभिषङ्गः-सू. २०-४. भूताद्यावेशः (श. क.)

अभिष्यन्दी-सू. २२-२४. दोषधातुमलस्रोतःक्लेदवान् ।

अभेषजम्-चि. १-१ | ५, अभेषजं च द्विविधं बाधनं सानुबाधनम् ।

अभ्यङ्गः-चि. २-३ | २४. तैलमर्दनम् (श. क.)

अभ्यञ्जनम्-सू. १३-२४. अभ्यङ्गः (श. क.)

अभ्यासः-सू. २५-४०, २६-३४. भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया ।

अमर्षः-चि. ९-१२. अक्षान्तिः ।

अम्लः-सू. २६-७५. भूम्यग्निगुणबाहुल्यात् अम्लः ।

अम्लकाञ्जिकम्-चि. ५-७७. काञ्जी (वै. श.)

अयोगः-सि. ६-३१-३४. अयोगः प्रातिलोम्येन न चाल्पं वा प्रवर्तनम् ।

अरिष्टः-सू. २७-१८२. औषधकाथमध्वादिसंपादितो दन्त्यभयारिष्टादिः। पक्वौषधाम्बुसिद्धं यत् मद्यं तत् स्यादरिष्टकम् । (व. द.)

अरिष्टम्-इ. ११-२९. क्रियापथमतिक्रान्ताः केवलं देहमाप्लुताः । चिह्नं कुर्वन्ति यद्दोषास्तदरिष्टं निरुच्यते ॥

अरिष्टा-चि. २३-३५. मन्त्रेण रज्ज्वादिभिर्वा विषोपरि बन्धः ।

अरुचिः-सू. २८-९. अरुचौ मुखप्रविष्टं नाभ्यवहरति।

अर्थः-सू. १-१५. सुवर्णादिः ।

अर्थः-सू. ३०-३. हृदयम् ।

अर्थः-सू. ३०-२५. अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचरा विषया गुणाः (च. शा. १-३१)

अर्थापत्तिः-वि. १२-४२. यदकीर्तितमर्थादापद्यते साऽर्थापत्तिः ।

अर्थाभासः-वि. ८-५६. अर्थवदिव आभासते ।

अर्थावयवशः-सू. ३०-१९. अर्थभागशः।

अर्दितम्-सू. ५-५९. शिरानासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसन्धिगः । अर्दयत्यनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः । वक्रीभवति वक्त्रार्धं ग्रीवा चाप्यपवर्तते ॥ शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनां च वैकृतम् । ग्रीवाचिबुकदन्तानां तस्मिन्पार्श्वे च वेदना ॥ (सु. नि. अ. १-६९, ७०$\frac{1}{2}$.)

अर्शः-चि. १४-६. दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि संदूष्य विविधाकृतीन् । मांसाङ्कुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसि ताञ्जगुः ॥ (मा. नि. ५-२.)

अर्शोघ्नः-सू. ४-८. अर्शोहा।

अलजी-सू. १७-८८. दहति त्वचमुत्थाने तृष्णामोहज्वरप्रदाः । विसर्पत्यनिशं दुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी ॥

अलसकः-वि. २-१२. प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न च पच्यते । आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः ॥ (अ. हृ. ८-६$\frac{1}{2}$)

अवगाहः-सू. ७-७. स्नानम् ।

अवचूर्णनम्-चि. २५-४३. व्रणावचूर्णनं वर्ण्यं रोपणं लोमरोहणम् ।

अवपीडः-सि. ९-८९. अवपीड्य यत्र कल्कादीनि दीयन्ते ।

अवपीडः-चि. ४-९७. द्रव्यमापोथितं कृत्वा पीडयित्वा रसो दीयते यः सः ।

अवपीडकसर्पिः-चि. १४-२२३. भोजनस्योर्ध्वं यत् पीयते किंवा भूरिमात्रं सर्पिरवपीडकमुच्यते ।

अवपीडकसर्पिः-सू. ७-७. मूत्रजेषु तु पाने च प्राग्भक्तं शस्यते घृतम् ॥ जीर्णान्तिकं चोत्तमया मात्रया योजनाद्वयम् । अवपीडकमेतच्च संज्ञितं (अ. हृ. सू. ४-६$\frac{3}{4}$.)

अवपीडनम्-चि. २५-४०. कल्कादिना आलेपनं पूयनिर्गमार्थम् ।

अवसादि-चि. १९-५. भूमौ पतितं लीनं भवति।

अवसादि-चि. ३०-१४०. दुष्टशुक्रस्य भेदः।

अविधेयपरिस्पन्दम्-चि. २७-११. अस्वाधीनेन्द्रियम्।

अविपाकः-सू. १६-१३. अपरिपाकः। (वै. श.)

अविभ्रमः-वि. ४-८. अभ्रान्तिः।

अविभ्रमः-वि. ८-९४. पाककालेऽप्यवैकारिकः।

अविस्रम्-चि. २-४ | ५०. पूतिगन्धरहितम् (वै.श.)

अवृष्यम्-सू. २९-४. शुक्रघ्नम्।

अशौण्डः-वि. ८-१३. शुण्डा मद्यशाला तत्प्रचारी शौण्डः अशौण्डस्तु तदप्रचारी ।

अश्मस्वेदः-सू. १४-४७, ४९$\frac{1}{2}$. पाषाणस्वेदः ।

अश्रद्धा-सू. २८-९. अश्रद्धायां मुखप्रविष्टस्याहारस्याभ्यवहरणं भवत्येव । परं स्वनिच्छा ।

असात्म्यम्-चि. ३०-२९३; शा. १-१२७. यत् सात्म्यविपरीतम्; असात्म्यमिति तद् विद्यात् यन्न याति सहात्मताम् ।

असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः-सू. ११-३८. दुःखजनक इन्द्रियविषयसम्बन्धः ।

असाध्यः–सू. १०–८. साधयितुमशक्यः (श. क.)

असुखानुबन्धम्–चि. १–४ | ४. रोगरूपमसुखमनुबध्नातीति असुखानुबन्धम् ।

असुखोदर्कम्–वि. १–२३. असुखं दुःखरूपं उदर्क-उत्तरकालीनं फलं यस्य स तथा ।

असुनिभृतः–सू. ८–१९. असमाहितः ।

असृक्–चि. २९–१२०. आर्तवम् । (श. क.)

असृक्पित्तम्–सि. १०–१३. रक्तपित्तम् । (श. क.)

असृक्करः–सू. २७–२३८. शोणितकरः । (श. क.)

असृग्धरा–शा. ७–४. शोणितधरा । (श. क.)

अस्थि–इ. ७–३१. कुल्यम् । (श. क.)

अस्थिवाहीनि–वि. ५–८. द्रवरूपास्थिवाहीनि ।

अस्थिसारः–शि. ८–१०७. मज्जा । (श. क.)

अस्रम्–चि. १४–२११. रक्तम् ।

अस्वेदनम्–चि. ७–२१. स्वेदरहितम् ।

अहङ्कारः–शा. १–६३. बुद्धिविकारः ।

अहितम्–सू. २५–३२. अपथ्यम् ।

अहितम्–सू. ३०–२३. परदुःखजनकम् ।

अहिताहारजातम्–सू. २५–३३. समांश्चैव शरीरधातून् प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति.

अहिताहारजातम्–सू. २६–८५. यत् किञ्चिद्दोषमास्राव्य न निर्हरति कायतः । आहारजातं तत सर्वमहितायोपपद्यते ॥

अंसः–इ. ३–५. स्कन्धः ।

आकाशम्–इ. ४–७. खम् ।

आकुञ्चनम्–शा. ७–१६. सङ्कोचः । (श. क.)

आकृतिः–सू. २४–३३. रूपम् (श. क.)

आकृतिः–इ. ७–८. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया ।

आगन्तुः–सू. ११–४५. भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसमुत्थः ।

आढ्यवातः–चि. २९–११. आढ्यानां प्रायः भवतीति आढ्यरोगः, वातशोणितम् ।

आनाहः–चि. २६–२६. विण्मूत्ररोधकव्याधिः (वै. श.) आमं शकृद्वानिचितं क्रमेण भूयो विबद्धं विगुणानिलेन । प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति (मा. नि.)

आप्ताः–सू. ११–१८, १९. रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये । येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा ॥ आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम् । सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः ॥

आमः–सि. ८–१९. ऊष्मणोऽल्पबलत्वेन धातुमाद्यमपाचितम् । दुष्टमामाशयगतं रसमामं प्रचक्षते ॥ (मा. नि.) आमाशयस्थः कायाग्नेर्दौर्बल्यादविपाचितः । आद्य आहारधातुर्यः स आम इति संज्ञितः ॥ आहारस्य रसः शेषो यो न पक्वोऽग्निलाघवात् । स हेतुः सर्वरोगाणामाम इत्यभिधीयते (मा. नि.)

आयुः–सू. १–४२. शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम् । नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते ॥ (च. सू. १–४२.) तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः । (च. सू. ३०–२२.)

आयुर्वेदः–सू. १–४१. हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम् । मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥ आयुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः । (च. सू. ३०–२३) 'आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्ति' इत्यायुर्वेदः (सु. सू. १–१५)

आयुर्वेदतन्त्रम्–सू. ३०–३१. आयुर्वेदशास्त्रम् ।

आरनालम्–चि. १५–११६३. तुलामितं षष्टिकतण्डुलस्य प्रगृह्य चाचं विधिवद् विधाय । द्रोणेऽम्भसि क्षिप्तमथ त्रियामाम् तत् सप्त रक्षेत् पिहितं प्रयत्नात् । तत्रैव कल्कं सकलं निरस्येत् तत् काञ्जिकं कथ्यते आरनालम् ॥ (व. द.)

आरोग्यम्–सू. ९–४. सुखसंज्ञकमारोग्यम् (च. सू. ९–४); रोगनिर्मुक्तिः (वै. श.)

आशुकारि–सि. ११–१४. आशुरोपनिर्हरणकारि ।

आसवः-सू. २५-४९. यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ॥ (व. द.)

आसुतम्-चि. १५-१२१ कन्दमूलफलाद्यं लवणोदकसंयुतम् । सन्धानाच्चिरकालाम्लमासुतं परिकीर्तितम् ॥ (व. द.)

आश्च्योतनम्-सू. ५-१९. उन्मीलिते दृगमध्ये क्वाथक्षौद्रासवस्नेहबिन्दूनां पातनम् । (व. द.)

आस्थापनोपगः-सू. ४-८. पञ्चविंशो महाकषायः । (व. द.)

उदर्दप्रशमनः-सू. ४-८. उदर्दो वरटीदष्टाकारः शोथः तत्प्रशमन उदर्दप्रशमनः ।

उद्वर्तनम्-सू. ६-२४. कल्कचूर्णाभ्यां गात्रमर्दनम् । (व. द.)

उन्मादः-नि. ७-५. मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्ति शीलचेष्टाचारविभ्रमः । समुद्भ्रमं बुद्धिमनःस्मृतीनामुन्मादमागन्तुनिजोत्थमाहुः ।

उपद्रवः-चि. २१-४. रोगस्योत्तरकालजो रोगः ।

उपयोक्ता-वि. १२-२ यस्तमाहारमुपयुङ्क्ते यदायत्तमोकसात्म्यम् ।

उपयोगसंस्था-वि. १-२१ | ७. उपयोगनियमः स जीर्णलक्षणापेक्षः ।

उर्ध्ववातः-चि. २२-४०. उद्गारः (वै. श.) श्वासः (चक्रः)

उष्णः-चि. ३०-४२. शीतविपरीतः । उष्ण स्तद्विपरीतः स्यात् पाचनश्च विशेषतः (व. द.)

ओकःसात्म्यम्-सू. ६-४९. उपशेते यदौचित्यादोकःसात्म्यं तदुच्यते ॥

ओजः-सू. ३०-९-११. रसादिसर्वधातुसारभागधातुविशेषः (वै. श.)

कच्छपी-सू. १७-८५. अवगाढार्तिनिस्तोदा महावास्तुपरिग्रहा । श्लक्ष्णा कच्छपपृष्ठाभा पिडका कच्छपी मता ॥

कटुः-सू. २६-४०,७७. वाय्वग्निगुणबाहुल्यात् कटुकः ।

कण्ठ्यम्-सू. ४-८. कण्ठाय हितम्, स्वरकरम् ।

कण्डूघ्नः-सू. ४-८. यः कण्डूं हन्ति सः (श. क.)

कपोतान्धः-इ. ३-६. यः रुपाणि दिवा कृष्णानि पश्यति सः ।

करणम्-वि. १-२२ | २. स्वभाविकानां द्रव्याणामभिसंस्कारः ।

करणम्-वि. ८-७०. तद् यदुपकरणायोपकल्पते कर्तुः कार्याभिनिर्वृत्तौ प्रयतमानस्य ।

करणम्-वि. ८-८७. भेषजम् ।

कर्कशा-नि. ५-८ | ४. अमसृणा ।

कर्म-सू. १-४९. प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते ।

कर्म-सू. १-५२. कर्तव्यस्य क्रिया कर्म ।

कर्मजरोगः-शा. १-११६. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म यत् पौर्वदेहिकम् । हेतुस्तदपि कालेन रोगाणामुपलभ्यते ॥

कल्कः-सू. ४-७. यः पिण्डो रसपिष्टानां सः कल्कः परिकीर्तितः ।

कवलः-चि. ८-१४०. गण्डूषः ।

क्वाथः-चि.४-६५. दशरक्तिकमानेन गृहीत्वा तोलकद्वयम् । दत्वाम्भः षोडशगुणं ग्राह्यं पादावशेषितम् ॥ (व. द.)

कषायः-सू. ४-६-२४. रसा लवणवर्ज्याश्च कषाय इति संज्ञिताः ।

कषाय-सू. ४-७. स्वरसः, कल्कः, शृतः, शीतः, फाण्टः, कषाय इति ।

कषायः-सू. २६-४०-९१. पवनपृथिवीव्यतिरेकात् कषाय इति । वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः । बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि ॥

काञ्जिकम् (अम्लम्)-सू. अ. २७-१९२. आशुधान्यं क्षोदितञ्च बालमूलन्तु खण्डशः । कृतं प्रस्थमितं पात्रं जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्धाय संरक्षेद् यावदम्लत्वमागतम् । काञ्जिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥ (व. द.)

काम्बलिकः-सू. १३-२३. दधिमस्त्वम्लसिद्धस्तु यूषः काम्बलिकः स्मृतः । (सु. सू. ४६-३८०$\frac{1}{2}$)

कायचिकित्सा–सू. ३०–२८. कायस्यान्तरग्नेश्चिकित्सा; सर्वाङ्गसंश्रितानां व्याधीनां ज्वररक्तपित्तशोषोन्मादापस्मारकुष्ठमेहातिसारादीनामुपशान्त्यर्थम् (सु. सू. अ. १)

कालः–सू. ११–४२, वि. १–२१ | ६, वि. ८–१२५–१२८. कालः पुनः परिणाम उच्यते; कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च । तत्रावस्थिको विकारमपेक्षते, नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्षः; कालः पुनः संवत्सरश्चातुरावस्था च, आतुरावस्थास्त्वपिकार्याकार्यं प्रतिकालाकालसंज्ञाः; कालो हि नाम (भगवान्) स्वयम्भूरनादिमध्यनिधनः । सूक्ष्मामपि कलां न लीयते इति कालः, संकलयति कालयति वा भूतानीति कालः ॥ (सु. सू. ६–३.)

कालजरोगः–शा. १–११२. पूर्वमध्यापराह्णाश्च रात्र्या यामास्त्रयश्च ये । एषु कालेषु नियता ये रोगास्ते च कालजाः ॥

कासहरः–सू. ४–८. कासघ्नः ।

किट्टम्–सू. २८–४. मलाख्यम् (असारभागः) ।

कुल्माषाः–शा. ६–११; क. २०–३३. अर्धस्विन्ना यवादयः, उत्स्विन्नयवपिष्टकृता भक्ष्याः, मुद्गान् मसूरान् उत्स्विन्नमृदितान् कुल्माषानाहुः (चक्रः).

कुष्ठघ्नः–सू. ४–८. कुष्ठनाशनः ।

कोष्ठः–सू. ११–४८. कोष्ठः पुनरुच्यते महास्रोतः शरीरमध्यं महानिम्नमामपक्काशयश्चेति पर्यायशब्दैः । स्थानान्यामाग्निपक्कानां मूत्रस्य रुधिरस्य च । हृदुण्डुकः फुप्फुसश्च कोष्ठ इत्यभिधीयते ॥ (चक्रः).

कौमारभृत्यम्–सू. ३०–२८. कौमारभृत्यं नाम कुमारभरणधात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थं दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानां च व्याधीनामुपशान्त्यर्थम् । (सु. सू. अ. १–८ | ५.)

क्रिमिघ्नः–सू. ४–८. क्रिमिहरः ।

खडः–सू. १३–२३; चि. ८–१२८. १३०, १३१. तक्रे कपित्थचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकैः । सुपक्कः खडयूषोऽयमयं काम्बलिको मतः ॥ दध्यम्लोलवणस्नेहतिलमाषान्वितः शृतः । छेदितेन रसस्तत्र, यूषो धान्यैः, खडः फलैः । मूलैश्च तिलकल्काम्लप्रायः काम्बलिकः स्मृतः ॥ (चक्रः)

खरः–सू. १–५९. अमसृणः ।

खरस्नेहपाकः–क. १२–१०२, १०३. शीर्यमाणे तु निर्यासे वर्तमाने खरस्तथा ।

खर्जूरमांसानि–चि. २०–२८. खर्जूरफलसारयानि ।

खादीनि–शा. १–६३. सूक्ष्मभूतखादीनि तन्मात्रशब्दाभिधेयानि ।

खानि–चि. २३–३२. स्रोतांसि ।

खुडः–चि. २९–११. आढयवातरोगः ।

खेटः–शा. ४–९. श्लेष्मा ।

गण्डः–इ. ७–२८. कपोलः ।

गण्डूषः–चि. २२–३४. मुखपूरको द्रवः ।

गति–सू. २०–१२. गमनम् ।

गदः–सू. २३–२६, नि. १–५, रोगः

गदापहः–सि. १–२७. व्याधिनाशनः ।

गद्गदः–इ. १–१४. लुप्तपदव्यञ्जनाभिधायी, अस्पष्टवक्ता ।

गन्धः–इ. १–३. स तु घ्राणग्राह्यः पृथिवीगुणः ।

गम्भीरः–चि. ३–५२. अन्तर्वेगः । किं वा गम्भीरधातुस्थः ।

गरः–सू. ३०–२८. कालान्तरप्रकोपि विषम् ।

गरः–चि. १२–५. संयोगजं विषम् ।

गरसंयोगजम्–चि. २३–१४. गरार्थः संयोगो येषां ते गरसंयोगा द्रव्यभेदाः तेभ्यो जातं गरसंयोगजम् ।

गर्भः–शा. ३–३, ४–५. चि. ३०–२८. शुक्रशोणितसंसर्गमन्तर्गर्भाशयगतं जीवोऽवक्रामति सत्त्वसंप्रयोगात्तदा गर्भोऽभिनिवर्तते शुक्रशोणितजीवसंयोगे तु खलु कुक्षिगते गर्भसंज्ञा भवति ।

गर्भकराः भावाः–शा. ३–१६. गर्भस्योत्पादने हेतुभूताः शुक्रादयः ।

गर्भकालव्यतिक्रमः-चि. ५-१७२. दशमासरूपस्य गर्भकालस्य व्यतिक्रमः ।

गर्भगृहम्-सू. ६-१४. गृहकोष्ठकम् ।

गर्भधारिणी-शा. ८-३२. अपरा ।

गर्भपरिस्रावः-चि. ३०-१००. गर्भभ्रंशः ।

गर्भव्यापत्-सि. २-९. गर्भदुष्टिः ।

गर्भशल्यम्-सू. २५-४०. मूढगर्भो मृतगर्भो वा ।

गर्भस्थापनम्-शा. ८-२४. गर्भरक्षणम् । (वै. श.)

गर्भात्मा-शा. ३-८. गर्भकारणभूत आत्मा ।

गर्भाशयः-चि. ३०-३३. गर्भशय्या । (वै. श.)

गर्भासना-सि. ९-६२. गर्भशय्या, गर्भाशय इत्यर्थः अन्ये तु योनिमाहुः ।

गर्भिणी-सू. १०-१५. गर्भवती । (श. क.)

गर्भोपघातकरम्-शा. ८-२५. गर्भनाशजनकम् ।

गलः-इ. ११-१५; चि. २२-१६. कण्ठः । (श. क.)

गलग्रहः-चि. ४-२६. कण्ठग्रहः ।

गलपीडा-सि. ५-१८. कण्ठपीडा ।

गात्रम्-इ. २-११. शरीरावयवः । (वै. श.)

गुटिका-चि. २३-५२. वटिका । (श. क.)

गुडिका-चि. ५-१८३ गुटिका । (श. क.)

गुणः-सू. १-५१. वैशेषिकानुमतो गुणाख्यः पदार्थः ।

गुणाः-सू. १-२८, १०५. गुर्वादयः चतुर्विंशतिः ।

गुणाः-इ. १-३. गुणाः शरीरदेशानां शीतोष्णमृदुदारुणाः । (चक्रः)

गुदम्-इ. ३-५. मलत्यागद्वारम् । (श. क.)

गुदनिष्क्रमणम्-वि. ७-१३. गुदभ्रंशः ।

गुदवलयः-चि. १४-६. गुदस्य मांसवलयः ।

गुरुः-सू. ६-२३. सादोपलेपबलकृद्गुरुस्तर्पणो बृंहणः । (व. द.)

गुल्फः-इ. ३-५. पादग्रन्थिः । श. क.)

गुल्मः-नि. ३-७; चि. ५-७. कुपितानिलमूलत्वाद् गूढमूलोदयादपि ॥ गुल्मवद्वा विशालत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते । (सु. उ. ४२-५३.)

गृञ्जः-चि. २०-२८. समण्डो यवौदनः ।

गृष्टिः-चि. २-३ | ३. एकवारप्रसूता गौः ।

गोष्ठः-शा. ८-१९. गवां विश्रामस्थानम् ।

ग्रहः-शा. ५-१४. राहुः ।

ग्रहाः-चि. १-४ | ४६. सोमपानपात्राणि ।

ग्रहणम्-वि. ४-८. ग्रन्थादिधारणम् ।

ग्रहणी-इ. ७-२०. चि. १५. कोष्ठवयवविशेषः, ग्रहणीरोगः ।

ग्राम्यम्-चि. १२-२०. ग्रामे भवम् ।

ग्राम्यधर्मः-सू. ७-३४. मैथुनम् ।

ग्राहि-सू. २७-९१, दीपनं पाचनं यत्स्यादुष्णत्वाद् द्रवशोषकम् । ग्राहि तच्च यथा शुण्ठी जीरकं गजपिप्पली ॥ (व. द.)

ग्रीवा-सू. १७-६५. कन्धरा ।

ग्लानिः-चि. ३-३६. हर्षक्षयः ।

ग्लास्नुः-इ. ८-२१. क्षीयमाणः ।

घनः-चि. ६-९. सान्द्रः ।

घस्मरः-सू. १३-५०. बहुभक्षकः ।

घाटा-सि. ९-८४. ग्रीवायाः पश्चाद्भागः ।

घुर्घुरकम्-इ. १०-१८. घुर्घुरक इत्याकारः शब्दः ।

घ्राणम्-इ. १-३. घ्राणेन्द्रियम् ।

चक्षुः-इ. १-३. दर्शनेन्द्रियम् । (श. क.)

चक्षुष्यम्-सू. ५-१००. चक्षुषे लोचनाय हितम् । (श. क.)

चतुर्थकः-चि. ३-६७. दिनद्वयं यो विश्रम्य प्रत्येति स चतुर्थकः ।

चतुर्थिका-चि. ११-७२. पलम्

चतुष्पादम्-सू. २९-७. सू. ९-१. वैद्यादिपाद-चतुष्टयम् ।

चतुःस्नेहः-सि. १०-२०. सर्पिस्तैलवसामज्जात्मकः ।

चयः-सू. १७-११४. वृद्धिः ।

चर्या-शा. १-१४३. ईर्य्यापथस्थितिः । (श. क.)

चलः-सू. १-५९. गतिमान् ।

चिकित्सकः-वि. ८-५७. वैद्यः ।

चिकित्सा-सू. ९-५, १६-३४; चि. १-१ | ३. याभिः क्रियाभि र्जायन्ते शरीरे धातवः समाः । सा चिकित्सा विकाराणां कर्म तद् भिषजां मतम् ॥ (वै. श.)

चिकित्सितम्-चि. १-१ | ३. चिकित्सा ।

चिन्त्यम्-शा. १-२०. कर्तव्यतया अकर्तव्यतया वा यन्मनसा चिन्त्यते इति. ।

चिह्नम्-नि. १-९. लक्षणं चिह्नमाकृतिः (मा. नि.)

चूर्णम्-क. ८-६५. चूर्ण्यते पिष्यते यत् । (श. क.)

चूर्णकः-इ. १-२१. सक्तुः । (श. क.)

चूषणम्-चि. २३-३५. पानम् । (वै. श.)

चेतः-चि. २४-२९. चित्तम् (श. क.)

चेतनम्-सू. १-४८. २५-२३. सेन्द्रियं द्रव्यम् ।

चेतना-सि. ९-३. बुद्धिवृत्तिभेदः ।

चेतनाधातुः-सू. २५-९. आत्मा ।

चेष्टा-सू. १७-११८. वाङ्मनःशरीरप्रवृत्तिः । (श.क.)

चैतन्यसंग्रहः-सू. ३०-७. तत्र हृदि आत्मा चैतन्यस्य स्वविषये प्रसृतस्य संग्रहणं करोति ।

च्यवनम्-इ. ३-४. च्युतिः ।

च्यवमानं पित्तम्-चि. १५-१०. अधोभागं वायुना नीयमानं पित्तम् ।

च्युतिः-सि. ५-७. हस्ताद् भ्रंशः ।

छर्दनम्-सि १२-१५ | ३. वमनम् ।

छर्दिनिग्रहणः-सू. ४-१४,२८. अष्टाविंशो महाकषायः ।

छादनम्-चि. २५-४१. छादनं तु द्विविधं बाह्याभ्यन्तरभेदेन ।

छाया-इ. १-३, इ. ७-१६. भौतिकी पञ्चरूपा; वर्णमाक्रामतिच्छाया, आसन्ना लक्ष्यते छाया ।

छेदनम्-चि. ११-५५. द्विधाकरणम् । (वै. श.)

छेदनम्-चि. २५-५५. श्लिष्टान् कफादिकान् दोषानुन्मूलयति यद् बलात् छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु । (शा. सं; व. द.)

छेदी-सू. २७-१८७. विश्लेषकरः । (वै. श.)

जगलः-सू. २७-१८१. भक्तकिण्वकृता सुरा ।

जघनम्-वि. ५-८. कट्यधःस्थानम् (वै. श.)

जघन्यम्-चि. ३०-१७७. पूर्वं वयः ।

जङ्गमम्-सू. १-६८. गच्छतीति जङ्गमम्; गमनशीलम् ।

जङ्घा-इ. ३-५. प्रसृता ।

जरणः-वि. ६-२१. जठराग्निः, जरणः आहारस्य । (व. द.)

जरणशक्तिः-वि. ४-८. पाचनशक्तिः ।

जरायुः-शा. ३-६. जरायुः अपरा, येन वेष्टिता मनुष्यादयः प्रजायन्ते, जरायुणा वेष्टिता जायन्ते इति जरायुजाः मनुष्यादयः ।

जलकोष्ठः-सू. १४-३४. अवगाहार्थं कृतं महज्जलपात्रम् ।

जलजाः-सू. २७-५४. जले निवासाज्जलजाः; मत्स्याः (श. क.)

जल्पः-वि. ८-२८. पक्षाश्रितयोर्वचनं जल्पः ।

जलमृतः-चि. १०-४७. जलमज्जनेन मृतः इव इति जलमृतः, विष्टब्धवायुनूर्ध्वाक्षमाध्मातोदरमेहनम् । विद्याज्जलमृतं जन्तुं शीतपादकराननम् ॥

जलयन्त्रम्-चि. २४-१५८. जलसेचनयन्त्रम् ।

जवोपरोधः-सू. २१-४. वेगोपरोधः ।

जाङ्गलाः-सू. २७-५५. स्थलजा जाङ्गलाः प्रोक्ता मृगा जाङ्गलचारिणः; जङ्गले भवाः ।

जातिप्रसक्ता प्रकृतिः-इ. १-५.ब्राह्मणजातौ शौचम् इत्यादिप्रकृतिः ।

जालिनी-सू. १७-८६. स्तब्धा सिराजालवती स्निग्धास्रावा महाशया । रुजानिस्तोदबहुला सूक्ष्मच्छिद्रा च जालिनी ॥

जानुः-इ. ३-५. ऊरुजङ्घयोर्मध्यभागः । (श. क.)

जिह्मा-सि. ५-५. कुटिला ।

जिह्वा-चि. २२-६. रसज्ञानेन्द्रियम् । (श. क.)

जिह्वानिर्लेखनम्-सू. ५-७५. जिह्वामलहरदशाङ्गुलकाष्ठिका । (श. क.)

जीर्णः-चि. ३-७. पुराणः ।

जीवः-शा. ३-८. गर्भात्मा ह्यन्तरात्मा यः ।

जीवनम्-सू. १-८७. प्राणधारणम् । (श. क.)

जीवनीयः-सू. ४-८; २५-४०. जीवनीयशब्देनेह आयुष्यत्वमभिप्रेतम् ; मूर्च्छितस्य संज्ञाजनकत्वेन जीवनीयत्वं व्याख्येयम् ।

जीवनीयवर्गः-वि. २-३ | १५. जीवनीयानामिति षट्कषायवर्गोक्तानां जीवकर्षभादीनां दशानां वर्गः ।

जीविताभिसरः-सू. ११-५३. जीवनरक्षाकर्ता । (वै. श.)

ज्वरः-नि. १-३२. चि. ३-३१. स्वेदावरोधः संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा । युगपद्यत्र रोगे च स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥ (मा. नि.)

ज्वरहरः-सू. ४-८. ज्वरनाशनः ।

तण्डुलाम्बु-चि. ८-१२५. तण्डुलोदकम् । (श. क.)

तत्त्वावबोधः-सू. ३०-१५. यथार्थज्ञानम् ।

तरतम्-सू. ८-६. ततः ।

तदर्थकारि-वि. २-१३. हेतुव्याधिविपरीतत्वेऽपि हेतुव्याधिप्रशमकारि; हेतुविपरीतार्थकारि, व्याधिविपरीतार्थकारि, हेतुव्याधिविपरीतार्थकारि च ।

तदात्वे-सू. ११-२०. तत्क्षणम् ।

तद्विद्यसंभाषा-वि. ८-६. तच्छास्त्राध्यायिना सह संभाषणम् ।

तनुः-सि. ७-४३. अघनः ।

तनु-सि. ५-४. कृशम् ।

तनु-चि. २२-२६. स्वच्छम् ।

तन्त्रप्रयोगः-नि. ७-४. तन्त्रं शरीरं तस्य परिपालनार्थं सद्वृत्तोक्तः प्रयोगः ।

तन्त्रम्-इ. १२-८४. शरीरम् ।

तन्त्रयन्त्रधरः-सू. १२-८. तन्त्रं शरीरं यदुक्तं 'तन्त्रयन्त्रेषु भिन्नेषु तमोऽन्त्यं प्रविविक्षताम्' (इ. अ. १२) इति, तदेव यन्त्रं तस्य धरः यदि वा तन्त्रस्य यन्त्रं सन्धयः तेषां धरः ।

तन्त्रयुक्तयः-सि. १२-८. तन्त्राधिगमार्था युक्तयः ।

तन्द्रा-चि. १-२ | ३. इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः । निद्रार्तस्येव यस्यैते तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत् ॥

तमः-सू. २५-२८. तमोगुणः प्रकृत्या गुणविशेषः ।

तमः-चि. ३-१३. मोहकर्तृत्वात्तमः ।

तमः-चि. २३-२०. अन्धकारः ।

तमःप्रवेशः-चि. १०-३. अन्धकारप्रवेश इव ।

तमःस्कन्धः-सू. २५-२८. तमसः स्कन्धः समूहः । पक्षरागश्चेह तत्त्वज्ञानप्रतिबन्धकत्वेन तमःस्कन्ध उच्यते ।

तर्कः-वि. ४-४. अप्रत्यक्षज्ञानम् ।

तर्पणम्-चि. ४-३०. बृंहणम् ।

तर्पणम्-चि. ३-१५. तोयपरिप्लुताः सक्तवः ।

तर्पणादिक्रमः-सि. ६-२५. संशोधनानन्तरं कर्तव्यः कर्मविशेषः ।

तर्षः-चि. २-४ | ४८. वनिताभिलाषः ।

तलम्-सि, ३-२९. हस्तपादतलम् ।

तलस्वेदः-सि. १-५०. अग्न्यादितप्तेन हस्ततलेन स्वेदः ।

तामससत्त्वम्-शा. ४-३६. पशुशरीरेऽस्ति, तच्च सदोषमाख्यातं मोहांशत्वात् ।

तालु-इ. ३-५. जिह्वेन्द्रियाधिष्ठानम् (श. क.)

तिक्तः-सू. २६-८, ७८. वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात् तिक्त; प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च । स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः ॥

तिक्तकम्-सू. २७-१९९. तिक्तरसात्मकं द्रव्यम् ।

तिक्तस्कन्धः-वि. ८-१४३. तिक्तवर्गपरिसंख्यातानामौषधद्रव्याणां समूहः ।

तीक्ष्णः चि. ३-५२. दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्रावणः; तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायो लेखनं कफवातहृत् । (व. द.)

तीक्ष्णाग्निः-वि. ६-१२. तीक्ष्णोऽग्निः सर्वापचारसहः

तुवरः-चि. २२-२६. कषायरसः । (श. क.)

तुला-क. ७-६९, १२-९७. तुलां शतपलं विद्यात् परिमाणविशारदः ॥

तुषोदकम्-चि. ३-२६७. सतुषयवकाञ्जिकम् , मृष्टान् माषतुषान् सिद्धान् यवांस्तु चूर्णसंयुतान् । आप्लुतानम्भसा तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥ तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः । (व. द.)

तृणपुत्रिकः-शा. ४-३१. पुरुषाकृतिभूयिष्ठः असमस्तपुरुषलक्षणयुक्तः ।

तृणपूली-चि. २-१ | १८. पूली नपुंसकधर्मित्वात्। तृणपूली पुरुषाकृतिरिति भाषया पुरुषार्थक्रियाविरहितं दर्शयति ।

तृतीयकः-चि. ३-६७. दिनं हित्वा तृतीयकः ।

तृप्तिः-सू. २५-४०. सन्तोषः ।

तृप्तिघ्नः-सू. ४-८. एकादशो महाकषायः । तृप्तिः श्लेष्मविकारो येन तृप्तमिव आत्मानं मन्यते तद्घ्नः तृप्तिघ्नः ॥

तृष्णा-चि. ३-२६. पिपासा । (श. क.)

तृष्णानिग्रहणः-सू. ४-१४,२९. ऊनत्रिंशो महाकषायः ।

तृष्णोपशमनी चिकित्सा-वि. ५-२६. उदकवहानां दुष्टानां स्रोतसां चिकित्सा ।

तेजः-चि. १५-३. देहोष्मा शुक्रं वा ।

तोदनम्-सू. २४-४६. व्यथा । (श. क.)

तोदः-सू. १७-५५. सूचीवेधनवद्वेदनाविशेषः ।

तोषः-वि. ४-८. सुखनयनप्रसादादिः ।

त्रिकम्-सि. ३-४१. स्फिक्वस्कथ्नोः पृष्ठवंशास्थ्नोर्यः सन्धिस्तत्त्रिकं स्मृतम् । (वै. श.)

त्रिकोषाफलितम्-सू. ५-५०. त्रिभिः पर्वभिर्भिन्नैः समन्वितम् ।

त्रिगर्भा-चि. १-१ | १९. प्रथममेकं गृहं, तस्याभ्यन्तरे द्वितीयम् , एवं त्रिगर्भा त्रयो गर्भा अन्तराणि यस्यां सा; अन्तस्त्रिप्रकोष्ठा ।

त्रिपर्ययः-सू. ५-४८. त्रयः पर्ययाः आपानाः यस्मिन्।

त्रिप्रकोपणाः-वि. १७-४. असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगपरिणामप्रज्ञापराधकारणकाः ।

त्रिलिङ्गः-चि. ४-१३. सान्निपातिकः ।

त्रिसूत्रम्-सू. १-२४. त्रीणि हेत्वादीनि सूत्र्यन्ते यस्मिन् येन वा इति ।

त्रिस्कन्धम्-सू. १-२५. त्रयः हेत्वादयः स्कन्धरूपायस्य सः-स्कन्धश्च स्थूलावयवः प्रविभागो वा ।

त्रिस्नेहः-सि. ३-३६. सर्पिस्तैलवसात्मकः ।

त्वक्-इ. ७-३१. स्पर्शग्राहि इन्द्रियम् ।

त्वक्सारः-वि. ८-१०३. विशुद्धतरा त्वक् ।

त्वच्यः-सू. ५-८७. त्वचे हितः ।

दधिमण्डः–क. ८–१०. दध्न उपर्यच्छो भागः।

दधिमस्तु–नि. ११–३२. उक्तं दधि द्विगुणवारियुतं तु मस्तु। (वै. श.)

दधिसरः–चि. ५–६८. दधिसन्तानिका; दध्यग्रभागः। (वै. श.)

दध्यम्लम्–चि. २४–१६१. दध्ना अम्लीकृतम्।

दध्युत्तरम्–चि. १७–७४. दधिसरः।

दन्तपवनम्–सू. ५–७२. दन्तधावनार्थं काष्ठम्।

दन्तहर्षः–नि. १–२१. शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहा द्विजाः। पित्तमारुतकोपेन दन्तहर्षः स नामतः॥ (वै. श.)

दरः–सू. १७–३१. दरदरिका।

दशनच्छदौ–इ. ११–२०. ओष्ठौ।

दर्शनम्–इ. ४–८. चक्षुर्गोचरता।

दहनम्–नि. ९–७८. अग्निना दाहः।

दारुणः–सू. १२–४. शोषणत्वात् काठिन्यकरः।

दारणम्–सू. ११–५५. व्रणविदारणद्रव्यम्। (वै. श.)

दाहः–वि. ८–३६. दह्यत इव वेदनाविशेषः।

दाहः–चि. ५–६३. दाहकर्म।

दाहप्रशमनः–सू. ४–८. एकचत्वारिंशो महाकषायः।

दिवास्वप्नः–सू. ६–२३. दिवास्वापः।

दिव्यमुदकम्–सू. २७–१९८. आन्तरिक्षं जलम्।

दीपनः–सि. ३–३८. जठराग्निदीपनः। पचेन्नामं वह्निकृद् यद् दीपनं तद् यथा मिसिः। (व. द.)

दीपनीयम्–चि. २८–८७. अग्निदीपनम्।

दुश्छायः–इ. ११–३. विकृतच्छायः।

दुर्गन्धम्–सू. २७–२१५. पूतिगन्धयुक्तम्।

दुर्जरम्–सू. २७–१३८. दुष्पचम्।

दुर्दिनम्–सि. २–२०. मेघाच्छन्नदिनम्।

दुर्बलः–इ. ९–१५. निर्बलः।

दुर्मनाः–सू. १७–७३; इ. ११–३. मनोबलविहीनः

दुर्विपाकः–सू. २५–४०. दोषवान् विपाकः।

दूतः–इ. १–३. वैद्याह्वानार्थमागतो मनुष्यः।

दूयनम्–सू. १७–५८. मुखकण्ठादिषु वेदनायुक्तो दाहः।

दूषीविषम्–सू. २१–४५; चि. २३–३१, जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा। स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषीविषतामुपैति (सु. क. २–२५३.)

दूष्याः–सू. १९–४–९; नि. ४–४. रक्तादयो धातवः।

दृढाग्निः–चि. ३–१७२. दीप्ताग्निः।

दृष्टिः–इ. ४–२५. उपलब्धिः, तया दृष्ट्या दृष्टिशक्तिरुपचारादुच्यते।

देशः–सू. २६–९. भूमिः।

देशः–वि. १–३. आतुरः।

देशः–सू. १–६२. भूमिरातुरश्च।

देशानुपातिनी प्रकृतिः–इ. १–५. यथा अन्तर्वेदिवासिनः शुचयो भवन्ति।

देहः–सू. २५–३२ शरीरम्।

देहप्रकृतिः–सू. ७–४०. दोषानुशयिता ह्येषां देहप्रकृतिरुच्यते। एतेनैतेषां वातलादीनां मुख्यं स्वास्थ्यं नास्ति, किंतर्हि उपचारस्वस्था एते इति दर्शयति।

देहव्यायामः–सू. ७–३१. शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धनी। देहव्यायामसंख्याता मात्रया तां समाचरेत्॥

दैन्यम्–वि. ४–८. दीनभावः।

दैवम्–शा. १–११६, २–४४; वि. ३–३०; वि. २–१ | १०. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म यत् पौर्वदेहिकम्; दैवं पुरा यत्कृतमुच्यते तत्; दैवमात्मकृतं विद्यात्कर्म यत्पौर्वदेहिकम्; प्राक्तनकर्म।

दैवव्यपाश्रयम्-सू. १-५८, ११-५४. दैवमदृष्टं तदाश्रित्य यद् व्याधिप्रतीकारं करोति तद्दैवव्यपाश्रयं बलिमङ्गलादि; मन्त्रौषधिमणिमङ्गलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि ।

दोषाः-सू. २७-६८; वि. ४-२२. वातपित्तकफाः ।

दोषावसेचनम्-वि. ३-४३. दोषाणामवसेचनं निर्हरणम् ।

दौर्ग्राह्यम्-सि. ५-७. दुर्ग्रहता ।

दौर्बल्यम्-चि. ८-३३. अल्पबलत्वम् । (श. क.)

द्रवः-सि. ३-२४. क्वाथः ।

द्रव्यम्-सू. १-२८, ५१, ६४. २६-१०. यत्र कर्मगुणा आश्रिताः यच्च तेषां समवायि कारणं तद्द्रव्यम् ; खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः; आधारकारणम् ; यत् आहारौषधोपयुक्तम् ।

द्रव्याणाम् अधिकरणम्-सू. २६-१३. द्रव्याणि यत्र कुर्वन्ति तत् तेषामधिकरणम् ।

द्रव्याणाम् उपायः-सू. २६-१३. द्रव्याणि यथा कुर्वन्ति स तेषामुपायः ।

द्रव्याणाम् कर्म-सू. २६-१३. द्रव्याणि यत् कुर्वन्ति तत्तेषां कर्म ।

द्रव्याणाम् कालः-सू. २६-१३. द्रव्याणि यदा कुर्वन्ति स तेषां कालः ।

द्रव्याणाम् फलम्-सू. २६-१३. द्रव्याणि यत् साधयन्ति तत्तेषां फलम् ।

द्रव्याणाम् वीर्यम्-सू. २६-१३, ६५. द्रव्याणि येन कुर्वन्ति तत्तेषां वीर्यम् ।

द्रोणः-क. १२-९६. कंसश्चतुर्गुणो द्रोणश्चार्मणं नल्वणं च तत् । स एव कलशः ख्यातो घटमुन्मानमेव च ॥

द्वन्द्वम्-सू. १४-६६. परस्परं विरुद्धं युग्मम् ।

द्विजः-इ. ८-१३. दन्तः ।

द्वियोनिः-सू. २५-३६. द्विप्रभवः ।

द्विरेताः-शा. २-१७. स्त्रीपुंचिह्नः पुमान् । (वै. श.)

द्वैहृदय्यम्-शा. ४-१५. तस्य यत्कालमेवेन्द्रियाणि संतिष्ठन्ते, तत्कालमेव चेतसि वेदनानिर्बन्धं प्राप्नोति; तस्मात्तदाप्रभृति गर्भः स्पन्दते, प्रार्थयते च, जन्मान्तरानुभूतं यत् किंचित, तद्‌द्वैहृदय्यमाचक्षते वृद्धाः ।

धनैषणा-सू. ११-५. द्वितीयैषणा (वै. श.) ।

धन्वः-सि. १-२१. मरुदेशः ।

धमन्यः-सू. ३०-१२. ध्मानात् पूरणाद् बाह्येन रसादिना धमन्यः; ध्मानात् धमन्यः ।

धर्मः-सू. १-१५. धारणाद्धर्मः, स चात्मसमवेतः कार्यदर्शनानुमेयः ।

धातवः-चि. १५-१५. देहधारणाद् धातवः ।

धातवः-सू. २२-४१. दोषाः "दोषा अपि धातुशब्दं लभन्ते" इति वचनात् ।

धातुपाकः-सू. १८-३. धातुषु धात्वग्निकृतो रसपाकः ।

धातुवैषम्यम्-वि. ८-८४. विषमतां गता धातवः ।

धातुव्यूहनम्-शा. ४-१२. धातुरचना; धातुवहनं च ।

धातुसाम्यम्-सू. २१-४२. विकारोपशमरूपकार्यम् । (वै. श.)

धातुस्नेहपरम्परा-चि. १५-२०. धातूनां रसादिसप्तानां तत्स्नेहानां धातुप्रसादरूपाणां परम्पराक्रमः ।

धानाः-चि. २-२-१२. धानाकारा भक्ष्याः ।

धानाः-चि. ६-२३. भृष्टयवाः ।

धान्वन्तरीयाः–चि. ५–४४. धन्वन्तरितन्त्राध्यायिनः शल्यविदः ।

धान्याम्लम्–सू. १५–७; क. १–१२. काञ्जिकम् ।

धारणम्–चि. २३–५८. धारणशब्देन शरीरे धारणं ब्रूते, धारणं चौषधशब्देनोपक्रमेषु प्रविशति ।

धारा–सि. ३–२०. जलादिद्रवद्रव्याणां पतनम् ।

धारि–सू. १–४२ धारयति शरीरं पूतितां गन्तुं न ददातीति धारि ।

धारि–सू. ३०–६ शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः शरीरधारणाद्धारीत्युच्यते ।

धारिलोहितम्–वि. ४–७. जीवशोणितम् ।

धारोष्णम्–चि. २९–८२. दोहकालधारापतितमग्नियोगाद्विना उष्णीभूतम् ।

धीः–सू. २५–४० बुद्धिः

धीविभ्रमः–चि. ९–६. बुद्धेरयथार्थदर्शित्वम् ।

धुक्षणम्–वि. ६–२१. प्रबोधकम् ; प्रोद्दीपकम् ।

धूपः–चि. २५–१०८. धूपयति स्वगन्धेन प्रीणयित्वा दीप्यतीति । (श. क.)

धूपनम्–सू. १७–५८. धूमनिर्गमनमिव ज्ञानम् ।

धूमः–सू. ५–३९, ४०. पानार्थः । (वै. श.)

धूमनेत्रम्–सू. ५–२४. धूमपानार्थं नेत्रम् , नालीविशेषः यं द्वारीकृत्य धूमः पीयते ।

धूमपानम्–सू. ५–३१. धूमसेवा । (वै. श.)

धूमवर्तिः–सू. ५–१०६. धूमपानार्थं यवाकृतिनिर्मिता औषधवर्तिः ।

धृतिः–सू. २५–४०. धैर्यम् ; अलौल्यम् ; धृतिर्हि नियमात्मिका अहितेभ्यो मनोनियमनमिति यावत्

धैर्यम्–वि. ४–८. धैर्यं विपद्यपि मनसोऽदैन्यम् ।

ध्मापनम्–सि. ९–८९ प्रधमनम् , 'चूर्णस्याध्मापनं तद्धि देहस्रोतोविशोधनम्' इति वचनाद् ध्मापनं शिरोविरेचनप्रयोजनकमेवेति दर्शयति ।

ध्यानम् इ. ५–१८. चिन्तनम् ।

नकुलान्धः–इ. ३–६. नकुलान्धस्तु रूपाणि दिवा शुक्लानि पश्यति ।

नखः–इ. १–१२. नखरः ।

नयनम्–इ. १–१२. चक्षुः ।

नरनारिषण्डौ–शा. २–१७. नरषण्डो नारिषण्डश्चेति नरनारिषण्डौ एतावबीजौ ज्ञेयौ यदुक्तं सुश्रुते 'अशुक्रस्त्वेव षण्डकः'

नस्तः–सू. १३–२५. नासिकातः ।

नस्तः कर्म–सि. ९–८. नासिकारन्ध्रेणौषधदानम् ; प्रतिमर्शावपीडनस्य प्रधमनशिरोविरेचनानि नावनश्चावपीडश्च च्यवनं धूम एव च । प्रतिमर्शश्च विज्ञेयं नस्तःकर्म च पञ्चधा ॥

नस्तः प्रच्छर्दनम्–सू. १–८५. शिरोविरेचनम् ।

नस्यम्–सि. ९–८७. नस्यं तत् कथ्यते धीरैर्नासाग्राह्यं यदौषधम् । प्रतिमर्शोऽवपीडश्च नस्यं प्रधमनं तथा । शिरोविरेचनं चेति नस्तःकर्म च पञ्चधा ॥

नाडीस्वेदः– चि. ३०–४८. प्रकारविशेषनिर्मितया नाड्या दीयमानो बाष्पः (व. द.)

नाभिः–इ. ३–५. उदरावर्तः (श. क.)

नाड्यः–चि. २२–६. नलिकाः; स्रोतांसि ।

नावनम्–सू. ५–३५. नस्यम् ।

नासापुटम्–सि. ९–१००. अन्यतरं नासिकारन्ध्रम् ।

नासिका–इ. ३–५. नासा ।

नासिकावंशः–इ. ८–१०. नासिकापृष्ठे उन्नतमस्थि ।

नास्तिकः–सू. ११–१४,१५. नास्ति परलोक इत्यादि यो मनुते सः ।

निगदम्–चि. १२–१४५. पुरातनम् ।

निगदम्–चि. २४–१७६. निर्दोषम्।

निगदम्–चि. २६–९८. निर्मलम्

निगमनम्–वि. ८–२७. तस्मात्तथेतिरूपं निर्णयात्मकं वचनम्।

निग्रहः–चि. ५–१९. शुक्रवेगरोधनम्।

निचयात्मकः– चि. ५–१४. सान्निपातिकः।

निजः–सू. ११–४५. चि. २५–५. शारीरदोषसमुत्थः।

निदर्शनम्–वि. १२–४४. मूर्खविदुषां बुद्धिसाम्यविषयो दृष्टान्तः।

निदानम्–सू. ३०–३३. निदानस्थानम्।

निदानम्–नि. १–१,३. निदानं कारणमिहोच्यते, तच्चेह व्याधिजनकं व्याधिबोधकं च सामान्येनोच्यते। तत्र व्याधिजनकं निदानं हेतुः, व्याधिबोधकं च कारणं निदानपूर्वरूपरूपोपशयसंप्राप्तिरूपम्। तत्र हेतुरूपं निदानं जनकं च भवति, व्याधिबोधकं च भवति। किंवा निदानशब्दो जनककारणवचन एव। इह खलु हेतुर्निमित्तमायतनं कर्ता कारणं प्रत्ययः समुत्थानं निदानमित्यनर्थान्तरम्॥

निद्रा–सू. २१–५८, ५९. स्वापः।

निमित्तम्–सू. १०–१४. हेतुः।

निमित्तविपरीतम्–वि. २–१३. हेतुप्रत्यनीकम्।

निमित्तानुरूपा–इ. १–६. निमित्तार्थानुकारिणी, निमित्तस्य योऽर्थः कार्यजननरूपः, कार्यबोधनरूपो वा तमनुकरोतीति निमित्तार्थानुकारिणी।

निमिषः–इ. ३–६. चक्षुर्निमीलनम्।

निमेषः–चि. २८–९. निमेषणीः शिरा वायुः प्रविष्टो वर्त्मसंश्रयाः। चलयेदति वर्त्मानि निमेषः स गदो मतः॥ (सु. उ. ३.)

नियतात्मा–चि. १–४ | १०. जितेन्द्रियः।

नियोगः–सि. १२–४४. अवश्यानुष्ठेयतया विधानम्।

निरत्ययत्वम्–सि. १०–५. दोष (उपद्रव) रहितत्वम्।

निरन्नता–चि. ५–९. उपवासः। (वै. श.)

निरामः–चि. ३–१६८. पक्वः।

निरूहः–क. १२–५३. आस्थापनम्।

निरोधः–सू. ३०–२५. मरणम्।

निर्णयः–सि. १२–४२. विचारितस्यार्थस्य व्यवस्थापनम्।

निर्देशः–सि. १२–४२. संक्षेपोक्तस्य विवरणम्।

निर्यासः–सू. २५–४० वृक्षात्स्रुतो रसः।

निर्यूहः–चि. २१–१२३. क्वाथः; रसः। (श. क.)

निर्वचनम्– सि. १२–४४. पण्डितबुद्धिगम्यो दृष्टान्तः।

निर्वलीकम्–सि. ३–१६. वलीरहितम्।

निर्वापणम्–सू. १८–७. दाहप्रशमनम्, पाकाभिमुखिनो व्रणशोथस्य दाहतोदप्रशमनम्। (व. द.)

निर्वृताः–चि. २९–१३९. निर्वापिताः।

निर्वृत्तिः–सू. १–६४. अभिव्यक्तिः।

निष्कुलम्–चि. ११–६६. निरस्थि।

निष्काथः–चि. २६–१४०. क्वाथः।

निष्ठीविका–सू. ८–२१. निष्ठीवनम्।

निष्पीडनम्–चि. २३–३५. पीडयित्वा रसस्य रक्तस्य वा निर्हरणम्।

निष्प्रत्यनीकः–चि. ३–५६. विरोधितारहितः; तुल्य इत्यभिधायापि यत् 'निष्प्रत्यनीकः' इति करोति, तेन कालाद्यनुगुणतामेव कालादितुल्यतां स्फोटयति, कालादीनां चासमानानामपि बलवता दोषेण परिगृहीतानां प्रतीपार्थकरणासामर्थ्येनानुगुणतैव भवति।

निःश्वासः–सू. ७–२४. मुखनासाभ्यां निर्गतः श्वासः।

निःसंज्ञः–इ ९–४. संज्ञारहितः।

निस्तोदः–चि. २१–३०. अतिव्यथा। (वै. श.)

नीलः–चि. ४–२०. नीलवर्णः।

नेत्रनाड्यः–सि. २–२१. नेत्रगताः रसरक्तादिवाहिन्यः।

नेत्रम् (बस्तिनेत्रम्)–सि. १–५५. बस्तिद्रव्यप्रवेशार्थं प्रयुज्यमानो नलिकाविशेषः।

नेत्राञ्जनम्–चि. ३–३०७. चक्षुर्म्रक्षणम्।

न्युब्जा–शा. ८–६. अधोमुखी।

पक्ता–सू. ६–९. जठराग्निः।

पक्तिः–सू. १२–११. पचनम्, पाचकस्याग्नेरविकृतं कर्म।

पक्तिः–चि. ३–१३०. पक्तिहेतुतया जाठराग्निं ब्रूते।

पक्तिस्थानम्–चि. ३–२७५. अग्न्यधिष्ठानम्, ग्रहणी।

पक्वरसः–चि. ७–४४. क्वाथः, क्वथितेनेक्षुरसेन कृतः सीधुः वा।

पक्वाशयः–शा. ३–६. नाभेरधोभागः। (वै. श.)

पक्ष्म–इ. ३–६. अक्षिलोम। (श. क.)

पङ्कः–इ. १२–५५. दन्तपङ्कः।

पङ्गुः–सि. १–३२ सक्थिद्वयघातोपलक्षितः वातव्याधिविशेषः।

पचनम्–वि. १–१७. पाकः।

पञ्चकर्म–सू. २–१५. पञ्चकर्म वमनविरेचनास्थापनानुवासनशिरोविरेचनरूपम्।

पञ्चात्मा–चि. १४–२४. प्राणापानव्यानोदानसमानरूपः।

पथ्यम्–सू. २५–४५. पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्। पथः शरीरमार्गात्स्रोतोरूपादनपेतम्; अपेतम् अपकारकम्, अनपेतम् अनपकारकम् इत्यर्थः। पथोग्रहणेन पथोवाह्या दोषा धातवश्च तथा पथोनिर्वर्तका धातवो गृह्यन्ते तेन कृत्स्नमेव शरीरं गृहीतं भवति ततश्च शरीरानुपघाति पथ्यमिति भवति। किंवा स्वस्थस्वास्थ्य रक्षणमातुरव्याधिपरिमोक्षश्चेति पन्थाः तस्मादनपेतं पथ्यम्। एवमपि मनोऽनुपघातित्वं न लभ्यते इत्याह– यच्चोक्तं मनसः प्रियमिति। तेन मनसोऽतिप्रीत्याभिलषितं तेन मनसो हितमिति प्रियार्थः तेन प्रशमज्ञानातीक्ष्णत्वादयो गृह्यन्ते। एतेन "मनःशरीरानुपघाति पथ्यम्" इति पथ्यलक्षणमनपवादमुक्तं भवति।

पथ्यम्–सि. १–६०. हितम्

पदार्थः– सि. १२–४१. पदस्य पदयोः पदानां वार्थः।

परः–शा. ४–७. सारः, किंवा परकालोत्पन्नः परः; शुक्रं हि सर्वधातुभ्यः परमुत्पद्यते।

परमाणुः–शा. ७–१७. रजसस्त्रिंशत्तमो भागः। (वै. श.)

परापरत्वम्–सू. २६–२९. देशकालवयोमानपाकवीर्यरसादिषु परापरत्वे। परत्वमपरत्वं च तत्र परत्वं प्रधानत्वम् अपरत्वम् अप्रधानत्वं किंवा वैशेषिकोक्ते देशकालाद्यपेक्षया विप्रकृष्टसन्निकृष्टवर्तित्वे परापरत्वे ज्ञेये।

परासुः–इ. ३–५. गतप्राणः।

परिकर्तिका–चि. १४–८. कर्तनवत् पीडा।

परिकीर्णाः–इ. ३–६. मललिप्ताः।

परिग्रहः–वि. १–२१ | ४. पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्याणाम्। सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते।

परिचारकः–सू. १०–४. उपस्थाता।

परिणतम्–चि. २४–९०. चिरकालस्थितम्।

परिणामः–सू. २५–४०. परिपाकः। (वै. श.)

परिणामः–सू. ११–४२. कालः।

परिणाहस्रोताः–सू. १४–४३ परिणाहेन वेष्टनेन स्रोतः रन्ध्रम् यस्याः सा परिणाहस्रोताः।

परितर्पणम्–चि. ६–१७. सन्तर्पणम्।

परिदग्धा–चि. ३–१०५. दग्धवत् कृष्णवर्णा।

परिपिण्डितत्वम्-चि. ५-७. लतासमूहादिवत् संघातेनावस्थितत्वम् ।

परिबर्हः-शा. ८-१२. शयनासनपुष्पादिपरिच्छदः ।

परिबृंहणम्-सि. ३-२७. पुष्टिः, अभिवृद्धिः ।

परिमर्दनम्-चि. २१-१३५. मर्दनम् ।

परिमाणम्-सू. २६-३४. मानम् ।

परिमार्जनम्-सू. २९-७. शोधनम् , शुद्धिकरणम् ।

परिम्लानम्-चि. ५-३८. क्षीणकायम् ।

परिसर्पः-चि. २१-११. विसर्पस्य नामान्तरम्, परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात् ।

परिस्रावाः-चि. २५-१८. व्रणास्रावाः ।

परिषेकः-सू. २०-१३. परिषेचनम् ।

परिषेचनम्-सि. १२-१५५. व्रणवेदनोपशान्त्यर्थमुष्णक्वाथसेचनम् । (व. द.)

परिहारः-सू. १३-४०. परिहरणम्, त्यागः ।

परीक्षकः-सू. २८-३७. श्रुतं बुद्धिः स्मृतिर्दाक्ष्यं धृतिर्हितनिषेवणम् । वाग् विशुद्धिः शमो धैर्यमाश्रयन्ति परीक्षकम् ॥ एवंगुणविशिष्टः शास्त्रानुसारेण हितसमालोचकः परीक्षकः ।

परीक्षा-चि. २५-१७. समालोचना ।

पर्योगः-सू. १५-७. कटाहः ।

पर्व-शा. ७-४. अवयवसन्धिः ।

पर्वभेदः-सू. २२-३६. सन्धिभङ्गरोगः, तथा सन्धिवेदना, यथा चालने भङ्गाशङ्का जायते (वै. श.)

पर्शुका- इ. ३-५. पार्श्वास्थि (श. क.)

परुषम्-सू. १८-७११, कठिनम् ।

पलम्-क. १२-९२-चतुष्कर्षमितं मानम्, मुष्टिः, प्रकुञ्चः, चतुर्थिका, बिल्वम्, षोडशिका, आम्रम् ।

पवनः-चि. २६-३६. वायुः ।

पवनेन्द्रियः-शा. २-१७. शुक्राशयं गर्भगतस्य हत्वा करोति वायुः पवनेन्द्रियत्वम् ।

पाकः-सू. २६-११. पचनम् ।

पाक्यम्-चि. ३-१९७ शृतम् ।

पाक्यक्षारः-चि. २१-१२२ पाकेन सुश्रुतागुक्तेन विधानेन कृतः क्षारः पाक्यक्षारः ।

पाचनम्-चि. १५-७५. यवाग्वादि, पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद् यत् तद्धि पाचनम् (शा. सं.), पाचनं दोषामयोः शोथस्य वा । (व. द.)

पाचनीयम्-सू. १५-७. पाचनम् ।

पाणिः-इ. १-२२. हस्तः ।

पाणितलम्-चि. १५-१७६. क. १२-२४. कर्षः ।

पाणिस्वेदः-चि. २६-१३७. हस्तेन कृतः स्वेदः ।

पाटनम्-चि. २५-४९. छेदनम् । (वै. श.)

पात्रम्-चि. ५-१७३. आढकः ।

पादः-सू. ९-२७. भिषगादीनामेकतमः ।

पादः-चि. १-४ | ६५ चतुर्थांशः ।

पादचर्मणी-इ. ५-३४. पादयोश्चर्मणी ।

पादाः-इ. ११-२७. भिषगादयः ।

पानकः-क. १-२६. पानद्रव्यविशेषः (श. क.)

पानम्-सू. १-८७. द्रवद्रव्यगलाधःकरणव्यापारः (वै. श.)

पाप्मा-चि. ३-१३. ज्वरः पापनिर्वर्त्यत्वात् ।

पामा-चि. ७-१३. सास्रावकण्डूपरिदाहकाभिः पामाऽणुकाभिः पिडकाभिरूह्या (सु. नि. ५-१४.) ।

पायुः-सि. ७-५८. गुदम् ।

पारिषद्यः-सू. १५-७. परिषदि शस्तः ।

पारुष्यम्-चि. ९-१०. खरत्वम्।

पार्थिवः-सू. १-६८. पृथिवीविकारः।

पार्ष्णिः-सि. ३-२९. गुल्फस्याधोभागः। (वै. श.)

पार्श्वम्-इ. ३-५. कक्षाधोभागः। (श. क.)

पार्श्वशूलम्-चि. ८-१७. पार्श्वदेशस्थं शूलम्। (वै. श.)

पाषण्डाः-चि. २३-१६०. कापालिकादयः

पिचुः-चि. ५-७४ कर्षः।

पिचुः-चि. ३०-६१. कार्पासखण्डः औषधाप्लावितः।

पिचुक्रिया-चि. ३०-६१. पिचुप्रणयनम्।

पिचुधारणम्-चि. १९-४६. भेषजसाधितकाथस्नेहाप्लुतस्य तूलकस्य वस्त्रखण्डस्य वा योनौ स्थापनम्। (व. द.)

पिच्छनम्-सू. १८-४. अत्यर्थपीडनम्।

पिच्छा-सू. १८-१४. पिच्छिलो गाढश्च स्रावः।

पिच्छाबस्तिः-सि. ५-१६. अल्पया मात्रया निरूहाख्यो बस्तिः।

पिच्छिलः-सू. १-६१. विजिल्वः। (व. द.)

पिडका-चि. ६-५८. पिटका, व्रणविशेषः (वै. श.)

पिण्डः-चि. २१-१०१. वर्तुलाकृतिः। (व. द.)

पिण्डस्वेदः-सू. १४-२५. पिण्डरूपः स्वेदः।

पिण्डिका-इ. ६-१३. सि. ३-२९. जङ्घामांसपिण्डिका।

पिण्डितम्-चि. ५-४३. पिण्डरूपम्।

पित्तम्-सू. १२-११. शरीरस्थधातुविशेषः। (श. क.)

पित्तम्-सि. ६-७९. शोणितगतं पित्तं रक्तपित्तमिति यावत्।

पित्तस्थानम्-चि. २१-४५. मध्यशरीरम्।

पित्तासृक्-चि. ४-२९. रक्तपित्तम्।

पिष्टम्-चि. २१-८१. पिष्टिः।

पिष्टस्वेदनम्-चि.१-२। १४. अधश्छिद्रयुक्तो घटः।

पिष्टान्नम्-वि. ७-१२. पिष्टेन कृतमन्नम्।

पिहितः-चि. ३०-२७. अवरुद्धः।

पीठसर्पी-सि. २-२१. पङ्गुः।

पीडनम्-सू. २०-४. पीडा।

पीडा-सि. ९-३. रुजा।

पीनसः-चि. ८-६५. नासिकारोगविशेषः।

पुटपाकः-सि. ९-११५. पुटपाको हि शालाक्ये स्नेहन-लेखन-प्रसादनभेदात् त्रिविध उक्तः।

पुण्डरीकम्-चि. ७-१३. कुष्ठभेदः।

पुनरागतः-चि. ३-३३५. पुनरावृत्तः।

पुनरावर्तकः-चि. ३-३४३. पुनरावृत्तो ज्वरः।

पुनर्भवः-सू. ११-६. जन्मान्तरम्।

पुराणज्वरः-चि. ३-१७२. जीर्णज्वरः।

पुरीषजननः-सू. २५-४० पुरीषोत्पादकः।

पुरीषम्-सू. ७-३. विष्ठा।

पुरीषवाहीनि स्रोतांसि-वि. ५-८. मलवहनाड्यः।

पुरीषविरजनीयः-सू. ४-८ पुरीषस्य विरजनं दोषसम्बन्धनिरासं करोतीति (व. द.)

पुरीषसंग्रहणीयः-सू. ४-१५। ३१. पुरीषस्य संग्रहं रोधं करोतीति।

पुरीषस्रंसनम्-चि. ८-८८. द्रवपुरीषनिर्गतिः।

पुरीषाधानम्-शा. ३-६. पक्वाशयः।

पुरुषः-शा. १-३९. आत्मा।

पुरुषः-शा. ५-४. षड्धातवः समुदिताः 'पुरुष' इति शब्दं लभन्ते।

पुरुषः (विषसंज्ञितः)–चि. २३–४. स पुरुषः विषमुच्यते विषादनाद्धेतोः।

पुरुषकारः–वि. ३–३०. इह जन्मनि कृतं कर्म सामान्येनोच्यते, स्मृतः पुरुषकारस्तु क्रियते यदिहापरम्।

पुष्टिः–चि. २४–९. मांसादीनामुपचयः।

पुष्टिकरः–सू. २५–४०. मांसाद्युपचयकरः।

पूपलिका–वि. ७–२१. चापडिकेति ख्याता।

पूपाः–सू. २७–२६७. पिष्टिकाः।

पुष्पनेत्रम्–सि. ९–५०. पुष्पनेत्रमित्युत्तरबस्तिनेत्रस्य संज्ञा।

पुष्पम्–इ. १–२१. नखदन्तेषु अरिष्टलक्षणम्।

पुष्पम्–शा. ८–५. आर्तवदर्शनम्।

पुंसवनम्–शा. ८–१९. पुत्रजनकं विधानम्।

पुंस्त्वम्–सू. २५–४०. शुक्रम्।

पुंस्त्वोपघाति–सू. २५–४०. शुक्रक्षयकरम्। (व. द.)

पूति–वि. ७–१२. शटितम्।

पूतिः–वि. ८–९७. दुर्गन्धः।

पूतिनस्यम्–चि. ४–२६. नासाया दुर्गन्धता।

पूपवर्तिः–चि. २४–१२६. वर्त्याकारा पूपलिका।

पूर्वपक्षः–वि. १२–४३. प्रतिज्ञातार्थसंदूषकं वाक्यम्।

पूर्वरूपम्–नि. १–६. चि. २८–१९. अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम्। उत्पित्सुरामयो दोषो विशेषेणानधिष्ठितः। लिङ्गमव्यक्तमल्पत्वाद् व्याधीनां तद्यथायथम्॥ (ना. नि.)

पृथक्त्वम्–सू. २६–३३. 'इदं द्रव्यं पटलक्षणं घटात् पृथक्' इत्यादिका बुद्धिर्यतो भवति, तत् पृथक्त्वं भवति।

पृथुत्वम्–इ. ८–१०. महत्त्वम्। (श. क.)

पृष्ठेषिका–इ. ३–५. पृष्ठवंशः।

पृष्ठम्–इ. ८–२२. शरीराधोभागः।

पेयम्–सू. २७–२०४. पानम्।

पेयम्–इ. ९–११. जलम्। (श. क.)

पेया–क. २–५. अल्पसिक्थपेयद्रव्यम्। (शा. क.)

पेयादिक्रमः–सि. ६–२३. संसर्जनक्रमः।

पेयामण्डः–चि. ८–१२७. पेयाया उपरि अच्छो भागः।

पेशी–चि. २४–१८३. फलगतं सस्यं।

पेष्याः–सि. ३–४०. कल्कीकृताः।

पैत्तिकः–चि. ३–१४४. पित्तजो व्याधिः।

पौत्तिकम्–सू. २७–२४३. पिङ्गला मक्षिका महत्यः पुत्तिकाः तद्भवं मधु पौत्तिकम्।

पौरुषम्–सू. ३०–२४. उत्कृष्टं कर्म।

पौरुषम्–चि. २४–६१. शुक्रम्।

पौर्वदेहिकम्–सू. ११–३१. पूर्वदेहकृतम्।

पौष्करम्–सू. २६–८४. पुष्करपत्ररूपं शाकम्।

पौष्टिकी–चि. १–१|३०. बृंहणी।

प्रकाशः–सू. २६–११. दीप्तिः।

प्रकुञ्चः–क. १२–९२. पलम्।

प्रकृतिः–सू. ९–४. आरोग्यम्।

प्रकृतिः–सू. २१–१२. देहजनकं बीजम्।

प्रकृतिः–वि. १–३. २१–१. तत्र प्रकृतिरुच्यते स्वभावो यः। स पुनराहारौषधद्रव्याणां स्वाभाविको गुर्वादिगुणयोगः।

प्रकृतिः–सू. २१–५७. स्वभावः। यथा स्वभावादेव केचिदनिद्रा भवन्ति।

प्रकृतिः इ. ६–२४. स्वभावः सुशीलत्वादिरूपः किंवा जन्मप्रतिबद्धा श्लेष्मप्रकृत्यादिरूपा।

प्रकृतिः–चि. ३–१२. स्वभावः, तथा यत्कारणमयं कार्यं भवति तदुच्यते।

प्रकृतिः–(तृतीया) शा. २–२५. नपुंसकः।

प्रकृति-स्थापनम्–चि. १–१३. चिकित्सितम्।

प्रकोपः–सू. १२–५. वातादीनां सङ्क्षोभहेतुः।(वै.श.)

प्रकोपणम्–सू. १२–३. प्रकोपकारकम्

प्रक्लिन्नम्–चि. २१–३०. गलितं, शटितम्।

प्रक्लेदि–वि. १–१६. क्लेदयुक्तम्।

प्रक्षालनम् (एतत्) चि. २१–९८. एतैः प्रक्षालनार्थः क्वाथः कर्तव्यः।

प्रक्षेपः–सू. ७–३७. हितस्य सेवनम्।

प्रघर्षः–सू. ३–२९. शरीरोद्वर्तनम्।

प्रघर्षणम्–सि. १२–१५५. प्रघर्षः।

प्रच्छनम्–चि. ७–४०. ऋज्वसंकीर्णं सूक्ष्मं सममनवगाढमनुत्तानमाशु च शस्त्रं पातयेन्मर्मसिरास्नायुसन्धीनां चानुपघाति। (सु. सू. अ. १४–२६)

प्रच्छर्दनम्–सू. ७–१५. वमनम्।

प्रच्छादनम्–चि. २५–९५. प्रावरणम् (श. क.)

प्रच्छिन्नम्–इ. १०–१२. प्रच्छिन्नमिव प्रच्छिन्नं, छेदनाकारवेदनायुक्तत्वात्।

प्रजननम्–सू. २८–४. लिङ्गम्।

प्रजास्थापनः–सू. ४–१८ | ४८. एकोनपञ्चाशत्तमो महाकषायः; प्रजोपघातकं दोषं हत्वा प्रजां स्थापयति (व. द.)

प्रजीर्णम्–शा. १–१११. विदग्धम्।

प्रज्ञापराधः–सू. ७–५२. बुद्धेः अपराधः, अज्ञानदुर्ज्ञाने।

प्रज्ञापराधः–शा. १–१०२, धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरुतेऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोषप्रकोपणम्॥ बुद्ध्या विषमविज्ञानं विषमं च प्रवर्तनम्। प्रज्ञापराधं जानीयान्मनसो गोचरं हि तत्॥

प्रज्ञाविपर्यासः–इ. ४–२६. प्रज्ञाविपर्यासैरिति शेषभूतासु प्रभावकृतः प्रज्ञाविपर्यासः।

प्रणाडी–सि. ९–१०३. नस्यदाननलिका।

प्रतापः–सू. १८–५. प्रभावः।

प्रतिकर्म–इ. १२–५८. चिकित्सितम्।

प्रतिकारयेत्–चि. २४–१०७. चिकित्सां कुर्यात्।

प्रतीघातः–चि. ३०–१६८. वेगनिरोधः।

प्रतिच्छाया–इ. १–३. देहच्छाया।

प्रतिपत्तिः–सू. ७–५५. उपदिष्टार्थस्य सम्यगवबोधः।

प्रतिपत्तिः–वि. ४–११. कर्मणां यथार्हतया अनुष्ठानम्।

प्रतिभा–सू. २७–३४९. प्रज्ञा।

प्रतिभानम्–वि. ८–१८. बुद्धिः।

प्रतिमर्शः–सि. ९–८९. नस्तःकर्म।

प्रतिरूपकाः सू. ११–५१. वैद्यसदृशाः।

प्रतिलोमानुलोमगाः–इ. ९–२० अधोमार्गोर्ध्वमार्गगताः।

प्रतिवादः– सू. २५–२७. प्रतिपक्षः।

प्रतिवापः–सि. १०–१७. कषाये चूर्णादिप्रक्षेपः। (वै. श.)

प्रतिविनीतम्–सू. १५–१७. आलोडितम्।

प्रतिषेधः–वि. ४–८. व्यावृत्तिः।

प्रतिसारणम्–चि. २३–३६. व्रणघर्षणम् (वै. श.)

प्रतुदाः–सि. १२–१८ | ४. प्रतुद्य बहुधाऽभिहत्य भक्षयन्ति इति।

प्रत्यक्षम्–सू. ११–२०. आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। व्यक्ता तदात्वे या बुद्धिः प्रत्यक्षं सा निरुच्यते॥ इह च प्रत्यक्षफलरूपापि बुद्धिः प्रत्यक्षशब्देनाभिधीयते, तथैव लोकव्यवहारात्; परमार्थतस्तु यतो भवतीन्द्रियादेरीदृशी बुद्धिस्तत् प्रत्यक्षम्।

प्रत्यक्षम्–वि. ४–४. यदात्मना इन्द्रियैः चक्षुरादिभिः अव्यवधानेन गृह्यते रूपादि तत्प्रत्यक्षमिति बाह्यप्रत्यक्षं गृह्णाति, मनसाऽव्यवधानेन यदुपलभ्यते सुखादि तच्च मानसं प्रत्यक्षं गृह्णाति।

प्रत्यनीकम्–सि. १–३५. विपरीतम् ।

प्रत्ययः–सू. १–६४. निमित्तकारणम् ।

प्रत्याख्येयः–सू. १०–१९. प्रत्याख्यातुं योग्यः असाध्यभेदः असाध्यत्वकथनपुरःसरं चिकित्स्यः ।

प्रत्यात्मनियता–इ. १–५. प्रतिपुरुषभिन्ना ।

प्रदेशः–सि. १२–४२. यद् बहुत्वादर्थस्य कार्त्स्न्येनाभिधातुमशक्यमेकदेशेनाभिधीयते ।

प्रदेशिनी–चि. २८–१०३. अङ्गुष्ठानन्तराऽङ्गुली ।

प्रदेहः–सू. ११–५५. लेपस्य भेदः प्रदेहस्तूष्णः शीतो वा बहलोऽबहुरविशोषी च । (सु. सू. १८–६.)

प्रदोषम्–शा. ४–३०. प्रदोष इत्यत्र प्रशब्देन दुष्टिप्रकर्षं प्रकृष्टवन्ध्यतारूपकार्यजनकं दर्शयति ।

प्रधमनम्–सि. ९–९६. नस्यविशेषः (वै. श.)

प्रध्मापनम्–सि.९–१०७. प्रधमननस्यदानम् ।

प्रपचनम्–वि. ८–३६. पाकः ।

प्रपन्नः–शा. २–१४. आगतः ।

प्रपाणिकौ–इ. ८–२६. मणिबन्धादूर्ध्वं कूर्परपर्यन्तं द्वयोर्भुजयोर्भागौ ।

प्रबाधकम्–चि. २४–६४. निवर्तकम् , निवारकम् प्रशामकम् ।

प्रभवः–शा. १–५३. कारणम् ।

प्रभा–इ. ७–१४. वर्णप्रकाशिनी, प्रकृष्टा दूरात् प्रकाशते इतिलक्षणद्वयविशिष्टः कान्तिविशेषः ।

प्रभावः–सू. २६–६७. अचिन्त्या द्रव्यशक्तिरभिप्रेता रसादिकार्यत्वेन या नावधारयितुं शक्यते ।

प्रभावः–वि. १–४. प्रकृष्टो भावः प्रभावः शक्तिरित्यर्थः, सचेहाचिन्त्यश्चिन्त्यश्चग्राह्यः, रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम् । (व. द.)

प्रभावतत्त्वम्–वि. १–९. प्रभावतात्पर्यम् ।

प्रमथ्या–सि. ७–१०. प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यं पलमात्रं सुकल्कितम् । किञ्चिदन्येन संयुक्तमथवान्यविवर्जितम् । तोये चाष्टगुणे साध्यं पानमाहुः पलद्वयम्॥(वै. श.)। प्रमथ्येति-पाचनकषायस्यायुर्वेदसमयसिद्धसंज्ञा ।

प्रमथ्या–चि. १९–२९. पाचनदीपनीयः कषायः ।

प्रमाणम्–वि. ४–७. देहपरिमाणम् । (वै. श.)

प्रमाणवन्ति–चि. १४–१७. महाप्रमाणानि ।

प्रमाथि–सू. ७–९. अनुलोमनम् ।

प्रमिताशनम्–चि. १४–१२. अत्यल्पाशनम् ।

प्रमिताशनम्–सू. १५–१५. एकरसाभ्यासः ।

प्रमिताशनम्–चि. ११–८. एकरसाभ्यासः किंवा अतीतकालभोजनम् ।

प्रमीलकः–सू. २३–७. सततं प्रध्यानम् ।

प्रयोगः–सू. २४–५६. प्रयुक्ति; उपयोगः ।

प्रयोगः–सू. ५–३७. प्रायोगिकधूमः ।

प्रयोजनम्–सि. १२–४२. यदर्थं कामयमानः प्रवर्तते ।

प्ररोहः–सू. १–७४. अङ्कुरः ।

प्रलयः–चि. ३–५. मरणम् ।

प्रलापः–सू. १७–५२. अनर्थकं वचः ।

प्रलुञ्च्य–वि. ७–२५. निस्तुषीकृत्य।

प्रलेपः–सू. २१–४६. कफादिभिः लिप्तता।

प्रवाहणम्–चि. १२–९६. कुन्थनम्, मलादिनिष्कासनार्थं प्रयत्नः।

प्रवाहिका–चि. १९–३४. वायुर्विवृद्धो निचितं बलासं नुदत्यधस्तादहिताशनस्य। प्रवाहतोऽल्पं बहुशो मलाक्तं प्रवाहिकां तां प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥ (सु. उ. अ. ४०–१३८.)

प्रवृत्तिः–चि. ३–१४. प्रथमाविर्भावः।

प्रवृत्तिः–वि. ८–६८. प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था सैव क्रिया, कर्म यत्नः कार्यसमारम्भश्च।

प्रश्रेणी–सू. ६–१५. गोणी।

प्रशमः–सू. १७–११४. चि. २१–४०. शमनम्।

प्रशमः–सू. ३०–१४. शान्तिः।

प्रशमनम्–सू. २५–४०. शमनकरम्।

प्रसङ्गः–सि. १२–४३. पूर्वाभिहितस्यार्थस्य प्रकरणागतत्वादिना पुनरभिधानम्।

प्रसन्नम्–सू. २७–२१७. निर्दोषम्।

प्रसन्ना–चि. २६–१८. मद्योपरि स्वच्छो भागः

प्रसहाः–सू. ६–१२. प्रसह्य भक्षयन्तीति प्रसहास्तेन संज्ञिताः। प्रसहा द्विविधा मांसादा व्याघ्रश्येनादयः, तथा अमांसादाश्च गवादयः।

प्रसादः–सू. २७–३४९. प्रसन्नता (श. क.)

प्रसारणम्–शा. ७–१६, चि. २८–९. नैयायिकाभिमतपञ्चविधकर्मान्तर्गतकर्मविशेषः, ऊर्ध्वदेशसंयोगकरणम्।

प्रसेकः–शा. ८–३६. अल्पत्वेन बिन्दुशो वा क्षरणम्।

प्रसेचनम्–चि. ७–१५९. परिषेकः।

प्रस्कन्दनम्–चि. ३–२३०. विरेचनम्।

प्रस्राविणी–चि. २३–१५८. स्रावशीला।

प्रसृतः–क. १२–९२. द्वे पले प्रसृतं विदुः।

प्रस्तरः–सू. १४–४२. प्रस्तीर्यते इति प्रस्तरः शयनप्रमाणेन स्वेदवस्तूनां विस्तरणम्।

प्रस्थः–चि. २२–४३. क. १२–९४. षोडशपलप्रमाणः।

प्रस्रंसनम्–चि. ५–१८४. विरेचनम्।

प्राग्भक्तम्–चि. ५–८१. भोजनस्य प्राक्, परिणामेन वा यथा भोजनात्प्रत्यासन्नं भवति।

प्राक्–सू. २५–१८. सर्गादौ।

प्राग्रूपम्–चि. २२–८. पूर्वरूपम्।

प्राणवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. प्राणसंज्ञकवातवहानि स्रोतांसि।

प्राणः–सू. १२–८. मूर्धोरःकण्ठजिह्वास्यनासिकासंचारी ष्ठीवनक्षवथूद्गारश्वासाहारादिकर्मकारी वायुविशेषः; यो वायुर्वक्त्रसंचारी स प्राणो नाम देहधृक्। सोऽन्नं प्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते॥ प्रायशः कुरुते दुष्टो हिक्काश्वासादिकान्गदान्। (सु नि. १–१३.)

प्राणाचार्यः–चि. १–४ | ४०. वैद्यः।

प्राणाः–चि. २८–१२. जीवितम्, अग्निः सोमो वायुः सत्त्वं रजस्तमः पञ्चेन्द्रियाणि भूतात्मेति प्राणाः (सु.शा. ४–३.)

प्राणापानौ–शा. १–७०. उच्छ्वासनिःश्वासौ।

प्राणाभिसरः–सू. ९–१८, २९–४. प्राणान् गच्छतो व्यावर्तयतीति प्राणाभिसरः; तस्माच्छास्त्रेऽर्थविज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने। भिषक् चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसर उच्यते॥

प्राणायतनम्–सू. २९–३. शा. ७–९. नाभ्यादयः प्राणस्थित्याधाराः (वै. श.)। दशैवायतनान्याहुः प्राणा येषु प्रतिष्ठिताः शङ्खौ मर्मत्रयं कण्ठो रक्तं शुक्रौजसी गुदम्॥ दशप्राणायतनानि; तद्यथा मूर्धा, कण्ठः, हृदयं, नाभिः, गुदं, बस्तिः, ओजः, शुक्रं, शोणितं, मांसमिति।

प्राणैषणा-सू. ११-३. प्राणो जीवितं, तत् साध्यते दीर्घत्वेन रोगानुपहतत्वेन चानयेति प्राणैषणा ।

प्रादुर्भावः-सि. ९-५. आविर्भावः (श. क.)

प्रायश्चित्तम्-चि. १-१ | ३ ३/४. चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम् । प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् ॥ विद्याद्भेषजनामानि ।

प्रायोगिकी-सू. ५-२४ ३/४. नित्यपेयधूमवर्तिसंज्ञा ।

प्रीणनः-सू. २५-४०, २७-३१२. तृप्तिकरः ।

प्रेरणम्-सू. २०-५. कारणम् ।

प्रोक्षणम्-शा. ५-१०. जलावसेचनम्, जलबिन्दूनामवकिरणम् ।

प्लीहा-वि. ५-८. कुक्षिवामपार्श्वस्थमांसखण्डम् । (श. क.)

फलम्-सू. २५-२०. कार्यफलं पुनस्तद् यत्प्रयोजना कार्याभिनिर्वृत्तिरिष्यते ।

फलवत्-चि. २-४ | ५०. प्रजोत्पत्तिकरम् ।

फलवर्तिः-सि. ७-१०. गुदादौ प्रयुज्यमाना औषधद्रव्यवर्तिः ।

फलक्षारिकम्-चि. २-४ | १८. दाडिमामलकादिफलक्षारसंस्कृतम् ।

फाणितम्-सू. १५-७. पाकात् किञ्चित् घनीभूतम् ।

फाण्टम्-सू. ४-७. क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टं परिकीर्तितम् ।

फेनसङ्घातः-सू. १९-४. फेनराशिः ।

फेनिलम्-सू. १९-४ | १. सफेनम् ।

बलकरम्-सू. २५-४०. बलजनकम् ।

बलजननम्-सि. १२-१६. बलोत्पादकम् ।

बलदः-सि. ३-४३. शक्तिदः

बलम्-वि. १-३. व्यायामानुमेया शक्तिः, उत्साहः, उपचयः, ओजः, शरीरसंरक्षणी शक्तिः ।

बल्यम्-सू. १-१०७. बलाय हितम्, बलकरम् ।

बलवर्धनम्-सि. ४-११. बलोपचयकरम् ।

बलिः-सू. ३०-२१. उपहारः

बस्तिः-सू. १-८७. बस्तिकर्म, चर्मपुटकद्वारेण गुदाध्वना काथादिप्रदानरूपः कर्मविशेषः स द्विविधः अनुवासननिरूहभेदात् । स्नेहबस्तिरनुवासनं कषायबस्तिर्निरूहः । (व. द.)

बस्तिः-सू. ११-४८. मूत्राशयः ।

बस्तिः-सि. ३-१०. मूत्राशयपुटकम् ।

बस्तिकर्म-सू. ७-७. पञ्चकर्मणामन्यतमम् ।

बस्तिद्वारम्-सि. ९-४१. मूत्राशयद्वारम् ।

बस्तिनियमः-वि. ६-१६. बस्तौ यथोक्तनियमसेवा, किंवा बस्तिनियमशब्देन कर्म-काल-योगरूपं बस्तिसंख्यानियमं कर्तव्यतया दर्शयति ।

बस्तिनिबन्धनम्-सि. ३-१०. बस्ति निबन्धनार्थमुपयुक्ता कर्णिका ।

बस्तिनिर्लेखनम्-सि. ७-५५. वायुना च तीक्ष्णेन बस्तिकर्षणम्, बस्तिकर्मजन्यं घर्षणम् ।

बस्तिनेत्रम्-सू. १५-७. बस्तिनलिका ।

बस्तिशीर्षम्-इ. १०-१२. बस्त्यूर्ध्वभागः ।

बहलम्-सू. २२-१३. घनम् ।

बहिःपरिमार्जनम्-सू. ११-५५. बाह्यम् परिमार्जनम्-शोधनम्-रोगदूरीकरणम् । यत्पुनः बहिःस्पर्शमाश्रित्याभ्यङ्गस्वेदप्रदेहपरिषेकोन्मर्दनाद्यैरामयान् प्रमार्ष्टि तद्बहिःपरिमार्जनम् ।

बाधनम्-चि. १-१ | ५. स्वल्पमपथ्यं तदात्वमात्रबाधकम् ।

बाह्यकर्म-सू. ११-५६. बाह्यपरिमार्जनम् ।

बाह्यरोगमार्गः–सू. ११–४८. रक्तादिधातुस्वग्रूपः शाखाभिधो रोगमार्गः ।

बिडालकः–चि. २६–२३१. नेत्रबहिर्लेपः शालाक्ये उच्यते ।

बिडालपदकम्–चि. १३–१६०. कर्षः ।

बिल्वः–वि. ७–२६. पलम् ।

बीजम्–शा. २–१८. शुक्रशोणितम् ।

बीजग्रहणम्–शा. २–१३. शुक्रस्य योनौ निषिक्तस्यानिःसरणम् ।

बीजाभिसंस्कारः–सू. १२–८. बीजस्य शाल्यादेः अभिसंस्कारोऽङ्कुरजननशक्तिः ।

बीजोपघातः–सू. १९–४ | ५. शुक्रोपघातः ।

बुद्धिः–सू. २५–४०. सम्यग्बोधनम्, निश्चयात्मकं ज्ञानम् ।

बुद्धिः–शा. १–२२. निश्चयात्मकज्ञानवती धीः ।

बुद्धिः–शा. १–६३. महच्छब्दाभिधेया ।

बृहच्छरीरः–चि. २–४ | ४. महाकायः ।

बृंहणम्–सू. १–१०७. देहस्थूलताकरम् । (व. द.)

बृंहणः–सू. २७–१०. तर्पणः ।

बृंहणी सू. २–२५. बृंहणजननी ।

बृंहणीयः सू. ४–८, शा. ८–२७. द्वितीयो महाकषायः ।

ब्रध्नः–सू १४-१७ गुदः ।

ब्रह्म–चि. १–१ | ८० मोक्षम् ।

ब्रह्मचर्यम्–सू. ११–३५ ब्रह्मचर्यशब्देन इन्द्रियसंयमकौमनस्यप्रभृतयो ब्रह्मज्ञानानुगुणा गृह्यन्ते ।

ब्राह्मम्–शा.४–३ ब्रह्मसत्त्वयुक्तम् ।

भक्तपाचनः–सू. २७–१८१. अन्नपाचनः ।

भक्तिः–इ. १–३. इच्छा ।

भक्तोपरोधः–चि. २२–५२. भक्तच्छेदः ।

भक्ष्यः–सू. २५–२६. भक्षणीयः ।

भगन्दरः–चि. ४–२७. गुदस्य द्व्यङ्गुले क्षेत्रे पार्श्वतः पिडकार्तिकृत । भिन्नो भगन्दरो ज्ञेयः स च पञ्चविधो मतः ॥ (मा. नि.) वातपित्तश्लेष्मसन्निपातागन्तुनिमित्ताः शतपोनकोष्ट्रग्रीवपरिस्राविशम्बूकवोन्मार्गिणो यथासंख्यं पञ्च भगन्दरा भवन्ति । ते तु भगगुदबस्तिप्रदेशदारणाच्च 'भगन्दरा' इत्युच्यन्ते । अभिन्नाः पिडकाः भिन्नास्तु भगन्दराः ॥ (सु. नि. ४–३).

भग्नः–सि. ९–३९ प्रतिहतः ।

भङ्गः–सि. ९–४० भङ्गाकारवेदना ।

भञ्जनम्–सू. १८–४ जर्जरीकरणम् ।

भस्म–चि. २३–४७ दग्धकाष्ठादिविकारः, भूतिः ।

भस्मप्रहरणः–वि. ३–२३ भस्मायुधः ।

भाः–इ. ७–१६ दीप्तिः, भास्तु वर्णप्रकाशिनी, भाः प्रकृष्टा प्रकाशते ।

भावः–सू. ११–४२ सम्यगवस्थानम् ।

भावना–वि. १–२२–२ द्रवपदार्थेन पुनः पुनः औषधमारणं शोषणं च । (वै. श.)

भाष्यम्–वि. ८–३. भाष्यते विवृततया वर्ण्यते इति । (श. क.)

भिषक्– सू. १०–४ वैद्यः, भिषङ्नाम यो भिषज्यति यः सूत्रार्थप्रयोगकुशलः यस्य चायुः सर्वथा विदितं स्यात् ।

भिषक्छद्मचराः–सू.११–५०. भिषग्वेशचराः ।

भिषग्जितम्–वि. ३–४१. औषधम् ।

भिषग्विद्या–सू. १२–९. आयुर्वेदः ।

भिषङ्मानी-सू. ९-१७. आत्मानमभिषजं भिषक्त्वेन मन्यते इति।

भूगृहम्-सू. १४-२८. भूस्वेदार्थं गृहम्।

भूतगुणाः-सू. १-५६. शब्दादयः।

भूतधात्री-सू. २१-५९. भूतानि प्राणिनः दधाति पुष्णातीति भूतधात्री, धात्रीव धात्री। रात्रिस्वभावप्रभवाया निद्राया नामान्तरम्।

भूतविद्या-सू. ३०-२८. भूतानां राक्षसादीनां ज्ञानार्था प्रशमार्था च विद्या। भूतविद्या नाम देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षःपितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसां शान्तिकर्म बलिहरणादि ग्रहोपशमनार्थम् (सु. सू. १.)

भूताधिकारः-चि. ३-११६. देवादयोऽष्टावुन्मादे भूता उक्ताः तेऽधिक्रियन्ते अस्मिन्निति भूताधिकारः।

भूतानि-सू. २५-१३. प्राणिनः।

भूमिः-सू. २५-३२. पृथ्वी।

भृतम्-सू. ६-१२. भृतं भद्रितमिति प्रसिद्धम्। (चक्रः)

भृष्टः-चि. २२-३१. भर्जितः।

भेदः-सू. १७-४६. भेदनवद्वेदनाविशेषः।

भेदनम्-सू. ११-५५. आशयविदारणम्

भेदनीयः-सू. ४-८. चतुर्थो महाकषायः।

भेदप्रकृतिः-वि. ६-४. भेदकारणम्।

भेदाग्रम्-वि. ६-४. भेदसंख्यारूपं परिमाणम्।

भेदि-सू. २७-१९१ भेदनशीलम्, मलविबन्धनुदित्यर्थः।

भेद्यम्-वि. ८-१३९. अणुशः भेदनार्हम्।

भेषजम्-चि. १-१४. "स्वस्थस्योर्जस्करं किंचित् किंचिदार्तस्य रोगनुत्" इति द्विरूपमौषधशब्दवाच्यम्।

भेषजम्-सू. १०-३ औषधम्, चिकित्सितम्, व्याधिहरम्, पथ्यम्, साधनम्, प्रायश्चित्तम्, प्रशमनम्, प्रकृतिस्थापनम्, हितम्।

भेषजसमुदायः-सू. १०-५. औषधसमूहः।

भेषजसंग्रहः-चि. २६-१३३. भेषजाभिधायको ग्रन्थः।

भेषजसंयोगः-चि. ३-१५१. औषधेन मिश्रत्वं संस्कृतत्वं सिद्धत्वं वा।

भैषज्यम्-सू. १-१३४. भेषजम्।

भोजनम्-सू. २५-४०. भक्षणम्, अभ्यवहारः।

भोज्यम्-सू. २७-२०४. अकठिन आहारविशेष ओदनादिः।

भौमः-चि. १५-१३. पार्थिवः।

भ्रूः-इ. ३-५. नयनोर्ध्वभागरोमराजिः।

भ्रष्टम्-सू. २७-१९८. पतितम्।

भ्रंशः-इ. ३-४. सुदूराधोगमनम्।

मङ्गलम्-सू. ३०-२१. शुभम्, शस्तम्।

मज्जा-सू. १-६८. अस्थिसारः (श. क.)

मज्जसारः-वि. ८-१०८. मज्जा षष्ठो धातुः सारः बलवान् उत्कृष्टो विशुद्धतरो वा यस्मिन्नितरेभ्यो धातुभ्यः स मज्जसारः।

मज्जवाहीनि स्रोतांसि-वि. ५-८. मज्जधातुवाहकाः मार्गाः।

मणिकः-इ. ३-५. करबाहुसन्धिः।

मणिसन्धिः-सि. ९-३३. शिश्नस्य तन्मणेश्च यत्र सन्धानं भवति तत्स्थानम्

मण्डः-सू. १३-२२. यवादिसाधितः सिक्थरहितः द्रवद्रव्यविशेषः (वै. श.)

मण्डलानि-चि. २८-६४ वर्तुलानि।

मतिः–सू. २९–७. बुद्धिः, धीः, प्रज्ञा।

मदः–चि. २४–३४. हृदि मद्यगुणाविष्टे हर्षस्तर्षो रतिः सुखम्। विकाराश्च यथासत्त्वं चित्रा राजसतामसाः॥ जायन्ते मोहनिद्रान्ता मद्यस्यातिनिषेवणात्। स मद्यविभ्रमो नाम्ना 'मद इत्यभिधीयते॥ (च. चि. २४–४०.) मदमूर्च्छायसंन्यासास्तेषां बिशाद्विचक्षणः। यथोत्तरं बलाधिक्यं हेतुलिङ्गोपशान्तिषु॥ दुर्बलं चेतसः स्थानं यदा वायुः प्रपद्यते। मनो विक्षोभयन् जन्तोः संज्ञां संमोहयेत्तदा॥ पित्तमेवं कफश्चैवं मनो विक्षोभयन्नृणाम्। संज्ञां नयत्या कुलतां.... ॥ (च. सू. २४—२७–२९.)

मदात्ययः–चि. ३–१५४. अतिमद्यपानादिजन्यरोगविशेषः।

मदिरा–सू. २७–१८०. सुरामण्डः।

मद्यम्–चि. २६–६३. सुरा।

मधु–सू. २७–२४५. क्षौद्रम्।

मधुजातयः–सू. २७–२४३. क्षौद्रजातयः।

मधुद्रवम्–चि. ५–१३०. मधुना कृतं द्रवम्, मधु मिश्रयित्वा द्रवीकृतमित्यर्थः।

मधुमाणिका–चि. ९–५०. द्रवत्वाद् द्वैगुण्येन माणिकाया द्विकुडवरूपायाः षोडशपलं भवति।

मधुरः–सू. १–६१, २६–७४. रसविशेषः, भूम्यम्बुगुणबाहुल्यात् मधुरः।

मधुरविपाकः–वि. १–१६. जाठराग्निसंयोगकृतः रसविशेषः।

मधुरस्कन्धः–वि. ८–१३८. मधुरगणः मधुरवर्गो वा षड्विधास्थापनमध्ये मधुरवर्गीयद्रव्यकृतास्थापनविशेषः (वै.श)

मधुशुक्तम्–चि. २६–२२७. मधुप्रधानं शुक्तम्। मधु च शुक्तं च इति वा।

मधूदकम्–सू. २७–३२३. मधुमिश्रमुदकम्।

मधूलिका–सू. २७–१९०. मधूलकः गोधूमभेदः तेन निर्वृत्ता सुरा मधूलिका।

मध्यम् औषधम्–क. १२–५५. नातिहीनयोगेन कर्मकारि भेषजम्।

मध्यमो रोगमार्गः–सू. ११–४८. मर्मास्थि—सन्धिरूप औषधमार्गभेदः।

मध्यः स्नेहपाकः–क. १२–१०२, १०३. संयाव इव निर्यासि मध्यो दर्वी विमुञ्चति।

मनः–सू. ३०–२५. अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञकं 'चेतः' इत्याहुरेके, तदर्थात्मसंपदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्।

मनः–सि. ९–४. अन्तःकरणम्।

मनः–शा. १–१८. युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम्। (योगदर्शनम्)

मनः–शा. ३–१३. अस्ति खलु सत्त्वमौपपादुकं; यज्जीवं स्पृक्शरीरेणाभिसंबध्नाति, यस्मिन्नपगमनपुरस्कृते शीलमस्य व्यावर्तते, भक्तिर्विपर्यस्यते, सर्वेन्द्रियाण्युपतप्यन्ते, बलं हीयते, व्याधय आप्याय्यन्ते, यस्माद्धीनः प्राणाञ्जहाति, यदिन्द्रियाणामभिग्राहकं च 'मन 'इत्यभिधीयते।

मनोवहस्रोतः–इ. ५–४१. वातपित्तश्लेष्मणां पुनः, सर्वशरीरचराणां सर्वाणि स्रोतांस्ययनभूतानि। तद्वदतीन्द्रियाणां पुनः सत्त्वादीनां केवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतमधिष्ठानभूतं च तदेतत् स्रोतसां प्रकृतिभूतत्वान्न विकारैरुपसृज्यते शरीरम्। (च. अ. ५–६.); मनोवहानि स्रोतांसि यद्यपि पृथङ्नोक्तानि, तथापि मनसः 'केवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतम्' इत्यभिधानात् सर्वशरीरस्रोतांसि गृह्यन्ते।

मनोविघातकरा भावाः–वि. १–२५ | ६. चित्तोपतापकराश्चित्तविकाराः कामक्रोधलोभमोहेर्ष्याह्रीशोकमानोद्वेगभयोपतापाः।

मन्त्रः–सू. ३०–२१. वेदभेदः। स च मन्त्रस्वरूपभागः। मननात् त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। (श. क.)

मन्थः–सू. २३–३५. सक्तवः सर्पिषाऽभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः। नातिद्रवा नातिसान्द्रा मन्थ इत्यभिधीयते ॥ (रा. नि.)

मन्दः–चि. २३–८. मन्दः गुणविशेषः तीक्ष्णविरुद्धः।

मन्दकम्–सू. २५–४० मन्दजातं दधि।

मन्दाग्निः–चि. ६–१२ स्वल्पापचारमपि यो न सहते, स मन्दः अग्निः।

मन्दाग्निः–सू. १३–३८ मन्दः पाचनासमर्थः अग्निः यस्य सः।

मन्दः अनलः–चि. ९–३८. अग्निमान्द्यम्।

मन्या–सि. ९–८४ ग्रीवाशिराद्वयम्।

मरणम्–सू. ३०–२५. मृत्युः। स्वभावः प्रवृत्तेरुपरमो मरणमनित्यता निरोध इत्येकोऽर्थः।

मर्दनम्–सू. १८–१० अङ्गमर्दनम्।

मर्म–चि. १७–९१ हृदयादीनि।

मर्म–चि. २१–२६. हृदयम्।

मर्माणि–सू. ११–४८ मारयन्ति इति मर्माणि। मर्माणि पुनर्बस्तिहृदयमूर्धादीनि। तानि मर्माणि पञ्चात्मकानि भवन्ति; तद्यथा–मांसमर्माणि, सिरामर्माणि, स्नायुमर्माणि सन्धिमर्माणि चेति। न खलु मांससिरास्नाय्वस्थिसन्धिव्यतिरेकेणान्यानि मर्माणि भवन्ति, यस्मान्नोपलभ्यन्ते। (सु. शा. ६–३.)

मर्मसंज्ञकानि स्रोतांसि–सि. ९–४ नहि स्रोतसां मर्मत्वमस्ति; किंवा स्रोतोमर्मशब्देन सिरामर्मग्रहणं किंवा मर्मसंबद्धानि मर्मपोषकाणि वा स्रोतांसि मर्मसंज्ञकानि स्रोतांसि।

मलः–सू. २२–१९ विट्।

मलवृद्धिः–सू. ७–४३ पुरीषस्य स्वमानादधिकता।

मलशोधनम्–चि. ६–१६. विट्शोधनम्

मलाः–सू. २४–२५. दुष्टदोषाः।

मलायनानि–सू. ७–४२. द्वे गुदलिङ्गे, छिद्राणि, द्वे श्रोत्रे, द्वौ नासापुटौ, द्वे अक्षिणी, मुखं, लोमकूपानि एतानि सर्वाणि मलस्यायनानि निर्गमद्वाराणि।

मस्तिष्कम्–सि. ९–७९. शिरःस्थो मज्जा।

मस्तु–सू. २४–७. दधिमण्डः।

मस्तुलुङ्गः–सि. ९–१०१. मस्तिष्कम्, अविलीनघृताकारा मस्तकमज्जा। (सु. शा. १०–४२ डल्हणः)

महत्–सू. ३०–३ हृदयम्।

महागदः–चि. ८–२७. राजयक्ष्मा।

महात्ययत्वम्–चि. ६–७. मज्जादिगम्भीरधात्वपकर्षकत्वेन महाव्यापत्तिकर्तृकत्वादाशुकारित्वाच्च।

महानिम्नम्–सू. ११–४८. कोष्ठः।

महाफलाः–सू. ३०–१२ येनौजसा वर्तयन्ति प्रीणिताः सर्वदेहिनः। यदृते सर्वभूतानां जीवितं नावतिष्ठते॥ यत् सारमादौ गर्भस्य यत्तद्गर्भरसाद्रसः। संवर्तमानं हृदयं समाविशति यत्पुरा॥ यस्य नाशात्तु नाशोऽस्ति धारि यद् हृदयाश्रितम्। यच्छरीररसस्नेहः प्राणा यत्र प्रतिष्ठिताः॥ तत्फला बहुधा वा ताः फलन्तीव (ति) महाफलाः। (च. सू. ३०–८–११½); तत्फला ओजःफला ओजोवहा इति यावत्। एतेन, यथोक्तगुणशालित्वेनौजो महत्; एतद्वहनेन फलन्तीति महाफला धमन्य उक्ताः। द्वितीयां निरुक्तिमाह—बहुधा वा ताः फलन्तीति, 'ता हृदयाश्रिता दश धमन्यो बहुधा अनेकप्रकारं फलन्तीति निष्पद्यन्ते; एतेन, मूले हृदये दशरूपाः सत्यो महासंख्याः शरीरे प्रतानभेदाद्भवन्तीत्युक्तम्।

महाभूतानि–सि. ९–४. आत्मसंबद्धानि सूक्ष्ममहाभूतानि। (चक्रः)

महामूलाः–सू. ३०–८. महत् हृदयं मूलं यासां ताः। तेन मूलेन महता महामूला मता दश (च. सू. ३०–८.)

महास्नेहः–सू. १–७५. क्षीरमांसादीनामपि स्नेहतया स्नेहाध्याये वक्ष्यमाणत्वेन, तेषु सर्पिरादीनां भूरिस्नेहवत्त्वेन महत्त्वम् (चक्रः) सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः (च. सू. १३.)

महास्रोतः–सू. ११–४८. कोष्ठः, महानिम्नम्, आमपक्वाशयः, शरीरमध्यम् ।

महेन्द्रसलिलम्–चि. १४–१८८. आन्तरिक्षं जलम्

माक्षिकम्–सू. २७–२४३. मक्षिकाः पिङ्गलाः तद्भवं माक्षिकम् , मधुभेदः ।

माञ्जिष्ठमेहः–चि. ६–१०. मञ्जिष्ठोदकसंकाशं भृशं विस्रं प्रमेहति । पित्तस्य परिकोपात्तं विद्यान्माञ्जिष्ठमेहिनम् ॥ (च. नि. ४–३३.)

मात्रा–सू. २–१५. अनपायि परिमाणम् ।

मात्राप्रमाणम्–सू. ५–४. आहारमात्राप्रमाणम् (श. क.)

मात्राबस्तिः–सि. ४–५२. ह्रस्वायाः स्नेहमात्राया मात्राबस्तिः समो भवेत् (च. सि. ५–५३) ह्रस्वाया इति अर्धाहःपरिणमनीयायाः । उक्तं हि–"अहोरात्रमहः कृत्स्नं दिनार्धं च प्रतीक्षते उत्तमा मध्यमा ह्रस्वा स्नेहमात्रा जरां प्रति" (सू. अ. १३.) इति । सुश्रुतेनापि बस्तिप्रमाणमुक्तं यथा–अनुवासने "तस्यापि विकल्पोऽर्धार्धमात्रावकृष्टोऽपरिहार्यो मात्राबस्तिः (सु. चि. ३५) इति, अनेन च सार्धपलमानो मात्राबस्तिरुक्तो भवति; तत्र हि षट्पलः स्नेहबस्तिरुक्तः, अनुवासनं तु त्रिपलम् ।

मात्राशी–सू. ५–३. मात्रां मात्रावदन्नमशितुं भोक्तुम् शीलं यस्यासौ मात्राशी, यदि वा मात्रया अशितुं भोक्तुम् शीलं यस्य स तथा ।

माधुतैलिकबस्तिः–सि. ७–२०. मधुतैलाभ्यां कृतो बस्तिः ।

माधुर्यम्–वि. १–१४. मधुरत्वम् ।

माध्वीकम्–सू. २७–१८८ मधुप्रधानम् ।

मानसः–सू. ११–४५. मनसि भवः ।

मारुतः–सू. १–५९. वायुः ।

मारुतनिग्रहः–सि. ३–४१ वातविबन्धः ।

मारुताशयः–चि. २१–४६. पक्वाशयाधःशरीरम् ।

मार्गशुद्धिः–चि. ५–६०. स्रोतःशोधनम् ।

मार्गसंरोधः–चि. २९–१५५ स्रोतोऽवरोधः ।

मार्दवम्–सू. १८–५०. मृदुता ।

मार्द्वीकम्–चि. २२–३४. मृद्वीकारसकृतं मद्यम् ।

मांसम्–सू. २८–४. रक्तजधातुविशेषः ।

मांसलः–सि. ५–६. अतिपुष्टमांसधातुः ।

मांसवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. मांसवहानि स्रोतांसि ।

मांससारः–वि. ८–१०५. मांसमेव सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो धातुः यस्मिन्सः ।

मिथ्याचारः–चि. ३०–८. असम्यगाहाराचारः ।

मिथ्यायोगः–सू. १–५४. रूपादीनां विरुद्धयोगः । (वै. श.)

मिन्मिनः–शा. ३–१५. सानुनासिकाव्यक्तस्वरः ।

मुक्तः–शा. ५–२२. प्राप्तमोक्षः । नात्मनः करणाभावाल्लिङ्गमप्युपलभ्यते । स सर्वकरणायोगान्मुक्त इत्यभिधीयते ॥

मुष्कः–सि. ९–४. अण्डकोषः ।

मुष्टिः–चि. १३–१२१. पलम् ।

मूकः–चि. २४–६३. अवाक् ।

मूकत्वम्–चि. ३–१०८. मन्दवचनत्वम् , अवचनता वा ।

मूढगर्भः–चि. २३–८६. जडगर्भः(श.क.)। मूढो निरुद्धगतिः । तदुक्तं सर्वावयवसंपूर्णो मनोबुद्ध्यादिसंयुतः। विगुणापानसंमूढो मूढगर्भोऽभिधीयते" इति । (सु. नि. ८–१. डल्हणः)

तमेव कदाचिद्विवृद्धमसम्यगागतमपत्यपथमनुप्राप्तमनिरस्यमानं विगुणापानसंमोहितं गर्भं मूढगर्भमित्याचक्षते (सु. नि. ८-३.)

मूढचेताः-चि. ९-७. उन्मत्तः।

मूत्रग्रहः-चि. ६-१७. स्तोकं स्तोकं सफेनञ्च कृच्छ्रान्मूत्रं करोति यः। तस्य वातसमुत्थन्तु विद्यान्मूत्रग्रहं बुधः॥ (वै. श.)

मूत्रम्-इ. १-१३. आहारस्य सारहीनमलद्रवः, बस्तिपूरणविक्लेदकृन्मूत्रम्।

मूत्रवाहिन्यः नाड्यः-सि. ९-४. पक्काशयगतास्तत्र नाड्यो मूत्रवहास्तु याः। तर्पयन्ति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा। सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुखान्यासां सहस्रशः (सु.नि.३-२१½).

मूत्रवाहीनि स्रोतांसि- वि. ५-८. मूत्रवहा नाड्यः

मूत्रविरजनीयः-सू. ४-१५/३४. मूत्रस्य विरजनं करोति इति। चतुस्त्रिंशो महाकषायः।

मूत्रविरेचनीयः-सू. ४-१५ | ३५. मूत्रस्य विरेचनं करोति इति पञ्चत्रिंशो महाकषायः।

मूत्रसंग्रहणीयः-सू. ४-१५ | ३३. मूत्रस्य संग्रहणं करोति इति। त्रयस्त्रिंशो महाकषायः।

मूत्रस्रोतः-सि. ९-४३. शेफसि स्थितो मूत्रमार्गः।

मूत्राधारः-सि. ९-४. मूत्रं धारयतीति, मूत्राशय इत्यर्थः; बस्तिः।

मूत्राशयः-चि. २६-४२ मूत्राधारः, बस्तिः।

मूर्च्छा-सि. ३-२१. संमोहः।

मूर्च्छायः-चि. ४-२६. मूर्च्छा।

मूर्तिः-शा. ४-१२. काठिन्यम्।

मूर्धविरेचनम्-सू. ५-२७. चि. ३-१७४. शिरोविरेचनम्।

मृत्युः-चि. ३-१३. मृत्युकारणत्वान्मृत्युर्ज्वर एवोच्यते।

मृत्स्नम्-चि-१-३ | ५६. मसृणम्।

मृदितः-चि. ४-७७. फाण्टीकृतः।

मृदुः-सू. १२-७, सू. २७-२१७. कठिनविपरीतः, दारुणविपरीतः।

मृदु औषधम्-क. १२-५६. अतीक्ष्णम् औषधम्।

मृदुकोष्ठः-सू. १३-७, क. ७-८. कोमलकोष्ठः।

मृदुविरेचनम्-सू. २५-४० अतीक्ष्णविरेचनम्।

मृदुवीर्यम्-सि. ११-५. अतीक्ष्णवीर्यम्।

मृदुस्नेहपाकः-क. १२-१०२,१०३. अतीक्ष्णस्नेहपाकः; तुल्ये कल्केन निर्यासे भेषजानां मृदुः स्मृतः।

मृद्वीकासवः-सू. २७-१८८. द्राक्षासवः।

मेढ्रम्-इ. ३-५. शिश्नः, लिङ्गम्।

मेदः-सू. २१-९, चि. १५-१६ शरीरस्थचतुर्थधातुः (वै. श.) सर्वभूतानामुदरेस्थिषु च स्थितः शरीरगतः स्नेहविशेषः।

मेदकः-चि. १-२६७. जगलः।

मेदःसारः-वि. ८-१०६. मेदः एव सारः उत्कृष्टः विशिष्टतरो धातुः यस्मिन् सः; मेदस्वी।

मेदुरः-सि. १-३६. मेदस्वी।

मेदोवाहीनि स्रोतांसि-वि. ५-८. मेदोवहा नाड्यः।

मेद्यम्-चि. ३-३०५,-१५-२३३. मेदुरम्, मेदोजनकं वा।

मेधा-सू. २७-३५०, धारणावती धीः।

मेध्यम्-सू. १-१०७. पवित्रम्।

मेहः-चि. ६-३. मेहति क्षरति शुक्रादि अनेनेति। (श. क.)

मेहनम्-सू. ७-६. शिश्नः, लिङ्गम्।

मैथुनधर्मः-शा. ३-४/२. व्यवायः।

मैरेयम्-सू. २७-१८७. आसवस्य सुरायाश्च द्वयोरेकत्र भाजने। सन्धानं तद्विजानीयात् मैरेयमुभयाश्रयम्॥

मोक्षः-सू. १-१५. संसारविमोक्षः। मोक्षो रजस्तमोऽभावात् बलवत्कर्मसंक्षयात्। वियोगः सर्वसंयोगैरपुनर्भव उच्यते। (च. शा. १-१४२.)

मोदकः-क. १-२३. वटकः।

मोरटम्-सू. २७-२३४. पीयूषः सद्यःप्रसूतायाः गोः क्षीरं सप्ताहं यावत्। तदेव सप्ताहात परतः यावत् प्रसन्नतां न गच्छति तावत् मोरटम् इत्युच्यते। वचनं च-क्षीरं सद्यः प्रसूतायाः पीयूषमिति संज्ञितम्। सप्तरात्रात् परं क्षीरं प्रसन्नं न च मोरटम्। इति। विनष्टक्षीरमेवं मस्तु मोरटमिति जेज्जटः।

मोहः-शा. ७-१९. अहं स्थिरशरीरी एको, ममेदमुपकारकं ममेदमपकारकं इत्यादिरूपः मोहः।

मोहः-चि. २३-७४. संज्ञाव्याकुलता संज्ञानाशो वा।

मौलम्-चि. २३-१७. मूले भवम्, तत्र जातम् वा; मूलजम्।

म्लाना-सू. १७-६५. गतविभवा, नष्टकान्तिः, शिथिलीभूता।

यकृत्-वि. ५-८. दक्षिणकुक्षेरधःस्वशरीरावयवविशेषः (वै. शः) कालखण्डः।

यक्ष्मा-नि. १-५. ज्वरः यक्ष्मशब्देन च राजयक्ष्मवदनेकरोगयुक्तत्वं विकाराणां दर्शयति।

यक्ष्मा-चि. ८-७. राजयक्ष्मा।

यज्ञोपवीतप्रतिमाः-चि. १२-९१. यज्ञोपवीतव्याप्यस्थानमात्रव्यापकाः।

यन्त्रम्-सू. १२-८. सन्धयः।

यन्त्रम्-इ. १२-४५. सिरास्नाय्वादिरूपम्।

यमकम्-चि. १९-३६. घृततैले।

यवागूः-चि. २६-१५५. वचिताच्चतुर्गुणतण्डुलचूर्णकृतषड्गुणवारिपक्वा बहुसिक्था उष्णिका (वै. श.)

यवाग्रजम्-चि. ५-९६. यवक्षारः।

यवाग्वादिक्रमः-वि. ७-१९. संसर्जनक्रमः। प्रथमे द्वितीये तृतीये चान्नकाले पुराणानां लोहितशालितण्डुलानां स्ववक्लिन्ना मण्डपूर्वा सुखोष्णा यवागूः यथाग्निबलं, चतुर्थे पञ्चमे षष्ठे चान्नकाले तथाविधानामेव शालितण्डुलानामुत्स्विन्ना विलेपी उष्णोदकद्वितीया अस्नेहलवणा अल्पस्नेहलवणा वा, सप्तमे अष्टमे नवमे चान्नकाले तथाविधानामेव शालीनां द्विप्रसृतं सुस्विन्नमुष्णोदकानुपानं तनुना तनुस्नेहलवणोपपन्नेन मुद्गयूषेण, दशमे एकादशे द्वादशे चान्नकाले लावकपिञ्जलादीनामन्यतमस्य मांसरसेनौदकलवणिकेन नातिसारवता भोज्यम्।

यापनम्-चि. ३-३०२. यापनावस्तिः।

यापनाबस्तयः-सि. १२-१६ | १. आयुषः यापनं दीर्घकालानुवर्तनं कुर्वन्ति इति यापनाबस्तयः।

याप्यम्-सू. १०-९, १०-३७. असाध्यभेदः। याप्यं त्वनुपक्रमं न भवति, यापनाकर्तृत्वेन किञ्चित्करत्वात्। शेषत्वादायुषो याप्यमसाध्यं पथ्यसेवया। लब्धाल्पसुखमल्पेन हेतुनाऽऽशु प्रवर्तकम्॥

यायावराः-चि. १/४-३. सर्वदा गमनशीलाः नैकत्रस्थायिनः।

यावकः-चि. १-३ | २७. यवान्नम्।

युक्तिः-सू. ११-७. बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया॥ (च. सू. ११-२५)बहुकारणयोगो बहूपपत्तियोगः जनिश्चार्यं ज्ञानार्थं, तेन बहूपपत्तियोगज्ञायमानानर्थान् या बुद्धिः पश्यति ऊहलक्षणा सा युक्तिरिति प्रमाणसहायीभूता। एवमनेन भवितव्यमित्येवंरूप ऊहोऽत्र युक्तिशब्देनाभिधीयते; सा च परमार्थतोऽप्रमाणभूतापि वस्तुपरिच्छेदे प्रमाणसहायत्वेन व्याप्रियमाणत्वात्, तथा तत्रैव ऊहरूपया प्रायो लोकानां व्यवहारादिह प्रमाणत्वेनोक्ता। (चक्रः)

युक्तिः-सू. २६-२९,३१. युक्तिश्चयोजना या तु युज्यते(३१)। युक्तिश्चेत्यादौ योजना दोषाद्यपेक्षया भेषजस्य

समीचीनकल्पना। अत एवोक्तं या हि युज्यते; या कल्पना यौगिकी भवति सा तु युक्तिरुच्यते अयौगिकी तु कल्पनापि सती युक्तिर्नोच्यते पुत्रोऽप्यपुत्रवत्। (चक्र.)

युक्तिः–वि. ४–४. सम्बन्धः अविनाभाव इत्यर्थः। तेनाविनाभावजं परोक्षज्ञानमनुमानमित्यर्थः (चक्रः)

युक्तिव्यपाश्रयम्–सू. १–५८,११–५४. युक्तिः योजना; शरीरभेषजयोः हितो यो योगः तदपेक्षं संशोधन–संशमनादि युक्तिव्यपाश्रयमुच्यते (चक्रः)। युक्तिव्यपाश्रयं–पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना।

युगपत्–शा. ६–६. एककालम्

यूकाः–वि७–१०. बालकृमयः (श. क.) केशश्मश्रु-लोमपक्ष्मवासःसु जाता अणवः बहुपादाः कृष्णाः शुक्लाः वा कृमयः।

यूषः–चि. २६–२९. मृष्टमुद्गदलानान्तु पलैकेन विपाचितः। पूतापनीतविदलः तनुर्यूषः कृताकृतः॥ (वै. श.)

योगः–शा. १–१३७–१३९. योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्। मोक्षे निवृत्तिर्निःशेषा योगो मोक्षप्रवर्तकः॥ आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। सुख-दुःखमनारम्भादात्मस्थे मनसि स्थिरे॥ निवर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते। सशरीरस्य योगज्ञास्तं योगमृषयो विदुः॥

मोक्ष आत्यन्तिक शरीराद्युच्छेदः। निःशेषेति न पुनर्भवति। एतेन, योगे निवृत्ता वेदना पुनर्भवतीति सूचयति। मोक्षप्रवर्तक इति मोक्षकारणम्। (चक्रः)

योग– सि. ६–३१. योगः सम्यक् प्रवृत्तिः स्यात्।

योगः– सि. ६–४१. योगो नाम योजना, व्यस्तानां-पदानामेकीकरणम् (चक्र)

योगवाहि–सू. २७–२४९. यस्मान्नानारसवीर्यादिभ्यः पुष्पेभ्य उत्पन्नं तन्मधु तेनानभिव्यक्तनानाशक्तिकमेव। ततश्च येन द्रव्येण वामनीयेन वाऽऽस्थापनीयेन वा वृष्येण कार्यान्तर-कारकेण वा युज्यते तत्स्वैव कर्म करोति, समानानुकारिद्र-व्यप्रबोधितशक्तित्वादिति भावः। चकारोऽत्र हेत्वन्तर-समुच्चये, तेन प्रभावाच्चेति बोद्धव्यम्। तेन सत्यपि नानौ-षधिसंभवत्वे प्रभावान्न क्षीरमद्यादयो योगवाहिनः; तथा, अनानात्मका अपि शिलाजतुतैलादयो योगवाहिनो भवन्ति। (चक्रः) गृह्णाति योगवाहि द्रव्यं संसर्गिवस्तुगुणान्। पच्यमानं यथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलौहादि॥ (व. द.)

योनिः–शा. १–६. जातिः।

योनिः–चि. ३०–१३३. कारणम्।

योनिः–वि. ४–६. वातादयः।

योनिः–चि. २३–३. अधिष्ठानम्।

योनिदोषः–चि. ३०–१५. अपत्यपथरोगः।

योनिशूलम्–जि. ५–७५. योनिरोगविशेषः।

रक्तपित्तम्–चि. ४–४. रोगभेदः।

रक्तबस्तिः–सि. ६–८३. रक्तेन बस्तिः।

रक्तम्–चि. १५–१६. रुधिरम्।

रक्तमोक्षः–चि. ९–२४. शृङ्गालाबूजलौकोभिः सिराव्यधेन वा रक्तावसेचनम्।

रक्तवाहि अर्शः–चि. ७–१४८. रुधिरस्राविगुदकीलः।

रक्तवाहिन्यः धमन्यः–वि. ७–११. रुधिरवाहिन्यः नाड्यः।

रक्तवाहिस्रोतांसि–वि. ५–२४. रुधिरवाहिन्यः नाड्यः।

रक्तविमोक्षणम्–चि. १२–१००. शृङ्गालाबूजलौकोभिः सिराव्यधेन वा रक्तावसेचनम्।

रक्तसारः–वि. ८–१०४. रक्तमेव सारः उत्कृष्टः विशुद्धतमो धातुः यस्मिन्सः।

रक्तावसेकः–चि. ३–२९० रक्तमोक्षः।

रक्तावसेचनम्–चि. ३–२८८. रक्तमोक्षणम्।

रजः–शा. २–३४; चि. ३०–२५. आर्तवम्।

रजः–सू. १–५७. रजोगुणः।

रजः–सू. २१–२३. चूर्णम्।

रजस्वला–चि. ३०–१६५. आर्तवयुक्ता, पुष्पवती।

रजोदोषः–चि. ३०–९५. आर्तवविकारः ।

रसः–सू. १–६४, २६–२८, २७–७०. रसनेन्द्रियग्राह्यो गुणो रसः । यं पञ्चानामिन्द्रियार्थानामन्यतमं जिह्वाविषयं भावमाचक्षते कुशलाः स पुनरुदकादनन्यः ।

रसः–सि. ३–३५. क्वाथः ।

रसः–चि. १५–१६. रसधातुः, आद्यो धातुः ।

रसः–चि. ८–१३३. सि. १२–१९ स्वरसः ।

रसः–सू. २६–६६. रसो निपाते द्रव्याणाम् । निपाते इति रसनायोगे; रसनेन्द्रियग्राह्यजातिमत्त्वं रसत्वम् (द्र. स.)

रसः–सू. २८–४. आहारप्रसादाख्यः ।

रसः–चि. ८–१३२. मांसरसः ।

रसक्रिया–चि. २६–२०२. घनीभूतरसस्य संज्ञा, क्वाथादेर्यत् पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया (व. द.)

रसनम्–इ. १–३. जिह्वेन्द्रियम् ।

रसना–सू. १–६४. जिह्वा ।

रसवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. हृदयस्थदशधमनीनां शाखाप्रशाखाः ।

रसाञ्जनम्–सू. ५–१५. दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा घनम् । तदा रसाञ्जनाख्यं तत् नेत्रयोः परमं हितम् ॥ (वै. श.)

रसायनविधिः–चि. १–१/१४. जराव्याधिनाशनविधिः ।

रसायनम्–सू. ७–४८. रसायनन्तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् । यथा मृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी (व. द.) दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः । प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम् ॥ वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात् । लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम् ॥

रसायनी–वि. ५–९ रसः अयते गच्छति यया सा रसायनी, धमनी, नाडी, सिरा, स्रोतः ।

रसाला–चि. २–२/२६. सचातुर्जातकाजाजि सगुडार्द्रकनागरम् । रसाला स्याच्छिखरिणी सुघृष्टं ससरं दधि ॥

राजयक्ष्मा–नि. ६–१२; चि. ८–९. तं सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद्राजयक्ष्माणमाचक्षते भिषजः । यस्माद्वा पूर्वमासीद्भगवतः सोमस्योडुराजस्य तस्माद्राजयक्ष्मेति । यद्वा कष्टतमत्वात्तदा 'राजेव यक्ष्मा राजयक्ष्मेति' निरुक्तिर्बोद्धव्या । उडुराजस्येति वचनाद् राजसंज्ञत्वं सोमस्य दर्शयति; ततश्च 'राज्ञो यक्ष्मा राजयक्ष्मा" इति निरुक्तिर्भवति । (चक्र:)

राजसं सत्त्वम्–शा. ४–३६. रजोगुणभूयिष्ठं मनः राजसं सदोषमाख्यात रोषांशत्वात् ।

राजार्ह–सू. ९–१९. हेतौ लिङ्गे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे । ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तमः ॥

राजी–इ. ११–१३. रेखा, पङ्क्तिः ।

राजी–चि. १३–१९. व्यक्ता सिरा ।

राशिः–वि. १–२२/४. राशिस्तु सर्वग्रहपरिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चयार्थः । तत्र सर्वस्याहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः, परिग्रहः पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्याणाम् । सर्वस्य हि ग्रहः सर्वग्रहः सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते । सर्वतः इति प्रत्येकावयवत इत्यर्थः । (चक्र:)

राक्षसम् (सत्त्वम्)–शा. ४–३८. अमर्षिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतमं स्वप्नायासबहुलमीर्ष्युं राक्षसं विद्यात् ॥

रुग्णः–सि. १–३२. सन्धिमुक्तः ।

रुचिकरम्–सू. २५–४०. रुच्युत्पादकम् ।

रुजा–चि. २१–३९. पीडा ।

रुधिरम्–इ. ९–२१. रक्तम् ।

रुद्धमार्गः–सि. ७–२१. निवारिताधोमार्गः

रूपम्–नि. १–९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

रूक्षः–सू. २०–१९. रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् विशेषात् स्तम्भनः खरः । (व. द.) तद्विपरीतः स्निग्धविपरीतः ।

रूक्षः–सू. १७–३०. रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ।

रूक्षणम्–सू. २२–१०. रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात्तद्धि रूक्षणम् ॥

रेचनम्–सि. ९–९२. विरेचनम् । विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ॥ (व. द.)

रेतः–चि. ३०–१४६. शुक्रम् ।

रेतोदः–सि. ३–४३. रेतः वीर्यम् ददाति यः सः शुक्रजननः शुक्रवर्धनः वा ।

रेतोदोषः–चि. ३०–१४८. शुक्रदोषः ।

रेतोवहाः सिराः–चि. ३०–१३८. शुक्रवहानि स्रोतांसि ।

रोगः–नि.–१–५; वि. ३–११. तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्; ज्वरो विकारो रोगश्च व्याधिरातङ्क एव च । एकोऽर्थो नामपर्यायैर्विविधैरभिधीयते ॥

रोगानीकम्–वि. ६–१. रोगसमूहः ।

रोगी–वि. २२–६१. रोगयुक्तः

रोगेशः चि. ८–११३. राजयक्ष्मा ।

रोचनम्–वि. १–१८ रुचिकर्तृ ।

रोपणः–चि. २९–१६२. रोहणः ।

रोम–चि. २३–२३०. लोम, सूक्ष्मवालः, त्वक्छिद्रे जातः सूक्ष्मकेशः ।

रोमकूपाः–चि. ४–१७. लोमविवराणि ।

रोमहर्षः–नि. १–२१. रोमाञ्चः ।

लक्षणम्–नि. १–८. लिङ्गम् ।

लक्षणम्–इ ३–४. मरणलक्षणम् ।

लक्षणनिमित्ता (विकृतिः)–इ. १–७ | १. तत्र लक्षणनिमित्ता नाम सा यस्याः शरीरे लक्षणान्येव हेतुभूतानि भवन्ति दैवात् । हेतुभूतानीति हेतुसदृशानि । तेन दैवमेव नखरेखापद्मादिसामुद्रिकोक्तलक्षणयुक्ते शरीरे राज्यधनगमनवधबन्धनादिरूपविकृतिप्राप्तौ हेतुः । लक्षणानि तु दैवनिमित्तानि बोधकमात्राणि, अतएव दैवादित्युक्तम्; दैवं च प्राक्तनं कर्मोच्यते (चक्रः)

लक्ष्यनिमित्ता (विकृतिः)–इ–१–७ | २. लक्ष्यनिमित्ता तु सा यस्या उपलभ्यते निमित्तं यथोक्तं निदानेषु ।

लघुः–सू. १–५९. लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपणस्तथा (व. द.) तद्विपरीतः गुरुविपरीतः ।

लङ्घनम्–सू. २२–९, १८. यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लङ्घनं स्मृतम् ॥ चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम् ॥

लङ्घनम्–चि. ३–१४०, १५–७५. उपवासः, अनशनम् ।

ललाटम्–इ. ३–५ भालम्

लवणः–सू. १–६५, २६–७६ रसविशेषः, तोयाग्निगुणबाहुल्यात् लवणः ।

लवणम्–सू. १–७० सैन्धवादि ।

लवणस्कन्धः–वि. ८–१४१ लवणरसद्रव्यसमूहः ।

लसीका–शा. ७–१५. त्वगन्तरे व्रणगतमुदकम् ।

लाघवम्–वि. १–१४ लघुता

लाघवम्–सि. ३–१९ शीघ्रक्रियता ।

लाला–चि. ६–९ मुखस्रावः ।

रजस्वला–चि. ३०–१६५. आर्तवयुक्ता, पुष्पवती।

रजोदोषः–चि. ३०–९५. आर्तवविकारः।

रसः–सू. १–६४, २६–२८, २७–७०. रसनेन्द्रियग्राह्यो गुणो रसः। यं पञ्चानामिन्द्रियार्थानामन्यतमं जिह्वाविषयं भावमाचक्षते कुशलाः स पुनरुदकादनन्यः।

रसः–सि. ३–३५. क्वाथः।

रसः–चि. १५–१६. रसधातुः, आद्यो धातुः।

रसः–चि. ८–१३३. सि. १२–१९ स्वरसः।

रसः–सू. २६–६६. रसो निपाते द्रव्याणाम्। निपाते इति रसनायोगे; रसनेन्द्रियग्राह्यजातिमत्त्वं रसत्वम् (द. स.)

रसः–सू. २८–४. आहारप्रसादाख्यः।

रसः–चि. ८–१३२. मांसरसः।

रसक्रिया–चि. २६–२०२. घनीभूतरसस्य संज्ञा, क्वाथादेर्यत् पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया (व. द.)

रसनम्–इ. १–३. जिह्वेन्द्रियम्।

रसना–सू. १–६४. जिह्वा।

रसवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. हृदयस्थदशधमनीनां शाखाप्रशाखाः।

रसाञ्जनम्–सू. ५–१५. दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा घनम्। तदा रसाञ्जनाख्यं तत् नेत्रयोः परमं हितम्॥ (वै. श.)

रसायनविधिः–चि. १–१/१४. जराव्याधिनाशनविधिः।

रसायनम्–सू. ७–४८. रसायनन्तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्। यथा मृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी (व. द.) दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः। प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम्॥ वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात्। लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्॥

रसायनी–वि. ५–९ रसः अयते गच्छति यया सा रसायनी, धमनी, नाडी, सिरा, स्रोतः।

रसाला–चि. २–२/२६. सचातुर्जातकाजाजि सगुडार्द्रकनागरम्। रसाला स्याच्छिखरिणी सुघृष्टं ससरं दधि॥

राजयक्ष्मा–नि. ६–१२; चि. ८–९. तं सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद्राजयक्ष्माणमाचक्षते भिषजः। यस्माद्वा पूर्वमासीदुडुराजस्य तस्माद्राजयक्ष्मेति। यद्वा कष्टतमत्वात्तदा 'राजेव यक्ष्मा राजयक्ष्मेति' निरुक्तिर्बोद्धव्या। उडुराजस्येति वचनाद् राजसंज्ञत्वं सोमस्य दर्शयति; ततश्च 'राज्ञो यक्ष्मा राजयक्ष्मा" इति निरुक्तिर्भवति। (चक्रः)

राजसं सत्त्वम्–शा. ४–३६. रजोगुणभूयिष्ठं मनः राजसं सदोषमाख्यात रोषांशत्वात्।

राजर्ह–सू. ९–१९. हेतौ लिङ्गे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे। ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तमः॥

राजी–इ. ११–१३. रेखा, पङ्क्तिः।

राजी–चि. १३–१९. व्यक्ता सिरा।

राशिः–वि. १–२२/४. राशिस्तु सर्वग्रहपरिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चयार्थः। तत्र सर्वस्याहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः, परिग्रहः पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्याणाम्। सर्वस्य हि ग्रहः सर्वग्रहः सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते। सर्वतः इति प्रत्येकावयवत इत्यर्थः। (चक्रः)

राक्षसम् (सत्त्वम्)–शा. ४–३८. अमर्षिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतमं स्वप्नायासबहुलमीर्ष्युं राक्षसं विद्यात्॥

रुग्णः–खि. १–३२. सन्धिमुक्तः।

रुचिकरम्–सू. २५–४०. रुच्युत्पादकम्।

रुजा–चि. २१–३९. पीडा।

रुधिरम्–इ. ९–२१. रक्तम्।

रुद्धमार्गः–सि. ७–२१. निवारिताधोमार्गः

रूपम्–नि. १–९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

रूक्षः–सू. २०–१९. रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् विशेषात् स्तम्भनः खरः। (व. द.) तद्विपरीतः स्निग्धविपरीतः ।

रूक्षः–सू. १७–३०. रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ।

रूक्षणम्–सू. २२–१०. रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात्तद्धि रूक्षणम् ॥

रेचनम्–सि. ९–९२. विरेचनम् । विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ॥ (व द.)

रेतः–चि. ३०–१४६. शुक्रम् ।

रेतोदः–सि. ३–४३. रेतः वीर्यम् ददाति यः सः शुक्रजननः शुक्रवर्धनः वा ।

रेतोदोषः–चि. ३०–१४८. शुक्रदोषः ।

रेतोवहाः सिराः–चि. ३०–१३८. शुक्रवहानि स्रोतांसि ।

रोगः–नि.–१–५; चि. ३–११. तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्; ज्वरो विकारो रोगश्च व्याधिरातङ्क एव च । एकोऽर्थो नामपर्यायैर्विविधैरभिधीयते ॥

रोगानीकम्–वि. ६–१. रोगसमूहः ।

रोगी–चि. २२–६१. रोगयुक्तः

रोगेशः चि. ८–११३. राजयक्ष्मा ।

रोचनम्–वि. १–१८ रुचिकर्तृ ।

रोपणः–चि. २९–१६२. रोहणः ।

रोम–चि. २३–२३०. लोम, सूक्ष्मबालः, त्वक्छिद्रे जातः सूक्ष्मकेशः ।

रोमकूपाः–चि. ४–१७. लोमविवराणि ।

रोमहर्षः–नि. १–२१. रोमाञ्चः ।

लक्षणम्–नि. १–८. लिङ्गम् ।

लक्षणम्–इ ३–४. मरणलक्षणम् ।

लक्षणनिमित्ता (विकृतिः)–इ. १–७ | १. तत्र लक्षणनिमित्ता नाम सा यस्याः शरीरे लक्षणान्येव हेतुभूतानि भवन्ति दैवात् । हेतुभूतानीति हेतुसदृशानि । तेन दैवमेव नखरेखापद्मादिसामुद्रिकोक्तलक्षणयुक्ते शरीरे राज्यधनगमनवधबन्धनादिरूपविकृतिप्राप्तौ हेतुः । लक्षणानि तु दैवनिमित्तानि बोधकमात्राणि, अतएव दैवादित्युक्तम्; दैवं च प्राक्तनं कर्मोच्यते (चक्रः)

लक्ष्यनिमित्ता (विकृतिः)–इ–१–७ | २. लक्ष्यनिमित्ता तु सा यस्या उपलभ्यते निमित्तं यथोक्तं निदानेषु ।

लघुः–सू. १–५९. लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपणस्तथा (व. द.) तद्विपरीतः गुरुविपरीतः ।

लङ्घनम्–सू. २२–९, १८. यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लङ्घनं स्मृतम् ॥ चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम् ॥

लङ्घनम्–चि. ३–१४०, १५–७५. उपवासः, अनशनम् ।

ललाटम्–इ. ३–५ भालम्

लवणः–सू. १–६५, २६–७६ रसविशेषः, तोयाग्निगुणबाहुल्यात् लवणः ।

लवणम्–सू. १–७० सैन्धवादि ।

लवणस्कन्धः–वि. ८–१४१ लवणरसद्रव्यसमूहः ।

लसीका–शा. ७–१५. त्वगन्तरे व्रणगतमुदकम् ।

लाघवम्–वि. १–१४ लघुता

लाघवम्–सि. ३–१९ शीघ्रक्रियता ।

लाला–चि. ६–९ मुखस्रावः ।

लिङ्गम्–नि. १–६ प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम्, व्याधेः स्वरूप लिङ्ग्यते ज्ञायते अनेन इति लिङ्गम्, आकृतिर्लक्षणं, चिह्नं, संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

लिङ्गग्राह्यम्–शा. १–६२. अनुमानग्राह्यम् ।

लीनम्–सि. १–८. श्लिष्टम् ।

लेखनम्–चि. २३–१७१. व्रणलेखनम् ।

लेखनीयः–चि. २३–१७१. तृतीयो महाकषायः, लिखति इति लेखनीयः,

लेपः–चि. ७–१२२. लिम्पति इति लेपः । लेपस्य द्वौ भेदौ–आलेपः प्रदेहश्च । तयारालेपः आर्द्रमाहिषचर्मवत् शीतलः तनुर्विशोषी च। प्रदेहः आर्द्रः घनः उष्णश्चेति ।

लेपज्वरः–इ. ८–२४. स्वल्पशीतयुक्तः कफज्वरः ।

लेपनम्–सू. २५–४०. लेपः ।

लेलीतकः–चि. ७–७०. पाषाणभेद औत्तरापथिकः, उच्यते हि निघण्टौ " आसीद्दैत्यो महाबाहुर्लेलिहानो महासुरः । योजनानां त्रयस्त्रिंशत् कायेनाच्छाद्य तिष्ठति । विष्णुचक्रेण संछिन्नो पपात धरणीतले । वसा तस्य समाख्याता लेलीतक इति क्षितौ" इत्यादि ।

लेहः–चि. ६–४७. लिह्यते इति लेहः, नातिद्रवो नातिघन औषधकल्पभेदः ।

लोम–इ. ३–६. रोम ।

लोमकूपः–सू २८–४. रोमकूपः ।

लोमहर्षः–चि. ७–११. रोमहर्षः ।

लौकिकः–सू. २८–३८. अपरीक्षकः, रजोमोहावृतात्मा, अयथार्थदर्शी ।

लौल्यम्–सू.२५–४०. चाञ्चल्यम्, चलचित्तता, लोलुपता ।

वक्त्रम्–इ. ८–१७. मुखम् ।

वक्री–शा. २–३०. मातुर्व्यवायप्रतिघेन वक्री स्याद्बीजदौर्बल्यतया पितुश्च । मातुर्व्यवायप्रतिघेनेति व्यवायकाले मातुर्व्यवायानिच्छा विषमाङ्गन्यासो वा व्यवायप्रतिघः तेन यस्य शुक्रं गर्भाशयं नियमान्नोपैति स वक्रीत्युच्यते । बीजदौर्बल्यतया च पितुर्वक्री स्यादिति योजना । अत्र दुर्बलस्य कर्म दौर्बल्यं तस्य भावो दौर्बल्यता तेन पितुर्बीजस्य दुर्बलक्रियतयेत्यर्थः । (चक्रः)

वङ्क्षणः–इ ३–५. ऊरुसन्धिः । (श. क.)

वदनम्–इ. १–१२. मुखम् ।

वनस्पतिः–सू. १–७१. फलैर्वनस्पतिः । फलैर्वनस्पतिरिति बिना पुष्पैः फलैर्युक्ता वटोदुम्बरादयः । यदुक्तं हारीते "तेषामपुष्पाः फलिनो वनस्पतय इति स्मृताः" इति । (चक्रः)

वपावहनम्–वि–५–८, मेदःस्थानम् । वपा उदरस्था स्निग्धवर्तिका यामाहुर्जनास्तैलवर्तिकेति ।

वमनम्–सू.–१–८४ छर्दनम्, तत्र दोषहरणमूर्ध्वभागं वमनसंज्ञकम् । १७–१७

वमनोपगः–सू. ४–१३ | १३. वमने छर्दनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छतीति वमनोपगः । त्रयोत्रिंशत्तितमो महाकषायः ।

वमिः–सि. ६–५३ प्रच्छर्दिका । (श. क.)

वयः–वि–१–३. आयुषोऽवस्थाविभागः, बाल्यादि ।

वयः–वि–८–१२२ वयस्तश्चेति कालप्रमाणविशेषापेक्षिणी हि शरीरावस्था वयोऽभिधीयते ।

वयःस्थापनः–सू. ४–१८ | ५० वयस्तरुणं स्थापयति इति । (व. द.) पञ्चाशत्तमो महाकषायः ।

वर्चोभेदः–चि. ८–१७. अतिपुरीषप्रवृत्तिः ।

वर्चोवाहीनि–वि. ५–२१, वर्चः पुरीषं वहन्ति इति वर्चोवाहीनि

वर्जनीयः–सि. १–४. अचिकित्स्यः ।

वर्ज्यम्-चि-३-३३३ निषिद्धम्, त्याज्यम् ।

वर्णः-इ. १-३. श्वेतरक्तादिवर्णः; वर्णशब्देन च वर्णसहचरिताश्चक्षुर्ग्राह्या रौक्ष्यादयोऽपि गृह्यन्ते अत एव वर्णप्रस्ताव एव वक्ष्यति-यत् "वर्णग्रहणेन ग्लानिहर्षरौक्ष्यस्नेहा व्याख्याताः" इति

वर्णकः-चि. ७-९२. वर्णकरमालेपनम्, रञ्जनचूर्णम् ।

वर्णनाशः-चि. ४-२७. रक्तनाशः ।

वर्ण्यः-सू.४-१० | ८. वर्णाय हितः; अष्टमो महाकषायः ।

वर्तः-सू. २०-१२. वर्तुलीकरणम् ।

वर्तिः-सू. ५-२३. धूमवर्तिः ।

वर्तिः-सू. ७-९; वि. २-१३. फलवर्तिः—पिष्टैर्मदनफलादिभिर्यवाकाराऽङ्गुष्ठमात्रा शलाकाकारेण वर्तिता औषधपिष्टिः ।

वर्तिकाः-चि. २-२-१२. वर्त्याकाराः भक्ष्याः ।

वर्तिक्रिया-क १-१. वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन क्वाथेन पाकाद्वर्त्याकारता कर्तव्या ।

वर्त्म-इ. ८-५. नयनगोलकावरकं निमेषोन्मेषाश्रयं पटलद्वयं वर्त्म उच्यते ।

वली-सि. ३-२५. गुदवली, त्वक्सङ्कोचजन्यो निम्नोन्नतरूपो भङ्गीविशेषः ।

वशी-शा. १-७. स्वेच्छाधीनप्रवृत्तिः ।

वश्या-चि. २-१ | ८. आयत्ता ।

वसा-सू. १-६८. मांसप्रभवधातुविशेषः (च-क.) शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्तिता ॥ (सु. शा. ४)

वाक्यशः-सू. ३०-१७. तन्त्रमार्षं कात्स्न्र्येन यथाम्नायमुच्यमानं वाक्यशो भवत्युक्तम् ।

वाक्यशेषः-सि. १२-४२. यल्लाघवार्थमाचार्येण वाक्येषु पदमकृतं गम्यमानतया पूर्यते ।

वाक्यार्थशः-सू. ३०-१८. बुद्धया सम्यगनुप्रविश्यार्थतत्त्वं वाग्भिर्व्याससमासप्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनयुक्ताभिस्त्रिविधशिष्यबुद्धिगम्याभिरुच्यमानं वाक्यार्थशो भवत्युक्तम् ।

वाजीकरणम्-सू. ३०-२८; चि.२-४/५१. वाजीकरणमिति अवाजिनं वाजिनं कुर्वन्त्यनेनेति वाजीकरणं, येन वाजयर्थं व्यज्यते स्त्रीषु शुक्रं तद्वाजीकरणम् । अन्ये तु वाजो वेगः प्रस्तावाच्छुक्रस्य, स विद्यते येषां ते वाजिनः ते क्रियन्तेऽनेनेति वाजीकरणमित्याहुः । किंवा वाजः शुक्रं सोऽस्यास्तीति वाजी अवाजो वाजी क्रियते येन तद्वाजीकरणम् । किंवा वजो मैथुनम् उक्तं हि हारीते "वाजो नाम प्रकाशत्वात्तच्च मैथुनसंज्ञितम् । वाजीकरणयज्ञाभिः पुरुषमेव प्रचक्षते"—इति शिवदाससेनः । यद्द्रव्याद् द्रव्याद् भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं हि तत् । यथाश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी ॥ (व. द.) येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः व्रजेच्चाभ्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत ॥

वाट्य-चि. ५-९८. क्षुण्णशुष्कयवौदनः ।

वातः-सू. १-८८. वाति गच्छति इति वातः, सदागतिः, समीरणः ।

वातकण्टकः-सू. १४-१३. गुल्फाश्रितो वातः; रुक् पादे विषमे न्यस्ते श्रमाद्वा जायते तदा । वातेन गुल्फमाश्रित्य तमाहुर्वातकण्टकम् ॥ (अ. हृ. नि. १५-५३)

वातबलासः-चि. २९-११. वातस्यावरणेन बलमस्त्यस्मिन् शोणिते इति वातबलासः ।

वातप्रकृतिः-वि. ६-१३. वातप्रधाना प्रकृतिः स्वभावः यस्य सः इति वातप्रकृतिः ।

वातयन्त्रम्-चि. २४-१५८. वायुसंचारार्थं यन्त्रम् ।

वातलः-सि. ५-६. वातदुष्टः ।

वातविकाराः-सि. ४-७. वातजनिता रोगविशेषाः ।

वातवेगः-सि. ३-२५. वायुवेगः ।

लिङ्गम्–नि. १–६ प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम्, व्याधेः स्वरूप लिङ्ग्यते ज्ञायते अनेन इति लिङ्गम्, आकृतिर्लक्षणं, चिह्नं, संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

लिङ्गग्राह्यम्–शा. १–६२. अनुमानग्राह्यम् ।

लीनम्–सि. १–८. श्लिष्टम् ।

लेखनम्–चि. २३–१७१. व्रणलेखनम् ।

लेखनीयः–चि. २३–१७१. तृतीयो महाकषायः, लिखति इति लेखनीयः,

लेपः–चि. ७–१२२. लिम्पति इति लेपः । लेपस्य द्वौ भेदौ–आलेपः प्रदेहश्च । तयोरालेपः आर्द्रमाहिषचर्मवत् शीतलः तनुर्विशोषी च। प्रदेहः आर्द्रः घनः उष्णश्चेति ।

लेपज्वरः–इ. ८–२४. स्वल्पशीतयुक्तः कफज्वरः ।

लेपनम्–सू. २५–४०. लेपः ।

लेलीतकः–चि. ७–७०. पाषाणभेद औत्तरापथिकः, उच्यते हि निघण्टौ " आसीद्दैत्यो महाबाहुर्लेलिहानो महासुरः । योजनानां त्रयस्त्रिंशत् कायेनाच्छाद्य तिष्ठति । विष्णुचक्रेण संछिन्नो पपात धरणीतले । वसा तस्य समाख्याता लेलीतक इति क्षितौ" इत्यादि ।

लेहः–चि. ६–४७. लिह्यते इति लेहः, नातिद्रवो नातिघन औषधकल्पभेदः ।

लोम–इ. ३–६. रोम ।

लोमकूपः–सू २८–४. रोमकूपः ।

लोमहर्षः–चि. ७–११. रोमहर्षः ।

लौकिकः–सू. २८–३८. अपरीक्षकः, रजोमोहावृतात्मा, अयथार्थदर्शी ।

लौल्यम्–सू.२५–४०. चाञ्चल्यम्, चलचित्तता, लोलुपता ।

वक्त्रम्–इ. ८–१७. मुखम् ।

वक्री–शा. २–३०. मातुर्व्यवायप्रतिघेन वक्री स्याद्बीजदौर्बल्यतया पितुश्च । मातुर्व्यवायप्रतिघेनेति व्यवायकाले मातुर्व्यवायानिच्छा विषमाङ्गन्यासो वा व्यवायप्रतिघः तेन यस्य शुक्रं गर्भाशयं नियमान्नोपैति स वक्रीत्युच्यते । बीजदौर्बल्यतया च पितुर्वक्री स्यादिति योजना । अत्र दुर्बलस्य कर्म दौर्बल्यं तस्य भावो दौर्बल्यता तेन पितुर्बीजस्य दुर्बलक्रियतयेत्यर्थः । (चक्रः)

वङ्क्षणः–इ ३–५. ऊरुसन्धिः । (श. क.)

वदनम्–इ. १–१२. मुखम् ।

वनस्पतिः–सू. १–७१. फलैर्वनस्पतिः । फलैर्वनस्पतिरिति बिना पुष्पैः फलैर्युक्ता वटोदुम्बरादयः । यदुक्तं हारीते "तेषामपुष्पाः फलिनो वनस्पतय इति स्मृताः" इति । (चक्रः)

वपावहनम्–वि–५–८, मेदःस्थानम् । वपा उदरस्था स्निग्धवर्तिका यामाहुर्जनास्तैलवर्तिकेति ।

वमनम्–सू.–१–८४ छर्दनम्, तत्र दोषहरणमूर्ध्वभागं वमनसंज्ञकम् । १७–१७

वमनोपगः–सू. ४–१३ | १३. वमने छर्दनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छतीति वमनोपगः । त्रयोविंशतितमो महाकषायः ।

वमिः–सि. ६–५३ प्रच्छर्दिका । (श. क.)

वयः–वि–१–३. आयुषोऽवस्थाविभागः, बाल्यादि ।

वयः–वि–८–१२२ वयस्तश्चेति कालप्रमाणविशेषापेक्षिणी हि शरीरावस्था वयोऽभिधीयते ।

वयःस्थापनः–सू. ४–१८ | ५० वयस्तरुणं स्थापयति इति । (श. द.) पञ्चाशत्तमो महाकषायः ।

वर्चोभेदः–चि. ८–१७. अतिपुरीषप्रवृत्तिः ।

वर्चोवाहीनि–वि. ५–२१, वर्चः पुरीषं वहन्ति इति वर्चोवाहीनि

वर्जनीयः–सि. १–४. अचिकित्स्यः ।

वर्ज्यम्–चि–३–३३३ निषिद्धम्, त्याज्यम् ।

वर्णः–इ. १–३. श्वेतरक्तादिवर्णः; वर्णशब्देन च वर्णसहचरिताश्चक्षुर्ग्राह्या रौक्ष्यादयोऽपि गृह्यन्ते अत एव वर्णप्रस्ताव एव वक्ष्यति–यत् "वर्णग्रहणेन ग्लानिहर्षरौक्ष्यस्नेहा व्याख्याताः" इति

वर्णकः–चि. ७–९२. वर्णकरमालेपनम्, रञ्जनचूर्णम् ।

वर्णनाशः–चि. ४–२७. रङ्गनाशः ।

वर्ण्यः–सू.४–१० | ८. वर्णाय हितः; अष्टमो महाकषायः ।

वर्तः–सू. २०–१२. वर्तुलीकरणम् ।

वर्तिः–सू. ५–२३. धूमवर्तिः ।

वर्तिः–सू. ७–९; वि. २–१३. फलवर्तिः—पिष्टैर्मदनफलादिभिर्यवाकाराऽङ्गुष्ठमात्रा शलाकाकारेण वर्तिता औषधपिष्टिः ।

वर्तिकाः–चि. २–२–१२. वर्त्याकाराः भक्ष्याः ।

वर्तिक्रिया–क १–१. वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन क्वाथेन पाकाद्वर्त्याकारता कर्तव्या ।

वर्त्म–इ. ८–५. नयनगोलकावरकं निमेषोन्मेषाश्रयं पटलद्वयं वर्त्म उच्यते ।

वली–सि. ३–२५. गुदवली, त्वक्सङ्कोचजन्यो निम्नोन्नतरूपो भङ्गीविशेषः ।

वशी–शा. १–७. स्वेच्छाधीनप्रवृत्तिः ।

वश्या–चि. २–१ | ८. आयत्ता ।

वसा–सू. १–६८. मांसप्रभवधातुविशेषः (ब्र-क.) शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्तिता ॥ (सु. शा. ४)

वाक्यशः–सू. ३०–१७. तन्त्रमार्षं कात्स्न्येन यथाम्नायमुच्यमानं वाक्यशो भवत्युक्तम् ।

वाक्यशेषः–सि. १२–४२. यल्लाघवार्थमाचार्येण वाक्येषु पदमकृतं गम्यमानतया पूर्यते ।

वाक्यार्थशः–सू. ३०–१८. बुद्धया सम्यगनुप्रविश्यार्थतत्त्वं वाग्भिर्व्याससमासप्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनयुक्ताभिस्त्रिविधशिष्यबुद्धिगम्याभिरुच्यमानं वाक्यार्थशो भवत्युक्तम् ।

वाजीकरणम्–सू. ३०–२८; चि.२–४/५१. वाजीकरणमिति अवाजिनं वाजिनं कुर्वन्त्यनेनेति वाजीकरणं, येन वात्यर्थं व्यज्यते स्त्रीषु शुक्रं तद्वाजीकरणम् । अन्ये तु वाजो वेगः प्रस्तावाच्छुक्रस्य, स विद्यते येषां ते वाजिनः ते क्रियन्तेऽनेनेति वाजीकरणमित्याहुः । किंवा वाजः शुक्रं सोऽस्यास्तीति वाजी अवाजी वाजी क्रियते येन तद्वाजीकरणम् । किंवा वाजो मैथुनम् उक्तं हि हारीते "वाजो नाम प्रकाशस्वात्तच्च मैथुनसंज्ञितम् । वाजीकरणसञ्ज्ञाभिः पुंस्त्वमेव प्रचक्षते "—इति शिवदासेन: । यस्माद् द्रव्याद् भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं हि तत् । यथाश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी ॥ (व. द.) येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः व्रजेच्चाभ्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत ॥

वाट्य–चि. ५–९८. क्षुण्णशुष्कयवौदनः ।

वातः–सू. १–८८. वाति गच्छति इति वातः, सदागतिः समीरणः ।

वातकण्टकः–सू. १४–१३. गुल्फाश्रितो वातः; रुक् पादे विषमे न्यस्ते श्रमाद्वा जायते तदा । वातेन गुल्फमाश्रित्य तमाहुर्वातकण्टकम् ॥ (अ. हृ. नि. १५–५३)

वातबलासः–चि. २९–११. वातस्यावरणेन बलमस्त्यस्मिन् शोणिते इति वातबलासः ।

वातप्रकृतिः–वि. ६–१३. वातप्रधाना प्रकृतिः स्वभावः यस्य सः इति वातप्रकृतिः ।

वातयन्त्रम्–चि. २४–१५८. वायुसंचारार्थं यन्त्रम् ।

वातलः–सि. ५–६. वातदुष्टः ।

वातविकाराः–सि. ४–७. वातजनिता रोगविशेषाः ।

वातवेगः–सि. ३–२५. वायुवेगः ।

वातिकषण्डः–शा. २–१७. वाय्वग्निदोषाद् वृषणौ तु यस्य नाशं गतौ स वातिकषण्डः।

वादः–सू. २५–२७; वि. ८–२८. तत्र वादो नाम स यत् परेण सह शास्त्रपूर्वकं विगृह्य कथयति।

वानस्पत्यः–सू. १–७१. "पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि" इति पुष्पानन्तरं फलभाज इत्यर्थः। (चक्रः)

वायुः–सू. १–५७. वातः।

वारुणीमण्डः–चि. ५–९२. सुरामण्डः। (श. क.)

वारुण्याः प्रसादः–चि.८–६९. सुराप्रसादः। (श. क.)

वार्तलक्षणम्–सू. २५–४०. आरोग्यलक्षणम्।

वार्ता–शा. ४–३०. स्त्र्याकृतिभूयिष्ठा अस्त्री इति स्त्रीषण्डविशेषः; असंपूर्णस्त्रीलक्षणां वार्तां नामेति वार्तासंज्ञा शास्त्रसमयकृता। (चक्रः)

विकल्पः–वि. १–३. समवेतानां पुनर्दोषाणामंशांशबलविकल्पः।

विकल्पनम्–सि. १२–४४. पाक्षिकाभिधानं यथा– "सारोदकं वाऽथ कुशोदकं वा" (चि. अ. ६) इत्यादि।

विकल्पना–सि. ११–२३. विशेषकल्पना।

विकारः–सू. ९–४. धातुवैषम्यम्।

विकासि–चि. २३–२४. हिंसनशीलं, विपूर्वो हि कसति हिंसार्थः। विकाशी विकसन्नेवं धातुबन्धान् विमोक्षयेत्। व.द.) सन्धिबन्धांस्तु शिथिलान् यत् करोति विकासि तत्। विशोष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्रवौ॥ (व. द.)

विकृतिः–इ. १–३. विकारः

विक्षेपः–सि. १–३९. वियोगः।

विगन्धः–सि. ३–११. विगतः पूतिगन्धो यस्य सः विगन्धः।

विगीतिः–चि. ६–४. विरुद्धा गीतिः विगीतिः विरुद्धभाषणमित्यर्थः।

विगुणः–सि. ९–३९. गुणवैपरीत्यविशिष्टः। (श. क.)

विगृह्यसंभाषा–वि. ८–१८. जल्पवितण्डारूपा संभाषा

विघातः–सि. ११–१७. प्रकोपकहेतुनाऽसंबन्धः।

विचर्चिका–चि. ७–१३. क्षुद्रकुष्ठभेदः। तल्लक्षणम्– राज्योऽतिकण्ड्वर्तिरुजः सरूक्षा भवन्ति गात्रेषु विचर्चिकायाम्। (सु. नि. ५–१३)। (वै. श.)

विचारः–सू. २६–९. विचारणा, द्रव्यान्तरसंयोगः।

विचारणा–सू. १३–४. द्रव्यान्तरसंयुक्तस्नेहपानं वर्जयित्वा स्नेहोपयोगः।

विज्जलम्–वि. ८–१६. पिच्छलम्।

विज्ञानानि–इ. ९–२३. लक्षणानि, नयनादिवैकृतानि।

विज्ञानम्–शा. १–४०. शास्त्रार्थज्ञानम्।

विज्ञानम्–सू. २५–७३. विज्ञायते अनेन इति विज्ञानं लक्षणमित्यर्थः।

विट्–सि. ६–४५. पुरीषम्।

विड्भेदः–चि. ८–२६. पुरीषभेदः।

वितण्डा–वि. ८–२८. जल्पविपर्ययो वितण्डा। वितण्डा नाम परपक्षे दोषवचनमात्रमेव॥ परपक्षे दोषवचनमात्रमित्यनेन नस्वपक्षसाधनवचनं वैतण्डिकस्येति दर्शयति। (चक्रः)

वित्रासनम्–शा. ८–६४. भयदानम्।

विद्रधिः–सू. १७–९५. दुष्टरक्तातिमात्रत्वात्

स वै क्षीघ्रं विदह्यते। ततः शीघ्रविदाहित्वाद् विदहीत्यभिधीयते ॥

विदाहः–चि. २४–१४४. हृदये दाहः।

विदाहि–सू. २७–२९३. विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लं कुर्यात्तथा तृषाम्। हृदि दाहश्च जनयेत् पाकं गच्छति तच्चिरात्॥ (व. द.)

विधानम्–वि. १२–४३. विधानं नाम सूत्रकारश्च विधाय वर्णयति; यथा–" मलायनानि बाध्यन्ते दुष्टैर्मात्राधिकैर्मलैः इत्यत्र दुष्टिशब्देन मलानां हीनत्वमधिकत्वमाचार्यगृहीतमाचार्यो वर्णयति– "मलवृद्धिं गुरुतया लाघवान्मलसंक्षयम्। मलायनानां बुध्येत संगोत्सर्गादतीव च" (सू. अ. ७) इति। (चक्रः)

विधारणम्–सि. ९–२९. वेगनिरोधः।

विनता–सू. १७–८९. अवगाढरुजाक्लेदा पृष्ठे वाऽप्युदरेऽपि वा। महती विनता नीला पिडका विनता मता॥

विनिमित्तानि–इ. ४–१७. विगतनिमित्तानि।

विनिर्मथ्य–सि. ६–७८. क्षोभयित्वा।

विपत्–सू. २५–२९. वैगुण्यम्।

विपर्ययः–वि. १२–४३. अपकृष्टात् प्रतीपोदाहरणम्।

विपाकः–सू. २६–६६. विपाकः कर्मनिष्ठया। कर्मनिष्ठयेति कर्मणो निष्ठा निष्पत्तिः कर्मनिष्ठा क्रियासमाप्तिः, रसोपयोगे सति योऽन्त्याहारपरिणामकृतः कर्मविशेषः कफशुक्रादिवृद्ध्यादिलक्षणः, तेन विपाको निश्चीयते। विपाकस्तु नित्यपरोक्षः, तत्कार्येणानुमीयते (चक्रः)। जाठरेणाग्निना योगाद् यद् यदेति रसान्तरम्। रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः। (व. द.)

विपाटनम्–चि. १३–२५. दारणम्।

विपादिका–चि. ७–२९. कुष्ठभेदः

विप्लुतः–सि. ८–३. व्यापन्नः

विबद्धः–चि. २४–६३. विबन्धवान्।

विबद्धः दोषः–चि. ३–१०९. अत्र दोषशब्दो विबद्धोपपदान्मले वर्तते। (चक्रः)

विबन्धः–चि. ४–४९. आनाहरोगः

विभ्रंशः–सू. १५–१३. प्रातिलोम्येन गमनम्।

विभ्रंशः–सि. ६–३९. विपरीतप्रवृत्तिसामर्थ्यम्।

विमलम्–सू. २७–११८. निर्मलम्।

विमूर्छिताः–सि. ९–७१. स्थिताः।

वियोगः–सू. ११–१२. भूतानामात्मनो वियोगः, मरणम्।

वियोनिः–इ. २–१६. निर्हेतुकः।

विरजनीयः–सू. २५–४०. विरजं दोषसम्बन्धनिरासं करोति इति सः।

विरसः–इ. २–२१. अनिष्टरसः।

विरुद्धाशनम्–वि. २–८ विपरीत आहारः।

विरुद्धयोनयः–इ. ६–२२. परस्परविरुद्धधर्माणः।

विरूक्षणम्–चि. ५–१८. रूक्षीकरणम्

विरूक्षस्वेदः–सि. ७–१६. स्नेहरहितः स्वेदः।

विरेक–सू. ७–१५. मलभेदः। (श. क.)

विरेचनम्–सू. १–८०. विरेकः।

विरेचनोपगानि–सू. ४–१३ | २४ इमानि द्रव्याणि विरेचनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छन्ति।

विलङ्घितः–सि. ६–५७. कृतलङ्घनः।

विलयेत्–चि. १२–८२. विम्लापनं कुर्यात् । विम्लापनम् अङ्गुल्यादिमर्दनेन शोफविलयनम् । (सु. चि. अ. १–२२. डल्हणः)

विलेपनम्–च. ६–५० गात्रानुलेपनम् ।

विलेपिका–सू. २७–२५१ विरलद्रवा यवागूः ।

विलेपी–नि. ४–५ यवागूः ।

विवर्णम्–इ. ४–१७ विरुद्धवर्णम्

विवृता–इ. ८–११, निर्गता ।

विशदः–सू. २६–११ पिच्छिलविपरीतः । विशदो विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषणरोपणः । (व. द.)

विशिरा–इ ७–५ शिरोविरहिता ।

विशुद्धं शोणितम् सू. २४–२२, २४ तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तकसन्निभम् । गुञ्जाफलसवर्णञ्च विशुद्धं विद्धि शोणितम् ॥

विशेषः–सू. १–२८–४४, ४५ विशिष्यते व्यावर्तत इति विशेषः पृथक्त्वकृत् ।

विशोधनम–सू. २७–१३१ विशुद्धिकारकम् ।

विश्लेषः–इ. १२–५१. पृथग्भावः अयोगः (श. क.)

विषम्–चि. २३–३ गरलम् (श. क.)

विषगरवैरोधिकप्रशमनम्–सू. ३०–२८. विषं गरलम्, गरः कालान्तरप्रकोपि विषम्, वैरोधिकं संयोगविरुद्धम्, तेषां प्रशमनमगदतन्त्रम् ।

विषण्णम्–चि. २३–५ खिन्नम्

विषघ्नः–सू. ४–८. विषनाशकः षोडशः कषायवर्गः ।

विषमक्रियत्वम्–चि. ६–७ विषमक्रियत्वमिति पित्तस्य संशमनचिकित्सायाः कट्वादिरूपाया विषमत्वम् ।

विषमज्वरः–चि. ३–७३. दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः । धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥ (मा. नि.)

विषमाग्निः–वि. ६–१२, चि–१३–१३६. समलक्षणविपरीतलक्षणस्तुविषम इति ॥

विषमाशनम्–चि. १५–४२, २३६. विषमं बहु वाऽल्पं वाऽप्यप्राप्तातीतकालयोः भोजनम्; बहुस्तोकमकाले वा तज्ज्ञेय विषमाशनम् ॥ (सु. सू. ४६–५०८.)

विषमाहारः–वि. ६–१३ विषमाशनम् ।

विषादः–सू. २५–४०. खेदः ।

विषाधानम्–चि. १३–४२. विषस्य प्रसारकम् ।

विष्किराः–चि. १२–१८ | ४ विकीर्य भक्षयन्ति इति ।

विष्टम्भः–चि. १४–२१ अप्रचलत्वम् ।

विष्यन्दनम्–सू. २८–३३ विलयनम् ।

विसर्गः–चि. ३–५९. परित्यागः ।

विसर्गः–सू. ६.–४. विसृजति जनयति आप्यमंशं प्राणिनां च बलमिति विसर्गः ।

विसर्पः–चि २१–११. विविधं सर्पतीति अथ उर्ध्वं तिर्यक् तथास्फटशोफादिभिः प्रसरतीति विसर्पः ।

विसर्पिणी जिह्वा–इ. ८–१४. बहिर्निर्गता जिह्वा ।

विसूचिका–वि. २–११. विविधैर्वेदनोद्भेदैर्वाय्वादिभृशकोपतः । सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति विसूचिका ॥ (अ. सं. सू. ११)

विस्फोटकम्–चि. ७–१३. विस्फोटकं नाम कुष्ठं तनुत्वग्भिः श्वेतलोहितैः स्फोटैर्व्याप्तम् ।

विस्मापनम्–चि. १७–१३७. विस्मयजननम् ।

विस्रगन्धि–चि. १४–१४. पूतिगन्धम्, आमगन्धम् ।

विस्रत्वम्-सि. ५-७. आमगन्धता ।

विहारः-शा. २-२९. गमनभ्रमणादिशारीरचेष्टा ।

वीतीभावः-इ. ३-४. अतिक्षीणत्वम् ।

वीर्यम्-सू. २६-६४. मृदुतीक्ष्णगुरुलघुस्निग्धरूक्षोष्ण-शीतलम् । वीर्यमष्टविधं केचित्, केचिद् द्विविधमास्थिताः ॥ शीतोष्णमिति, एतच्चकीयमतद्वयं पारिभाषिकीं वीर्यसंज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तम् । वैद्यके हि रसविपाकप्रभावव्यतिरिक्ते प्रभूतकार्यकारिणि गुणे वीर्यमिति संज्ञा, तेनाष्टविधवीर्यवादिमते पिच्छिलविशदादयो गुणा न रसादिविपरीतं कार्यं प्रायः कुर्वन्ति, तेन तेषां रसाद्युपदेशेनैव ग्रहणं; मृद्वादीनां तु रसाद्यभिभावकत्वमस्ति, यथा – पिप्पल्यां कटुरसकार्ये पित्त-कोपनमभिभूय तद्गते मृदु शीतवीर्ये पित्तमेव शमयत इति, तथा कषाये तिक्तातुरसे महति पञ्चमूले तत्कार्यं वातकोप-नमभिभूयोष्णेन वीर्येण तद्विरुद्धं वातशमनमेव क्रियते, तथा मधुरेऽपीक्षौ शीतवीर्यत्वेन वातवृद्धिरित्यादि यदुक्तं सुश्रुते-"एतानि खलु वीर्याणि स्वबलगुणोत्कर्षाद्रसमभिभूया-त्मकर्म दर्शयन्ति" (सु. सू. अ. ४०.) इत्यादि । एतच्च मतद्वयमप्याचार्यस्य परिभाषासिद्धमनुमतमेव, येनोत्तरत्र "रस-वीर्यविपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते" इत्यादौ पारिभाषिकमेव वीर्यं निर्देक्ष्यति । (चक्रः)

वीर्यम्-सू. २६-६५. वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया । नावीर्यं कुरुते किञ्चित् सर्वा वीर्यकृता क्रिया ॥ पारिभाषिकवीर्यसंज्ञापरित्यागेन तु शक्तिपर्यायस्य वीर्यस्य लक्षणमाह-वीर्यन्त्वित्यादि । वीर्यमिति शक्तिः । येनेति रसेन वा विपाकेन वा प्रभावेण वा गुर्वादिपरादिभिर्वा गुणैर्या क्रिया तर्पणह्लादनशमनादिरूपा क्रियते, तस्यां क्रियायां तद्रसादि वीर्यम् । अत एवोक्तं सुश्रुते-"येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम्" (सु. सू. अ. ४०.) इति अत्रैव लोक-प्रसिद्धामुपपत्तिमाह-नावीर्यमित्यादि । अवीर्यम् अशक्त-मित्यर्थः । वीर्यकृतेति वीर्यवता कृता वीर्यकृता । (चक्रः)

वीर्यम्-सू. २६-६६. वीर्यं यावदधीवासान्नि-पाताच्चोपलभ्यते ॥ अधीवासः सहावस्थानं, यावदधी-वासादितियावच्छरीरनिवासात् । निपाताच्चेति शरीरसंयोग-मात्रात्; तेन किञ्चिद्वीर्यमधीवासादुपलभ्यते, यथा-अनूप-मांसादेरुष्णत्वं, किञ्चिच्च निपातादेव लभ्यते, यथा मरीचादीनां तीक्ष्णत्वादि; किञ्चिच्च निपाताधीवासाभ्यां, यथा मरीचादीनामेव । वीर्यं तु किञ्चिदनुमानेन, यथा सैन्धवगतं शैत्यमानूपमांसगतं वा औष्ण्यं, किञ्चिच्च वीर्यं प्रत्यक्षेणैव यथा राजिकागतं तैक्ष्ण्यं घ्राणेन, पिच्छिल-विशदस्निग्धरूक्षादयः चक्षुःस्पर्शनाभ्यां निश्चीयन्त इति वाक्यार्थः । एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयम् । एत-च्च वीर्यलक्षणं पारिभाषिकवीर्यविषयमेव (चक्रः)। एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयं; तत्राद्यं माषाणां गौरवं मुद्गानां लाघवमित्यादि, कृत्रिमं तु लाजादीनां लघुत्वमित्यर्थः ' इति शिवदाससेनः ।

वीरुधः-सू. १-७१. प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः ।

वृक्कौ-शा. ७-१०. भाषायां 'गुर्दे, इति आङ्गलभा-षायां च 'किड्निझ्, इति ख्यातौ ।

वृत्तः-चि. २१-३९. वर्तुलः ।

वृत्तिः-सि. ७-४२. पेयादिक्रमः ।

वृषः-चि. २/४-७. वीर्यपुंस्त्वशक्तिसम्पन्नः ।

वृषणौ-वि. ५-८ अण्डकोषौ ।

वृषता-चि. २/४-२४ वीर्यपुंस्त्वशक्तिसंपन्नत्वम् ।

वृष्यम्-चि. ३०-६७ वाजीकरम् (श. क.)

व्रणः-चि. २५-४ वृणोति यस्माद् रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति । आदेहधारणात्तस्माद् व्रणइत्युच्यते बुधैः (सु. सू. अ. २१)

वेगधारणम्-सू. ११-३८ वेगनिरोधः ।

वेगनिग्रहः-सि. ६-७१ वेगविधारणम् ।

वेगप्रतिघातः-चि. ८-२१ वेगसंधारणम् ।

वेगोदीरणम् सू. ११-३८ अप्राप्तवेगप्रवर्तनम् ।

वैणिका-चि. २३-३८. रज्जुः ।

वेदः-सू. ३०-२०. आयुर्वेदः ।

वेदनास्थापनः सू. ४-१८ | ४७ सप्तचत्वारिंशत्तमो महाकषायः । वेदनायां सम्भूतायां तां निहत्य शरीरं प्रकृतौ स्थापयति इति (व. द.)

वेपनम्-सि. ३-१९. वेपथुः ।

वेशवारः-सू. २७-२६९. मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम् पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम् ॥ ऐकध्यं विपचेत्सम्यग्वेशवार इति स्मृतः ॥

वेष्टनम्-सि. ४-२८. पार्श्ववेष्टनम् ।

वैकृतम्-चि. ३-२९. अन्यथात्वम् ।

वैगन्ध्यम्-सू. ९९-४ | १ विकृतगन्धता, अनिष्टगन्धता च ।

वैगुण्यम्-सि. ६-३०. गुणानां न्यूनता ।

वैद्यवृत्तिः-सू. ९-२६. मैत्रीकारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम् । प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥

वैपादिकम् (विपादिका)- चि. ७-२२. चतुर्थं क्षुद्रकुष्ठम्, वैपादिकं पाणिपादस्फुटनं तीव्रवेदनम् ॥

वैरस्यम्-सू. १९-४ | १ विरसता।

वैरेचनिकाः धूमाः-चि. ७-४९. शीर्षविरेचनार्था धूमाः । सूत्रस्थाने यद्यपि एक एव वैरेचनिको धूम उक्तस्तथापि तत्रोक्तद्रव्यैर्व्यस्तसमस्तैर्बहवो धूमा भवन्तीति बहुवचनमिह कृतम् । (चक्रः)

वंशः-सू. १४-३१ वेणुः ।

व्यक्तिदर्शकः-वि. २४-७३. आकारदर्शकः ।

व्यञ्जनम्-नि. १-९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

व्यत्यासः-वि. १७-१३४ विपर्यासः ।

व्यथनम्-नि. ८-६ व्यथा ।

व्यधः-सू. २८-४ व्यधनम् ।

व्यधनम् सू. ११-५५ व्यधः ।

व्यपदेशः सू. ११-५२ अन्यसम्बन्धेन कीर्तनम् ।

व्यपायः-चि. २६-३९ मूत्रमार्गापगमः ।

व्यवसायः-चि. ४-८ प्रवृत्तिः ।

व्यवायः-सू. ६-३६. मैथुनम् ।

व्यवायि-चि. २३-२६. क. १-५. शीघ्रं व्यवायिभावादाशु व्याप्नोति केवलं देहम्; व्यवायित्वं सर्वतः प्रसरणशीलत्वं पानीयपतिततैलवत्; पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति । व्यवायि तद् यथा भङ्गा फेनं चाहिसमुद्भवम् ॥ (व. द.)

व्यसनम्-इ. १२-२७. वस्त्रादीनां यत् स्फुटनादि ।

व्यसनी-इ. १२-२७. व्यङ्गः कलहवान् वा ।

व्यस्तानि-इ. ३-५. पृथग्भूतानि ।

व्याकृतीनि-इ. ४-१७. विविधाकृतीनि ।

व्याख्यानम्-सि. १२-४३. यत्सर्वबुद्धयविषयं व्याक्रियते, यथा " प्रथमे मासि संमूर्छितः सर्वधातुकलुषीकृतः खेटभूतो भवत्यव्यक्तविग्रहः " (शा. अ. ४.) इत्यादिनाऽस्मदाद्यविदितार्थव्याकरणम् (चक्रः)

व्याधिः-नि. १-५. विविधं दुःखमादधातीति ।

व्यानः-चि. १५-३६. शरीरस्थपञ्चवाय्वन्तर्गतसर्वशरीरगवायुः (श. क.)

व्यापत्-सू. २५-४०. रोगः ।

व्यायामः-शा. ८-४५. विस्तारः ।

व्याविद्धः-सि. ९-३९. वक्री ।

व्यासः–सू. २०–१२. विस्तरणम् ।

शकृद्ग्रहः–सि. ७–८. पुरीषाप्रवृत्तिः ।

शक्तुः–चि. २१–१३०. भर्जितयवादिचूर्णम् (श. क.)

शतारुः–चि. ७–१३. दशमं क्षुद्रकुष्ठम् ; रक्तं श्यावं सदाहार्ति शतारुः स्याद् बहुव्रणम् । (श. क.)

शब्दः–इ. ११–५८. नादः

शब्दश्रवौ–इ. ८–१२. कर्णौ ।

शमः–शि. १–५. शान्तिः ।

शमनम्–चि. ३–२७२. कषायसर्पिःपानादि; न शोधयति यद् दोषान् समान्नोदीरयत्यपि । समीकरोति संवृद्धान् शमनं तद् यथामृता ॥ (व. द.)

शमीधान्यम्–सू. २७–६. माषादि । (श. क.)

शराविका–सू. १७–८४. अन्तोन्नता मध्यनिम्ना श्यावा क्लेदरुगन्विता । शराविका स्यात् पिडका शरावाकृतिसंस्थिता ॥

शरीरान्ताः–इ. ९. ६. हस्तपादादयः ।

शर्करा–इ. ३–६. मलो दन्तगतो यस्तु पित्तमारुतशोषितः । शर्करेव खरस्पर्शो सा ज्ञेया दन्तशर्करा ॥ (मा. नि.)

शर्म–सू. १–२९. सुखम्

शल्यम्–चि. २५–१०६. न केवलं काष्ठतृणादि शल्यं, किन्तु "अतिप्रवृद्धं मलदोषजं वा शरीरिणां स्थावरजङ्गमानाम् । यत्किंचिदाबाधकरं शरीरे तत् सर्वमेव प्रवदन्ति शल्यम्" इति । (सु. सू. १–८/१. डल्हणः)

शल्यापहर्तृकम्–सू. ३०–२८. शल्योद्धरणकर्तृकम् ।

शष्कुली–क. १–२९. पिष्टकविशेषः । (वै. श.)

शस्त्रकर्म–सू. १–९१. शस्त्रनिर्वर्त्यं कर्म छेदनादि (वै. श.)

शस्त्रप्रणिधानम्–सू. ११–५५. शस्त्रावचारणम्— छेदनभेदनव्यधनदारणलेखनोत्पाटनप्रच्छनसीवनैषणक्षारजलौकसश्चेति ।

शस्त्रम्–चि. २६–२७२. कृष्णं लोहम् । (चक्रः)

शस्यानि–चि. १–१ | ३७. अस्थिरहितानि फलानि । (चक्रः)

शाखा–सू. ३०–३१. तत्रायुर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं लक्षणं तन्त्रमित्यनर्थान्तरम् ।

शाखा–सि. ९–३. शाखाशब्देन चेह शाखा इव शाखेति कृत्वा बाहुद्वयं जङ्घाद्वयं चोच्यते । नेह शाखाशब्देन रक्तादिधातूनां ग्रहणं, रक्तादिधातूनां स्कन्धेऽपि विद्यमानत्वात् । (चक्रः)

शाखा–सू. ११–४८; १७–११२. रक्तादयो धातवस्त्वक् च, स बाह्यो रोगमार्गः ।

शाणः–क. १२–८९. त्रयो माषकाः । (चक्रः)

शान्ताग्निम्– चि. ७–३७. नष्टाग्निम् ।

शारीरः–चि. ७–३६. शरीरजातः ।

शार्करः–सू. २७–१८३. शर्कराप्रकृतिक आसवः । (चक्रः)

शालाक्यम्– सू. ३०–२८. पटलवेधशलाकाप्रधानमङ्गं शालाक्यम् । (चक्रः); शालाक्यं नामोर्ध्वजत्रुगतानां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम् । (सु. १–८ । २); शलाका पटलवेधनी, तस्याः कर्म शालाक्यं; ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्, शालाक्यप्रधानमङ्गं शालाक्यम् । एतेन शिरोरोगप्रतीकारस्यापि ग्रहणं, प्राधान्यं च शालाक्यस्य प्रधानचक्षुर्विषयतया । (शिवदाससेनः)

शालाक्यतन्त्रम्–चि. २६–१२३. शलाकाविषयमधिकृत्य कृतं शास्त्रम् ।

शास्त्रम्–सू. ३०–३१. आयुर्वेदः ।

शास्त्रवादः–सू. ११–२७. शास्त्ररूपो वादः ।

शिरः–सू. १७–१२. प्राणाः प्राणभृतां यत्र श्रिताः सर्वेन्द्रियाणि च । यदुत्तमाङ्गमङ्गानां शिरस्तदभिधीयते ॥

शिरःशूलम्–चि. ८–१६. शिरोरोगः (वै. श.)

शिरोधरा–सू. १७–२१. ग्रीवा ।

शिरोबस्तिः–सि. ९–७८. आशिरोव्यायतं चर्म कृत्वाऽष्टाङ्गुलमुच्छ्रितम् । तेनावेष्ट्य शिरोऽधस्तान्माषकल्केन लेपयेत् ॥ निश्चलस्योपविष्टस्य तैलैः कोष्णैः प्रपूरयेत् । धारयेदारुजः शान्त्यै यामं यामार्धमेव वा ॥ शिरोबस्तिर्हरत्येष शिरोरोगं मरुद्भवम् । (चक्रः)। शिरोबस्तिश्चर्मणः स्यादूर्ध्वमुखो द्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणस्तं बद्ध्वा मस्तके माषपिष्टकैः । सन्धिरोधं विधायाशु स्नेहैः कोष्णैः प्रपूरयेत् । तावद् धार्यस्तु यावत् स्यात् नासाकर्णमुखस्रुतिः ॥ (व. द.)

शिरोरुक्–चि. ८–२५. शिरोरुजा ।

शिरोरुहाः– इ. ८–१८ केशाः ।

शिरोविरेकः–सि. ९–७३. शिरोविरेचनम् , नस्यभेदः ।

शिरोविरेचनम्–सि. ९–७७. शिरोविरेकः ।

शिरोविरेचनोपगः–सू. ४–८. शिरोविरेचनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छतीति; सप्तविंशतितमो महाकषायः ।

शिशिरज्वरः–चि. ३–२७०. शीतज्वरः । (श.क.)

शीघ्रकारित्वम्– चि. ३–५५. शीघ्रं करोति इति शीघ्रकारी तस्य भावः शीघ्रकारित्वम् ; स शीघ्रं शीघ्रकारित्वात् प्रशमं याति हन्ति वा ।

शीतः–सू ४–७. द्रव्यादापोथितात्तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात् । कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः ॥

शीतकषायः–चि, ३–१९७. द्रव्यं संक्षुण्णमुष्णोदके प्रक्षिप्य निशास्थितम् । शीतः शर्वरीमुषितो मतः । (व. द.)

शीतज्वरः– चि. ३–२६७. शिशिरज्वरः

शीतप्रशमनः–सू. ४–८. शीतं प्रशमयति इति; द्विचत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

शीतरसः–चि. ७–४४. शीतकषायः ।

शीतरसिकः–सू. २७–१८५. शीतेक्षुरसकृतः अरिष्टः ।

शीतलम्–सू. २७–११०. शीतम् ।

शीताङ्गः–चि. ३–३२५. शीतसर्वाङ्गः ।

शीधुः–चि. ८–१४० शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् ॥ (व. द.)

शीलम्–वि. ४–८. वस्तुषु सहजो रागः ।

शीर्षविरेचनम्–सि. ९–१७. शिरोविरेचनम् ।

शुक्तम्–चि. २९–६. यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (च. चि. २६–२२७ चक्रः) गुडमाक्षिकधान्याम्लमस्त्वम्बु- द्विगुणं क्रमात् । शंसन्ति चुक्रसिद्ध्यर्थं किंचित् त्रिमधुकान्वितम्॥ (वै. श.)

शुक्तिः–क. १२–१६. द्वे सुवर्णे पलार्धं स्याच्छुक्तिरष्टमिका तथा ।

शुक्रम्–चि. १५–१६. रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च । अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रं शुक्राद् गर्भः प्रसादजः ॥

शुक्रम्–चि. ३०–१३३. बीजं यस्मात् व्यवाये तु हर्षयोनिसमुत्थितम् । शुक्रं पौरुषमित्युक्तं, तत् स्त्रीपुरुषसंयोगे चेष्टासंकल्पपीडनात् शुक्रं प्रच्यवते स्थानाज्जलमार्द्रात्पटादिव । (चि. २–४/४७.) चरतो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यं यदुच्यते (चि. २–८/८९.)

शुक्रजननः–सू ४–८. शुक्रोत्पादक एकोनविंशो महाकषायः ।

शुक्रदोषः–चि. ३०–१२९. वीर्यदोषः ।

शुक्रलः–सू. २७ ६५. शुक्रवृद्धिकरः; यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्रलं हि तदुच्यते। यथा नागबलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्॥ (व. द.)

शुक्रवाहिनी नाडी सि. ९–४ शुक्रवहस्रोतः।

शुक्रवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–९९. शुक्रप्रापण्यो नाड्यः।

शुक्रशोधनः–सू–४–८ शुक्रं शोधयति विमलीकरोति यः सः विंशो महाकषायः।

शुक्रसारः–वि. ८–१०९, शुक्रं वीर्यापरनामकः सप्तमो धातुः सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो यस्मिन्सः।

शुक्राशयः–चि. २१–७२. वीर्याशयः।

शुद्धिः–सू. २८–२८. शोधनम्।

शुद्धसत्त्वम्–शा.–४–३६. सत्त्वगुणप्रधानं चित्तम्।

शुष्कम्–सू. ५–१०. नीरसम्।

शुषिरकरम्–सू १२–७ रन्ध्रकरम्।

शूकधान्यम्–सू. २७–६. श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रसहितं धान्यम्।

शून्यता–सू. १७–३९. चित्तस्यानुपस्थितत्वम्।

शूर्पः–क. १२–९६. द्रोणस्तु द्विगुणः शूर्पो विज्ञेयः कुम्भ एव च।

शूलम्–चि. २१–३० शङ्कुस्फोटनवत्तस्य यस्मात्तीव्राश्च वेदनाः। शूलासक्तस्य लक्ष्यन्ते तस्माच्छूलमिहोच्यते॥ (सु. उ. ४२–८१)

शूलप्रशमनः–सू. ४–८. शूलं प्रशमयतीति, पञ्चचत्वारिंशत्तमो महाकषायः

शल्यानि–चि. ६–४७. शल्यकानि।

शृतः–सू. ४–७. बह्नो तु क्वथितं द्रव्यं शृतमाहुश्चिकित्सकाः।

शृतशीतम्–चि. ३–१४६ पूर्वं शृतं पश्चात् शीतम्।

शोकः–सू. २५–४०. बन्ध्वादिवियोगजन्यमनोवेदना।

शोणितम्–इ. ३–४. रक्तम्।

शोणितमोक्षः–चि. ७–१७२. रक्तमोक्षः। (श. क.)

शोणितवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. शोणितं वहन्ति नयन्ति ये ते मार्गाः

शोणितस्थापनः–सू. ४–८. शोणितस्य दुष्टस्य दुष्टिम् अपहृत्य प्रकृतौ शोणितं स्थापयति इति (चक्रः)। षट्चत्वारिंशत्तमो महाकषायः।

शोथहरः–सू. ४–८. शोथं हरति इति, अष्टत्रिंशो महाकषायः।

शोफः–सू. १७–२९. शोथः।

शोषः–चि. ८–१६३. शरीरशोषको रोगविशेषः, राजयक्ष्मा।

शोषणः–सू. २५–४०. शोषयतीति।

शौचाधानम्–सू. ५–९८. पानीयेन मृदा च शुचित्वापादनम्।

श्मश्रु–सू. २८–४. पुंमुखे दीर्घलोमराजिः।

श्रमहरः–सू. ४–८. परिश्रमं हरति यः सः, चत्वारिंशत्तमो महाकषायः।

श्रोत्रम्–इ. १–३. श्रवणेन्द्रियम्।

श्लक्ष्णः–सू. २६–११. खरविपरीतः।

श्लेष्मप्रकृतिः–वि. ६–१३. श्लेष्मलः, श्लेष्मा कफः प्रकृतिः स्वभावतः प्रबलो यस्मिन्सः।

श्लेष्मा–सू. १२–१२. कफः

श्लोकस्थानम्–वि. ८–२९. सूत्रस्थानम्, श्लोकार्थः संग्रहार्थश्च श्लोकस्थानमतः स्मृतम्।

श्वयथुः–चि. १०–२३. शोथः।

श्वसनम्–सि. ९–१६. श्वासः।

श्वासः–वि. ८–२६. प्राणवायोर्नासिकागलमार्गेण निर्गमप्रवेशौ श्वासः, तदवरोधोपलक्षितो रोगविशेषोऽपि श्वासः।

श्वासहरः–सू. ४–८. श्वासघ्नः।

श्वित्रम्–च. ७–१६२. श्वेतकुष्ठम्। (श.क.)

षडङ्गम्–सू. ३०–४. षडङ्गानि बाहुद्वयजङ्घाद्वयशिरोऽन्तराधिरूपाणि यस्य तत्।

षण्ढः–इ. १२–१६. नपुंसकः।

ष्ठीवनम्–चि. ३–१०६. मुखेन श्लेष्मादेर्वमनम्। (श. क.)

सक्तुः–सू. १३–२४. भृष्टयवादिचूर्णम्।

सक्थि–सि. ३–१८. ऊरुदेशः।

सङ्करस्वेदः–सू. १४–४१. तत्र वस्त्रान्तरितैरवस्त्रान्तरितैर्वा पिण्डैर्यथोक्तैरुपस्वेदनं संकरस्वेद इति विद्यात्। (सू. १४–४१.); पिण्डैर्यथोक्तैरिति तिलमाषादिपिण्डैस्तथा गोखरादिग्रन्थोक्तपुटकरूपैश्च पिण्डैः, स्वेदनमेवोपस्वेदनम्। (चक्रः)

सङ्कल्पः–सू. २५–४०. स्त्रीसङ्गसङ्कल्पः।

सङ्कीर्णभोजनम्–सू. १७–२७. विरुद्धाहारः।

सङ्गः–सि. १–७. अप्रवृत्तिः।

सततः–चि. ३–३४. तत्र संतते ज्वरे बलवता दोषेण सप्ताहादिः प्रकृष्टत्वाद् बलवान् कालो नियम्यते, सततके तु संततकालापेक्षया हीनबलेन दोषेणाबलो ज्वरकालः, स ह्यहोरात्रे द्विकालेनात्र व्यापको भवति।

सततकः–चि. ३–६१. ६२. रक्तधात्वाश्रयः प्रायो दोषः सततकं ज्वरम्॥ सप्रत्यनीकः कुरुते कालवृद्धिक्षयात्मकम्। अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्तते॥ प्रायोग्रहणात् सततको रक्तव्यतिरिक्तं मांसादिधातुमप्याश्रयत इति दर्शयति। सप्रत्यनीक इति कालादिषु मध्येऽन्यतमः प्रत्यनीकः। कालवृद्धिक्षयात्मकमिति काले वृद्धिक्षयोचिते काले वृद्धिः क्षयश्च यस्य स कालवृद्धिक्षयात्मा। तेन, दोषानुगुणे काले ज्वरो भवति, दोषानुगुणकालव्यतिरिक्ते च काले क्षयो भवति। ज्वरस्य कालप्रकृतिदूष्याणां मध्येऽन्यतमाद्बलप्राप्तौ सत्यामपि दोषसंप्राप्तिमहिम्ना हि कालभाविस्वनियमो ज्ञेयः। (चक्रः)

सत्त्वम्–सू. ८–४. वि. ८–११०. अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञकं, 'चेतः' इत्याहुरेके. तदर्थात्मसंपदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्॥ चेत इत्याहुरेक इति परमतस्याप्रतिषेधात्स्वयमप्यनुमतम्। पर्यायकथनं शास्त्रे व्यवहारार्थम्। तदिति मनः अर्थो मनोऽर्थः स च सुखादिश्चिन्त्यविचार्यादिश्च, आत्मा चेतनप्रतिसन्धाता, अनयोः सम्पत् तदर्थात्मसंपत्, एतदायत्ता चेष्टा व्यापारो यस्य तत्तथा; तत्रार्थसंपत् सुखादीनां सन्निकर्षश्चिन्त्यादीनामाभिमुख्यं च, आत्मसंपदर्थग्रहणे प्रयत्नशालित्वं, मनश्चेह च सुखादिज्ञानं तथा चिन्त्यचिन्तनादि तथा चक्षुरादिप्रेरणं च। इन्द्रियाणां चक्षुरादीनां या चेष्टा स्वविषयरूपादिज्ञानलक्षणा, तत्र प्रत्ययभूतं कारणभूतं मन इति योज्यम्। एतेनैतदुक्तं भवति–यदा सुखादयश्चिन्त्यादयोऽपि विषया भवन्त्यात्मा च प्रयत्नवान् भवति तदा मनः स्वविषये प्रवर्तते, इन्द्रियाणि चाधितिष्ठति, इन्द्रियाणि च मनोऽधिष्ठितान्येव स्वविषयज्ञाने प्रवर्तन्ते। (चक्रः)

सत्त्वसारः–वि. ८–११०. सत्त्वं मनः, सारः विशुद्धतरो धातुः, उत्कृष्टं बलवद् वा यस्मिन्सः।

सत्त्वावजयः–सू. ११–५४. अहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः।

सत्त्वौदार्यम्–सू. २१–५६. सत्त्वगुणभूरित्वम्।

सदनम्–सू. १७–५३. अवसादः।

सद्यःप्राणहराणि-वि. ८-९४. शीघ्रघातीनि ।

सन्धातृ-सू.-२७-२४५. सन्धानीयम् ।

सन्धानकरः-सू. १२-८. सङ्घट्टनकरः (श. क.)

सन्धानम्-सू. १-१०८. घातविशेषाद् द्विधाभूतस्य अवयवस्य ऐक्यभावः (व. द.)

सन्धानीयः-सू.-४-८. भग्नसंयोजनः (त्रै. श.), पञ्चमो महाकषायः।

सन्धायसंभाषा-वि. ८-१७. अनुलोमसंभाषारूपो वादः।

सन्धारणम्-सू. १७.-८. वेगसंधारणम्, वेगावरोधः।

सन्धिः-इ. ३-४. अस्थिसंयोगस्थानम् (वै. श.)

सन्निपतिताः-चि. ३-१२९. त्रयोऽपि मिलिताः।

सप्रत्यनीकः-चि. ३-६२. कालादिषु मध्येऽन्यतमः प्रत्यनीकः तेन सहितः।

समक्रियत्वम्-चि. ६-७. क्रियायाः दोषेण दूष्येण चाविरुद्धत्वम्।

समधातुः-वि. ८-९५. समाः स्वप्रमाणस्थिताः क्षयवृद्धिरहिता धातवो यस्य सः।

सममांसचयः-सू. २१-१९. समः नातिस्थूलकृशः मांसस्य चयः वृद्धिः यस्मिन्सः। क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः ॥

समयः-वि. ८-५४ सिद्धान्तः, समयः पुनस्त्रिधा भवति; यथा-आयुर्वैदिकसमयः-चतुष्पादं भेषजमिति, याज्ञिकसमयः-आलभ्या यजमानैः पशव इति, मोक्षशास्त्रिकसमयः-सर्वभूतेष्वहिंसेति ।

समयोगः सू. ११-४३. समः हीनातिमिथ्यात्वरहितः अर्थानां कर्मणः कालस्य च योगः मेलनं समयोगः।

समयोगवाहि-शा. ६-४. समेन उचितप्रमाणेन धातूनां मेलनेन सम्यङ् नीरोगतया वहतीति समयोगवाहि ।

समवायः-सू. १-२९, ५०. समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैर्मतः। स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियतो गुणः॥ (द्रव्यगुणसंग्रहः)

समवायिकारणम्-सू. १-५९. यत् स्वसमवेतं कार्यं जनयति ।

समवायी-सू. १-५१. समवायाश्रयः।

समशनम्-चि. १५-२३५. पथ्यापथ्यमिहैकत्र भुक्तं समशनं मतम्; हिताहितोपसंयुक्तमन्नं समशनं स्मृतम् । (सु. सू. ४६-५०८).

समाग्निः-वि.-६-१२. अपचारतो विकृतिमापद्यमानोऽनपचारतः प्रकृतावेवतिष्ठमानोऽग्निः।

समातीतम्-सू. २७-३०९. एकवर्षातीतम्।

समान-वि. ६-४. उभयवाचकत्वेन तुल्यः।

समावृतः-चि. २१-२९. सम्यक् प्रकारेण आवृतः

समासः-सू. ३०-१८. संक्षेपः

समीरणः-सि. ४-८ वायुः

समुच्चयः-सि. १२-४४. यदिदं चेदं चेतिकृत्वा विधीयते ।

समुत्क्लिष्टाः सि. २-९. प्रकुपिताः ।

समुत्क्षिप्ता-चि. २८-४१ अतित्वरिता ।

समुदीरणम्-सि-९-७ प्रेरणम्।

समूढः-इ. ९-४ उपचितः ।

सम्यग्योगः-सि. ६-१० हीनातिमिथ्यायोगविपरीतं यथा स्यात्तथा प्रवर्तनम् ।

सरः-सू. २७-२३७. मलानामपानवायोश्च प्रवर्तकः, सरोऽनुलोमनः प्रोक्तः सरस्तेषां प्रवर्तकः । (व. द.)

सरत्वम्-चि. २/४-४८. अस्थैर्यम् ।

सर्पिः-चि. ५-१८३ घृतम्, दुग्धसम्भूतस्नेहः । (वै. श.)

सर्पिर्मण्डः-चि. २६-२३२. घृतस्योपरितनोऽच्छो भागः ।

सर्वग्रहः वि. १-२१ | ४. सर्वस्य आहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः ।

सर्वक्षमः-सि. १२-९. सर्वरसाभ्यासक्षमः ।

सर्षपी-सू. १७-८७. पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारुजा । सर्षपी सर्षपाभाभिः पिडकाभिश्चिता भवेत् ॥

सात्म्यम्-वि. १-१९-२०. सात्म्यं नाम तद्यदात्मन्युपशेते सुखयति अपथ्यमपि सद्विकारं न जनयति । सात्म्यार्थो ह्युपशयार्थः; ओकसात्म्यम्-ओकादभ्यासात् सात्म्यम् । उपशेते यदौचित्यादोकसात्म्यं तदुच्यते ।

सात्म्यम्-वि. ८-१३० यद् यस्य सेवितं सुखाय सम्पद्यते तत्तस्य सात्म्यम् (वै. श.)

सात्त्विकः-चि. २४-५५ सत्त्वगुणप्रधानः ।

साद्गुण्यम्-वि. १-२४ | १ प्रशस्तगुणयोगिता ।

साधनम्-चि. १-१ | २. चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम् । प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् । विद्याद् भेषजनामानि ।

सानुबाधनम्-चि १-१ | ५. दीर्घकालावस्थायी कुष्ठादिविकारकारी अभेषजप्रकारः ।

सामान्यम्-सू. १-२८. सामान्यमेकत्वकरम् । तुल्यार्थता हि सामान्यम् ।

सारः-सू १-७३ वृक्षान्तर्गतकठिनकाष्ठम् ।

सारः-वि. ८-१०२. विशुद्धतरो धातुः ।

साहसम्-वि. ८-१९. सहसा शक्तिमनालोच्य यानि क्रियन्ते तानि साहसानि ।

सिद्धम्-सि. ३-४६. पक्वम्, साधितम् , संस्कृतम् ।

सिद्धसाधिताः-सू. ११-५०, ५२ श्रीयशोज्ञानसिद्धानां व्यपदेशादतद्विधाः । वैद्यशब्दं लभन्ते ये ज्ञेयास्ते सिद्धसाधिताः ।

सिद्धिः-सू. २५-२२. उत्पत्तिः ।

सिराः-सू. ३०-१२ सरणात् सिराः ।

सिराकर्म-चि. २६-२०४ सिराव्यधनम् ।

सिराजालम्-सू. १७-२१. सिराणां जालकाकारेण ग्रथनम् ।

सिरानद्धः-चि, ५-१६९. सिराभिः आसमन्तान्नद्धः बद्धः ।

सिराव्यधनम्-चि. ७-४० सिरावेधः ।

सीधुः-चि. ८-१६५ पक्वापक्वेक्षुरसकृतमद्यम् । (वै. श.)

सीमन्तः-इ. ८-६. केशविन्यासः ।

सीवनम्- चि. २५-५५. विभक्तस्य सूत्रेण सूच्या च सन्धानम् ।

सुक्तम्-सू. २४-७. कन्दादिकृतसन्धानविशेषः । (वै. श.)

सुखम्-सू. ३०-२३. आरोग्यम् ।

सुगन्धिः- सू. २७-१६७. शुभगन्धः ।

सुप्तसुप्तानि-चि. १४-१७. अत्यर्थं निश्चेतनानि ।

सुप्ताङ्गता-चि. ७-१२. अङ्गानामसंवेदनशीलता ।

सुप्तिः-चि. १२-१२. स्पर्शाज्ञानम् ।

सुभावितम्-चि. ५.-१५३. द्रवद्रव्येण सुष्ठु आर्द्रीकृतम् ।

सुमदम्-चि. २४-७५. सममदम्।

सुमुखाः-चि. २४-८०. प्रियाकाराः।

सुमूर्च्छितम्-चि. २९-७९. साधु मिलितम्।

सुरा-सू. २७-३२३. अनुद्धृतमण्डा।

सुरासवः-सू. २७-१८७. सुराकृत आसवः यत्र सुरयैव तोयकार्य क्रियते।

सुषमा-इ. ७-८. परमा शोभा।

सुसंहनम्-वि. ८-११६ निबिडसन्धानम्।

सूक्ष्मः-सू. १-५९. सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मेषु स्रोतःस्वनुसरः स्मृतः।

सूतिकागारम्-शा. ८-३३. यत्र गर्भिणी प्रसूता, यत्र च तिष्ठति तत् सूतिकागारम्, अरिष्टम्।

सूत्रम्-सू. ३०-३१. आयुर्वेदः। तत्र सूचनात् सूत्रणाच्चार्थसन्ततेः सूत्रम्।

सूपः-सू. १३-२३. मुद्गादि द्विदलदालीनिर्मितं द्रवं भोजनम्।

सेचनम्-चि. २१-१५. सेकः।

सेवनी-चि. ९-४. मेढ्राधोभागे चर्मसन्धिः।

सौम्यः-सू. ६-५. सोमगुणप्रधानः।

सौवीरम् चि. २९-६. काञ्जिकभेदः। सौवीरं तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम्। गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे॥ (व. द.)

सौवीरम्-सू. ५-१५. सुवीरानदीभवं सौवीरम्।

सौवीरकम्-सू. २७-१९१. मद्यविशेषः।

सौहित्यम्-सू. ५-६. मात्रातिक्रमेण तृप्तिः, तृप्तिमात्रं वा।

संकरः-चि. १७-७१. स्वेदविशेषः।

संकल्पः-चि. २ | ४-४७. योषिदनुरागः।

संख्या-नि. १-१२ | २. सू. २६-३२. गणना, संख्या स्याद् गणितम्, गणितमिहैकद्वित्र्यादि।

सङ्गः-वि. ४-८. नार्यादिसङ्गः।

संग्रहणः-चि. ८-१२८. संग्राही।

सांग्राहिकम्-सू. २५-४०. आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयांशं परिशोषयेत्। संगृह्णाति मलं तत् स्याद् ग्राही शुण्ठ्यादयो यथा (व. द.)

संज्ञा-शा. १-१५४. आलोचनं निर्विकल्पकम्।

संज्ञानाशः-सि. ६-८५. चेतनानाशः।

संज्ञास्थापनः-सू. ४-८. संज्ञां ज्ञानं च स्थापयतीति संज्ञास्थापनः, अष्टचत्वारिंशत्तमो महाकषायः।

संतर्पणम्-वि. ८-४८. तृप्तिजनकं धातुवर्धनं च। (व. द.)

संतापः-चि. ३-२६. देहेन्द्रियमनसां तापः।

संदीपनम्-चि. ५-१६८. अग्निदीप्तिकरम्।

संधारणम्-वि. ५-१०. वेगनिरोधः।

संतानदोषः-मृतवत्सत्वादिः।

संपत्-शा. २-६. प्रशस्तगुणता।

संप्रतिपत्तिः-वि. ७-८. सम्यक् प्रतिपत्तिः।

संप्रसादनाः-चि. २१-९८. सवर्णकराः सवर्णे साध्ये कर्तव्या इत्यर्थः; किंवा संप्रसादनाः इति रक्तपित्तप्रसादनाः।

संप्राप्तिः-नि. १-६, ११. जातिः जन्म; संप्राप्त्यागतिजातिशब्दैर्योऽर्थोऽभिधीयते स व्याधेः संप्राप्तिरित्यर्थः।

व्याधिजनकदोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिजन्मेह संप्राप्तिशब्देन वाच्यम् , अत एव पर्याये "आगतिः" इत्युक्तम् । आगतिर्हि उत्पादककारणस्य व्याधिजननपर्यन्तं गमनम् । इयं च संप्राप्तिर्व्याधिविशेषं बोधयत्येव। यथा ज्वरे "स यदा प्रकुपितः प्रविश्यामाशयम्" इत्यारभ्य 'तदा ज्वरमभिनिर्वर्तयति' इत्यन्तेन या संप्राप्तिरुच्यते, तया ज्वरस्यामाशयदूषकत्वाग्न्युपघातकत्वरसदूषकत्वादयो धर्माः प्रतीयन्ते। न च वाच्यं–दोषाणामयमामाशयदूषकत्वादिर्धर्मः, ततश्च कारणधर्माणां निदानग्रहणेनैव ग्रहणं भवतीति; यतः कारणधर्मोऽप्ययं पृथक् कृत्वोच्यते; यथा — लिङ्गत्वाविशेषेऽपि भाविव्याधिबोधकत्वविशेषात् पूर्वरूपं पृथगुच्यते, अत एव वाग्भटेऽप्येवमेव संप्राप्तिलक्षणमुक्तं–"यथा दुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता। निर्वृत्तिरामयस्यासौ संप्राप्तिर्जातिरागतिः" (वा. नि. अ. १) इति। (चक्रः)

संभवः–सि. १२–४५. संभवो नाम यद्यस्मिन्नुपपद्यते स तस्य संभवः; यथा मुखे पिप्लुव्यङ्गनीलिकादयः संभवन्तीत्यादि। (चक्रः)

संभारः–वि. ७–२६. तद्योग्याखिलद्रव्यसमुदायः।

संभाषा–वि. ८–१५. भिषक् भिषजा सह संभाषेत। तद्विद्यसंभाषा हि ज्ञानाभियोगसंहर्षकरी भवति, वैशारद्यमपि चाभिनिर्वर्तयति, वचनशक्तिमपि चाधत्ते, यशश्चाभिदीपयति, पूर्वश्रुते च संदेहवतः पुनः श्रवणाच्छ्रुतसंशयमपकर्षति, श्रुते चासंदेहवतो भूयोऽध्यवसायमभिनिर्वर्तयति, अश्रुतमपि च कंचिदर्थं श्रोत्रविषयमापादयति, यच्चाचार्यः शिष्याय शुश्रूषवे प्रसन्नः क्रमेणोपदिशति गुह्याभिमतमर्थजातं तत्परस्परेण सह जल्पन् पिण्डेन विजिगीषुराह संहर्षात्, तस्मात्तद्विद्यसंभाषामभिप्रशंसन्ति कुशलाः।

संभाषाविधिः–वि. ८–१५. द्विविधा तु खलु तद्विद्यसंभाषा भवति–सन्धायसंभाषा, विगृह्यसंभाषा च।

संमोहः–सू. १०–२०. मनसो मोहः।

संयोगः–नि. ६–१०. द्वयोर्बहूनां वा द्रव्याणां संहतीभावः।

संवत्सरः–सू. ३०–२५. वत्सरः।

संवाहनम्–सू. ७–२३; चि. २–३/२५. पाणिना पादादिप्रदेशे सुखमभिहननमुन्मर्दनं च (चक्रः)

संवृतः–चि. २५–२०. आवृतमुखः।

संवृतकोष्ठः–सि. २–८. वायुनाऽल्पीकृतकोष्ठः, वायुव्याप्तकोष्ठ इत्येके।

संवृत्तिम्–इ. १२–५६. निष्पत्तिम्।

संशमनम्–चि. ३–३१६. न शोधयति यद्दोषान् समान्नोदीरयत्यपि। समीकरोति च क्रुद्धांस्तत् संशमनमुच्यते॥ (सु. सू. ३९–७ डल्हणः)

संशयः–वि. १२–४३. विशेषाकांक्षाऽनिर्धारितोभयविषयज्ञानम्; यथा मातरं पितरं चैके मन्यन्ते जन्मकारणम्। स्वभावं परनिर्माणं यदृच्छां चापरे जनाः (सू. अ. ११)।

संशोधनम्–चि. ३–२२७. स्थानाद् बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वा मलसञ्चयम्। देहसंशोधनं तत् स्याद् देवदालीफलं यथा॥ (व. द.)

संसर्गः–वि. ८–२१. दोषद्वयमेलकः।

संसर्गः–शा.–३–३. मैथुनम्।

संसर्जनक्रमः–सू. १६–२६. पेयादिक्रमः।

संसृष्टाः–चि. ३–१२९. युग्मभूताः

संस्कारः–सू. २६–३४; वि. १–२२. संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते। ते गुणास्तोयाग्निसंनिकर्षशौचमन्थनदेशकालवासनभावनादिभिः कालप्रकर्षभाजनादिभिश्चाधीयन्ते॥

संस्कारवाहः शा. २–१९. संस्कारेण बस्तिवाजीकरणादिना परं यस्य शुक्रमदुष्टद्वारं सत् प्रवर्तते स संस्कारवाहः (चक्रः)

संस्तम्भः–सि. ९–४०. स्तब्धता।

संस्थानम्–नि. १–९. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया सुषमा विषमा च या (इ. अ. ७)।

संस्नेहनम्–चि. १–२९. संसर्जदनुवासनम्।

संस्पर्शनः–चि. २–४/४६. संस्पर्शनवान्।

संस्पर्शासहः–चि. ७–२४. हस्तादिस्पर्शेन तीव्रवेदनावान्।

संस्वादविशेषः–सू. २६–८. रसानामवान्तरभेदः। संस्वादभेदस्तु एकस्यामपि मधुरजाताविक्षुक्षीरगुडादिगतः प्रत्यक्षमेव भेदो दृश्यते, स तु संस्वादभेदः स्वसंवेद्य एव; यदुक्तं–"इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरं महत्। भेदस्तथापि नाख्यातुं सरस्वत्याऽपि शक्यते" इति ॥ (चक्रः)

संहननम्–शा. ८–३२. शरीरम्। (रा. नि.)

संहर्षः–वि. ८–१५. स्पर्धा।

संहर्षणः–सू. २५–५०. मनःप्रसन्नताजनकः।

सांख्यः–शा. ५–१७. संख्या तत्त्वज्ञानं, तया वर्तत इति सांख्यः (चक्रः)

सांग्राहिकः–चि. ८–१३० ग्राही।

स्कन्धः–सि. ९–३. स्कन्धशब्देनान्तराधिरुच्यते (चक्रः)

स्कन्धः–नि. १–२१. बाहुग्रीवासन्धिः।

स्कन्धः–सू. २५–२८. समूहः।

स्कन्नम्–इ. ३–५. च्युतम्।

स्तन्यजननः–सू. ४–८. सप्तदशो महाकषायः।

स्तन्यम्–चि. ३०–२२९. दुग्धम्।

स्तन्यशोधनः–सू. ४–८. अष्टादशो महाकषायः।

स्तन्याशयः–चि. ३०–२४३. स्तनः।

स्तम्भनम्–सू. २२–१२. स्तम्भनं स्तम्भयति गतिमन्तं चलं ध्रुवम्; रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद् भवेत्। वातकृत्स्तम्भनं तत्स्याद् यथा वत्सकटुण्टुकौ ॥ समीरगुणभूयिष्ठं शीतत्वाद् यदम्भस्वतः। विधाय वृद्धिं स्तम्नाति स्तम्भनं तद् यथा वटः ॥ (व. द.)

स्तैमित्यम्–सू. २१–४६. अङ्गानामार्द्रपटावगुण्ठितत्वमिव। (वै. श.)

स्थावरा–चि २३–६. अचला।

स्थिरम्–सू. २२–१४. स्थिरो वातमलस्तम्भी। (व. द.)

स्थूलम् सू. २२–११. स्थूलः स्याद् बन्धकारकः। स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्रोतसामवरोधकृत्। (व. द.)

स्निग्धम्–सू. २२–१५. स्नेहमार्दवकृत्स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा। स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम्। (व. द.)

स्नेहनम्–सू. २२–११. स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दवक्लेदकारकं।

स्नेहपिचुः चि. ३०–१०८. भेषजसाधितक्वाथस्नेहाप्लुतं तूलकं वस्त्रखण्डं वा (व. द.)

स्नेहमात्रा–सू. १३–२९. स्नेहस्य परिमाणम्।

स्नेहवश्यः–चि. ३–२१७. स्नेहसाध्यः।

स्नेहविधिः–चि ६–३७. स्नेहनविधिः।

स्नेहविमर्दनम्–सू. ५–८५. स्नेहेन मर्दनम्।

स्नेहविरेचनम्–चि. ५–१७२ स्नेहेन विरेचनम्।

स्नेहाभ्यङ्गः–सू. ५–८५. स्नेहेन अभ्यङ्गः।

स्नेहाशयाः–सू. १३–११. स्नेहस्थानानि।

स्नेहोपगः-सू. ४–८. एकविंशो महाकषायः।

स्नैहिकधूमः सू. ५–३७. वसाघृतमधूच्छिष्टैर्युक्तियुक्तैर्वरौषधैः ॥ वर्तिं मधुरकैः कृत्वा स्नैहिकीं धूममाचरेत् । (च. सू. ५–२५३/४)

स्पन्दनम्–सू. १८–७ | १ ईषत्कम्पनम् ।

स्पर्शनम्–सू. ५–८७. स्पर्शनेन्द्रियम् ।

स्पर्शविज्ञानम्–सू. ३०–६ स्पर्शो विज्ञायतेऽनेनेति. स्पर्शं वा विजानातीति स्पर्शविज्ञानम् ।

स्पर्शाज्ञत्वम्–चि. ७–११. स्पर्शज्ञानाभाववत्त्वम् ।

स्पर्शासहः चि. ५–१३. हस्तादिस्पर्शेन तीव्रवेदनाजनकः ।

स्मृतिभ्रंशः शा. १–१०१. तत्त्वज्ञाने स्मृतिर्यस्य रजोमोहावृतात्मनः । भ्रश्यते स स्मृतिभ्रंशः स्मर्तव्यं हि स्मृतौ स्थितम् ॥

स्रावः–सि. ५–७. स्रवः ।

स्रावणम्–सू. ५–१५ नेत्रस्रावणम् ।

स्रावणम्–चि. २३–४५ रक्तस्रावणम् ।

स्रावी–चि. २५–२०. व्रणभेदः ।

स्राव्यम्–चि. १५–७५. विरेचनीयम् ।

स्रोतः–सू. ३०–१२ वि–५–४. स्रवणात् स्रोतांसि ।

स्रोतसां प्रवर्तनम्–सू. १२–८ स्रोतसां प्रवृत्त्युत्पादनम् ।

स्रोतसां शोधनम्–सू. २७–१९३. स्रोतसां शुद्धिकारकम् ।

स्रोतोविशोधनम्–सू. २७–२२८. स्रोतसां शोधनम्

स्रंसः–सू. २०–१२ किञ्चित्स्वस्थानचलनम् ।

स्रंसः–इ. ३–४. मनाग्गमनम् ।

स्रंसनम्–चि. २८–२४१. पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम् । नयत्यधः स्रंसनन्तद् यथा स्यात् कृतमालकः ॥ (व. द.)

स्वनः–इ. ५२२ शब्दः ।

स्वप्नः–वि. ८–८७. निद्रा ।

स्वप्नदर्शनम्–इ. १–३. स्वप्नानां दर्शनम् ।

स्वभावः–सू. ११–६. स्वकीयो भावः; परिदृश्यमानपृथिव्यादिभावानामेवायं स्वभावो–यत्–संयोगविशेषान्मिलिताः सन्तश्चेतनं पुरुषादिलक्षणं कार्यविशेषमारभन्ते, यथा सुराबीजानि प्रत्येकममदकराण्यपि मदकरं मद्यमारभन्ते, नात्र कश्चिदात्मा विद्यते यस्य परलोकः स्यादिति स्वभाववादिनो भावः । (चक्रः)

स्वरक्षयः चि. ८–२६ स्वरभेदः ।

स्वरश्च गन्धश्च–इ. १–१–३ स्वरादिग्रहणेन च स्वराद्यभावोऽपि गृह्यते, तेनाङ्गुलिपर्वशब्दाभावगन्धाभावादयोऽपि रिष्टान्यवरुध्यन्ते ।

स्वरसः सू. १–७३. सू. ४–७ स्वो रसः स्वरसः प्रोक्तः ।

स्वर्यम्–चि. ८–११५ स्वराय हितम् ।

स्वसंज्ञा–सि. १२–४४. या तन्त्रकारैर्व्यवहारार्थं संज्ञा क्रियते सा ।

स्वस्त्ययनम्–सू. ३०–२१ .स्वस्तिवाचनम् ।

स्वस्थवृत्तम्–शा. ६–७. येन विधिना स्वस्थस्तिष्ठति तदाचरणम् । (वै श.)

स्वस्थवृत्तिः–सू. १–६७. सुष्ठु अवतिष्ठते नीरोगत्वेनेति स्वस्थः तस्य वृत्तिः स्वस्थरूपतयाऽनुवर्तनम् ।

स्वाधारम्–वि. ८–३. शोभनाभिधेयम् ।

स्वाभाविकरोगः–शा. १–११५. कालस्य परिणामेन जरामृत्युनिमित्तजाः । रोगाः स्वाभाविका दृष्टाः स्वभावो निष्प्रतिक्रियः ॥ जरामृत्युरूपान्निमित्ताज्जाता जरामृत्युनिमित्तजाः, मृत्युशब्देनेह युगानुरूपायुःपर्यन्तसानभवकालमृत्युर्ग्राह्यः किंवा जरामृत्युशोर्यन्निमित्तं तस्माज्जाता जरामृत्यु निमित्तजाः; जरामृत्युनिमित्तं च प्राणिनां साधारणदेहनिवर्तकभूतस्वभावोऽदृष्टं च । अथ स्वाभाविकानां का चिकित्सेत्याह–स्वभाव इत्यादि । निष्प्रतिक्रिय इति साधारणचिकित्सया रसायनवर्ज्यया न प्रतिक्रियते, रसायनेन तु प्रतिक्रियत एव; तेन "अस्य प्रयोगाच्च्यवनः सुवृद्धोऽभूत्पुनर्युवा" (चि. अ. १.) इत्यादि रसायनप्रयोगेण समं न विरोधः किंवा, स्वाभाविका जरादयो रसायनजनितप्रकर्षादुत्तरकालं पुनरवश्यं भवन्तीति निष्प्रतिक्रियत्वेनोक्ताः । (चक्रः)

स्वास्थ्यम्–सू. सि. ६–२६. स्वस्थता ।

स्वास्थ्यरक्षणम्–सू. ३०–२६. स्वस्थतानुपालनम् ।

स्विन्नः–सू. २७–२५७. उत्स्विन्नधान्यतण्डुलकृतः, किंवा सम्यक्स्विन्नत्वेन मृदूभूतः ।

स्वेदः–सू. १४–१. तसैः सैकतपाणिकांस्यवसनैः स्वेदोऽथवाङ्गारकैर्लेपाद् वातहरैः सदाम्ललवणस्नेहैः सुखोष्णैस्तथा । एवं तप्तपयोऽम्बुवातशमनक्वाथादिसेकादिभिस्तप्तैस्तोयनिषेचनोद्भववृहद्वाष्पैः शिलाद्यैः क्रमात् ॥(व.वृ.)

स्वेदनम्–सू. २२–११ स्तम्भगौरवशीतघ्नं स्वेदनं स्वेदकारकम् ।

स्वेदवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. स्वेदवहा धमन्यः ।

स्वेदोपगः–सू. ४–१३. (२२) द्वाविंशो महाकषायः ।

हनुः–इ. ३–५. कपोलाभ्यां परा चिबुकस्याधो हनुः ।

हरितकम्–सू. ८–२०. आर्द्रकादि ।

हरितम्–चि. ८–५१. शिरीषादिपत्रगतवर्णवत् ।

हर्षः–चि. २/४. संकल्पपूर्वकशुक्रोद्रेकध्वजोच्छ्रायादिकारीच्छा ।

हस्तौ–इ १–१२. भुजौ ।

हावः–चि.२–१ | ९. नरं प्रति स्त्रीणां शृङ्गारचेष्टाविशेषः।

हिक्काघ्नम्–सि. ७–२७. हिक्काचिकित्सोक्तं भेषजम् ।

हिक्कानिग्रहणः–सू. ४–८. त्रिंशो महाकषायः ।

हितम्–सि. २–२४. पथ्यम् ।

हिताशनैः उपेक्षेत–चि. ५–४६. हिताशनस्तिष्ठेत्, न किंचिद्भेषजं कुर्यात् ।

हिताशी–चि. ९–९६. पथ्याशी ।

हिताहितम्–सू. २५–३२. ३३. भगवन्तमात्रेयमग्निवेश उवाच–कथमिह भगवन् हिताहितानामाहारजातानां लक्षणमनपवादमभिजानीमहे । तमुवाच भगवानात्रेयः–यदाहारजातमग्निवेश समांश्चैव शरीरधातून् प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति; इत्येतद्धिताहितलक्षणमनपवादं भवति ।

हिमम्–सू. २७–२००. हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति । यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ (वै. श.)

हीनतेजाः–चि. ३–३३५. हीनकान्तिः ।

हीनदृष्टिके–इ. ३–६. अदूरदर्शिनी, नष्टदृष्टिके वा ।

हीनमात्रम्–सि. १–५९. हीनमात्रायां प्रयुक्तम् ।

हीनयोगः–शा. १–१२८. हीनयोगेनेहायोगो ग्राह्यः ।

हीनसत्त्वम्–चि. ९–२१. हीनमनसम् ।

हीनाग्निः–सि. ६–५८. मन्दाग्निः ।

हृत्–सि. १–१६. हृदयम् ।

हृदयम्–सू. ३०–६,७. यद्धि तत्र स्पर्शविज्ञानं धारि तत्तत्र संश्रितम् ॥ तत् परस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंग्रहः । हृदयं महदर्थश्च तस्मादुक्तं चिकित्सकैः ॥

हृदयापकर्षणम्–सि. २–९ हृदयहिंसनम् ।

हृद्यः–सू. ४–८. चि. २२–५५ मनोहरः ।

हृद्विशोधनम्–वि. ७–१७, हृदयस्य विशोधनम् ।

हृल्लासः–चि. ५–१५. उपस्थितवमनत्ववान् उत्क्लेशः ।

हृष्टः–सि. ९–५४ स्तब्धः ।

हेतुः–वि. १–३८. कारणम् ।

हेतुचतुष्टयम्–सू. ८–३० चत्वारो हेतवः ।

हेतुप्रतीक्षिणः–सू. २८–३२. ईरणाद्यपेक्षिणः ।

हेतुवर्जनम्–वि. ७–२७ निदानस्य त्यागः ।

हेतुविपरीतः–नि. १–१०. निदानेन विपरीतः ।

हेतुविपरीतार्थकारि–नि. १–१० हेतुना विपरीतार्थकारि; विपरीतार्थकारि तदेवोच्यते यदविपरीततयाऽऽपाततः प्रतीयमानं विपरीतस्यार्थं प्रशमलक्षणं करोति (चक्रः)

हेतुवैषम्यम्–सू. १६–२७ हेतोः विषमता ।

हेतुव्याधिविपरीताः–नि. १–१०. हेतुना तथा व्याधिना तथा हेतुव्याधिभ्यां च विपरीताः ।

हेत्वर्थः–सि. १२–४१ हेत्वर्थो नाम यदन्यत्राभिहितमन्यत्रोपपद्यते; यथा–"समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृद्धिकारणम्" (सू. अ. १२) इति वातमधिकृत्योक्तं, तत्र वातस्येतिवक्तव्ये यदयं समानशब्दं धातूनामिति करोति, तेन यथा वायोस्तथा रसादीनामपि समानगुणाभ्यासो वृद्धिकारणमिति गम्यते । (चक्रः)

हेत्वाभासाः–वि. ८-५९. हेतुवदाभासन्त इति हेत्वाभासाः । (चक्रः)

होमः–सू. ३०–२१. हवनम् ।

हंसोदकम्–सू. ६–४७ दिवा सूर्यांशुसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम् । कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमितिख्यातं....।

ह्रासः–शा. ६–९. क्षयः ।

ह्रीमत्त्वम्–चि. ८–२०. लज्जावत्त्वम् ।

चरकसंहितागतः
The group of waters

चरकसंहितागतः	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१ ऐन्द्रं जलम्	ऐन्द्रमिति प्राण्यदृष्टवशेनेन्द्रप्रेरितम्	
२ कारम्		करा वर्षोपलास्तेषां तोयम्
३ हिमम् (हैमम्)		तदेव (अवश्यायजं निशाजलमेव) संहतावयवत्वेन स्फटिकशिलाशकलसदृशावयवं हिमं तद्भवं हैमम्

चरकसंहितागतः
The group of milks

चरकसंहितागतः	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१ गव्यं पयः		
२ महिषीपयः (माहिषम्)		
३ उष्ट्रीपयः (औष्ट्रकम्)		
४ ऐकशफं पयः	ऐकशफमिति वडवायाः	एकशफा अश्वादयः
५ छागं पयः (आजम्)		
६ आविकं पयः		
७ हस्तिनीपयः		
८ मानुषं पयः		
९ दधि		
१० मन्दकम्	यदा क्षीरं विक्रियामापन्नं घनत्वं न याति तदा तन्मन्दकम्	
११ जातदधि	मन्दकावस्थामुत्सृज्य घनतया जातम्	
१२ सरः	दध्युपरिस्नेहः	
१३ मण्डः	दधिमण्डो मस्त्वित्यर्थः	
१४ तक्रम्		

जलवर्गः ।

in the Caraka Samhita

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
आन्तरिक्षम् (अ.); दिव्यम् (हे.)	इन्द्रस्य इदम् ऐन्द्रम्
	कराणामिदम्

गोरसवर्गः ।

in the Caraka Samhita

	गोरिदं गव्यं पीयते इति पयः
महिष्या इदम्	महिष्याः पयः
उष्ट्रीणां क्षीरम् (अ.); कारभम् (हे.)	उष्ट्र्याः पयः
	एकशफाया इदं ऐकशफम्
आजं–छागलं क्षीरम्	छाग्या इदं छागम्
	अव्या इदं आविकम्
	हस्तिन्याः पयः
	मानुष्या इदम्
	मन्थयति इति
	तक्यति द्रुतं गच्छति इति, तक्रं पादजलं प्रोक्तम्

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१५ नवनीतम्		
१६ घृतम्		
१७ पीयूषः	सद्यःप्रसूतायाः क्षीरम्	सद्यःप्रसूतायाः गोः क्षीरं सप्ताहं यावत्
१८ मोरटम् (मोरटः)	तदेव (सद्यःप्रसूतायाः क्षीरमेव) यावन्न परतः प्रसन्नतां याति तावत् 'मोरट' इत्युच्यते	तदेव सप्ताहात् परतो यावत्प्रसन्नतां न गच्छति तावत् 'मोरट' इत्युच्यते
१९ किलाटः	नष्टक्षीरभागः यं लोका क्षीरसामित्याहुः	कूर्चिकीभूतक्षीरस्य घनभागः किलाटः; यं लोकाः क्षीरांशुमित्याहुः
२० तक्रपिण्डकः	तक्रकूर्चिकाया एव स्रुतद्रवो घनो भागः	

चरकसंहितागतः

The group of the products of Sugarcane

१ इक्षुः	
२ पौण्ड्रकः	
३ वंशकः	
४ गुडः	
५ क्षुद्रो गुडः	असित गुड इत्युच्यते
६ धौतगुडः	
७ मत्स्यण्डिका	खण्डमध्ये पाकाद् घनीभूता मत्स्याण्डनिभा
८ खण्डशर्करा	
९ गुडशर्करा	
१० यासशर्करा	दुरालभाक्वाथकृता शर्करा
११ मधुशर्करा	मधुभाण्डेषु शर्कराकारा भवति

चरकसंहितागतः

The group of Honeys

१ माक्षिकम्	मक्षिकाः पिङ्गलाः तद्भवम्
२ भ्रामरम् —	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	दघ्नो मथितान्नवं तत्काळं नीतमुद्धृत नवनीतं घृतयोनिः ।
	घ्रियते इति घृतम् ।
	पीयते
	मुरति इति मोरटः
	तक्रस्य पिण्डः

इक्षुवर्गः

In the Caraka Samhita

	इष्यते इति इक्षुः
	पुण्ड्रदेशे जातः
	गुडति इति
	मन्दं स्यन्दते इति; मत्स्यानमति रजति इति; शर्करोत्का तु मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका सिता । (धन्वन्तरीयनिघण्टुः २–१०४)

मधुवर्गः

in the Caraka Samhita

	भ्रमरैः निर्मितम्

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
३ क्षौद्रम्	क्षुद्रमक्षिकाभवम्	
४ पौत्तिकम्	पिङ्गला मक्षिका महत्यः पुत्तिकाः तद्भवम् ।	

चरकसंहितागतः
The Group of cooked foods

१ पेया	बहुद्रवा यवागूः (चक्रः)	पेया सिक्थसमन्विता (सु.) यवागूर्बिरलद्रवा। (सु.)अत्र पेया यवागूरुच्यते, सा च सिक्थसमन्विता भवति । पेया यवागवपरपर्याया सिक्थसमन्विता विरलद्रवा । (ड.)
२ विलेपिका (विलेपी)	विरलद्रवा यवागूः (चक्रः)	विलेपी बहुसिक्था स्यात् (सु.) बहुसिक्था घनसिक्था पृथग्द्रवरहिता अत एव लेह्या (ड.)
३ मण्डः		तदुपरितनो (पेयाया उपरितनो) भागः (ड). सिक्थैर्विरहितः (सु)
४ ओदनः		
५ कुल्माषः	यवपिष्टमुष्णोदकसिक्तमीषत्स्विन्नमपूपीकृतम् । (चक्रः) ।	यवपिष्टमुष्णोदके सिक्तमीषत्स्विन्नमृदितं शृङ्गाटादिप्रकारं कुल्माषमाहुः 'यवादयः स्विन्ना' इत्येके (ड.)
६ स्विन्नभक्ष्याः	उत्स्वेदनमात्रकृताइण्डरिकादयः ।	
७ अकृतयूषः	अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना (चक्रः)	अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना ।
८ कृतयूषः	विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ (सु. सू. अ. ४६) [चक्रः]	विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ (सु.)
९ यूषः		
१० सूपः		
११ सक्तुः		
१२ अपूपः		
१३ वाट्यः	मृष्टयवौदनः । (चक्रः)	यवगोधूमादिभिर्दलितैः कृतः; अन्ये तु मृष्टयवकृतो भक्ष्य इत्याहुः । (ड)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि

कृतान्नवर्गः ।
in the Caraka Samhita

पेया सिक्थसमन्विता; निर्द्रव्या प्राकृता पेया तक्र-दाडिमतण्डुलैः (अ.) अल्पसिक्था पेया (हे.)	पातुं योग्या ।
घनसिक्था विलेपी स्यात् (अ.) बहुसिक्था विलेपी (हे).	विक्लिप्यति इति।
सिक्थैर्विरहितो मण्डः; लाजाम्बुशुण्ठ्यधवककणाधान्यनागर-दाडिमैः। युक्तो विमृदितः पूतो मण्डः संस्कृत उच्यते॥(अ.) असिक्थो द्रवो मण्डः (हे.)	मण्डयति इति ।
अद्रवाणि सिक्थानि ओदनः। (हे.)	उनत्ति–क्लियति इति
यूषो धान्यैः (हे.)	यूषति इति
भृष्टानां निस्तुषयवानां चूर्णम् (हे.)	धानाचूर्णं सक्तवः स्युः न पूयते न विशीर्यते, अद्भिरुप्यते इति नैरुक्ताः

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
१४ धाना:	भृष्टयवाः (चक्रः)	भृष्टयवाः (ड)
१५ विरूढधाना:	अङ्कुरितस्य यवस्य धाना: (चक्र:)	
१६ शष्कुल्यः	शालिपिष्टैः सतिलैस्तैलपक्वाः क्रियन्ते	'शांकुली' इति लोके (ड.)
१७ मधुक्रोडा:	पाकघनीभूतमधुगर्भा:; मधुशीर्षक एव मधुक्रोड: (चक्र:)	
१८ पूपा:	पिष्टिकाः (चक्र:)	"पुआ" इति लोके (ड.)
१९ पूपलिका	चापडिकेतिख्याता (चक्रः)	
२० वेशवार:	मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम् । पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम् ॥ ऐकध्यं विपचेत्सम्यग्वेशवार इति स्मृतः ।	मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम् ॥ पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम् । ऐकध्यं पाचयेत् सम्यग्वेसवार इति स्मृतः ॥ (सु.)
२१ क्षीरपूपका:	क्षीरप्रधाना: पूपाः (चक्रः)	
२२ इक्षुरसपूपका:		
२३ षाडवः	षाडवस्तु मधुराम्लद्रव्यकृतः (चक्रः)	स्पष्टाम्लमधुरोऽस्पष्टकषायलवणोषणः । अतिरूः खाडवः कोलकपित्थाद्युपबृंहित:(ड.)
२४ पर्पट:		
२५ पृथुका:	चिपिटाः (चक्रः)	आर्द्रशालिधान्यं मृदु भृष्टं मुसलाघातचिप्पटीभूतावयवं 'पृथुका' इत्युच्यते (ड.)
२६ विमर्दक:	नानाद्रव्यैः समायुक्तः पक्वामक्लिन्नभर्जितैः (चक्रः)	
२७ रसाला	सचतुर्जातकाजाजि ससितार्द्रकनागरम् । रसाला स्याच्छिखरिणी संघृष्टं ससरं दधि (चक्रः)	शिखरिणी (ड.)
२८ पानकम्		पानकानि अम्लिकाद्राक्षादिकृतानि(ड.)
२९ रागषाडव:	क्वथित तु गुडोपेतं सहकारफलं नवम् । तैलनागरसंयुक्तं विज्ञेयो रागषाडव: (चक्रः)	स तु दाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागषाडवः (सु.) स इति मुद्गयूषः (ड.)
३० आम्रामलकलेहा:	आम्रामलकलेहास्तु तयोः पृथक् क्वाथेन सशर्करेण घना: क्रियन्ते ।	
३१ शुक्तम (चुक्रम्)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुकं तदुच्यते (चक्रः)	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
धाना भृष्टयवादि (अ.) भृष्टयवादि धान्यम् (हे).	धीयन्ते इति, धाना: शुष्कभृष्टयवा: (अ. को.)
	मधु क्रोडे येषां ते
	पुनन्ति इति
	पूपं तदाकारं लाति
स्विन्नं पिष्टं गुडजीरकादिविमिश्रितं मांसम् (हे.) नागरधान्यकाजाजिहिङ्गुघृतादिसंस्कृतं मांसम् (अ.) (हे.)	
	क्षीरे भाविता: पूपका: इति शिवदाससेन:
	इक्षुरसे भाविता: पूपका: इति शिवदाससेन:
पृथुकाश्चिपिटसंज्ञा: (अ.) अशुष्कधान्यानां भृष्टास्तण्डुला: (हे.)	
	निमर्दक:। विमर्दक: घृतयुक्तकान्वितद्रव्यमिति केचित् [अ.को.]
करमथितेन मरिचशर्करादियुक्तेन दध्ना कृता उल्लेखिकासंज्ञा (अ.) मरिचशर्करादियुक्तं करमथितं दधि (हे.)	रसमलति इति। दधिसितामरीचादिकृतं लेह्यम्।
गुडाम्लिकादिसंस्कृतमुदकादिकम् (हे.)	पानाय कायति इति
	लिह्यन्त इति
शुक्तं कन्दादिसन्धानम्। कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च। यत्रैकत्राभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते (हे.)	ईशुचिर् पूतीभावे, पूतीभाव: क्लेद: शुच्यति इति, शुक्यतेऽनेनेति शुक्तम्

	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
३२ शिण्डाकी	शिण्डाकी स्वनामप्रसिद्धा तीरभुक्तौ (चक्रः)	मूलकादि शाकमेव किंचित् स्विन्नं क्षुण्णं सुगन्धिकटुकद्रव्यान्वितं वटकीकृतं सुह्मेषु "सिण्डाकी" इत्युच्यते, अन्ये तु "शाकसिक्थमण्डाकृतिः सिण्डाकी" इत्याहुः
३३ उत्कारिका		
३४ उदमन्थः	उदकप्रधानो मन्थः (चक्रः)	
३५ काम्बलिकः	दधिलवणस्नेहतिलादिकृत ईषदम्लः (चक्रः)	अथ काम्बलिकोऽपरः ॥ दध्यम्ललवणस्नेहतिलमाषसमन्वितः । (ड.)
३६ किलाटः	नष्टक्षीरभागः यं लोकाः क्षीरसामित्याहुः (चक्रः)	क्षीरकूर्चिकापिण्डः
३७ कृशरा	तिलतण्डुलमाषकृता यवागूः (चक्रः)	तिलतण्डुलमाषकृता यवागूः (ड.)
३८ खडः	सशाकपल्लवेन कृतो यूषः (चक्रः)	खडो द्विविधः–सतक्रशमीधान्यः सतक्रशाकश्च। तथा हि–"सतक्राणि शमीधान्यानि स्निग्धानि संग्राहकाणि खडानि" इति, सतक्रशाकस्तु "कपित्थतक्रचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकैः। सुपक्वः खडयूषोऽयम्...." इति (ड.)
३९ पायसः	परमान्नम् (चक्रः)	
४० फाणितम्	(गुडस्य) तन्तुलीभावाद्भवति (चक्रः)	
४१ मन्थः	सक्तवः सर्पिषा युक्ताः शीतवारिपरिप्लुताः । नात्यच्छा नातिसान्द्राश्च मन्थ इत्यभिधीयते ॥ (चक्रः)	
४२ लाजाः		
४३ तक्रम्		
४४ उदश्वित्		
४५ कूर्चिका	क्षीरेण समं दधि तक्रं वा पक्वम् (चक्रः)	विग्रथितं क्षीरे घनत्वमापन्नं कूर्चिका (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
मूलकसर्षपशाकानि क्वथितासुतानि कालजीरकराजिकाचूर्णभावितान्यम्लतीक्ष्णानि शाण्डाकीशब्देनोच्यन्ते (अ.) शाकमुद्गादिवटकसन्धानं शाण्डाकी । उक्तं च "शाण्डाकी कन्दमूलादिमुद्गादिवटकैः कृता ॥" तथा "मूलकच्छेदसन्धानं शाण्डाकी स्याद् बहुद्रवा ॥" इति (हे.)	
	उत्कीर्यते इति
उदकालोडिताः सक्तवः सचर्पिष्का उदमन्थवाच्या जलावक्षीरीसंज्ञाः (अ.) द्रवालोडिताः सक्तवो मन्थः, स एवोदके द्रवे उदमन्थः (हे.)	उदकेन सह मथ्यते इति
तिलकल्काम्लप्रायः काम्बलिकः स्मृतः [हे.]	
अल्पक्षीरो बहुना तक्रेण कृतः (अ.) दध्ना तक्रेण वा सह पाकात् तयोर्घनभागः पृथग्धृतः किलाटः [हे.]	
	कृशाय (बलं) राति इति
खलः फलैः मूलैश्च [हे.]	
	पयसा संस्कृतः
क्षुद्रगुडीभूत इक्षुरसः [अ.]	फाण्यते द्रवत्वात् इति फाणितं खण्डश्वेता
	मथ्यते इति
भ्रष्टानां शालीनां तण्डुलाः [हे.]	लभ्यन्ते इति
मथितं दधि तक्रम् [हे.]	तक्रं चतुर्भागाम्बु । तञ्चति द्रुतं गच्छति इति
	उदश्विदर्धाम्बु, उदकेन श्वयति इति
दधितक्रकृता किलाटिका [अ.]	
दध्ना तक्रेण वा सहपाकात्पृथग्भूतं घनद्रवभागं क्षीरम् [हे.]	कूर्चस्तक्रमस्तु अस्ति अस्याः

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यः
४६ मस्तु		
४७ यवागू :		यवागूर्विरलद्रवा । (सु.)
४८ पिण्याकः	तिलकल्कः (चक्रः)	

चरकसंहितागतः
The group of Creatures

प्रसहवर्गः

१ गौः		
२ खरः	गर्दभः	गर्दभः
३ अश्वतरः	वेगसरः स च अश्वायां खराज्जातः	अश्वायां गर्दभेन जनितो "वेसर" इति लोके,
४ उष्ट्रः		करभः
५ अश्वः		घोटकः
६ द्वीपी	चित्रव्याघ्रः	व्याघ्रभेदश्चित्रव्याघ्रः, "चित्रक" इति लोके ।
७ सिंहः		पराक्रमी निद्रालुः
८ ऋक्षः	भल्लूकः	भल्लूकोऽतिलोमशः "रिंछ" इति लोके
९ वानरः		मर्कटः
१० वृकः	कुक्कुरानुकारी पशुशत्रुः	कुक्कुरसदृशः पशुः क्षुद्रः
११ व्याघ्रः		विकृतमुखो निद्रालुर्हिंस्रः
१२ तरक्षुः	व्याघ्रभेदः "तरच्छ" इति ख्यातः	मृगशत्रुर्व्याघ्रविशेषः, 'जरख' इति लोके
१३ बभ्रुः (महाबभ्रुः)	अतिलोमशः कुक्कुरः पर्वतोपकण्ठे भवति । केचिद् बृहन्नकुलमाहुः	तद् [नकुल] भेदः महाबभ्रुः
१४ मार्जारः		बिडालः, गुहाशयत्वादरण्यबिडालो बोद्धव्यः
१५ मूषिकः		भूमिमूषिकः
१६ लोपाकः	स्वल्पशृगालो महालाङ्गूलः	शृगालभेदः, 'लाङ्गलक' इति लोके

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
सुजातस्य दध्नो द्रवभागो मस्तु [हे.]	मस्यति–परिणमति इति
विरलद्रवा (अ.) ससिक्थो द्रवो यवागूः (हे.)	यूयते पिष्टादिना इति
तिलादीनां निष्पीडिततैलः कल्कः [अ.] उद्धृततैलखिलादिपिण्डः [हे.]	पीड्यते इति

प्राणिवर्गः ।

in the Caraka Samhita

	गच्छतीति।
गर्दभः (हे.)	खं शब्दं रातीति, खमस्त्यस्य वा इति
वेगसरः (अ.) अश्वायां गर्दभाज्जातः (हे.)	तनुरश्वः
करभः (हे.)	उष्यते दह्यते मरौ इति
तुरगः (अ.) घोटकः (हे.)	अश्नुतेऽध्वानम् इति
चित्रव्याघ्रः द्वीपी (हे.)	द्वौ वर्णावीयते द्वीपोऽस्त्यस्य वा तन्निवासित्वात् इति द्वीपं द्विवर्णं चर्म तदस्त्यस्य इति वा
केसरी (हे.)	हिनस्ति इति
लोमशो मर्कटसदृशः (हे.)	ऋक्षति, ऋक्ष्णोति हिनस्ति इति
मर्कटः (हे.)	वने रमते इति वनरः तस्यायम्
वस्त्रभक्षकः (हे.)	वर्कते इति
महाव्याघ्रः (हे.)	व्याघ्रिघ्नन्हन्ति इति
मृगादनः (हे.)	तरं (मार्गं) क्षिणोति (रुणद्धि) इति
जाहको, नकुल इत्यन्ये (अ.) अच्छभलः (हे.)	बिभर्ति इति
बिडालः (हे.)	आखुभ्यो गृहं मार्ष्टि इति
उन्दुरुः (हे.)	मूषति इति
लोमशः (अ.) लोमशो जम्बुकसदृशः (हे.)	

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१७ जम्बुकः		शृगालः
१८ श्येनः		सिचानो गरुडान्वयः
१९ वान्तादः	कुक्कुरः	
२० चाषः	कनकवायसः	इन्द्रनीलमणिसदृशपक्षः शस्तदर्शनः 'करटाशन' इति लोके प्रसिद्धः
२१ वायसः		
२२ शशघ्नी [शशघाती]	'पाञ्जिः' इति ख्याता	चिल्लयाकारो महाचरणनखः प्रहारेण शशकाहरणशीलः 'शशाघ्नि' इति लोके
२३ मधुहा		
२४ भासः	भस्मवर्णः पक्षी शिखावान्	गोकुलचारी गृध्रविशेषः श्वेतशिखावान्
२५ गृध्रः		मांसाशी योजनदृष्टिः
२६ उलूकः		कौशिकः
२७ कुलिङ्गकः	कालचटकः कुलिङ्गः	कुलिङ्गो वन्यचटको ग्राम्यचटकाकारः।
२८ धूमिका		चिल्लयाकारो नादोत्थापितमत्स्यो हस्तमत्स्यग्राही 'कुरल' इतिलोके ।
२९ कुररः		

भूमिशयवर्गः

१ श्वेतः काकुलीमृगः	काकुलीमृगः "मालुयासर्प" इति ख्यातः तस्य श्वेत इत्यादयश्चत्वारो भेदाः	
२ श्यामः ,,		
३ चित्रपृष्ठः ,,		
४ कालकः ,,		
५ कूर्चिका	सङ्कुचः	
६ चिल्लटः	चिमारः	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
शृगाल: (अ.) (हे.)	जमति इति
गरुडाकृतिः (अ.) शशानक: (हे.)	श्यायते इति
श्वा (अ.) (हे.)	वान्तमति इति
किकीदिविः (अ.)	चषति इति
काक: (अ.) (हे.)	वय एव वायस: वयते वा
शशारिः (हे.)	शशं हन्ति इति
मधुघातकः [हे.]	मधु हन्ति इति
श्वेतशिखावान् गृध्रसदृशो गोष्ठचारी [हे.]	
कृष्णो महान् दूरदर्शी [हे.]	गृध्यति मांसम् इति
काकारिः [अ.] घूकः [हे.]	उलति नेत्राभ्यां दहति इति
कृष्णचटकः [अ.] कुलिङ्गो गृहचटकः (हे.)	कौ लिङ्गति–गच्छति, यद्वा कुत्सितं कृष्णवर्णं लिङ्गं वर्णं यस्य सः
धूम्याटः (हे.)	धूम इव जलीयपदार्थोऽस्ति अस्याः
अरुणः श्वेतमस्तको मत्स्यग्राही (हे.)	कुरेति शब्दं राति इति
	कूर्चति इति

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
७ भेकः		
८ गोधा		
९ शल्लकः	महाशकली 'शलक' इति ख्यातः	शल्यको वज्रशकलो बृहद्गोधानुकारी 'साला' इति लोके
१० गण्डकः	गोधाभेदः	
११ कदली	"कदलीहट्ट" इति ख्यातः	महाबिडालसमो व्याघ्राकारः 'कदलीहण्ड' इति पौण्ड्रे प्रसिद्धः अन्ये सर्पविशेषमाहुः।
१२ नकुलः		भुजङ्गशत्रुः
१३ श्वावित्	'सेजक' इति ख्यातः	सूचिसदृशरोमयुक्ता 'सेहै' इति लोके
आनूपवर्गः		
१ सृमरः	महाशूकरः	महाशूकरः, अन्ये तु महाश्वाकारश्चमरान्तकः
२ चमरः	केशमृत्युः	केशमृत्युर्गोसदृशः
३ खङ्गः (खड्गी)	गण्डकः	गण्डकः
४ महिषः		
५ गवयः	गवाकारः	गोसदृशः
६ गजः		हस्ती
७ न्यङ्कुः	न्यङ्कुशो हरिणः	'न्यंगुण' इति लोके
८ वराहः		शूकरः
९ रुरुः	बहुशृङ्गो हरिणः	शरदि शृङ्गत्यागी, तल्लक्षणमुच्यते 'विकटबहुविषाणः शम्बराकारदेहः सलिलतटचरत्वाच्छम्बरेभ्यो विचित्रः। त्यजति शरदि शृङ्गं रौत्यतोऽसौ रुरुः स्यात्स्थुलमृगविशेषः प्रायशश्चेदिदेशे॥ इति।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
मण्डूकः [हे.]	बिभेति इति
पद्मनखग्राहिणी [हे.]	गृह्णाति इति
	गण्डति संहन्यते इति
	नास्ति कुलमस्य इति
शलाकासदृशरोमा [हे.]	श्वानं विध्यति इति
वनतुरगः [हे.]	सरति इति
वन्यो गौः [हे.]	चमति इति
गण्डकः [हे.]	खडति-भिनत्ति, इति
अश्वशत्रुः [हे.]	महति, मह्यां शेते इति वा
सास्नाककुदरहितो गोसदृशः [हे.]	गुवति, गवते इति वा, गवं शब्दं याति प्राप्नोति गव इति शब्दं याति इति वा
हस्ती [अ.] [हे.]	गजति माद्यति इति
कुरङ्गसदृशो विकटबहुविषाणः [हे.]	न्यञ्चति इति
शूकरः [हे.]	वरमाहन्ति इति
बहुविषाणः शरदि शृङ्गत्यागी [हे.]	रौति इति

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
वारिशयवर्गः		
१ कूर्मः		कच्छपः
२ कर्कटकः		द्विविधः शुक्लकृष्णभेदेन
३ मत्स्यः		
४ शिशुमारः	गोतुण्डनक्रः	हस्त्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निःश्वासमुक्, सोऽपि द्विविधो वर्तुलदीर्घभेदेन दीर्घं 'फाणितं' इति लोकाः प्राहुः
५ तिमिङ्गिलः	सामुद्रो महामत्स्यः	तिमिर्महत्तमो मत्स्यः, तिमिङ्गिलस्ततोऽपि महत्तमः
६ शुक्तिः	मुक्ताप्रभवो जन्तुः	समुद्रजा शिम्पिः
७ शङ्खः		
८ उद्रः	जलबिडालः	उद्रः पानीयबिडालः 'ओदन' इति लोके
९ कुम्भीरः	घटिकावान्	नानाभेदो घडियालगोधादिभेदेन
१० चुलुकी	"शुशु" इति ख्यातः	
११ मकरः		हिंसदंष्ट्रकः
जलचरवर्गः		
१ हंसः	हंसश्चतुर्विधोऽपि राजहंसादिर्ग्राह्यः	कलस्वरो ललितगतिः प्रसिद्धः
२ क्रौञ्चः	"कोञ्च" इति ख्यातः	क्रौञ्चिरः
३ बलाका	शुक्ला	बकभेदः 'बगुली' इति लोके
४ बकः	पाण्डुरपक्षः	पाण्डुरपक्षः
५ कारण्डवः	काकवक्त्रः	शुक्लहंसभेदोऽल्पः अन्ये करह(ई)वमाहुः उक्तं च "कारण्डवः काकवक्त्रो दीर्घाङ्घ्रिः कृष्णवर्णभाक्" इति
६ प्लवः	स्वनामप्रसिद्धः प्रसेवगलः	महाप्रमाणः प्रसेवकगलः "सगंड" इति लोके
७ शरारिः [शरारीमुखः]	"शराकी" इति लोके	शरारीमुखः खदिरवर्णो "गिर्गराटी" इति लोके।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
कच्छपः [हे]	कुरति कुमूर्वति इति वा
कुलीरः [हे.]	कृणोति इति
जलान्तर्वासिनो मत्स्याः [हे.]	माद्यति इति
शिशुघ्नः [हे.]	
तिमिः शतयोजनविस्तृतः तं गिलतीति [हे.]	तिमिं गिलति इति
मुक्तास्फोटः [हे.]	शुक गतौ, शोकति इति
कम्बुः [हे.]	शाम्यति अशुभमस्मात् इति
जलबिडालः [हे]	उनत्ति इति
महानक्रप्रदेशः (हे)	कुम्भिनं हस्तिनमपीरयति इति
चुलूकी दन्त्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निश्वाससमुक् (हे.)	
सिंहदंष्ट्रः (हे.)	मा कुर्यात्किञ्चिदिति त्रसन्त्यस्मात् इति
मानसौकाः (हे.)	हन्ति–गच्छति इति
कुङ् (हे.)	क्रुञ्चति इति
बिसकण्ठिका [हे.]	बलाहकान् कायति बलेनाकति याति वा
पाण्डुरपक्षः हे.]	वङ्कते इति
शुक्लो हंसभेदः (हे.)	करण्डे भवं कारण्डं पञ्जरबन्धं वाति इति
महान् प्रसेवकगलः (हे.)	प्लवते इति
	वारं जलं ऋच्छति इति

	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
८ पुष्कराह्वः [पुष्कर-शायिका]		पुष्करशायिका, पद्मपत्रशायिका
९ केशरी		
१० मणितुण्डकः		
११ मृणालकण्ठः		
१२ मद्गुः	पानीयकाकः	जलकाकः
१३ कादम्बः	कलहंसः	कलहंसोऽतिधूम्रपक्षः, अन्ये तु रक्तचञ्चुशिरः-कृष्णपादादीनां लक्षणेन कृत्वा 'कर्यव' इति पठन्ति।
१४ काकतुण्डकः	श्वेतकारण्डवः	
१५ उत्क्रोशः	"कुरल" इति ख्यातः	कुररभेदो मत्स्याशी
१६ पुण्डरीकाक्षः	पुण्डरः	पुण्डरीकी नलिननयनः
१७ मेघरावः	मेघनादः चातक इत्यन्ये तन्न तस्य वारिचरत्वाभावात्	चातकः
१८ अम्बुकुक्कुटी	जलकुक्कुटी	जलकुक्कुटी कृष्णवर्णा, 'बुडियाक' इति लोके।
१९ आरा	आरा स्वनामख्याता	
२० नन्दीमुखी	पत्राटी	नन्दीमुखः पत्राटी आटीभेदः
२१ वाटी		
२२ सुमुखाः		
२३ सहचारिणः		
२४ रोहिणी		
२५ कामकाली		
२६ सारसः	सारसः प्रसिद्धः	लक्ष्मणा रक्तशिराः प्रसिद्ध एव
२७ रक्तशीर्षकः	सारसभेदो लोहितशिराः	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	मणिरिव तुण्डं यस्य सः
जलकाकः (हे.)	मज्जति इति
कलहंसः (हे.)	कदम्बकायं संघचारित्वात्
कुररसदृशः (हे.)	उच्चैः क्रोशति इति, उत्क्रोशकुररौ समौ
	पुण्डरीके इव अक्षिणी यस्य सः
	मेघस्य इव रावो यस्य सः
	अम्बुवः कुक्कुटी
लक्ष्मणः (हे).	सरसि भवः

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
२८ चक्रवाकः		द्वन्द्वचरो निशावियोगी
जाङ्गलवर्गः		
१ पृषतः	चित्रहरिणः	बिन्दुचित्रितः चिल इति लोके
२ शरभः	अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः	अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः
३ रामः	हिमालये महामृगः	
४ श्वदंष्ट्रः	चतुर्दंष्ट्रः कार्तिकपुरे प्रसिद्धः	चतुर्दंष्ट्रोऽतिदुष्टः 'कर्कटक' इति कार्तिकपुरे (ड.)
५ मृगमातृका	स्वल्पा पृथूदरा हरिणजातिः	अल्पा पृथूदरा चतुरङ्गश्री 'भेदली' इति लोके (ड.)
६ शशः		
७ उरणः		
८ कुरङ्गः	हरिणभेदः	चतुरगतिः 'चतुरङ्ग' इति लोके यो न कृष्णो न ताम्रश्च कुरङ्गः सोऽभिधीयते [सु.]
९ गोकर्णः	गोमुखहरिणविशेषः	गोकर्णो गोसदृशकर्णः 'गोन' इति प्रसिद्धः (ड.)
१० कोट्टकारकः		
११ चारुष्कः	हरिणभेदः	चारुशरीरः स्वल्पतनुर्मृगभेद एव
१२ हरिणः	ताम्रवर्णः	हरिणस्ताम्रउच्यते (सु.) गोरहरिणः (ड).
१३ एणः	कृष्णसारः	एणः कृष्णः (सु.) कृष्णहरिणः (ड.)
१४ शम्बरः		
१५ कालपुच्छकः		
१६ ऋष्यः	नीलाण्डो हरिणः	ऋष्यो नीलाण्डः 'रोह' इति प्रसिद्धः (ड.)
१७ वरपोतः	हरिणभेदः	
विष्किरवर्गः		
१ लावः		लावः प्रसिद्धः (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
चक्राह्वः (हे.)	चक्र इत्याख्यया उच्यतेऽसाविति
	पृषन्ति बिन्दवः सन्ति अस्य इति मत्वर्थीयः अच्
अष्टचरणः (हे.)	शृणाति इति
	रमन्तेऽस्मिन् इति
	शुनो दंष्ट्रेव दंष्ट्रा यस्य सः
लघुपृथूदरा शशाभा (हे.)	
बिलेशयः (हे.)	शशति प्लुत्वा गच्छति इति
	उच्चै रणो यस्य, उरण्यति देवताः प्रीणातीति श्री-भोजः कण्ड्वादिपाठात्
लघुचतुरगतिः (हे.)	कौ रङ्गति इति
गोसदृशकर्णो रासभाकारः (हे.)	गोः कर्णाविव कर्णौ यस्य
चारुतनुः (हे.)	
ताम्रवर्णः (हे.)	ह्रियते गीतेन इति
कृष्णवर्णः (हे.)	एति इति
विकटबहुविषाणः (हे.)	संवृणोति इति
नीलाण्डः (हे.)	ऋषति इति ऋषीगतौ इत्यस्मात्। इयर्ति इति वा
चित्रयोषी (हे.)	लाति (लावयति) लूयते इति वा।

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
२ वर्तीरकः (वर्तीरः)	कपिञ्जलभेदः	कपिञ्जलानूकः कपिञ्जलादल्पो वर्तिकातः किञ्चिन्महान् वर्तिकासदृश एव 'बर्घेरा' इति लोके [ड.]
३ वार्तीकः	चटकभेदः संघातचारी	
४ कपिञ्जलः	गौरतित्तिरिः	गौरतित्तिरिः [ड.]
५ चकोरः		रक्ताक्षो विषसूचकः स्वनाम्ना ख्यातः [ड.]
६ उपचक्रः	चकोरभेदः	कुक्कुरभेदः कृशचञ्चुर्मदाविलः [ड.]
७ रक्तवर्त्मकः कुक्कुभः	रक्तवर्त्मक इति कुक्कुभविशेषणं तेन स्थूलकुक्कुभो गृह्यते	
८ वर्तकः	"बटेर" इति ख्यातः	
९ वर्तिका	स्वल्पप्रमाणा जात्यन्तरमेव	वर्तीरभेदः [ड.]
१० बर्ही	मयूरः	
११ तित्तिरिः		कृष्णतित्तिरिश्चित्रपक्षः [ड.]
१२ कुक्कुटः		
१३ कङ्कः		
१४ शारपदः		
१५ इन्द्राभः	महाकङ्कः	
१६ गोनर्दः	घोडाकङ्कः	गोक्ष्वेडः
१७ गिरिवर्तकः		
१८ ककरः		लावान्तकः कपिञ्जलात्स्थूलः 'ककर' इति लोके
१९ अवकरः		
२० वारडः		

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
अल्पकपिञ्जलसदृशः [हि.]	
वनचटकः स्वल्पसंघातचारी (हे.)	
गौरतित्तिरिः (हे.)	कपिरिव जवते वेगेन गच्छति इति यद्वा कं श्रुतिसुखदं पिञ्जयति इति
रक्ताक्षः (हे.)	चकते ज्योत्स्नया तृप्यति इति
श्वभ्रचरः कृशचञ्चुर्मदाविलः (हे.)	
कुकुभो द्विविधः स्थलजो जलजश्च। रक्तवर्त्मकविशेषणात्स्थलजो गृह्यते [हे.]	कुकुशब्दं करोति इति
वर्तीरादल्पः [हे.]	वर्तते इति
वर्तीका वर्तकादप्यल्पा तत्सदृशा (हे.)	वर्तते इति
शिखी मयूरः (हे.)	बर्हमस्याऽस्ति इति
चित्रपक्षः (हे.)	तित्तिशब्दं राति इति
ताम्रचूडाख्यः (हे.)	कुगुच्चारणेन कुटति इति
	कङ्कते इति
कङ्कसदृशः चारुगतिः (हे.)	
कङ्कसदृशो विविधवर्णः (हे.)	शारपदेन्द्राभ इत्येकपदमिति चक्रपाणिदत्तः (अ. को.)
गोक्ष्वेडः (हे.)	गौरिव नर्दति इति
	गिरौ वर्तते इति
क्रकचशब्दकारी पीतकृष्णगलः कृष्णचञ्चुचरणो रक्तपृष्ठः (हे.)	क्रेति करोति वाशते इति

प्रतुदवर्गः	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
१ शतपत्रः	काष्ठकुक्कुटः	दार्वाघाटः 'काष्ठकुट्टक' इति लोके
२ भृङ्गराजः	प्रसिद्धो भ्रमरवर्णः	भ्रमरको धूम्याटसदृशः 'पक्षिराज' इति लोके
३ कोयष्टिः	'कोडा' इति ख्यातः	कोयङ्गका दीर्घजङ्घा "कोयङ्ग" इति लोके
४ जीवजीवकः	विषदर्शनमृत्युः	विषदर्शनमृत्युः
५ कैरातः		
६ कोकिलः (परभृतः)		कोकिलः
७ अत्यूहः	डाहुकः 'दात्यूह' इति वा पाठः	दात्यूहः कालकण्टकः "रायुक" इति लोके
८ गोपापुत्रः		
९ प्रियात्मजः (मातृनिन्दकः)		मातृनिन्दकः प्रियात्मकः "पुत्ररञ्जक" इति लोके
१० लट्टा [लट्वा]	फेञ्चाको रक्तपुच्छाधोभागः	फेञ्जातको रक्तपुच्छाधोभागः अन्ये भरद्वाजभेदमाहुः "लाट" इति लोके
११ लट्ट[ट्ट]षकः [लट्टूषकः]	तद्भेदः (लट्टाभेदः)	द्वितीयफेञ्जातकः, अन्ये सश्यानचञ्च्वाकृतिचञ्चुभागं दीर्घपुच्छादिलक्षणेन प्रतुदं विहङ्गमाहुः
१२ बभ्रुः		
१३ वटहा		
१४ डिण्डिमानकः [डिण्डिमाणवकः]	डिण्डिमवदुत्कटध्वनिः	डिण्डिमोत्कटध्वनिः
१५ जटी		
१६ दुन्दुभिः		
१७ पाक्कारः		
१८ लोहपृष्ठः		

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	शतं बहूनि पत्राणि यस्य सः, दार्वाघाटः
भृङ्गाह्वो भृङ्गराजः कृष्णवर्णचटकसदृशः शिखावान् गोप्रेरकः (हे.)	भृङ्ग इव राजते इति
	कं जलं यष्टिरिवास्य इति
एकोदरो द्विशिराः (हे.)	जीवं जीवयति इति
	किराते पर्यन्तभूमौ भवः
परपुष्टः (हे.)	कोकते चित्तं गृह्णाति इति
दात्यूहः ; अन्धकाकः (हे.)	अतिशयेन ऊहते इति
	प्रिया आत्मजा यस्य सः
लट्वा—रक्तपुच्छाधोभागः (हे.)	लटति इति
	बिभर्ति भरति इति वा
	जटा अस्य अस्ति इति
	दुन्दु इति अव्यक्तशब्देन भाति इति
	लोहस्य इव कठिनं श्यामलं वा पृष्ठं यस्य सः, लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यात्

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१९ कुलिङ्गकः	कुलिङ्ग इति वनचटकाकारः पीतमस्तकः 'वाऐ' इति लोके	वन्यचटको ग्राम्यचटकाकारः
२० कपोतः		वनवासी "पाण्डुक" इति लोके स च नानाविधः
२१ शुकः		
२२ शारङ्गः		चातकः
२३ चिरटी		
२४ कङ्कुः		
२५ यष्टिका		
२६ सारिका		
२७ कलविङ्कः	ग्राम्यचटकः	
२८ चटकः	देवकुलचटकः स्वल्पप्रमाणः	
२९ अङ्गारचूडकः		
३० पारावतः		पारावतो गृहदेवकुलालयः
३१ पाण्ड(न)विकः		

चरकसंहितागतः
The group of Wines
चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः

मद्यवर्गः	परिभाषा
१ शुक्तम्	कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च । यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥
२ शीधुः	शीधुरिक्षुरसै पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् ।
३ आरनालम्	आरनालन्तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः । पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥
४ स्वल्पचुक्रम् (शुक्तं चुक्रम्)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं स्वल्पं चुक्रं तदुच्यते ॥
५ आसवः	यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	के लिङ्गं चूडा अस्य
पाण्डुकः (हे.)	
	को वायुः पोतः नौरिवास्य, कस्य वायोः पोतः इव वा
कीरः (हे.)	शोभते, शोकति, शवति वा इति
	शीर्यते आतपैः इति
मेधाविनी (हे.)	सरति इति
	कलं मधुरास्फुटं वक्ते रौति इति
कलविङ्कः (हे.)	चटति भिनत्ति धान्यादिकम् इति
	पारे गिरिदुर्गनद्यादिपरपारे आपततीति, पृषोदरादित्वात् पस्य वः

मद्यवर्गः

in the Caraka samhita

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः	अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री
सर्वं मद्यं पञ्चरसं कालान्तरवशाद्यदा त्यक्त्वाऽन्यरसमम्लत्वं याति शुक्तं तदुच्यते ॥	कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते (हे.)
यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम्। धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (हे.)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम्। धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (हे.)
द्रवप्रधान आसवः	औषधयुक्तैर्मद्याकरैः कृतं मद्यम् आसवः (हे.)

	परिभाषा	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः
६ अरिष्टः	अरिष्टः क्काथसिद्धः स्यात् सम्पक्को मधुरद्रवैः ।	औषधक्काथमध्वादिसंपादितः
७ शीधुः (सीधुः)	आस्रुतश्चापि शीधुः स्यादित्याहुस्तद्विदो जनाः ।	
८ प्रसन्ना	सुरामण्डः प्रसन्ना स्यात्	
९ कादम्बरी	ततः कादम्बरी घना ।	
१० जगलः	तदधो जगलो ज्ञेयो	भक्तकिण्वकृता सुरा ।
११ मेदकः	मेदको जगलाद् घनः ॥	
१२ किण्वम्	सुराबीजञ्च किण्वकम् ।	
१३ वारुणी	यत्तालखर्जूररसैः सन्धिता सैव वारुणी ।	
१४ गुडशुक्तम्	गुडाम्बुना सतैलेन कन्दशाकफलैस्तथा । आस्रुतं चाम्लतां यातं गुडशुक्तं तदुच्यते ॥ एवमेवेक्षुशुक्तं स्यात् मृद्वीकासम्भवं तथा ।	
१५ तुषाम्बु	तुषाम्बु चास्रुतं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ।	
१६ सौवीरकम्	सुनिस्तुषैश्च पक्वैश्च सौवीरं चास्रुतं भवेत् ॥	
१७ धान्याम्लम्	कुल्माषो धान्यमण्डेन चास्रुतं काञ्जिकं भवेत् ।	
१८ तुषोदकम्	भृष्टान्माषतुषान् सिद्धान् यवचूर्णसमन्वितान् । आस्रुतानम्भसा तद्धजातं तच्च तुषोदकम् ॥	
१९ काञ्जी	आशु धान्यं क्षोदितञ्च बालमूलन्तु खण्डशः। कृतं प्रस्थमितं पात्रे जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्धाय संरक्षेत् यावदम्लत्वमागतम् । काञ्जिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥	
२० शिण्डाकी	शिण्डाकी चासुता ज्ञेया मूलकैः सर्षपादिभिः ।	
२१ मधुशुक्तम्	जम्बीरस्वरसप्रस्थं मधुनः कुडवं तथा । तावच्च पिप्पलीमूलादेकीकृत्य घटे क्षिपेत् । धान्यराशौ स्थितं मासं मधुशुक्तं तदुच्यते ॥	

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः

द्रव्यप्रधानमरिष्टम्

उभय(द्रवद्रव्य)प्रधानं मद्यम्

सुराया मण्ड उपर्यच्छो भागः

जगलोऽधःकिट्टं मद्यस्य, यो बहिस्त्यज्यते; किण्वभक्त-सुरा जगलः

गुडाम्बुना सतैलेन सन्धानं काञ्जिकं तु यत्।
कन्दशाकफलैर्युक्तं गुडशुक्तं तदुच्यते॥

जम्बीरस्य फलरसं पिप्पलीमूलसंयुतम्।
मधुभाण्डे विनिक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत्॥
त्र्यहेण तज्जातरसं मधुशुक्तमुदाहृतम्।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

स (आसव) एव क्वथितौषधैः अरिष्टः (हे.)

अपक्वेक्षुरसकृतः, पक्वेक्षुरसकृतश्च (अ.)

वारुण्या अधोभागो घनो जगलः (अ.)

जगलस्याधोभागो मेदकः (अ.)

वारुणी श्वेतसुरा। सा च श्वेतपुनर्नवादिमूलयुक्तेन शालि-पिष्टेन क्रियते (हे.)

सतुषैः यवैः कृतम् (अ.)

वितुषैः यवैः कृतम् (अ.)

तण्डुलकण्डनादिकृतम् (अ.)

शाण्डाकी कन्दमूलफलादिमुद्रादिवटकैः कृता, तथा मूलक-च्छेदसन्धानं शाण्डाकी स्याद् बहुद्रवा।

	परिभाषा	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः
२२ सुरा	अनुद्धृतमण्डा	अनुद्धृतमण्डा
२३ मदिरा	सुरामण्ड:	सुरामण्ड:
२४ शार्कर:		शर्कराप्रकृतिक आसवः
२५ पक्करस:		यः क्वथितेनेक्षुरसेन क्रियते
२६ शीतरसिक:		शीतेक्षुरसकृत:
२७ गौड:		गुडप्रकृतिक:
२८ सुरासव:		यत्र सुरयैव तोयकार्यं क्रियते
२९ मैरेयम्	मैरेयं धातकीपुष्पगुडधान्याम्लसंयुतम् ।	आसवस्य सुरायाश्च द्वयोरेकत्र भाजने । सन्धानं तद् विजानीयान्मैरेयमुभयाश्रयम् ॥
३० मधूलकम्		मधूलक: गोधूमभेद: । तत्कृतं मद्यम् । अन्ये तु मेदकमाहु:
३१ माध्वीकम्		मधुप्रधानम्
३२ आक्षिकी (सुरा)		
३३ आसुतम्		

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः	अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री
सुरा लोहितवर्णा पिष्टकिण्वकल्केन किंचित्कलुषा	शालिपिष्टकृतं मद्यं सुरा (हे.)
गुडशर्करया खण्डशर्करया वा क्रियते	शर्करासंबन्धी मद्यविशेषः (अ.)
पक्वेनेक्षुरसादिना कृतः	पक्वेनेक्षुरसेन कृतं पक्वरसः (हे.)
अपक्वरसकृतः	
	गुडकृतं मद्यं गौडम् (हे.)
सुरया सूयते तोयकार्यं क्रियते यस्मिन् सः	तत्र मधुनैव सुरासन्धानेन या क्रियते तां सुरां सुरासवमाहुः
सुरासवयोः प्रत्येकनिष्पादितयोरेकीकृत्य पुनः सन्धानान्मैरेयः	मैरेयः कोद्रवैर्जायते (अ.)
मधूलकः स्वल्पगोधूमो मध्यदेशे 'पीशीका' इति ख्यातः, मर्कटहस्ततृणं वा तत्फलकिण्वं मधूलकम्	
अक्षस्य बिभीतकस्य वल्कलैः सह कृता	बिभीतकवल्कलयुक्तशालिपिष्टकृता बैभीतकी सुरा (हे.)
	कन्दमूलफलाद्यं च लवणोदकसंयुतम् । सन्धानाच्चिरकालाम्लमासुतं परिकीर्तितम् (हे.)

चरकसंहिताया अकारादिक्रमेणानुक्रमणिका।

The Alphabetical Index to the Caraka Samhita

अक्षतस्य लक्षणम् चि. १२–८८

अक्षिरोगाश्चत्वारः सू. १९–४/५

अक्षोडगुणाः सू. २७–१५७, १५८

अग्निविसर्पस्य निदानलक्षणे चि. २१–३५, ३६

अग्निसंधुक्षणार्थं पेयादिक्रमः सि. १२–६–८

अग्र्याणां संग्रहस्तेषां चिकित्सायामुपयोगः सू. २५–४०–४४

अङ्कलोड्यस्य गुणाः सू. २७–११६½

अङ्कोटस्य गुणाः सू. २७–१५९

अङ्गग्रहव्यापदो वर्णनं तच्चिकित्सा च सि. ६–७६, ७७

अङ्गमर्दप्रशमनो दशको महाकषायः सू. ४–१७/४४

अङ्गशूलव्यापदो वर्णनम् सि.७–४७–५३

अङ्गुल्याश्रितं रिष्टम् इ. ३–६

अचरणाया योनेर्लक्षणम् चि. ३०–१८

अच्छर्दनीयाः सि. २–८

अजगन्धागुणाः सू. २७–१७३

अजल्पतोऽहसतस्तन्मनसश्च भुक्तवतो गुणाः वि. १–२५ | ९

अजाक्षीगुणाः सू.२७–३०७, ३०८

अजातोदकलक्षणम् चि. १३–५५, ५८

अजीर्णाध्यशनजा व्यापदः सि.१२–१४/५

अजीर्णौषधस्य लिङ्गानि सि. ६–२७

अज्ञत्वविचारः शा. १–५४,५५

अज्ञचिकित्सकस्य दोषाः सू. ९–१४–१७

अञ्जनविधिः सू. ५–१४–१९

अणुतैलनिर्माणविधिः सू. ५ ६२–६८

अणुतैलसेवने गुणाः सू. ५–५७–६२

अणुतैलस्य प्रयोगकालः सू. ५–५६

अणुतैलस्य प्रयोगविधिः सू. ५–६९,७०

अतसीतैलस्य गुणाः सू. २७–२९२

अतिकार्श्यस्य निदानम् सू. २१–१०–१२

अतिकार्श्यप्रतिकारः सू. २१–२९–३३

अतिकृशस्य चिकित्साक्रमः सू.–२१–१६

अतिकृशस्य दोषाः सू. २१–१३, १४

अतिकृशस्य लक्षणम् सू. २१–१५

अतिचङ्क्रमणजा व्यापदः सि. १२-१४/३

अतिचरणाया योन्या व्यापत्तेर्लक्षणम् चि. ३०–१९

अतिनिद्रायां प्रतिकारः सू. २१–५५,५६

अतिप्रपीडितस्नेहदोषाः तच्चिकित्सा च सि. ५–१८

अतिबालवृद्धयोर्मैथुननिषेधः चि. ४–४०–४२

अतिमात्रप्रणीतनेत्रदोषास्तच्चिकित्सा च सि. ५–१५, १६

अतिमात्रभोजनादन्येऽप्यामप्रकोपस्य हेतवः वि. २–८,९

अतिमात्रस्य भोजनस्य दोषाः वि. २–७

अतियोगजन्या व्यापदस्तासां चिकित्सा च सि. ६–४५–४७

अतियोग(बस्त्यतियोग)व्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७–१२–१४

अतियोगे (शोधनस्यातियोगे) द्वौ बस्ती सि. १०–३७, ३७½

अतिव्यायामे दोषाः सू. ७–३३

अतिसारचिकित्सासूत्रम् सि. ८–४३–४५

अतिसारयोर्भयशोकजयोर्लक्षणम् चि. १९–११, १२

अतिसारस्य पित्तजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १९–६

अतिसारस्य प्रागुत्पत्तिः चि. १९–३, ४

अतिसारस्य वातजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १८-५

अतिसारस्य श्लेष्मजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १९-७

अतिसारस्य षट्त्रिंशद्भेदा: सि. ८-१९-२१

अतिसारस्य संनिपातजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १९-८-१०

अतिसारहरं घृतम् सि. ८-३६, ३७

अतिसारहरा यवाग्वः सि. ८-३८-४२

अतिसारे अन्नपानम् चि. १९-२३-४१

अतिसारे वातादिचिकित्साक्रमः चि. १९-१२१,१२२

अतिसारोक्तक्रमस्यान्यत्राप्यतिदेशः सि. ८-३४.

अतिसारोपद्रवा: सि. ८-२२.

अतिसारोपद्रवाणां नाशना योगाः सि. ८-२३-३३

अतिस्थूलस्य चिकित्साक्रमः सू.२१-१६

अतिस्थूलस्य दोषाः सू. २१-४

अतिस्थूलस्य लक्षणम् सू. २१-९

अतिस्थौल्यस्य उपक्रमः सू. २१-२१-२८

अतिस्निग्धस्य लक्षणम् सू. १३-५९

अतिस्विन्नस्य चिकित्सा सू. १४-१५

अतिस्विन्नस्य लक्षणम् सू. १४-१४

अतीतकालस्य लक्षणम् वि. ८-५८

अतीसारा: षट् सू. १९-४ | ३

अत्यग्नेर्निदानं लिङ्गं चिकित्सा च चि. १५-२१७-२३३

अत्यशनावृतस्नेहस्य चिकित्सा सि. ४-३५.

अत्यशनावृतस्नेहस्य लक्षणम् सि. ४-३४

अत्यासनजा व्यापदः सि. १२-१४ | ४

अधिजिह्विकाया लक्षणम् चि. १२-७७

अधिमांसार्बुदादीनामपि शोथेऽन्तर्भावः सू. १८-३३.

अधोगरक्तपित्तस्य याप्यत्वे हेतुः नि. २-१५-१७

अधोवातनिग्रहे दोषास्तच्चिकित्सा च सू. ७-१२,१३

अध्ययनविधिः वि. ८-७.

अध्यात्मद्रव्यगुणानां संग्रहः सू. ८-१३

अननुयोज्यस्य लक्षणम् वि. ८-५१

अनन्तवातस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि सि. ९-८४-८५३

अनारोग्यकरस्य उदकस्य लक्षणम् वि. ३-७ | २

अनारोग्यकरस्य कालस्य लक्षणम् वि. ३-७ | ४

अनारोग्यकरस्य देशस्य लक्षणम् वि. ३-७ | ३

अनारोग्यकरस्य वातस्य लक्षणम् वि. ३-७ | १

अनास्थाप्याः सि. २-१४.

अनित्यत्वविचारः शा. १-५९.

अनुक्तविरेचनयोगोपदेशः क. ८-१६

अनुक्तद्रव्यसंग्रहः चि.२-८/३६ ८/३८

अनुक्तशोथसंग्रहः ,, १२-१०१

अनुच्छ्वास्य दत्ते निःशेषं वा दत्ते बस्तौ दोषास्तच्चिकित्सा च सि. ५-९, १०

अनुपस्थितदोषाणां वमनदाने दोषाः चि. ३-१४७,१४८

अनुपानस्य गुणाः सू. २७-३२५,३२६

अनुबन्धजहिक्काश्वासचिकित्सा चि. १७-८१

अनुबन्धस्य परीक्षा वि. ८-९१

अनुबन्धस्य लक्षणम् वि. ८-७४

अनुबन्ध्यानुबन्धभेदकृतो दोषभेदः वि. ६-११.

अनुमानज्ञेया विषयाः वि. ४-८

अनुमानस्य लक्षणम् सू. ११-२१, २२

अनुमानस्य लक्षणम् वि. ४-४

अनुमानस्य लक्षणम् वि. ८-४०

अनुमानेन पुनर्भवस्य प्रतिपादनम् सू. ११-३१

अनुयोगस्य लक्षणम् वि. ८-५२

अनुयोज्यस्य लक्षणम् वि. ८-५०

अनुलोमसंभाषाविधिः वि. ८-१७

अनुवासनद्रव्याणि वि. ८–१५०

अनुवासननिरूहयोरेकान्ततः सेवननिषेधः सि. ४–५०, ५१

अनुवासनविधानम् सि. १–२०–२६

अनुवासनात्पूर्वं युक्तस्नेहत्वादिविशिष्टं भोजनं देयम् सि. ४–४३

अनुवासनात् या व्यापदो भवन्ति सि. २–१८

अनुवासनानर्हाः सि. २–१७

अनुवासनार्हाः सि. २–१९

अनुवासने आमस्नेहनिषेधः सि. ४–४८

अनुवासनो स्कन्धः महाकषायः सू. ४–१३

अनुवासितायोष्णं जलं देयं तद्गुणाश्च सि. ४–४३–४५

अनूपजानां साधारणगुणाः सू. २७–५६, ५७

अनेकरसेषु द्रव्येष्वनेकदोषात्मकविकारेषु च द्रव्यविकारप्रभावतत्त्वं कथं व्यवस्येदिति कथनम् वि. १–९–१२

अन्तरायामस्य लक्षणम् चि. २८–४३–४५

अन्तर्गतस्य पच्यमानगुल्मस्य लक्षणानि चि. ५–४५

अन्तर्मुख्या योनेर्लक्षणम् चि. ३०–२९, ३०

अन्तर्विद्रधिलक्षणानि सू. १७–९६

अन्तर्विद्रधीनां साध्यासाध्यत्वनिर्देशः क्रियाक्रमश्च सू. १७–१०३

अन्तर्विद्रधीनां स्थानविशेषकृतं लक्षणम् सू. १७–१०१, १०२

अन्तर्वेगज्वरलक्षणम् चि. ३–३९, ४०

अन्नकाले त्वरिताय दन्तधावनं विधेयम् चि. ३–१५७–१५९

अन्नजहिकाया लक्षणम् चि. १७–३८–४१

अन्नपरिपाकक्रमः चि. १५–६–११

अन्नपानस्य विधिविहितस्य प्राणिनां प्राणत्वम् सू. २७–३

अन्नप्रशंसा सू. २७–३४९, ३५०

अन्नवहस्रोतसां मूलं तद्दुष्टिलक्षणं च वि. ५–८

अन्नविषस्य लिङ्गानि चि. १५–४५, ४६

अन्नसम्यग्योगस्याभिजनकत्वम् चि. १५–२११–२१६

अन्नस्येन्द्रियपोषकत्वम् चि १५–१२

अन्यद्भेषजं कदा प्रयोज्यम् क. १२–६१

अन्ये योगाः चि. ४–६७–७१

अन्येद्युष्कज्वरस्य लक्षणम् चि. ३–६३

अपतन्त्रकस्य संप्राप्तिलक्षणानि सि. ९–११–१४

अपतन्त्रकापतानकयोः पानम् सि.९, १८

अपतन्त्रकापतानकयोः शिरोविरेचनम् सि. ९–१७

अपतन्त्रकापतानकयोर्हिङ्ग्वाद्यो योगः सि. ९–१९

अपतन्त्रकापतानकयोश्चिकित्सासूत्रम् सि. ९–१६

अपतन्त्रकापतानकयोस्तीक्ष्णशोधनबस्तिनिषेधः सि. ९–२०

अपतर्पणजा रोगाः सू. २३–२६–२९

अपतर्पणजेषु रोगेषु प्रतिकारः सि.२३–३०

अपतर्पणभेदास्तेषां प्रयोगावस्था च वि. ३–४३, ४४

अपतानकस्य संप्राप्तिलक्षणानि सि.९–१४, १५

अपत्यकरं घृतम् चि. २–४/२८,४/२९

अपत्यकरः स्वरसः चि.२–२/१४–२/१७

अपत्यकरी षष्टिकादिगुटिका चि. २–२/३–२/९

अपथ्यपरिहारे फलम् सू. २८–४३, ४४

अपरिसंख्येयसंयोगानामपि विरेचनद्रव्याणां षट्सु शतेष्वन्तर्भावं कृत्वोपदेशः क. १–६

अपवादः (अच्छर्दनीयानाम्) सि. २–९

अपस्मारनाशकाः प्रदेहधूपाः चि. १०–३७, ३८

अपस्मारनिरुक्तिः चि. १०–३

अपस्मारस्य चिकित्सासूत्रम् नि. ८–१०

अपस्मारस्य निदानपूर्विका संप्राप्तिः नि. ८–४

अपस्मारस्य पूर्वरूपाणि नि. ८–६, ७

अपस्मारस्य प्रत्यात्मिकं लक्षणम् ८–५

अपस्मारस्य भेदाः चि. १०–८

अपस्मारस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. १०–९–११

अपस्मारस्य वेगकालः चि. १०–१३

अपस्मारस्य संप्राप्तिः चि. १०–४

अपस्मारस्य सामान्यरूपम् चि.१०–६–८

अपस्मारस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५–२२, २३

अपस्मारस्यासाध्यलक्षणम् चि. १०–१२

अपस्माराणां संख्या नि. ८–३

अपस्माराश्चत्वारः सू. १९–४ | ५

अपस्मारे अतत्त्वाभिनिवेशस्य निदान–लिङ्गचिकित्सा चि १०–५४–६३

अपस्मारे अञ्जनानि चि. १०–४६, ४७

अपस्मारे अन्ये घृतयोगाः चि. १०–२९–३१

अपस्मारे अभ्यङ्गार्थं सिद्धतैलानि चि. १०–३२

अपस्मारे आगन्त्वनुबन्धचिकित्सा चि. १०–५३

अपस्मारे उत्सादनम् चि. १०–३९, ४०

अपस्मारे कतिपयसिद्धघृतानि चि. १०–२५, २६

अपस्मारे चिकित्साक्रमः चि.१०–१४–१६

अपस्मारे जीवनीययमकम् चि. १०–२८

अपस्मारे नस्यानि चि. १०–४१–४५

अपस्मारे पञ्चगव्यं घृतम् चि. १०–१७

अपस्मारे पलङ्कषाद्यं तैलम् चि. १०–३४–३६

अपस्मारे महापञ्चगव्यं घृतम् चि. १०–१८–२४

अपस्मारे मुस्ताद्या वर्तिः चि.१०–४८,४९

अपस्मारे रसायनयोगाः चि.१०–६४,६५

अपस्मारे वचाद्यं घृतम् चि. १०–२७

अपस्मारे श्वपित्ताञ्जनं तद्धूपनयोगश्च चि. १०–५०, ५२

अपस्मारेष्वागन्त्वनुबन्धनिर्देशः नि. ८–९

अभिचाराभिशापजयोर्ज्वरयोर्लक्षणम् चि. ३–११८–१२१

अभिघात-काम-क्रोध-शोक-भयज्वराणां चिकित्सा चि. ३–३१७–३२३

अभिघातज्वरलक्षणम् चि. ३–११२–११४

अभिघातजे विषजे च शोथे चिकित्सा चि. १२–१०२

अभिशापप्रभवस्य जनपदोद्ध्वंसस्याप्यधर्म एव हेतुः वि. ३–२३

अभिषङ्गज्वरलक्षणम् चि. ३–११४, ११७

अभिषुकगुणाः सू २७–१५७,१५८

अभेषजलक्षणम् चि. १–१५

अभेषजभेदाः ,, १–५

अभ्यङ्गस्य गुणाः सू. ५–८५–८९

अभ्यनुज्ञाया लक्षणम् वि. ८–६२

अम्बूनां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७–३१८

अम्लरसस्य गुणकर्माणि तस्यातियोगे दोषाश्च सू. २६–४३ | २

अम्लकाञ्जिकस्य गुणाः सू. २७–१९२

अम्लचाङ्गेर्या गुणाः सू. २७–९२

अम्लवेतसफलस्य गुणाः सू. २७–३५२

अम्लीकाकन्दस्य गुणाः सू. २७–१२१

अम्लीकाफलस्य गुणाः सू. २७–१५२

अयनयोः स्वरूपम् सू. ६–५

अयोगजन्या व्यापदस्तासां चिकित्सा च सि. ६–३८–४४

अयोगव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७–७–११

अयोगातियोगमिथ्यायोगयुक्तस्य कर्मणो लक्षणम् सू. ११–३९, ४१

अयोगातियोगमिथ्यायोगयुक्तस्य कालस्य लक्षणम् सू. ११–४२

अरजस्काया योनेर्लक्षणम्
चि. ३०-१७

अरिष्टज्ञाने सर्वथा यत्नो विधेयः
इ. ९-२३,२४

अरिष्टलक्षणानां संक्षेपतः कथनम्
इ. १२-४०-६१

अरिष्टलक्षणानि इ. ९-१२-१७

अरिष्टस्य गुणाः सू. २७-१८२

अरिष्टलक्षणम् सू. ११-२९

अरिष्टानि इ. ९-३-५

अरिष्टानि ,, ९-२१, २२

अरिष्टानि ,, ११-१३-२६

अरूंषिकाया लक्षणम् चि. २६-११७

अरोचकस्य वातजादिभेदेन चिकित्सा
चि. २६-१२४-१२६

अरोचकानां चिकित्सा
चि. २६-२१५-२२०

अर्जकगुणाः सू २७. -१७०

अर्थप्राप्तेर्लक्षणम् वि. ८-४८

अर्थान्तरस्य लक्षणम् वि. ८-६४

अर्दितस्य चिकित्सा
चि. २८-९९,१००

अर्दितस्य लक्षणम् चि. २८-३८-४२

अर्दितादीनां दण्डकान्तानां समानं
लक्षणम् चि. २८-५२

अर्धमासान्मरिष्यतो लिङ्गानि इ. १२-५

अर्धावभेदकस्य निदानलक्षणचिकि-
त्सितानि सि. ९-७४-७८

अर्बुदचिकित्सातिदेशः चि. १२-८७

अर्शःसु सामान्यचिकित्सा
चि. १४-२४३-२४८.

अर्शसां चतुर्विधचिकित्सितम्
चि. १४-३३

अर्शसां द्वन्द्वजानां त्रिदोषजानां च हेतु-
र्लक्षणं च चि. १४-२०

अर्शसां द्विविधो भेदः चि. १४-११

अर्शसां पित्तोल्बणानां रूपाणि चि. १४-१४

अर्शसां पित्तोल्बणानां हेतुः
चि. १४-१५, १६

अर्शसां पूर्वरूपाणि चि. १४-२१, २२

अर्शसां वातोल्बणानां रूपाणि
चि. १४-११

अर्शसां वातोल्बणानां हेतुः
चि. १४-१२, १३

अर्शसां श्लेष्मोल्बणानां रूपाणि
चि. १४-१७

अर्शसां सर्वदोषजत्वम् चि. १४-२३-२५

अर्शसां साध्यासाध्यविचारः
चि. १४-२६-३१

अर्शसां सामान्यो हेतुः चि. १४-९

अर्शसामधिष्ठानभूता धातवः
चि. १४-६

अर्शसामाकृतयः चि. १४-१०

अर्शसामुत्पत्तिक्षेत्रम् चि. १४-६

अर्शसामुपेक्षणे बद्धगुदोदरसंभवः चि.१४·३२

अर्शोघ्नो दशको महाकषायः
सू. ४-११

अर्शोरोगः द्विविधः सू. १९-४ | ७

अलज्या लक्षणम् सू. १७-८८

अलज्या लक्षणम् चि. १२-८८

अलसकविसूचिकामदोषेषु चिकित्साक्रमः
वि. २-१३, १४

अलसकस्य लक्षणम् वि. २-१२

अलसकस्य लक्षणम् चि. ७-२३

अलाबुगुणाः सू. २७-१३२

अवगाहस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४५

अवगाहस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-३४

अवन्ध्याया अपि चिराद्गर्भग्रहणे हेतुः
शा. २-७

अवपीडनस्य दानविधिः
सि. ९-९८-१०७

अवल्गुजस्य गुणाः सू. २७-३३

अवल्गुजस्य गुणाः सू. २७-९५-९७

अवल्गुजस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३

अवसादिनः शुक्रस्य लक्षणम्
चि. ३०-१४४, १४५

अत्रिपक्वानां दोषाणां तरुणज्वरे पाचनानि
चि. ३-१४२

अविरिच्यैव येषां भेषजं जीर्यति तेषां
चिकित्सा क. १२-७९, ८०

अविरेच्याः सि. २–११

अव्यक्तस्य निर्देशः शा. १–६०–६२

अव्यक्तान्महदाद्युत्पत्तिक्रमः
शा. १–६६–६८

अव्याधिसहशरीरस्य लक्षणम् सू. २८–७

अशितपीतादीनां फलम् सू. २८–३

अशिरोविरेचनार्हाः सि. २–२०

अशुभफलं कर्म न कर्तव्यम्
वि. ३–४६

अश्मघनस्वेदस्य कल्पना
सू. १४–४७–४९

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा चि. २६–५९

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे अन्ये योगाः
चि. २६–६६–६८

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे त्रुटयादिचूर्णम्
चि. २६–६४,६५

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे पाषाणभेदादिचूर्णं घृतं
वा चि. २६–६०,६१

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे पुनर्नवादियोगः
चि. २६–६३

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रे श्वदंष्ट्रादियोगः
चि. २६–६२

अश्वत्थपल्लवस्य गुणाः सू. २७–१०५

अश्वत्थफलस्य गुणाः सू. २७–१६३,१६४

अष्ट प्रकृतयः शा. १–६२

अष्टमे मासि मातृगर्भयोः परस्परमोजो-
ग्रहणम् शा. ४–२४

अष्टादशक्षयाणां गणना सू. १७–६३

अष्टावाहारविधिविशेषायतनानि वि.
१–२१

असंख्येयत्वाद् द्रव्याणां रसत एवावस्था-
पनद्रव्योपदेशः वि. ८–१३७, १३८

असद्वृत्तान्यननुष्ठेयानि सू. ८–१९–२७

असमर्थानां संशोधनप्रकारः सू.
१५–१९–२१

असमानप्रकृत्यादीनां जनानां कथं युगपदे
केन व्याधिनोद्ध्वंसनमित्यग्निवेशस्य प्रश्नः
वि. ३–५

असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगस्य वर्णनम्
शा. १–११८, ११९
असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगस्यैकरूपत्वे युक्तिः
सू. ११–३८

असाध्यविसर्पलक्षणम् चि. २१–२८

असाध्यत्वात्परिहर्तव्यानि शरीराणि
इ. ६–३–२४

असुखस्यायुषो लक्षणम् सू. ३०–२४

असृजि प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम्
चि. २८–३१

असृग्दरचिकित्सा चि. ३०–८६–९०

असृग्दरे कतिपययोगाः
चि. ३०–९६–१००

असृग्दरे पुष्यानुगं चूर्णम्
चि. ३०–९०–९६

अस्थिजानां व्याधीनां चिकित्सा
सू. २८–२७

अस्थिप्रदोषजा रोगाः सू. २८–१६

अस्थिमज्जगते वाते चिकित्सा
चि. २८–९३

अस्थ्नां विवरणम् शा. ७–६

अस्निग्धस्य लक्षणम् सू. १३–५७

अस्मिन्काले आयुषः प्रमाणम्
शा. ६–२९

अस्वेद्याः सू. १४–१६–१९

अस्वेद्या हिक्काश्वासातुराः
चि. १७–८२–८४

अहिततमानामाहारद्रव्याणां
(प्रकृत्यैव) निर्देशः सू. २५–३९

अहितस्यायुषो लक्षणम् सू. २०–२४

अहिताहारोपयोगादन्या रोगप्रकृतयः
सू. २८–७

अहिताहारोपयोगिनोप्यारोग्यदर्शने
हेतुः सू. २८–७

अहेतोर्लक्षणम् वि. ८–५७

आक्षिकीफलस्य गुणाः सू. २७–१६३

आक्षिक्या गुणाः सू २७–१८६

आक्षेपस्य लक्षणम् चि. २८–५०

आगन्तुकरोगाणामुत्पत्तौ प्रज्ञापराधस्य
कारणत्वम् सू. ७–५१, ५२

आगन्तुकविकाराणामनुत्पत्तौ विधिः सू. ७–५३, ५४

आगन्तुकोन्मादस्य चिकित्सासूत्रम् नि. ७–१६, १७

आगन्तुकोन्मादानां साध्यासाध्यविभागः नि. ७–१५

आगन्तुज्वरभेदाः चि. ३–१११

आगन्तुज्वरलक्षणानामन्येष्वागन्तुरोगेष्वतिदेशः चि. ३–१२५

आगन्तुज्वरस्य चातुर्विध्यं कारणभेदेन दोषानुबन्धश्च नि. १–३०

आगन्तुज्वरस्य वैशिष्ट्यम् नि. १–३१

आगन्तुज्वरेषु दोषादिविचारः चि. ३–१२६–१२८

आगन्तुनिजरोगयोर्लक्षणतो भेदः सू. २०–७

आगन्तुनिजावुन्मादौ परस्परमनुबध्नीतः नि. ७–१८

आगन्तुव्रणानां हेतुश्चिकित्सा च चि. २५–७–९

आगन्तुकविकारस्य कारणानि सू. २०–४

आगन्तून्मादनिदानम् नि. ७–१०

आगन्तून्मादस्य निदानम् चि. ९–१६

आगन्तून्मादस्याघातकालाः नि. ७–१४

आगन्तोर्ज्वरस्य निजाद् भेदको धर्मः चि. ३–१२८, १२८½

आचाररसायनम् चि. ४–३०–३५

आचार्यपरीक्षा वि. ८–४

आजमांसस्य गुणाः सू. २७–६१

आटरूषककाथः चि. ४–६५, ६६

आढक्या गुणाः सू. २७–३३

आतुरगृहं गच्छतो वैद्यस्य यात्रायामशुभानि निमित्तानि इ. १२–२६–३०

आतुरगृहावस्थाः प्रशस्ताः इ. १२–७१–७९

आतुरस्य गुणाः सू. ९–९

आतुरस्यानिमित्त इन्द्रियज्ञानविपर्यासो मरणलक्षणम् इ. ४–५, ६

आतुरस्वप्नाः प्रशस्ताः इ. १२–७१–७९

आतुरहितो विधिः सू. २८–३४, ३५

आतुरावस्थास्वपि कालाकालनिर्देशः वि. ८–१२८

आत्मगुप्ताया गुणाः सू. २७–३४

आत्मनः शुभाशंसनप्रकारः सू. ८–२८

आत्मनः साक्षिभूतत्वसाधनम् शा. १–८३

आत्मनो निर्विकारत्वनिर्देशः शा. ४–३३

आत्मनोऽनुबन्धः शा. २–३७, ३८

आत्मनो लक्षणम् सू. १–५६

आत्मपरलोकास्तित्वप्रतिपादनम् सू. ११–७–१६

आत्मा कथं देहाद्देहान्तरं यातीति निरूपणम् शा. २–३१–३६

आत्मानमभिसमीक्ष्य भुञ्जतो गुणाः वि. १–२५

आत्रेयकृतं समाधानमग्निवेशकृते जनपदोद्ध्वंसनविषयके प्रश्ने वि. ३–३

आदानविसर्गयोर्बलस्य ह्रासवृद्धिक्रमः सू. ६–६–८

आदौ दुष्टरक्तनिग्रहे दोषाः चि. १४–१७७–१७९

आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६–५८–६०

आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७–२१–२६

आनाहस्य संप्राप्तिलक्षणं च सू. १८–३२

आनाहिनोऽरिष्टम् इ. ९–१०

आपित्तदर्शनाद्वमनार्थं भेषजं प्रयोज्यम् क. १२–५९

आप्तवाक्यद्वारा पुनर्भवस्य प्रतिपादनम् सू. ११–२७–२९

आप्तस्य लक्षणम् सू. ११–१८, १९

आप्तोपदेशलक्षणम् वि. ४–४

आप्तोपदेशाज्ज्ञातव्या विषयाः वि. ४–६

आप्तोपदेशादिभिः सर्वैरध्यवसानममोहकरं भवति वि. ४–९–१२

आप्तोपदेशादिभिः सर्वै रोगं परीक्ष्य निर्णयो विधेयः वि. ४–५

आमं द्विविधम् सू. १९–४ | ७

आमग्रहण्याश्चिकित्सा सू. १५–७३–७६

आमज्वरलक्षणम् चि. ३–१३३–१३५३

आमप्रदोषभेदौ वि. २–१०

आममललक्षणम् चि. १५–९४

आमलकगुणाः चि. १–१ | ३६, १–३७

आमलकघृतम् . चि. १–२ | ४–२ | ६

आमलकचूर्णम् ,, १–२ | ८

आमलकरसायनम् चि. १–१ | ७५

आमलकरसायनम् (केवलम्) चि. १–३ | ९–३ | १४

आमलकलेहानां गुणाः सू. २७–२८२

आमलकस्य गुणाः सू. २७–१४७

आमलकायसरसायनम् चि. १–३/३-३/८

आमलकावलेहः चि. १–२ | ७

आमलकावलेहः (अपरः) चि.१–२ | १०

आमातिशये प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८–२७

आमातिसारे अनुलोमनार्थं हरीतकीयोगः चि. १९–१८

आमातिसारे प्रमथ्याः चि. १९–१९–२२

आमातिसारे संग्रहणौषधनिषेधः चि. १९–१४–१७

आमादिषट्कसंसर्गचिकित्सा चि. ८–३५

आमाशयस्थे वाते चिकित्सा चि. २८–९१

आम्रलेहानां गुणाः सू. २७–२८२

आम्रस्य गुणाः ,, २७–१३९

आम्रातकस्य गुणाः ,, २७–१२९

आम्रातकस्य गुणाः ,, २७–१६१

आयामो द्विविधः ,, १९–४ | ७

आयुःपरीक्षायाः प्रशंसा इ. ११–२८

आयुःशब्दस्य पर्यायाः सू. ३०–२२

आयुषः अप्रमाणम् सू. ३०–२५

आयुषः प्रमाणम् सू. ३०–२५

आयुषः प्रमाणज्ञानहेतोः शरीरपरीक्षा वि. ८–१२४

आयुषः प्रमाणविशेषज्ञानार्थं परीक्ष्या आतुरगता वर्णस्वरादयो भावाः इ. १–३

आयुषोऽनियतत्वसाधनम् इ. ३–३६

आयुषो नियतत्वे अनियतत्वे च युक्तिः इ. ३–२९–३५

आयुर्वेदलक्षणम् सू. १–४१

आयुर्वेदविदो लक्षणम् सू. ३०–१६

आयुर्वेदस्य निरुक्तिः ,, ३०–२३

आयुर्वेदस्य त्रिविधपुरुषार्थसाधनत्वम् सू. ३०–२९

आयुर्वेदस्य प्रयोजनम् सू. १–५३

आयुर्वेदस्य प्रयोजनम् सू. ३०–२६

आयुर्वेदस्य शाश्वतत्वे प्रमाणम् सू. ३०–२७

आयुर्वेदस्याथर्ववेदेऽन्तर्भावः सू. ३०–२१

आयुर्वेदस्याधिकरणम् सू. १–४६, ४७

आयुर्वेदस्याष्टावङ्गानि ,, ३०–२८

आयुर्वेदाध्ययनेऽधिकारिणः सू. ३०–२९.

आयुर्वेदावतरणम् १–३–४०

आयुर्वेदोपदेशो महर्षीणां धर्मार्थमेव चि. १–४ | ५७–४ | ५९

आरग्वधस्य उपयोगविधिः क. ८–६, ७

आरग्वधस्य गुणाः क. ८–४, ५

आरग्वधस्य द्राक्षारसेन एको योगः क.८–८

आरग्वधस्य पर्यायाः क. ८–३

आरग्वधस्य सुरामण्डेन सीधुना दधिमण्डेन, आमलकरसेन, सौवीरकेण च एकैको योगः क. ८–९, १०

आरुकस्य गुणाः सू. २७–१३२, १३३

आरोग्यलक्षणम् इ. १२–८७, ८८

आरोग्यस्य लक्षणम् सू. ९–४

आरोग्यस्य हेतुः सू. १–५५

आर्द्रकस्य गुणाः सू. २७–१६६

आर्षसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४–३७ | २

आलुकस्य गुणाः सू. २७–९८–१०३

आविकदुग्धस्य गुणाः सू. २७–२२३
आविकमांसस्य गुणाः ,, २७–६२
आसवयोनयः सू २६–४८, ४९
आसवानां पथ्यतमानां चतुरशीति-निर्देशः सू. २५–४९
आसवानां बहुविधो विकल्पः संस्कारश्च सू. २५–४९
आसवानां यथास्वं संयोगसंस्कारसंस्कृतानां स्वकर्मकरत्वम् सू. २५–४९
आसवानां साधारणगुणाः ,, २५–५०
आसीनप्रचलायितस्य गुणाः ,, २१–५०
आसुरसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४–३८ | १
आसुरादीनां षड्विधानां राजसत्वम् शा. ४–३८
आसुर्या गुणाः सू. २७–९८–१०३
आस्येन धार्याणि द्रव्याणि सू. ५–७६, ७७
आस्थापनद्रव्याणि सि. २–११–१३
आस्थापनादनास्थाप्यानां या व्यापद्गो भवन्ति सि. २–१५
आस्थापनार्हाः सि. २–१६
आस्थापने कतमत्फलं श्रेष्ठमित्यत्र मुनीनां मतानि सि. ११–३–१०
आस्थापने कतमत्फलं श्रेष्ठमित्यत्रात्रेयकृतो निश्चयः सि. ११–११–१४
आस्थापनो दशको महाकषायः सू. ४–१३
आस्थापनोपयुक्तः कटुकस्कन्धः वि. ८–१४२
आस्थापनोपयुक्तः कषायस्कन्धः वि. ८–१४४
आस्थापनोपयुक्तस्तिक्तस्कन्धः वि. ८–१४३
आस्थापनोपयुक्तो मधुरस्कन्धः वि. ८–१३९
आस्थापनोपयुक्तोऽम्लस्कन्धः वि. ८–१४०
आस्थापनोपयुक्तो लवणस्कन्धः वि. ८–१४१
आहारपरिणामकरा भावाः शा. ६–१४–१६
आहारपाकापेक्षो दोषप्रकोपः चि. ३०–३१२
आहारमात्राविचारः सू. ५–३–९
आहारयोगिवर्गः सू. २७–२८६–३०८
आहारविकाराणां वैरोधिकानामुपदेशः सयुक्तिकः सू. २६–८२–८४
आहारविकाराणां वैरोधिकानां संक्षेपेण लक्षणम् सू. २६–८०, ८१
आहारराशिमधिकृत्य मात्राऽमात्रात्वविचारः वि. २–४, ५
आहारविधिविशेषाणां लक्षणतोऽवयवतश्च व्याख्यानम् सू. २६–३५–३७
आहारविधिविशेषायतनज्ञानफलम् वि. १–२३
आहारशक्तितो देहपरीक्षा वि. ८–१२०
आहारस्य कार्यम् सू. २८–४
आहारस्य परिणामः ,, २८–४
आहारस्याहितस्य लक्षणम् सू. २६–८५–१०१
आहारान्कीदृशानभ्यसेत् सू. ५–१०, ११
आहारान्कीदृशानभ्यसेत् ,, ५–१२
इक्षुरसस्य यान्त्रिकस्य गुणाः सू. २७–२३७.
इक्षुवर्गः सू. २७–२३७–२४९
इक्षोर्भक्षितस्य गुणाः सू. २७–२३७
इक्ष्वाकुकल्पोपक्रमः क. ३–१, २
इक्ष्वाकोः कषायेषु नव योगाः क. ३–१४
इक्ष्वाकोः पञ्च लेहयोगाः क. ३–१५–१८.
इक्ष्वाकोः पयोमुखा अष्टौ एकश्च सुरामण्डयोगः क. ३–५–९
इक्ष्वाकोः पर्यायाः सू. ३–३
इक्ष्वाकोरष्टौ वर्तियोगाः क. ३–१५
इक्ष्वाकोरेकः पललयोगः क. ३–१२, १३
इक्ष्वाकोरेको घृतयोगः क. ३–१३
इक्ष्वाकोरेको पेययोगः क. ३–११, १२
इक्ष्वाकोरेको मन्थयोगः क. ३–१९
इक्ष्वाकोरेको मांसयोगः क. ३–२०
इक्ष्वाकोर्गुणाः क. ३–४
इक्ष्वाकोर्बीजानां षट् वर्धमानयोगाः क. ३–१३
इक्ष्वाकोर्मस्तौ एको योगः क. ३–१०

इक्ष्वाकोस्तक्के एको योगः क. ३-११

इङ्गुदीफलस्य गुणाः सू. २७-१४५

इन्द्रियगतदोषजा रोगाः सू. २८-२०

इन्द्रियजानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-२९

इन्द्रियाणां परीक्षणोपायः इ. ४-३, ४

इन्द्रियोत्पत्तिसमकालमेव गर्भस्य चेतसि वेदनानिर्बन्धः शा. ४-१५

इन्द्रोक्तं रसायनम् चि. ४-६

इन्द्रोक्तं रसायनम् (अपरम्) चि. ४-१३-२६

उक्तबीजेनान्ययोगानामपि कल्पना कार्या चि. १२-४९,५०

उक्तमात्राविचारः क. १२-८६

उक्तानुक्तचिकित्सापरिग्रहः चि. ३-३४४

उक्तानुक्तभक्ष्याणां गुणसंग्रहः सू. २७-२७५,२७६

उक्तानुक्तलेहानां द्रव्यमानाद्यपेक्षिणो गुणाः सू. २७-२८३

उक्तानुक्तानां रोगाणां चिकित्सातिदेशः चि. ३०-२९१,२९२

उक्तेषु विधिनिषेधेषु वैद्येन स्वयमप्यूहो विधेयः सि. २-२५-२८

उचितस्नेहप्रत्यागमनकालः सि. १-४६

उच्चिटिङ्गदष्टलक्षणम् चि. २३-१५३

उच्चिटिङ्गविषे चिकित्सा चि. २३-२०८-२११

उच्चैर्भाष्यातिभाष्यजा व्यापदः सि. १२-१४ | १

उच्छ्वासाश्रितं रिष्टम् इ. ३-६

उज्ज्वलस्य गुणाः सू. २७-१४

उत्तमस्नेहमात्राया गुणाः ,, १३-३३,३४

उत्तमस्नेहमात्रार्हाः पुरुषाः सू. १३-३१, ३२

उत्तरबस्तिविधिः सि. ९-५०,५१

उत्तरस्य लक्षणम् वि. ८-३६

उत्पलस्य गुणाः सू. २७-११५

उदयप्रलयौ केषां भवतः शा. १-६९

उदरवहस्रोतसां मूलं तद्दुष्टिलक्षणं च वि. ५-८

उदरस्य कफजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-२९-३१

उदरस्य पित्तजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-२६-२८

उदरस्य वातजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-२३-२५

उदरस्य सन्निपातजस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-३२-३४

उदरस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-३१

उदराणां दोषजानां सामान्यसंप्राप्तिः चि. १३-२०-२२

उदराणां निदानम् चि. १३-१२-१५

उदराणां पूर्वरूपम् चि. १३-१६-१९

उदराणां संप्राप्तिः चि. १३-९-११

उदराणां साध्यासाध्यविचारः चि. १३-५०-५४

उदराण्यष्टौ सू. १९-४ | १

उदराश्रितमरिष्टम् इ. ३-६

उदरे एरण्डतैलम् चि. १३-१७२

उदरे क्षारतैलम् चि. १३-१६९-१७१

उदरे क्षीरस्य प्रशस्तत्वम् चि. १३-१९३,१९४

उदरे बस्तयः चि. १३-१७३, १७४

उदरे यवागूयोगः ,, १३-१६५, १६६

उदरे विषप्रयोगः ,, १३-१७५-१८३

उदरे शाकम् चि. १३-१६७, १६८

उदरेषु अन्नपानम् चि. १३-९५-९९

उदरेषु अभयौष्ट्रच्छागक्षीरहरीतकीशिलाजतुगुग्गुलुशृङ्गवेराणां प्रयोगाः चि. १३-१५१-१५३

उदरेषु कतिपयघृतयोगाः चि. १३-१३८-१४५

उदरेषु कतिपययोगाः चि. १३-१४६-१५०

उदरेषु क्षीरविधानम् ,, १३-१०७, १०८

उदरेषु घृतयोगाः चि. १३-१११

उदरेषु चित्रकघृतम् चि. १३-११६

उदरेषु तक्रविधानम् ,, १३-१०१-१०६

उदरेषु नारायणचूर्णम्
चि. १३-१२४-१३२

उदरेषु नीलिन्याद्यं चूर्णम् चि.१३-१३७

उदरेषु पञ्चकोलघृतम् चि.१३-११२-११४

उदरेषु पटोलाद्यं चूर्णम् ,, १३-११९-१२३

उदरेषु प्रदेहपरिषेकादि
चि. १३-१०८-११०

उदरेषु यवाद्यं घृतम् चि. १३-११७

उदरेषु वर्जनीयानि ,,१३-९९,१००

उदरेषु विरेचनम् चि. १३-११८

उदरेषु हपुषाद्य चूर्णम् ,, १३-१३६

उदर्दप्रशमनो दशको महाकषाय:
सू. ४-१७

उदावर्तस्य चिकित्सा चि. २६-११

उदावर्तस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणम्
चि. २६-५-१०

उदावर्ता: षट् सू. १९-४ | ३

उदावर्तिन्या योनेर्लक्षणम्
चि. ३०-२५, २६

उदावर्ते अन्नपानम् चि. २६-१८

उदावर्ते अन्या वर्तय: चि. २६-१३,१४

उदावर्ते आनाहलक्षणं तच्चिकित्सा च
चि. २६-२६-३२

उदावर्ते द्विरुत्तरं हिङ्ग्वादिचूर्णम्
चि. २६-२०

उदावर्ते निरूहविधानम् चि. २६-१६,१७

उदावर्ते प्रधमनचूर्णम् चि. २६-१५

उदावर्ते लवणयोग: चि. २६-२४,२५

उदावर्ते वचादिचूर्णम् चि. २६-२१

उदावर्ते विरेचनमनुवासनं च
चि. २६-१९

उदावर्ते श्यामादिवर्ति: चि. २६-१२

उदावर्ते स्थिराद्यं घृतम् चि. २६-२३

उदावर्ते हिङ्ग्वादिचूर्णम् चि. २६-२२

उदुम्बरकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८ | २

उदुम्बरपल्लवस्य गुणा: सू. २७-१०५

उदुम्बरफलस्य गुणा: ,, २७-१६४

उदुम्बरस्य लक्षणम् चि. ७-१५

उद्गारनिग्रहे दोषास्तच्चिकित्सा च
सू. ७-१८

उद्दालकस्य गुणा: सू. २७-१४

उन्मादकराणां भूतानामुन्मादने त्रिविधं
प्रयोजनम् नि. ७-१५

उन्मादकराणां भूतानामुन्मादयिष्यता-
मारम्भविशेष: नि. ७-१२

उन्मादव्युत्पत्ति: चि. ९-८

उन्मादसंख्या नि. ७-३

उन्मादस्य चिकित्साक्रम:
चि. ९-२३-३३

उन्मादस्य निदानपूर्विका संप्राप्ति:
नि. ७-४

उन्मादस्य पूर्वरूपाणि नि. ७-६

उन्मादस्य प्रत्यात्मलक्षणम् नि. ७-५

उन्मादस्य संप्राप्ति: चि. ९-५

उन्मादस्य सामान्यनिदानम् चि. ९-४

उन्मादस्य सामान्यलक्षणम् ,,९-६,७

उन्मादस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि
इ. ५-१८-२१

उन्मादस्यासाध्यलक्षणानि चि. ९-२२

उन्मादा: पञ्च सू. १९-४ | ४

उन्मादे अपामार्गादिवर्ति: चि. ९-६६,६७

उन्मादे कल्याणकं घृतम् ,,९-३५-४२

उन्मादे त्रासनादि चि. ९-७९-८५

उन्मादे नस्याञ्जनयोगा: चि. ९-६३

उन्मादे पुराणघृतम् चि. ९-५९-६३

उन्मादे बृंहणम् चि. ९-७८

उन्मादे मरिचयोग: ,, ९-६८

उन्मादे महाकल्याणकं घृतम्
चि. ९-४२-४४

उन्मादे महापैशाचिकं घृतम्
चि. ९-४५-४८

उन्मादे लशुनाद्यं घृतम् चि. ९-४९-५१

उन्मादे लशुनाद्यं घृतम् (अपरम्)
चि. ९-५२-५६

उन्मादे व्योषादिनस्यमञ्जनं च
चि. ९-६५

उन्मादे शिरीषादिनस्यमञ्जनं च चि. ९–६४

उन्मादे सिद्धार्थकाद्यगदः चि. ९–६९–७४

उन्मादे हिङ्ग्वादिघृतम् चि. ९–३३, ३४

उन्मादे हिङ्ग्वादिघृतम् „ ९–५७, ५८

उपकुशस्य लक्षणम् „ १२–७८

उपजिह्विकाया लक्षणम् „ १२–७७

उपजिह्विकायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च
सू. १८–१९

उपद्रवस्य लक्षणम् चि. २१–४०

उपद्रवस्याशुप्रतिकारोपदेशः चि. २१–४०

उपद्रवाख्यव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च
सि. ६–९०, ९१

उपनयनिगमनयोर्लक्षणम् वि. ८–३५

उपनाहस्वेदस्य द्रव्याणि
सू. १४–३५, ३६

उपनाहस्वेदे बन्धनद्रव्याणि सू. १४–३७

उपनाहस्वेदे बन्धनमोक्षविधिः „ १४–३८

उपप्लुताया योनेर्लक्षणम्
चि. ३०–२१, २२

उपयोक्तुर्विवरणम् वि. १–२२ | ८

उपयोगसंस्थाया विवरणम्
वि. १–२२ | ७

उपशयस्य लक्षणम् नि. १–१०

उपस्तम्भाश्रयः सू. ११–३६

उपायस्य लक्षणम् वि. ८–७८

उपायस्य विवरणम् वि. ८–१३०, १३१

उपालम्भस्य लक्षणम् „ ८–५९

उपोदिकाया गुणाः सू. २७–९३

उभयगरक्तपित्तस्यासाध्यत्वे हेतुः
नि. २–१८–२०

उरःक्षतस्य शीघ्रप्रतिकर्तव्यता
चि. ११–९५

उरःक्षते अमृतप्राशघृतम् चि.११-३५-४३

उरःक्षते आवश्यिकी चिकित्सा
चि. ११–७८–८०

उरःक्षते इक्ष्वालिकादिक्षीरम्
चि. ११–१८, १९

उरःक्षते एलादिगुटिका चि.११-२१-२४

उरःक्षते कतिपययोगाः „ ११–२८–३२

उरःक्षते कोलादिघृतम्
चि. ११–३४

उरःक्षते नागबलादियोगाः
चि. ११–९१,९२

उरःक्षते पथ्यम् चि. ११–९३, ९४

उरःक्षते मधुकादिघृतम्
चि. ११–४८,४९

उरःक्षते मधुकादियोगः
चि. ११–२०

उरःक्षते यष्ट्याह्वादिघृतम्
चि. ११–३३

उरःक्षते रक्तातिसारप्रवृत्तौ कतिपय
योगाः चि. ११–२५,२६

उरःक्षते लाक्षादियोगाः
चि. ११–१५–१७

उरःक्षते श्वदंष्ट्रादिघृतम्
चि. ११–४४–४७

उरःक्षते षाडवः चि. ११–८८–९०

उरःक्षते सर्पिर्गुडयोगाः
चि. ११–५०–७७

उरःक्षते सैन्धवादिचूर्णम्
चि. ११–८५–८७

उरुबूकस्य गुणाः सू. २७–१०८

उरुमाणगुणाः सू. २७–१५७,१५८

उष्ट्रीदुग्धस्य गुणाः सू. २७–२२०

उष्णक्लान्तस्य सहसा शीतजलदाननिषेधः
चि. २२–२३

उष्णभोजनगुणाः वि. १–२५ | १

उष्णवातस्य निदानलक्षणे सि. ९–३८

उष्णेन सार्धं मधुनो विरोधकथनम्
सू. २७–२४६

ऊरुस्तम्भ एकः सू. १९–४ | ८

ऊरुस्तम्भचिकित्सासूत्रम्
चि. २७–६०, ६१

ऊरुस्तम्भस्य चिकित्सोपक्रमः
चि. २७–१, २

ऊरुस्तम्भस्य चिकित्सासूत्रम्
चि. २७–२०–२७

ऊरुस्तम्भस्य निदानं संप्राप्तिश्च
चि. २७–३–१४

ऊरुस्तम्भस्य पूर्वरूपाणि चि. २७–१५

ऊरुस्तम्भस्य लक्षणानि चि. २७–१७, १८

ऊरुस्तम्भस्य साध्यासाध्यलक्षणानि चि. २७–१९

ऊरुस्तम्भहरा: कतिपययोगा: चि. २७–२८–३२

ऊरुस्तम्भे अन्ययोगाः चि. २७–५०–५३

ऊरुस्तम्भे अन्यौ योगौ चि. २७–३८

ऊरुस्तम्भे अष्टकट्वरं तैलम् चि. २७–४७

ऊरुस्तम्भे आवश्यिकी चिकित्सा चि. २७–३९–४१

ऊरुस्तम्भे कुष्ठाद्यं तैलम् चि. २७–४३, ४४

ऊरुस्तम्भे तैलयोगा: चि. २७–४१, ४२

ऊरुस्तम्भे बाह्यचिकित्सा चि. २७–४८

ऊरुस्तम्भे मूर्वादियोग: चि. २७–३५

ऊरुस्तम्भे वत्सादिप्रलेप: चि. २७–५४, ५५

ऊरुस्तम्भे वल्मीकमृत्तिकाद्युत्सादनम् चि. २७–४९

ऊरुस्तम्भे शार्ङ्गेष्टादियोग: चि. २७–३३, ३४

ऊरुस्तम्भे श्योनाकादिपरिषेक: तत्प्रलेपो वा चि. २७–५६–६०

ऊरुस्तम्भे सैन्धवाद्यं तैलम् चि. २७–४५, ४६

ऊरुस्तम्भे स्नेहप्रयोगजा दोषा: चि. २७–१६

ऊरुस्तम्भे स्वर्णक्षीर्यादियोग: चि. २७–३६, ३७

ऊर्ध्वगरक्तपित्तस्य साध्यत्वे हेतुः नि. २–१२–१४

ऊर्ध्वजत्रुरोगनिदानोपसंहारः चि. २६–१३३

ऊर्ध्वताख्यव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७–३२–३९

ऊर्ध्वश्वासस्य लक्षणम् चि. १७–४९–५१

ऊहापोहसमर्थेन भिषजाऽत्रोक्तस्कन्धेष्वपकर्षप्रक्षेपावपि कार्यौ वि. ८–१४९

ऋतुकाले स्त्रिया: कर्तव्यम् शा. ८–५

ऋतुजा विकाराः कथं न भवन्ति शा. २–४५

ऋतुभेदेन कालविभाग: वि. ८–१२५

ऋत्वादिबलाबलाज्ज्वरकालस्यान्यथात्वम् चि. ३–७५

ऋत्वादिविभागेन संवत्सरविभाग: सू. ६–४

ऋत्वाद्यपेक्ष: कालविचार: चि. ३०–३०४–३०८

ऋष्यजिह्वस्य लक्षणम् नि. ५–८–४

ऋष्यजिह्वस्य लक्षणम् चि. ७–१७

एकं हृदयम् शा. ७–८

एककुष्ठस्य लक्षणम् चि. ७–२१

एकशफदुग्धस्य गुणाः सू. २७–२२१

एकस्मिन्पुरुषे मनसोऽनेकत्वदाभासे कारणम् सू. ८–५

एकाङ्गरोगस्य समानं लक्षणम् चि. २८–५३–५५

एकीयमतेन क्लैब्यनिदानम् चि. ३०–१८८–१९१

एकोऽरिष्टयोग: क. ८–१५

एको लेहयोगः क. ८–१२

एडगजस्य गुणाः सू. २७–३३

एणमांसस्य गुणाः ,, २७–७७

एतच्छास्त्रज्ञानफलम् सि. १२–५१–५५

एतत्तन्त्रपठनफलम् ,, १२–३४–३५

एरण्डतैलस्य गुणाः सू. १३–१२

एरण्डतैलस्य गुणाः ,, २७–२८९

एरण्डमूलाद्यो निरूह: सि. ३–३६–४२

एरण्डमूलाद्यो यापनबस्ति: सि. १२–१६ | २

एर्वारुकस्य गुणाः सू. २७-११०, १११

ऐतिह्यस्य लक्षणम् वि. ८–४१

ऐन्दुकस्य गुणाः सू. २७-११४
ऐन्द्रं रसायनम् चि. १/३-२४-२९
ऐन्द्रसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३७ | ३
ऐरावतकस्य गुणाः सू. २७-१६१
ओजःक्षयलक्षणम् सू. १७-७३
ओजसः कर्माणि सू. ३०-९-११
ओजसो लक्षणम् सू. १७-७४,७५
ओदनस्य गुणाः ,, २७-२५७,२५८
ओदनानां मांसादिविशिष्टद्रव्यसंयोग-साधितानां गुणाः सू. २७-२५९
ओषधीनां नामरूपयोगज्ञाने गुणाः सू. १-१२०-१२३
ओष्ठाश्रयमरिष्टम् इ. ८-१२
औद्भिदद्रव्यं चतुर्विधम् सू. १-७१,७२
औद्भिदद्रव्यसंग्रहः सू. १-७३
औद्भिदलवणस्य गुणाः ,, २७-३०३
औपम्यस्य लक्षणम् वि. ८-४२
औषधं त्रिविधम् सू. ११-५४,५५
औषधद्रव्याणि कथं स्थाप्यानि क. १-११
औषधद्रव्याहरणविधिः क. १-१०
औषधानां नामरूपयोगाज्ञाने दोषाः सू. १-१२४-१३२
औषधाहारविषयकमरिष्टम् इ. १२-६०८
कक्षाया लक्षणम् चि. १२-९१
कच्छपिकाया लक्षणम् सू. १७-८४
कटुरसस्य गुणकर्माणि तस्यातियोगे दोषाश्च सू. २६-४३ | ४
कठिल्लकस्य गुणाः सू. २७-९५-९७
कणभदष्टलक्षणम् चि. २३-१५२
कण्ठादूर्ध्वं गच्छतः स्नेहस्य लक्षणं चिकित्सा च सि. ४-३८,३९
कण्ठ्यो दशको महाकषायः सू. ४-१०
कण्डूघ्नो दशको महाकषायः सू. ४-११
कथं भिषक् त्रिकालां वेदनां चिकित्सति शा. १-८६-९७
कथंभूतमना औषधं पिबेत् सि. ६-१७
कथंभूतमौषधं व्यापद्यते सि. ६-२८
कथंभूते देशे जातानि द्रव्याण्युपादेयानि क. १-९
कथभूतौ स्त्रीपुरुषौ मैथुनमुपेयाताम् शा. ८-७
कथं भेषजं तीक्ष्णत्वं मन्दत्वं च याति क. १२-५३-५६
कदम्बस्य गुणाः सू. २७-११४
कदा पुनः संशोधनौषधं देयम् क. १२-६३, ६४
कन्योत्पत्तौ कारणम् शा. २-११-१४
कपालकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८ | १
कपालकुष्ठस्य लक्षणम् चि. ७-१४
कपिञ्जलमांसस्य गुणाः सू. २७-६८
कपित्थस्य गुणाः सू. २७-१३६,१३७
कफकासे कट्फलादिक्वाथः चि. १८-११२,११३
कफकासे कण्टकारीघृतम् चि. १८-१२५-१२८
कफकासे कतिपययोगाः चि. १८-११७-१२२
कफकासे कुलत्थादिघृतम् चि. १८-१२९
कफकासे चिकित्साक्रमः चि. १८-१०७-१११
कफकासे दशमूलादिघृतम् चि. १८-१२३-१२४
कफकासे दोषापेक्षिणी चिकित्सा चि. १८-१३१,१३२
कफकासे धूमयोगाः चि. १८-१३०
कफकासे नागरादियोगः चि. १८-११५
कफकासे पाठादियोगः ,, १८-११४
कफकासे पिप्पलीप्रयोगः ,, १८-११६
कफगुल्मस्य निदानं लक्षणं च चि. ५-१४,१५
कफगुल्मे आतिदेशिकी चिकित्सा चि. ५-१६१,१६२
कफगुल्मे क्षीरषट्पलकं घृतम् चि. ५-१४७,१४८

कफगुल्मे चिकित्साक्रमः चि. ५–४८

कफगुल्मे दन्तीहरीतकी
चि. ५–१५४–१६०

कफगुल्मेऽन्नपानञ्च चि. ५–१६४-१६८

कफगुल्मे भल्लातकाद्यं घृतम्
चि. ५–१४३–१४६

कफगुल्मे मिश्रकस्नेहः
चि. ५–१४९–१५१

कफगुल्मे वमनम् चि. ५–१३७

कफगुल्मे विरेचनयोगाः
चि. ५–१४२,१५३

कफगुल्मे स्नेहयोगाः चि. ५–१४२

कफग्रहण्यां कतिपये क्षारयोगाः
चि. १५–१७३–१७६

कफग्रहण्यां क्षारगुटिका
चि. १५–१८३–१८५

कफग्रहण्यां क्षारघृतम्
चि. १५–१७१,१७२

कफग्रहण्यां त्रिफलादिक्षारः
चि. १५–१८८–१९३

कफग्रहण्यां दुरालभादिक्षारः
चि. १५–१७९,१८०

कफग्रहण्यां दुरालभासवः
चि. १५–१५२–१५५

कफग्रहण्यां पलाशादिपानीयम्
चि. १५–१४२,१४३

कफग्रहण्यां पिण्डासवः
चि. १५–१६०,१६१

कफग्रहण्यां पिप्पल्याद्यं चूर्णम्
चि. १५–१६८–१७०

कफग्रहण्यां भल्लातकादिक्षारः
चि. १५–१७७,१७८

कफग्रहण्यां भूनिम्बादिक्षारः
चि. १५–१८१

कफग्रहण्यां मधूकपुष्पासवः
चि. १५–१५०,१५१

कफग्रहण्यां मधूकासवः
चि. १५–१४६–१४९

कफग्रहण्यां मध्वरिष्टः
चि. १५–१६३–१६७

कफग्रहण्यां मूलासवः
चि. १५–१५६–१५९

कफग्रहण्यां वत्सकादियोगः
चि. १५–१८६,१८७

कफग्रहण्यां हरिद्रादिक्षारः
चि. १५–१८२

कफग्रहण्यामन्नपानम्
चि. १५–१४४,१४५

कफच्छर्देर्निदानलक्षणे
चि. २०–१२,१३

कफच्छर्द्याश्चिकित्सा
चि. २०–२४–३९

कफजग्रहणीगदस्य निदानलक्षणे
चि. १५–६७–७०

कफजन्यदशप्रमेहनामानि
नि. ४–१०

कफजप्रतिश्यायचिकित्सा
चि. २६–१५०–१५७

कफजप्रमेहाणां साध्यत्वे उपपत्तिः
नि. ४–११

कफजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा चि. २६–५४

कफजमूत्रकृच्छ्रे व्योषादिचूर्णम्
चि. २६–५५

कफजमूत्रकृच्छ्रे सप्तच्छदादियवागूः
क्राथो वा चि. २६–५७

कफजयोनिव्यापत्तेर्निदानं लक्षणं च
चि ३०–१३,१४

कफजशिरोरोगस्य चिकित्सा
चि. २६–१८०–१८२

कफजहृद्रोगस्य चिकित्सा चि. २६-९६,९७

कफजहृद्रोगे उदुम्बरादिस्नेहः
चि. २६–९८,९९

कफजादिप्रमेहलक्षणम् चि. ६–१२

कफपित्तावृतस्य वायोर्लक्षणानि
चि. २८–६१,६२

कफप्रदरस्य निदानलक्षणे
चि. ३०–२१६–२१९

कफप्रमेहस्य दूष्याः नि. ४–७

कफप्रमेहस्य निदानम् नि. ४–५,६

कफप्रमेहस्य संप्राप्तिः ,, ४–८,९

कफप्रमेहाणां लक्षणानि चि. ६–९

कफप्रमेहेषु कतिपययोगाः
चि. ६–२५–२९

कफरोगे शस्तास्त्रयो बस्तयः सि. १०-२३,२४

कफाधिकवातरक्तचिकित्सा चि. २९-१४५-१४८

कफाधिकस्य वातरक्तस्य लिङ्गानि चि. २९-२९

कफावृतस्नेहस्य चिकित्सा सि. ४-३२, ३३

कफावृतस्नेहस्य लक्षणम् सि. ४-३२, ३३

कफावृते भेषजे यदा लालादयः स्युस्तदा चिकित्सा क. १२-७७

कफोदरे क्षारयोगाः चि. १३-१५८-१६४

कफोदरे चिकित्साविधिः चि. १३-७२-७३

कफोदरेऽरिष्टयोगाः चि. १३-१५७

कफोन्मादस्य निदानलक्षणे नि. ९-१३,१४

करञ्जफलस्य गुणाः सू. २७-१६०

करणस्य परीक्षा वि. ८-८७

करणस्य विवरणम् वि. १-२२ | २

करमर्दस्य गुणाः सू. २७-१६१

करीरस्य गुणाः ,, २७-१४२,१४३

कर्कटरसाद्यो यापनबस्तिः सि. १२-१८ | ७

कर्कन्धुगुणाः सू. २५-१३२

कर्कशस्य गुणाः सू. २७-९५-९७

कर्कोटकस्य गुणाः ,, २७-९५-९७

कर्चूरस्य गुणाः सू. २७-१५५

कर्णपूरणस्य गुणाः सू. ५-८४

कर्णमूलशोथचिकित्सा चि. ३-२८७,२८८

कर्णमूलशोथस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२७

कर्णरोगचिकित्सा चि. २६-२२१

कर्णरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. २६-१२७, १२८

कर्णरोगाश्चत्वारः सू. १९-४, ५

कर्णरोगे क्षारतैलम् चि. २६-२२६-२३०

कर्णरोगे देवदार्वादितैलम् चि. २६-२२३-२२५

कर्णरोगे हिङ्ग्वादितैलम् चि. २६-२२२

कर्णिन्या योनेर्लक्षणम् चि. ३०-२७, २८

कर्दमविसर्पस्य निदानलक्षणे चि. २१-३७, ३८

कर्बुदारपुष्पशाकस्य गुणाः २७-१०४

कर्बुदारस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३

कर्मबस्तेर्विवरणम् सि. १-४७

कर्मलक्षणम् ,, १-५२

कर्मलक्षणातिदेशः वि. ८-२९

कर्माणि सू. १-३

कर्पूरस्वेदस्य कल्पना सू. १४-५०, ५१

कलम्ब्या गुणाः ,, २७-९८-१०३

कलायस्य गुणाः ,, २७-२८, २९

कलायस्य गुणाः ,, २७-९५-९७

कलायशाकस्य गुणाः सू. २७-९२

कलकलक्षणम् सू. ४-७

कल्पस्थानस्य विषयः क. १-३

कषायकल्पनं पञ्चविधम् सू. ४-७

कषायरसस्य गुणकर्माणि तस्यातियोगे दोषाश्च सू. २६-४३

कसेरुकस्य गुणाः सू. २७-११६,११७

कस्मिन्काले कस्य दोषस्य प्रकोपः चि. ३०-३०९, ३१०

कस्मिन्नृतौ कदा नावनं विधेयम् सि. २-२३

कस्मिन्वयसि कस्य दोषस्य प्रकोपः चि. ३०-३११

काकणस्य लक्षणम् चि. ७-२०

काकणकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८

काकाण्डोलाया गुणाः सू. २७-३४

काकमाच्या गुणाः ,, २७-८९

कान् नातिस्निग्धान् विरेचयेत् सि. ६-८

कामला द्विविधा-सू. १९–४ | ७

कामलापाण्डुरोगयोः अन्नपानम् चि. १६–४१, ४२

कामलापाण्डुरोगयोः संशोधनम् चि १६–३९, ४०

कामलापाण्डुरोगयोः स्नेहनम् चि. १६–४३

कामलाया असाध्यलक्षणम् चि.१६–३८

कामलाया निदानं लक्षणं च चि. १६–३४–३६

कामलायामावस्थिकी चिकित्सा चि. १६–१२१–१३१

कामशोकभयक्रोधभूतावेशविषमज्वराणां लक्षणम् चि. ३–१२२–१२४

कामादिजोन्मादचिकित्सा चि. ९–८६

कारणस्य परीक्षा वि. ८–८६

कारणस्य लक्षणम् ,, ८–६९

कारवीगुणाः सू. २७–३०७, ३०८

कार्यस्य परीक्षा वि. ८–८९

कार्यस्य लक्षणम् ,, ८–७२

कार्यफलस्य परीक्षा ,, ८–९०

कार्यफलस्य लक्षणम् ,, ८–७३

कार्ययोनेः परीक्षा ,, ८–८८

कार्ययोनेर्लक्षणम् ,, ८–७१

कार्यविशेषापेक्षया बस्तीनां संस्कार-विशेषः सि. १०–१३–१७

कालबस्तेर्विवरणम् सि. १–४७–५०

कालमृत्योरकालमृत्योश्च विवरणम् वि. ३–३७, ३८

काललवणस्य गुणाः सू. २७–३०३

कालशाकस्य गुणाः सू. २७–९१

कालस्य लक्षणम् वि. ८–७६

कालस्य विवरणम् ,, १–२२ | ६

कालाकालमृत्योर्निर्णयः शा. ६–२८

कालाम्लस्य शिण्डाकीप्रभृतेर्गुणाः सू. २७–२८५

काश्मर्यफलस्य गुणाः सू. २७–१३५

कासरूपं राजयक्ष्मलक्षणम् चि. ८–५१

कासस्य क्षतजस्य निदानलक्षणे चि. १८–२०–२३

कासस्य क्षयजस्य निदानलक्षणे चि.१८–२४–२९

कासस्य पित्तजस्य निदानलक्षणे चि. १८–१४–१६

कासस्य पूर्वरूपम् चि. १८–५

कासस्य भेदाः ,, १८–४

कासस्य भेदे हेतुः ,, १८–९

कासस्य वातजस्य निदानलक्षणे चि.१८–१०–१३

कासस्य श्लेष्मजस्य निदानलक्षणे चि. १८–१७–१९

कासस्य संप्राप्तिः चि. १८–६–८

कासहरो दशको महाकषायः सू. ४–१६

कासाः पञ्च सू. १९–४ | ४

कासानां साध्यासाध्यविचारः चि. १८–३०,३१

किटिभस्य लक्षणम् चि. ७–२२

किट्टस्य कार्यम् सू. २८–४

किमङ्गं गर्भस्य कुक्षौ प्रथममुत्पद्यते इत्यत्र महर्षीणां मतानि शा. ६–२१

किमपेक्ष्य बस्तौ बस्तिः सम्यक् सिद्धि-मेति सि. ३–६

किलाटगुणाः सू. २७–२२४–२३५

किलासानि त्रीणि सू. १९–४ | ६

कीटविषचिकित्सा चि.२३–१७०–१७४

कीटविषे लेपौ चि. २३–१९९

कीटानां वातोल्बणादित्वम् चि. २३–१६५,१६६

कीदृशमन्नानुपानं युक्तम् सू. २७–३१९,३२०

कुक्कुटमांसस्य गुणाः सू. २७–६६

कुक्षौ गर्भस्य वृद्धेर्हेतुः शा. ४–२७

कुक्षौ गर्भोत्पत्तिप्रकारः शा. ४–७

कुक्षौ त्रिविधावकाशांशविभागः वि. २–३

कुक्षौ यथा गर्भस्तिष्ठति शा. ६–२२

कुक्षौ यथा गर्भोऽभिवर्धते शा. ६–२३

कुचेलाया गुणाः सू. २७–९५–९७

कुच्चिकागुणाः ,, २७–३०७,३०८

कुटिञ्जरस्य गुणाः ,, २७–९८–१०३

कुटीप्रावेशिकस्य विधिः
चि. १-१ | १७-१ | २४

कुटीप्रावेशिको विधिः केषां हितः
वातातपिको विधिश्च केषां हितः
चि. १-४ | २७, ४ | २८

कुटीस्वेदस्य कल्पना सू. १४-५२-५४

कुटीस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-२८

कुठेरकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३

कुतुम्बकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३

कुत्र कीदृशो बस्तिर्योज्यः सि. १०-९,१०

कुपितस्य वायो रूपाणि
चि. २८-२०-२३

कुमारजीवस्य गुणाः
सू. २७-९८-१०३

कुम्भकामलाया लक्षणम् चि १६-३७

कुम्भीस्वेदस्य कल्पना
सू. १४-५६-५८

कुलकस्य गुणाः सू. २७-९५-९७

कुलजप्रमेहस्यासाध्यत्वम् चि. ६-५७

कुलत्थस्य गुणाः सू. २७-२६

कुल्माषादीनां गुणाः सू. २७-२६०,२६१

कुष्ठघ्नो दशको महाकषायः सू. ४-११

कुष्ठनामानि चि. ७-१३

कुष्ठस्यानुवर्तनम् चि. ७-१५१

कुष्ठस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि
इ. ५-१४,१५

कुष्ठहरः पटोलमूलादिक्काथः
चि. ५-६२-६४

कुष्ठहरयोगाः चि. ७-६०,६१

कुष्ठहराः प्रदेहाः सू. ३-१७

कुष्ठादिचूर्णम् ,, २३-१५,१६

कुष्ठानां दोषदूष्यसंग्रहः नि. ५-३

कुष्ठानां दोषांशविकल्पादिभिर्वेदनादिविशेषाः नि. ५-४

कुष्ठानां निदानम् चि. ७-४-१०

कुष्ठानां पूर्वरूपम् ,, ७-११,१२

कुष्ठानां पूर्वरूपाणि नि. ५-७

कुष्ठानां बहुत्वेऽपि सप्तस्वेवान्तर्भावं कृत्वोपदेशः नि. ५-४

कुष्ठानां साध्यासाध्यत्वम् नि. ५-९

कुष्ठानां साध्यासाध्यविचारः
चि. ७-३७,३८

कुष्ठानि सप्त सू. १९-४ | २

कुष्ठे अन्ये लेपाः चि. ७-९१-९९

कुष्ठे आसवयोगाः नि. ७-७३-८१

कुष्ठे उद्दालनयोगौ
चि. ७-१६०,१६१

कुष्ठे उद्वर्तनयोगः चि. ७-१२७

कुष्ठे एडगजादिलेपः ,, ७-१२६

कुष्ठे कदल्यादिमेदकपानं
किण्वलेपश्च चि. ७-८९,९०

कुष्ठे कनकक्षीरीतैलम्
चि. ७-१११-११६

कुष्ठे स्नानपानद्रव्याणि
चि. ७-१२८-१३०

कुष्ठे गन्धकसुवर्णमाक्षिकपारदानां
प्रयोगाः चि. ७-७०-७२

कुष्ठे चित्रकादिलेपः चि. ७-८५,८६

कुष्ठे तिक्तषट्पलकघृतम्
चि. ७-१४०-१४३

कुष्ठे तिक्तेक्ष्वाकुतैलम्
चि. ७-१०८-११०

कुष्ठे तैलयोगाः चि. ७-१००-१०५

कुष्ठे त्रप्वादिलेपः ,, ७-८८

कुष्ठे त्रिफलायोगः ,, ५-१३६-१३९

कुष्ठे त्रिफलादिचूर्णम्
चि. ७-६८,६९

कुष्ठे पथ्यमन्नपानम् चि. ७-८२,८३

कुष्ठे महाखदिरघृतम्
चि. ७-१५२-१५६

कुष्ठे महातिक्तकघृतम्
चि. ७-१४४-१५०

कुष्ठे मांस्यादिलेपः चि. ७-८७

कुष्ठे मुस्तादिचूर्णम् ,, ७-६५-६७

कुष्ठे योगाः चि. ७-१५७-१५९

कुष्ठे लेपयोगः ,, ७-८४

कुष्ठे लेपाः ,, ७-१२४,१२५

कुष्ठे विपादिकादौ लेपयोगाः
चि. ७-१२०, १२१

कुष्ठे श्वेतकरवीरपल्लवाद्यं तैलम्
चि. ७–१०६,१०७

कुष्ठेषु अनुवासनम् चि. ७–४७

कुष्ठेषु आस्थापनम् ,, ७–४६

कुष्ठेषु कृमिसंभवः नि. ५–१०

कुष्ठेषु क्षारः चि. ७–५४

कुष्ठेषु चिकित्साक्रमः
चि. ७-३९-४२

कुष्ठेषु दोषलिङ्गानि चि. ७–३४–३६

कुष्ठेषु दोषविशेषेण चिकित्सा
चि. ७–५८,५९

कुष्ठेषु धूमपानम् चि. ७–४९

कुष्ठेषु नस्यम् ,, ७–४८

कुष्ठेषु रक्तमोक्षः ,, ७–५०–५३

कुष्ठेषु लेपात्पूर्वं घर्षणविधानम्
चि. ७–५६,५७

कुष्ठेषु वमनयोगाः चि. ७–४३

कुष्ठेषु विरेचनयोगाः ,, ७–४४,४५

कुष्ठेषु विषप्रलेपः ,, ७–४५

कुष्ठेष्वन्नपानसाधनार्थं हितानि तैलानि
चि. ७–११९

कुष्ठयादीनां स्नेहनप्रकारः
सू. १३–९२–९५

कुष्ठयादीनां स्नेहने वर्जनीयद्रव्याणि
सू. १३–९१

कुसुम्भतैलस्य गुणाः सू. २७–२९३

कुसुम्भशाकस्य गुणाः ,, २७–११०

कुसुम्भस्य गुणाः ,, २७–९८–१०३

कूपजलस्य गुणदोषाः ,, २७–२१४

कूपस्वेदस्य कल्पना ,, १४–५९, ६०

कूर्ममांसस्य गुणाः ,, २७–८३

कूर्माद्यो यापनाबस्तिः सि. १२–१८/६

कृकलासकदष्टलक्षणम् चि. २३–१४९

कृच्छ्रसाध्यस्य लक्षणम् सू. १०-१४–१६

कृच्छ्रसाध्यस्य लक्षणम् ,, १८–३७

कृतत्रेताद्वापरकलिषु क्रमेण धर्मस्य
मनुष्याणामायुषश्च ह्रासः
वि. ३–२४–२८

कृतवेधनकल्पोपक्रमः क. ६–१,२

कृतवेधनस्य चत्वारः क्षीरयोगाः
क. ६–५

कृतवेधनस्य दश पिच्छायोगाः
क. ६–८

कृतवेधनस्य द्वाविंशतिः कषाययोगाः
क. ६–५–७

कृतवेधनस्य पर्याया गुणाश्च
क. ६–३, ४

कृतवेधनस्य षड् वर्तियोगाः एको
घृतयोगश्च क. ६–८

कृतवेधनस्य सप्त मांसरसयोगाः
क. ६–११,१२

कृतवेधनस्याष्टौ लेहयोगाः क. ६–९,१०

कृतवेधनस्यैकः सुरायोगः क. ६–५

कृतवेधनस्यैक इक्षुरसयोगः क. ६–१२

कृतान्नवर्गः सू. २७–२५०–२८५

कृमिकर्तृककुष्ठोपद्रवाः नि. ५–११

कृमिघ्नभेषजविधेरन्यत्राप्यतिदेशः
वि. ७–२८–३०

कृमिजरोगाणां संक्षेपेण चिकित्सा
वि. ७–१४

कृमिजशिरोरोगस्य चिकित्सा
चि. २६–१८३–१८६

कृमीणां प्रकृतिविघातः वि. ७–२१–२७

कृमीणां भेदाः वि. ७–९

कृमीणामपकर्षणम् वि. ७–१५–२०

के चिरेण के च शीघ्रं माद्यन्ति
चि. २४–८५–८७

के नराः सेव्याः सू. ७–५८, ५९

के नरा वर्ज्याः ., ७–५६, ५७

केम्बूकस्य गुणाः ,, २७–९५–९८

केलूटस्य गुणाः ,, २७–११४

केशसंख्याकथनम् शा. ७–१४

केशादिकल्पनस्य गुणाः सू. ५–९९

केशाश्रयमरिष्टम् इ. ८–६–९

केशाश्रितं रिष्टम् इ. ३–६

केषां प्रमेहः सहसा भवति नि. ४–५०, ५१

केषां प्रमेहो न भवति नि. ४–५२

केषां स्निग्धं केषां च रूक्षं विरेचनं प्रयोज्यम् क. १२–८३

केषां स्नेहविरेचनं केषां च रूक्षं विरेचनं देयम् सि. ६–९–१४

केषु ऋतुषु वमनादीनां प्रवृत्तिः केषु च निवृत्तिः वि. ८–१२६, १२७

कोरदूषस्य गुणाः सू. २७–१६–१८

कोविदारस्य गुणाः ,, २७–९८–१०३

कोविदारपुष्पशाकस्य गुणाः सू. २७–१०४

कोशातकाद्यो निरूहः सि. ३–५६–५८

कोष्ठयोर्मृदुक्रूरयोर्लक्षणम् सू. १३–६५–६९

कोष्ठस्थे वाते चिकित्सा चि. २८–८६–८८

कोष्ठाश्रयाणां दोषाणां शाखागमने हेतुः सू. २८–३१, ३२

कोष्ठे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८–२४

कौबेरसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४–३७ | ६

क्रिमिघ्नो दशको महाकषायः सू. ४–११

क्रिमिजातयो विंशतिः सू. १९–४ | ८

क्रिमिनाशनो निरूहः सि. ८–९, १०

क्रौञ्चादनस्य गुणाः सू. २७–११६, ११७

क्रमाख्यव्यापदो वर्णनम् सू. ६–९२, ९३

क्रमाख्यव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सू. ७–१५–२०

क्लीबभेदाः शा. २–१७–२१

क्लीबानामुत्पत्तौ हेतुः शा. २–१७–२१

क्लैब्यचिकित्सा चि. ३०–१९१–२०३

क्लैब्यस्य निदानं सामान्यलक्षणं च चि ३०–१५३–१५७

क्लैब्यानि चत्वारि सू. १९–४ | ५

क्षतकासे आवस्थिकी चिकित्सा चि. १८–१३९–१४३

क्षतक्षीणस्य निदानम् चि. ११–४–८

क्षतक्षीणस्य पूर्वरूपम् ,, ११–१२

क्षतक्षीणस्य लक्षणम् ,, ११–९–११

क्षतक्षीणस्य विशेषलक्षणम् ,, ११–१३

क्षतक्षीणस्य साध्यासाध्यविचारः चि. ११–१४

क्षयकासे अन्नपानम् चि. १८–१८१–१८९

क्षयकासे कतिपयघृतयोगाः चि. १८–१६५–१६७

क्षयकासे कतिपयलेहयोगाः चि. १८–१७०–१७३

क्षयकासे कासभैषज्यसंग्रहः चि. १८–१९०

क्षयकासे कासमर्दादिघृतम् चि. १८–१६३, १६४

क्षयकासे गुडूच्यादिघृतम् चि. १८–१६१, १६२

क्षयकासे चिकित्साक्रमः चि. १८–१३४

क्षयकासे चिकित्साक्रमः चि. १८–१४९–१५७

क्षयकासे जीवन्त्यादिलेहः चि. १८–१७६–१८१

क्षयकासे द्विपञ्चमूल्यादिघृतम् चि. १८–१५८–१६०

क्षयकासे द्विमेदादिधूमवर्तिः चि. १८–१४५–१४८

क्षयकासे धूमयोगाः चि. १८–१४४

क्षयकासे पद्मकादिलेहः चि. १८–१७४, १७५

क्षयकासे पिप्पल्यादिलेहः चि. १८–१३५–१३७

क्षयकासे हरीतकीलेहः चि. १८-१६५-१६७

क्षयाणां हेतवः सू. ९७–७६, ७७

क्षवथुविधारणे दोषास्तच्चिकित्सा च सू. ७–१६, १७

क्षवथोर्नासाशोषस्य च लक्षणम् चि. २६–१११